निर्माण-पथ —

'निर्माण-पथ' मिल मालिकों और मिल कर्मचारियों के संघर्ष की उस मूल समस्या को लेकर चलता है जिसके अन्तर्गत यह आवश्यक हो चुका है कि यह संघर्ष सहयोग में बदल जाए। शोषण की भावना को लेकर अब विचारधारा एक इञ्च आगे सरकती ही नहीं, विराम लग जाता है।

आज का राष्ट्र जागरूक हो चुका है, मजदूर का सम्बन्ध बुद्धि से जुड़ गया है। संगठन की उसमें क्षमता है। राष्ट्र-निर्माताओं को चाहिए कि वह इस संगठन का उपयोग उत्पादन तथा राष्ट्र निर्माण के लिए करें न कि उसे पूँजीवादी स्वार्थप्रिय मनोवृत्तियों से टक्कर ले लेकर नष्ट होने के लिए छोड़ दें। आज राष्ट्र का क्षण क्षण अमूल्य है और उसमें से एक क्षण का भी नष्ट हो जाना राष्ट्र के लिए एक समस्या है।

समय आ गया है जब कि प्रत्येक व्यक्ति को कर्मण्य बनना होगा। दूसरों के कन्धों पर सवारी गाँठने का युग समाप्त हो चुका। मजदूर के कन्धे अब इन अपाहिजों के भार को नहीं सम्भालेंगे।

साधन से साध्य का महत्व ऊँचा है और राष्ट्र के साधन राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को उपलब्ध होंगे। उन्हें बपौती मानकर तिजोरी में ताला लगाने की अनधिकार चेष्टा को राष्ट्र का जन-मन स्वीकार नहीं करेगा।

राष्ट्र के जीवन से पोल निकालकर उसे ठोस बनाना होगा। उसमें व्यक्ति, समाज और सरकार सभी के सहयोग की आवश्यकता है।

संक्षेप में उक्त-विचारधारा को लेकर मैंने इस उपन्यास की रचना की है। इससे अधिक यहाँ कुछ नहीं कहूँगा।

निर्माण-पथ

यज्ञदत्त

राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट
दिल्ली

जीवन की पग-डण्डी पर चलते-चलते

अनायास ही आकर अभिन्न हो जाने वाले पर्वत-प्रदेश के राही !

'निर्माण-पथ', मेरी भावना का प्रेमोपहार, स्वीकार करना।

यज्ञदत्त शर्मा

लेखक की अन्य रचनाएँ

१.	विचित्र-त्याग		उपन्यास
२.	दो-पहलू		,,
३.	ललिता		,,
४.	प्रेम-समाधि		,,
५.	इन्सान		,,
६.	अन्तिम-चरण		,,
७.	महल और मकान	(प्रेस में)	,,
८.	हिन्दी का संक्षिप्त साहित्य		इतिहास
९.	हिन्दी-साहित्य का सांकेतिक इतिहास		,,
१०.	प्रबन्ध-सागर		प्रबन्ध
११.	हिन्दी के उपन्यासकार		समालोचना
१२.	आलोचना के सिद्धान्त		

कुछ समझ लो, तब पढ़ो

'निर्माण-पथ' मिल-मालिकों और मिल-कर्मचारियों के संघर्ष की उस मूल समस्या को लेकर चलता है जिसके अन्तर्गत यह आवश्यक हो चुका है कि यह संघर्ष सहयोग में बदल जाए। शोषण की भावना को लेकर अब विचारधारा एक इंच आगे सरकती ही नहीं, विराम लग जाता है।

आज का राष्ट्र जागरूक हो चुका है, मज़दूर का सम्बन्ध बुद्धि से जुड़ गया है। संगठन की उसमें क्षमता है। राष्ट्र-निर्माताओं को चाहिए कि वह इस संगठन का उपयोग उत्पादन तथा राष्ट्र-निर्माण के लिए करें न कि उसे पूंजीवादी स्वार्थप्रिय मनोवृत्तियों से टक्कर ले लेकर नष्ट होने के लिए छोड़ दें। आज राष्ट्र का क्षण-क्षण अमूल्य है और उसमें से एक क्षण का भी नष्ट हो जाना राष्ट्र के लिए एक समस्या है।

समय आगया है जब कि प्रत्येक व्यक्ति को कर्मण्य बनना होगा। दूसरों के कंधों पर सवारी गाँठने का युग समाप्त हो चुका। मज़दूर के कंधे अब इन अपाहिजों के भार को नहीं सम्भालेंगे।

साधन से साध्य का महत्व ऊँचा है और राष्ट्र के साधन राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को उपलब्ध होंगे। उन्हें बपौती मानकर तिजोरी में ताला लगाने की अनधिकार चेष्टा को राष्ट्र का जन-मत स्वीकार नहीं करेगा।

राष्ट्र के जीवन से पोल को निकालकर उसे ठोस बनाना होगा और इसमें व्यक्ति, समाज, और सरकार सभी के सहयोग की आवश्यकता है।

संक्षेप में उक्त विचारधारा को लेकर मैंने इस उपन्यास की रचना की है। इससे अधिक यहाँ कुछ नहीं कहूँगा।

यज्ञदत्त

: १ :

"इस इमारत की बुनियादें हिल चुकी हैं चौहान साहेब ! चूना मिट्टी हो चुका है, ईंटें रेह खा चुकी हैं, दीवारों में दरारें खुल गई हैं, कड़ियों को घुन लग गया है और लोहे के शहतीर जंग खाकर अपनी अन्तिम रूप-रेखा लिए बैठे हैं।" कॉमरेड विमला ने कड़क कर कहा और अपने विचारों के गौरव को लेकर गर्व के साथ अपना हल्का सा सीना ऊपर को उभार दिया।

कॉफ़ी का दौर चल रहा था। चौहान साहेब के होठों से कॉफ़ी का प्याला लगा हुआ था और कॉमरेड विमला की प्याली से हल्की हल्की भाप ऊपर को उठ-उठ कर शून्य में घेरे बनाती हुई चली जा रही थी।

"कॉफ़ी क्यों नहीं पी रही हो कॉमरेड विमला ?" तनिक गर्दन हिलाकर प्याली की ओर संकेत करते हुए चौहान साहेब मुख पर मुस्कान और गाम्भीर्य का सम्मिश्रण लेकर बोले।

"पीती हूँ ! परन्तु आज मैं आपसे झगड़ने का निश्चय करके घर से निकली हूँ। सुधारवादी मनोवृत्तियों के बल पर जो लोग आज जनता की आँखों में धूल झोंक कर अपना उल्लू सीधा करने चले हैं उनका फलीभूत होना नितान्त असम्भव है।" उसी प्रकार गम्भीरता पूर्वक कॉमरेड विमला ने कुर्सी तनिक पीछे खिसका कर कहा।

"कॉमरेड असम्भव है तो असम्भव ही सही परन्तु इस कॉफी ने तुम्हारी क्या हानि की है जो इसके साथ इतना अन्याय हो रहा है।" मुस्कुराते हुए उसी सादगी के साथ चौहान साहेब बोले। चौहान साहेब कांग्रेस के घुटे हुए पुराने नेता थे जो कॉमरेड विमला के चाँचल्य से आनन्द-लाभ कर रहे थे। उनकी ऊपर की मुखाकृति यह कह रही थी कि न जाने वह कॉमरेड विमला से कितने प्रभावित हो चुके हैं परन्तु उनका एक लम्बे काल का ठोस पका हुआ भेजा और प्रस्तर जैसा न जाने कितनी हलचलों में से गुज़रने वाला हृदय अपनी जगह स्थिर था। उनके मत से कॉमरेड विमला के मुख से निकलने वाले शब्द आतिशबाज़ी के वह फूल थे जिनमें कुछ चमक-दमक और आकर्षण तो था परन्तु स्थायित्व नहीं, सुगन्धि नहीं, ताज़गी नहीं। यह वही रूस के उद्यानों में किसी समय खिले हुए फूलों का सूखा हुआ चूरा था जिसे कॉम्यूनिस्ट जादूगर जनता के सम्मुख हथेली पर रखकर फूँक मारते हुए कहते हैं—तुम अपने मकान ढ़हा डालो, अपने शहरों को आग लगा दो, अपने खेतों को उजाड़ दो, अपनी मिलों को भस्म कर दो, अपने कार-खानों की कलों को तोड़ डालो, अपनी व्यवस्थाओं को छिन्न-भिन्न कर दो, अपने पूर्वजों को मूर्ख और धूर्त कहकर गालियाँ दो और अपने देश को एक बार कोरा सपाट कल्लर बना डालो। फिर देखना हम किस जादू के ज़ोर से कोरे कल्लर को लहलहाती हुई खेती और वीरानों को सुन्दर सुव्यवस्थित बस्तियों में नई सामाजिक व्यवस्थाओं और रूपरेखाओं के साथ परिणित कर देते हैं।

कॉमरेड विमला ने एक हाथ से कॉफी की प्याली उठाकर होठों से लगा ली और दूसरे हाथ से अपनी घुँघराली लटों की उन दो लड़ियों को सँवारा जो किसी प्रकार बल खाकर कान के ऊपर से उतरती हुई सामने प्याली के पास तक आ चुकी थीं। इसी समय चौहान साहेब गम्भीर मुख-मुद्रा बना कर यकायक कह उठे, "कॉमरेड विमला खूब कहा तुमने। तुम्हारे शब्द-शब्द में क्रान्ति का अमर संदेश झाँक रहा है। तुम्हारा प्रत्येक शब्द रूढ़िवादी पौंगा पंथियों के लिए ही नहीं वरन् सुधारवादी प्रगतिवाद के लिए भी एक चुनौती है।" और इतना कहकर उन्होंने अपनी मुखाकृति गम्भीर बनाते हुए कॉमरेड विमला पर पड़ने वाले अपने शब्दों के प्रभाव को परखना प्रारम्भ किया।

"चुनौती, चैलेञ्ज चौहान साहेब! खुला हुआ चैलेञ्ज।" विचारों के आवेग में एकदम खड़ी होकर कॉफी पीना छोड़ कॉफी हाउस की छत की ओर

देखते हुए कॉमरेड विमला बोली और वह फिर अपनी साड़ी की सलवटों को सँवारते हुए दूसरी कुर्सी पर बैठ गई। "सुधार के नाम पर जनता अब गली सड़ी व्यवस्थाओं को स्वीकार नहीं करेगी। जनता को आज नया समाज चाहिए, नई व्यवस्थाएँ चाहिएँ, नए रीति रिवाज़ चाहिएँ। उनका नया ढाँचा होगा, वह ढाँचा नए सिद्धान्तों पर बनाया जाएगा और उसके मूल में नई व्यवस्थाएं और नई समस्याएं जन्म लेकर आयेंगी। जनता की आवश्यकताओं और उनकी उपलब्धि को आधार मानकर नए समाज का निर्माण होगा।" और इतना कहकर अभिमान के साथ विमला का सीना तन गया तथा विचारों के गाम्भीर्य से उसका मस्तक तमतमा उठा। कॉमरेड विमला के छोटे से मुख से यह क्या निकल पड़ा, इसकी आशा चौहान साहेब को न हो, ऐसी बात नहीं थी, क्योंकि अभी कल संध्या को ही तो बात थी कि कॉमरेड विमला ने 'एल्पस रेस्टोरेन्ट' में चाय की मेज़ पर वाद-विवाद में कई संसद के सदस्यों के मुँह मोड़ दिए थे। कॉमरेड विमला की बातों का उत्तर एक भी नुकीली टोपी वाले महानुभाव से देते न बना था। बेचारे दाँत निकालकर खिसर-खिसर करने के अतिरिक्त और कर भी भला क्या सकते थे? यदि उस समय चौहान साहेब ने बीच में पड़ कर बातों का विषय न बदल दिया होता तो बेचारों को लेने के देने पड़ गए थे। कॉमरेड विमला के साथ किसी गम्भीर विषय पर जुट जाने में स्वयं चौहान साहेब को भी संकोच ही रहता था परन्तु राजनीति के क्षेत्र में पुराने खिलाड़ी होने के नाते अपने अज्ञान को गाम्भीर्य के आवरण में समेट लेने की निपुणतम कला उन्हें खूब आती थी। अपनी केवल इसी एक गाम्भीर्य-प्रदर्शन की पटुता के बल पर आप इस लीडरी के उच्चतम शिखर तक पहुंचे थे और वास्तव में यह एक महान कला थी जिसने लीडरी के दोनों प्रधान अस्त्र व्याख्यान और लेखन को खुंडा ठहराकर एक ओर रख दिया था।

चौहान साहेब ने कॉमरेड विमला की बात अनसुनी करके बैरे को दो भरे हुए दोसे और दो पॉट क्रीम लाने का आर्डर देते हुए कहा "कॉमरेड विमला! सच कहता हूं कि यदि तुम राजनीति के क्षेत्र में अवतीर्ण न होकर कहीं कला के क्षेत्र को सुशोभित करतीं तो मैं वास्तव में सच कहता हूं कि.........."

"फुलिश, नॉन्सेन्स, ईडियोटिक" कड़क कर खड़ी होती हुई कॉमरेड विमला बोली और उसका हलका कोमल-सा छरहरा बदन एकदम प्रकम्पित हो उठा।

"चौहान साहेब मैं समझती हूं, और शायद सच ही समझती हूं कि आपके पास विचारों के विस्तार की कमी है। अभिनय का महत्व आपके जीवन में प्रत्यक्ष से भी ऊपर उठकर बोल रहा है। यह आपका दोष नहीं आपके सिद्धान्तों का उथलापन है, आपके आस-पास की दुनियाँ के दृष्टिकोण का परिचायक है, आपके विचारों की संकीर्णता का द्योतक है।" और इतना कुछ कहकर भी कॉमरेड विमला का हृदय हलका नहीं हो सका। वह एक बार कुर्सी से ऊपर उठकर फिर नीचे बैठ गई और होठों को कुछ और ठोस बात कह सकने के लिए फड़फड़ाती रही।

चौहान साहेब चुपचाप इस समय कॉफी पीना छोड़कर कॉमरेड विमला के लपालप चलते हुए होठों की गति को निहार कर उनके चाँचल्य की कमनीय कला पर मन ही मन मुग्ध हो रहे थे। परन्तु कॉमरेड विमला का चौहान साहेब को 'नॉन्सेन्स ईडियट' कहने वाला रूप उनके सामने आज प्रथम बार ही आया था। इधर कुछ दिन से चौहान साहेब का हृदय कॉमरेड विमला की ओर को अनायास ही बह निकला था और उसी के फल स्वरूप उनके दैनिक जीवन के व्यक्तिगत कार्य-क्रम भी बहुत कुछ विमला के कार्य-क्रमों से मेल खाने लगे थे।

चौहान साहेब की गम्भीर मुख-मुद्रा, उन्नत विषाल मस्तक, घुँघराले बाल, गौरवर्ण, लम्बी भुजाएं, दरम्यिाना कद, चौड़ा सीना सब मिलकर एक ऐसा आकार उपस्थित करते थे कि दर्शक उनसे प्रभावित हो और फिर हो। चौहान साहेब ने देश के लिए स्वतन्त्रता-संग्रामों में चने चाब-चाब कर भाग लिया था और सीना खोल-खोल कर पग बढ़ाया था। देहली के पास के ही एक ग्राम के आप निवासी थे और उस ग्राम में आपका एक कच्चा मकान था, दादे-पड़दादे के समय से चली आनेवाली पैत्रिक सम्पत्ति, पूर्वजों के मान सम्मान की अमर थाती। इस मकान को राजनीति के लिए भेंट चढ़ाकर दो सौ पच्चीस रुपए में चौहान साहेब ने बेचकर प्रथम बार अपना कांग्रेसी बाना बदला था। कमीज-कालर नुमा कई कुर्ते सिलाए थे और चौड़ी मोहरी के पायजामे। केवल एक इञ्ची बाढ़ की एक दर्जन टोपियाँ विशेष रूप से बनवाई गई थीं। साथ ही साथ चप्पल भी चमड़े की सिलाई वाला आपने ठाटदार और सुन्दर-सा मोल लिया था; तात्पर्य यह है कि लीडरी के साधारण रौब दौब में कोई कमी नहीं रहने दी थी। इस प्रकार इस रूप में एक दिन चौहान साहेब ने राजनीति के व्यापार-पथ पर पग बढ़ाया था।

चौहान साहेब अपने इस बलिदान और त्याग की यह अमर कहानी अपने सभी मित्रों और परिचितों को साधारण सा भी जीवन में अवसर आ जाने पर सुनाने में नहीं चूकते थे परन्तु उसका रूप दूसरा ही होता था। अभी अभी जो हमने ऊपर कही यह चौहान साहेब की सच्ची कहानी थी और इसी में कुछ नमक मिर्च मिलाकर वह इसे प्रस्तुत करते थे। कच्चे मकान के स्थान पर कच्चा मकान न कहकर कुछ सम्पत्ति कहने से उनका काम चल जाता था और उस सम्पत्ति से प्राप्त धन किस रूप से उन्होंने देश पर न्यौछावर कर दिया इसका व्यौरा देने की भी वह आवश्यकता नहीं समझते थे। इस समय कॉफी के प्याले के कुन्दे में उँगली डालते समय उन्हें न जाने क्यों यह ध्यान आ गया कि बस इस समय से उपयुक्त अवसर उन्हें कॉमरेड विमला को अपनी सेवा की अमर कहानी सुनाने का फिर प्राप्त नहीं हो सकता और आप तुरन्त तनिक गम्भीर मुख मुद्रा बनाकर बोले, "कॉमरेड विमला! आपने शायद समझा कि मैंने कलाकार कहकर आपका अपमान किया, परन्तु नहीं। कलाकार एक व्यापक शब्द है। भगवान भी कलाकार है, मैं भी कलाकार हूँ······" भगवान के साथ अपने आप और कलाकार को मिलाकर चौहान साहेब इस समय एक ऊँचे स्तर के वायु मंडल में विचरण कर रहे थे परन्तु कॉमरेड विमला के अचानक बीच में बोल पड़ने से उनका कल्पना-स्वप्न भंग हो गया।

"अगेन ईडियोटिक, फिर बत्तमीज़ी! व्हाट भगवान? मैं कहती हूं क्या भगवान?" बीच ही में तिलमिला कर कॉमरेड विमला खड़ी होती हुई बोली। "राजनीति का भगवान से क्या सम्बन्ध है? यह सब बकवास मैं सुनना नहीं चाहती चौहान साहेब! और इसी लिए कहती हूं कि यह नव-निर्माण का युग है, सुधार का नहीं। अब लीपा लोपी करने से काम नहीं चलेगा। टीप-टाप का युग समाप्त हो चुका। ताश के खेल दिखला कर अब बीमारी की दवाइयाँ बेचने के मजमुए नहीं लगाए जा सकेंगे। जनता के मस्तिष्क का दृष्टिकोण चौड़ा होता जा रहा है। दुनियाँ आगे को चलेगी, पीछे नहीं लौट सकती। भगवान दुर्बल व्यक्ति की दुहाई का आलम्बन है। सबल व्यक्ति तुम्हारे भगवान की छाती पर पैर रख कर आगे बढ़ता है। वह कंकाल को कंकाल कहकर उसके भाग्य पर नहीं छोड़ता, उसे सहारा देता है, खाना देता है, वस्त्र देता है, मज़दूरी करने योग्य बनाता है और एक दिन उसे तय्यार करके कहता कि—कर्मचारी तू आज

के युग का प्रतिनिधि है, तू आज के युग का कर्णधार है। अब तो तेरे ही चलाए दुनियाँ चलेगी। मन्दिरों में बैठकर देवदासियों की पग ध्वनि से कान बाँधने वाले पुजारियों के घंटे और घड़ियालों में अब कुछ नहीं रखा है चौहान साहेब ! मैं भगवान वगवान कुछ नहीं मानती और यदि वास्तव में भगवान नाम की कोई वस्तु है भी तो उसकी झाँकी आपको सड़क पर बजरी कूटने वाली कर्मचारिणी की हथौड़ी और सड़क खोदने वाले कर्मचारी की कुदाली में कहीं चमकती हुई दिखलाई देनी चाहिए। जो भगवान वहाँ नहीं है उसे मन्दिरों में खोजने जाने वाली मैं नहीं।" कहते-कहते कॉमरेड विमला को पसीना आ गया। कॉमरेड विमला का छरहरा बदन साधारणतया कभी भी उसके प्रबल विचारों के सामने अस्थिर हो उठता था। चौहान साहेब तो कल्पना ही नहीं कर पाते थे कि इस कोमल कमनीय कलेवर में ऐसे तीखे विचारों का प्रादुर्भाव कैसे हो सका।

चौहान साहेब की यश-गाथा और त्यागमय कहानी मुँह के अन्दर ही अन्दर कुलमुलाती हुई रह गई। वह कुछ कहना चाहते थे परन्तु कॉमरेड विमला के सामने तो उनसे केवल सुनते ही बनता था। चिरकाल की थाती चौहान साहेब का कोरा गाम्भीर्य, जिसके बल पर वह राजनीति के इस ऊंचे स्थान तक पहुँचे थे कॉमरेड विमला को प्रभावित करने के लिए पर्याप्त नहीं था।

चौहान साहेब व्यवहारकुशल व्यक्ति थे, दुनियाँ देखी थी, पराई सरकार देखी थी, उसके साथ संघर्ष किया था और आजकल अपनी सरकार को देख रहे थे। आकाश पाताल का अन्तर था दोनों सरकारों में। जो कार्य उस समय लाख सिर पटकने पर भी सम्पूर्ण नहीं होते थे वह आजकल यों ही चौहान साहेब के संकेत मात्र पर टैलीफ़ोन की घंटी खड़खड़ाने मात्र से फलीभूत हो जाते थे। चौहान साहेब की एक विशेष बान यह थी कि जब किसी पार्टी अथवा बैठक में किसी भी प्रकार अपना प्रभुत्व उन्हें उखड़ता हुआ दिखलाई देता था तो वह खाने पर टूट पड़ते थे। उन्होंने बैरे को बुला कर तनिक कड़े से व्यंग्यपूर्ण शब्दों में कहा, "क्यों भाई ! क्या हम लोग उधार खाने के लिए यहाँ आए हैं जो हमारा आर्डर लाने में इस प्रकार टालमटोल हो रही है।" और इतना कहकर कॉमरेड विमला की ओर मुख करके मुस्कुरा दिए।

बैरा भी मुस्कुरा कर कहता हुआ चला गया, "नहीं सरकार ! आप

पहिले और अन्य सब आपके बाद में। मैं समझा था कि अभी आप बातों पर जुटे हैं, खाने पर जुटने का अवकाश अभी आपके पास नहीं है।"

कॉफ़ी पीने और कुछ खाने के पश्चात् कुछ प्रश्न और कुछ हृदय की हलचलों को लेकर दोनों एक दूसरे से विदा हुए। चौहान साहेब वहां से उठकर चले तो अवश्य आए परन्तु उनके पैर भारी हो गए थे और अकेले आते आते उन्हें थकान मालूम देने लगी थी। चौहान साहेब का जीवन निरन्तर संघर्ष करते रहने से थक गया था और अब स्वतंत्रता के लक्ष की प्राप्ति के पश्चात वह जीवन साथी की खोज में थे।

: २ :

कॉमरेड विमला के पास से आज शीघ्र ही चौहान साहेब को चल देना पड़ा क्योंकि ठीक सात बजे उन्हें सेठ जी की कोठी पर पहुँचना था। सेठ जी से मेरा मतलब सेठ भानामल जी से है जिनके भारत में कई मिल हैं और कपड़े के व्यापार की तो मानो उनके पास मोनोपोली है। सेठ भानामल जी का चौहान साहेब से एक दिन अनायास ही परिचय हो गया था। सेठ जी निकले जारहे थे दिल्ली के चाँदनी चौक बाजार से और चौहान साहेब भी काँग्रेस आफ़िस से मस्ती में इठलाते हुए झूम-झूम कर चाँदनी चौक के बाजार में ही आ रहे थे। समय की बात थी कि सेठ जी की कार चौहान साहेब से टकरा गई और चौहान साहेब धराशाई हो गए; परन्तु ड्राइवर ने तुरन्त हैन्डब्रेक लगाकर कार को रोक दिया। चौहान साहेब अपना कुर्त्ता, पायजामा झाड़ते हुए खड़े हुए तो उनका मुख क्रोध से तमतमा रहा था। क्रोध आने के कई कारण थे। तनिक बहुत चोट आ जाना तो एक कारण था ही परन्तु यह इस समय इतना महत्वपूर्ण कारण नहीं था कि जितना कुर्त्ते और पायजामे का मैला हो जाना। चौहान साहेब जा रहे थे गाँधी ग्राउन्ड में होने वाली सभा का सभापतित्व करने और इसी के लिए विशेष रूप से उन्होंने कुर्त्ता पायजामा अपने हाथ से साबुन लगाकर धोया था और स्वयं पास वाले धोबी को एक आना देकर स्त्री कराई थी। वह सब बना बनाया

खेल इन महाशय ने कार से टक्कर लगाकर खराब कर दिया। बालू का किला एक क्षण में गिरा कर पृथ्वी से मिला दिया। चौहान साहेब के मस्तिष्क का पारा इस समय यकायक इतना ऊपर हो गया कि उन्होंने आव देखा न ताव लपक कर रुकी हुई कार के अन्दर हाथ डालते हुए सेठ भानामल जी का गला इस प्रकार दाब लिया कि जिस प्रकार बिल्ली चूहे को दबोच लेती है और कड़क कर ऊँचे स्वर में बोले, "हरामजादे चलते हैं और चलने की तमीज़ नहीं। कार में चलने का मतलब तुमने यह समझा है कि दूसरों को कुचल कर आगे निकल जाओ। मैं अभी तुम्हारी आँखें खोल देता हूँ।" और इतना कहकर वह सेठ भानामल जी पर दो चार मुक्के रसीद करने ही वाले थे कि उन्हें कुछ शरीफ़ व्यक्तियों ने पकड़ लिया और उनकी ठोड़ी में हाथ डालते हुए उन्हें तनिक शांति करने के लिए कहा।

भीड़ एकत्रित हो गई। भांति-भांति की आवाजें भीड़ में से आने लगीं। दिल्ली की जनता के तो चौहान साहेब इस समय एक माने हुए नेता थे। कितने ही जुलूसों का नेतृत्व कर चुके थे, कितनी ही बार चाँदनी चौक की मुकम्मल हड़ताल करा चुके थे। बच्चा-बच्चा आपके नाम से परिचित था। चारों ओर से सहानुभूति की ध्वनि प्रतिध्वनित हो उठी और सेठ जी को अंधा घोषित करने में तो किसी को विचारने का कोई कारण ही नहीं था। निसंकोच भाव से सबने उन्हें नेत्र विहीन घोषित कर दिया और भीड़ उनकी कार को रोक कर खड़ी हो गई।

सेठ भानामल जी अपने मन में अपने को निर्दोष माने बैठे थे परन्तु जनता की आवाज़ के सामने उन्हें झुक जाना पड़ा और मान ही लेना पड़ा कि वास्तव में उनके नेत्र व्यर्थ हैं जो उनकी कार ने एक सज्जन को कष्ट पहुँचाया और इस प्रकार टकराकर पृथ्वी पर गिरा दिया। सेठ जी ने गिड़गिड़ा कर क्षमा याचना करना ही इस समय उचित समझा और दीन भाव से बोले, "मैं आपको डाक्टर के यहाँ ले चलता हूँ महाशय! ड्राइवर से भूल हुई, क्षमा कीजिए, भूल सर्वदा मष्नुय से ही होती है।" और इतना कहते हुए सेठ भानामल जी जनता के उभार को देखकर थर-थर काँपने लगे।

क्षमा याचना सुन कर चौहान साहेब मोम की तरह पिघल गए और सेठ जी की गर्दन छोड़ कर पीछे हटते हुए बोले, "हमें तुम्हारे डाक्टर वाक्टर की

आवश्यकता नहीं है सेठ ! परन्तु तुम इन्सान बनना सीखो। तुम लोग कार में बैठ कर समझ लेते हो कि यह जो लोग चारों ओर पैदल घूम फिर रहे हैं सब भेड़ और बकरियों के समान हैं। चाहे जिस पर कार चढ़ा दो और चाहे जिसे चोट पहुँचा दो। लेकिन मैं कहता हूं कि इस सड़क पर फिरने वाले प्रत्येक व्यक्ति का मूल्य तुमसे किसी भी प्रकार कम नहीं है।

चौहान साहेब का नाम सेठ भानामल जी ने पहिले भी कई बार सुना था। आज इस रूप में उनसे भेंट होने पर सेठ जी कार से नीचे उतर आए और फिर कई बार क्षमा याचना करके चौहान साहेब को अपनी कोठी पर निमन्त्रण दिया। बस वह निमन्त्रण मिलना था कि चौहान साहेब सेठ जी के मित्रों की कोटि में आ गए। कांग्रेस सरकार बनने पर तो चौहान साहेब की आवभगत में और भी चार चाँद लग गए और आज कल तो सेठ भानामल जी के सम्पूर्ण कार्य-क्षेत्र में चौहान साहेब का ही बोल बाला था। 'चौहान साहेब में रात को दिन और दिन को रात बनाने की शक्ति विद्यमान है', यह वाक्य उनकी प्रशंसा में सेठ जी आजकल सगर्व उच्चारण करते थे और इसे सुनकर मुखाकृति पर कोई भाव न लाते हुए भी अन्दर ही अन्दर चौहान साहेब गदगद हो उठते थे। (आज चौहान साहेब शक्ति के श्रोत और धनोपार्जन के साधन थे) सेठ भानामल जी की दृष्टि में आज उनका मूल्य आँकना असम्भव था।

गत मास जब सेठ क्लाथ मिल्ज में हड़ताल हुई थी तो कॉमरेड विमला कर्मचारियों की प्रतिनिधि बन कर चौहान साहेब से मिली थी और यहीं से इन दोनों के पारस्परिक परिचय का युगारम्भ हुआ था। चौहान साहेब को झुकना पड़ा था और कर्मचारियों की मांगें पूरी हुई थीं। सरकारी माल समय पर देना था इसलिए चौहान साहेब के कहने से उस समय सेठ भानामल जी भी झुक गए थे परन्तु वह बात अभी तक काटे की भांति सेठ जी के दिल पर खटक रही थी। सेठ भानामल जी अकेले में बैठ कर बड़बड़ा रहे थे—कर्मचारी हमारे स्वामी बनना चाहते हैं। उँगली पकड़ कर पहुँचा पकड़ने की ठान लेते हैं। हमारा ही नमक खाते हैं और कम्बख्त हमें ही गुर्राते हैं। सीना तान कर सामने आते हैं, लाल पीली आँखें निकालते हैं और प्रार्थना करके नहीं, अकड़ के साथ अपना वेतन बढ़वाते हैं, भत्ता लेते हैं, ख़ूराक लेते हैं। कर्मचारियों की इस अकड़ के बल मुझे निकालने ही होंगे। कल सरकारी माल का आर्डर समाप्त होने पर मैं

इस समस्या को स्वयं खड़ी करूँगा और उनके वेतन में कटौती करके ही दम लूँगा। इस विषय में कॉल साहेब की सम्मति ही मान्य है। कॉल साहेब ही आज तक कर्मचारियों से सुलझते आए हैं और उन्होंने सर्वदा ही इन कर्मचारियों के संगठन को छिन्न-भिन्न किया है। उनके सामने यह भी चूहों की तरह दुम दबा जाते हैं। बेचारे चौहान साहेब ने तो कांग्रेस की लीडरी की है। उन्हें क्या पता कि कर्मचारी लोग कितने मक्कार और समय पर धोखा देने वाले होते हैं। इनके साथ तो पूरे दाव घात से चलना होता है। मिल चलाना और कर्मचारियों को अपने पंजे में दबा कर रखना भी वह समस्या है कि जिस पर अधिकार पूर्वक कॉल साहेब ही क़ाबू कर सकते हैं। कॉल भी अपने ढंग का निराला ही कार्य-संचालक मेरे हाथ लगा है। ईश्वर की कृपा से ही ऐसे योग्य व्यक्ति प्राप्त होते हैं।

सेठ जी इन्हीं विचारों में निमग्न थे कि सामने से चौहान साहेब आते दिखलाई दिए। चौहान साहेब को आते देखकर सेठ जी के विचार-वान मस्तिष्क को कुछ आराम मिल जाता था परन्तु इस कर्मचारियों की समस्या ने आराम को परेशानी में परिणित किया हुआ था।

"कहिए किस चिंता में निमग्न हैं ?" चौहान साहेब ने अन्दर आते हुए कहा और आकर सेठ जी के पास वाले गाऊ तकिए का सहारा लेकर चौहान साहेब भी सेठ जी की ही भांति एक ओर को पसर गए।

"चिन्ता क्या एक है चौहान साहेब ! मस्तिष्क अनेकों चिंताओं और विचारों से घिरा रहता है; परन्तु आजकल तो आपके कर्मचारियों की चिन्ता मस्तिष्क में घुन के समान लग गई है। कम्बख्त के बच्चे गुड़गुड़ा-गुड़गुड़ा कर छाती पर पैर रखते चले आते हैं। हमारा करोड़ों रुपया मिलों में लगा पड़ा है। यह समझते हैं कि यह सब इनके बाप दादों का माल लगा हुआ है। यदि इनका बस चले तो कारखाने की एक एक कील निकाल कर ले जाएँ। भगवान ने इन्हें इतनी शक्ति नहीं दी, नहीं तो न जाने यह लोग क्या कुछ कर गुजरें चौहान साहेब !" और इतना कहकर विचारों की गहन गम्भीरता में खोपड़ी पर गर्मी अनुभव करते हुए सेठ भानामल जी ने अपने सिर की पगड़ी उतार कर एक ओर रखते हुए हाथ फेरा।

चौहान साहेब अपनी पुरानी बान के अनुसार तनिक मुस्कुरा कर बोले, "सेठ जी ! यह सब कुछ समय-समय का फेर है। कभी समय चढ़ता और कभी

उतरता है। आपका विशाल मस्तिष्क क्या भगवान ने इन साधारण कर्मचारियों की समस्याओं को उलझाने और सुलझाने के लिए ही बनाया है? न जाने कितनी बड़ी बड़ी व्यापार की ग्रन्थियाँ अभी तक संसार में बँधी पड़ी हैं। आप अपने मस्तिष्क को सोच-विचार कर उन पर लगाइए और इन व्यर्थ की छिछली समस्याओं को समस्या न गिन कर योंही चलने दीजिए। समय आने पर समस्याएँ स्वयँ सुलझ जाती हैं, ग्रन्थियाँ स्वयँ खुल जाती हैं।"

सेठ भानामल जी ने चौहान साहेब के शब्दों को एक दो बार मन में दुहराया और फिर अपनी कर्मचारियों वाली समस्या का हलकापन अनुभव करके उसे सुलझाने का भार चौहान साहेब पर छोड़ दिया। सेठ जी ने मन ही मन फिर विचारा कि आख़िर वह कौन सी व्यापार की महान ग्रन्थियाँ हैं कि जिन्हें विश्व के व्यापारी अभी तक खोल नहीं पाए परन्तु समझ में न आने पर भी चौहान साहेब के सम्मुख अपना हलकापन प्रकट करना उन्होंने उचित नहीं समझा और गम्भीर मुख-मुद्रा बना कर यही प्रदर्शित करने का प्रयत्न किया कि वह सब कुछ समझ गए हैं। सेठ जी क्या समझ गए हैं यह जानने का चौहान साहेब ने भी प्रयत्न नहीं किया और उन्हों ने भी यह समझते हुए अपनी गम्भीर मुख-मुद्रा बनाली कि मानो उन्होंने कोई विशेष रहस्यपूर्ण बात सेठ जी को बतला कर उन पर एक महान उपकार कर डाला है और एक क्षण दोनों इसी प्रकार गम्भीर मुख मुद्रा बनाए बैठे रहे।

इसी समय चौहान साहेब बातों की दिशा बदल कर बोले "हाँ! तो सेठ जी! आपने फिर उस दावत के विषय में क्या विचार किया? आगामी सप्ताह में आप विदेश जा रहे हैं। दावत इसी सप्ताह में होनी चाहिए। आप जानते ही हैं कि दावत को देर होने में पारस्परिक सम्पर्क टूटने लगते हैं। आज तो सम्पर्कों की ही दुनियाँ का बोल बाला है सेठ जी! (बातों पर बातों के पुल बनाए जाते हैं)। वास्तविकता देखने कौन भड़वा आता है? क्या ज़माना आ गया है आज भी? यदि वास्तविकता खोजने बाज़ार में निकलो तो शायद वस्तु में तो क्या व्यक्ति में भी वास्तविकता मिलनी कठिन है।" अपनी झोंक में आकर चौहान साहेब कहते चले जा रहे थे। बातों के बहाव में विषय को भूल जाना चौहान साहेब की पुरानी आदत थी परन्तु घुमा फिरा कर बात को ले आते थे फिर उसी प्रधान विषय पर। अचानक उन्हें कल बाज़ार से लाए हुए घी के

कनस्तर का ध्यान आ गया और वह कहने लगे, "घी में कोटोजम मिलाया जाता है, कोटोजम में गो ` का तेल मिलाया जाता है, गोले के तेल में चर्बी मिलाई जाती है, चर्बी में क्या मिलाया जाता है यह मैं नहीं जानता परन्तु चर्बी का व्यापारी भी उसमें कुछं न कुछ उलट फेर करता अवश्य होगा सेठ भानामल जी यह मैं निश्चय पूर्वक कह सकता हूँ। आज की दुनियाँ में बनावट और मिलावट का ही नाम व्यापार रह गया है।"

"जी हाँ! चौहान साहेब! बनावट और मिलावट पर मैं भी आपके जैसे व्याख्यान देना जानता हूँ। मेरी खोपड़ी में भी भेजा भगवान ने रख कर भेजा है और कुछ विचार-शक्ति भी उसने मुझे प्रदान की है। व्यापारी व्यापार चार पैसे के लाभ के लिए करता है, कोरी हानि उठाने या झक मारने के लिए नहीं करता। आज के व्यापार में रखा ही क्या है? एक कौड़ी की भी बचत नहीं है एक कौड़ी की भी और फिर जो इनकम टैक्स का जूता सिर पर रहता है वह अलग नाक में दम किए है। साथ में अफ़सरों की चूंट चहेड़ भी लगी रहती है, जो आपसे छुपी नहीं है। फिर कहिए कि आज की दुनियाँ में बिना बनावट और मिलावट के व्यापारी किस प्रकार जीवित रह सकता है और किस प्रकार अपने बाल- बच्चों को पाल सकता है? दुनियाँ में सब आप जैसे ही तो 'आगे नाथ न पीछे पगहा' वाली कहावत को सार्थक करने वाले व्यक्ति नहीं होते।"

सेठ जी ने यह बात इतनी गम्भीरता पूर्वक कही कि चौहान साहेब को अपने पिछले कहे शब्दों पर स्वयं लज्जा-सी आने लगी। उन्होंने मन ही मन सोचा कि वास्तव में व्यापारी जब व्यापार करने चला है तो चार पैसे के लाभ के लिए और चार पैसे का लाभ उसे बिना बनावट या मिलावट के हो नहीं सकता। यदि इस परिस्थिति में उसने बनावट या मिलावट का आश्रय लिया हो तो कोई पाप नहीं किया। उसे भी आख़िर अपने बाल-बच्चे पालने हैं, अपना घर गृहस्थ चलाना है, बच्चों को पढ़ाना लिखाना और उनके शादी विवाह करने हैं। यह सब वह फिर कहाँ से करे? मान लो यदि कल को चौहान साहेब ही अपना विवाह किसी लड़की से करलें और अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए किसी व्यापार की ओर अग्रसर हों और उस समय उस व्यापार में ईमानदारी से परिश्रम करने पर एक पैसा भी न बचे तो क्या उन्हें बनावट और मिलावट का ही आश्रय नहीं लेना होगा? मानसिक आदर्शवाद को ठेस लगने पर

भी व्यावहारिक जीवन में चौहान साहिब की विचारधारा इस प्रकार सेठ भानामल जी के विचारों से मिल जाती थी ।

जनता के मंच पर जाकर आदर्शवादी विचार छौंकने के लिए सेठ भानामल जी ने चौहान साहिब को खुली छुट्टी दी हुई थी और वह स्वयं भी चौहान साहिब के साथ जाकर मंच पर बैठते हुए उनके व्याख्यान का सिर हिला डुला कर समर्थन करते थे । बनावट और मिलावट की बातें जब उनके समक्ष आती थीं तो अपने एक हाथ पर दूसरा हाथ मल कर इसे पाप और घोर अपराध घोषित करते थे । जितनी निर्भीकता से सेठ भानामल जी जनता के समक्ष इस मिलावट और बनावट के दोष की निन्दा करते थे उतनी ही निर्भीकता पूर्वक वह अपने मैनेजर को कमरा बंद करके पिलखवे के बने हुए खड्डी के खद्दर पर अपने मिल की मोहर लगाने की आज्ञा देकर चुपके से बाहर खिसक जाते थे ।

चौहान साहिब सेठ जी के घनिष्ठतम मित्रों में से थे और उनकी दृष्टि में वह अपना रत्ती-रत्ती रहस्य उन पर खोल देते थे परन्तु बात वास्तव में यह नहीं थी । चौहान साहिब यदि राजनीति के क्षेत्र के खिलाड़ी थे तो सेठ भानामल जी भी व्यापार-विज्ञान के धुरन्धर आचार्य थे । वह जानते थे कि (आजकल की राजनीति भी अर्थशास्त्र के ही बल पर चल रही है) ऊपर से चाहे भले ही वह चौहान साहिब के सम्मुख नत मस्तक होकर उनकी प्रशंसा में यह शब्द उच्चारण कर देते हों कि 'चौहान साहिब ! हमारा तो सब कारोबार आपके ही बल पर चल रहा है' परन्तु वह अन्दर से यह पूरी तरह जानते थे कि (चौहान साहिब उनके अपने हाथ की कठपुतली हैं जिन्हें वह जिधर चाहें नचा सकते हैं) उनके पूरे-पूरे अहसान हैं चौहान साहिब के कन्धों पर । अहसानों के बोझे से लदा हुआ साड मालिक की इच्छा से ही दाये बाये मुख मोड़ सकता था । आज चौहान साहिब जंगलों में हरियाले खेतों के बीच स्वतन्त्रतापूर्वक विचरने वाले साड न होकर दिल्ली म्यूनिसिपैलिटी द्वारा खरीद कर मैले को गाड़ी में जोते जाने वाले सांड थे जिन्हें वह मैला ढोना ही होता था जिसे सेठ भानामल जी उनकी गाड़ी में लाद देते थे परन्तु उसे ढोते हुए भी चौहान साहिब गर्व से यह कहने में नहीं चूकते थे, "भार से हमें क्या डराते हो सेठ जी ! मुसीबतों के तो पर्वत हमने अपने कन्धों पर उठाए हैं । यह कठिन से कठिन कार्य करने में भी उसी स्थिरता का आचरण करते हैं जो साधारण से साधारण कार्य में देखा जाता है ।" और चौहान साहिब

के इस वाक्य का सेठ जी सिर डुलाकर सोलहों आने समर्थन करने के पश्चात् उनकी प्रशंसा में उनके पूर्व इतिहास की एक दो महत्वपूर्ण घटनाएँ सुनाकर उन्हें अधर में उठा देते थे।

वास्तव में चौहान साहेब का विशेष सम्बन्ध सेठ भानामल जी की हवाई बातों से रहता था या सरकारी पर्मिट और आर्डर इत्यादि लाने का कार्य उनके ऊपर थे। चौहान साहेब के आर्डर लाने और पर्मिट प्राप्त करने का प्रयोग किस रूप में होता है इसका सम्बन्ध उनसे नहीं था। चौहान साहेब को इतना अवकाश कहाँ कि वह साधारण निम्नकोटि की व्यापारिक उलझनों में अपना सिर खपाए रखें। उनका तो अधिकांश समय जनता के कार्य-क्रमों में ही व्यतीत हो जाता था। उनके प्राप्त किए गए आर्डर और पर्मिटों का प्रयोग करने का काम सेठ भानामल जी को ही अपने ऊपर लेना होता था। जिस दिन प्रथम बार चौहान साहेब से सेठ जी की व्यापारिक दृष्टिकोण को लेकर बात चीत हुई थी उस दिन चौहान साहेब ने यह ठोक बजाकर निश्चय कर लिया था कि वह आर्डर लाने और पर्मिट प्राप्त करने के अतिरिक्त और कोई कार्य नहीं कर सकेंगे और सेठ जी ने उनकी यह बात सहर्ष स्वीकार करके कह दिया था, "उसकी आप चिन्ता न करें चौहान साहेब! मैं सब कर लूँगा। मेरे पास प्रत्येक कार्य का पृथक-पृथक विभाग है। सब कार्य कलों की भांति होगा। यदि आप किसी कार्य को एक दिन में चाहेंगे तो वह एक घंटे में होगा।"

चौहान साहेब जिस कार्य के लिए आए थे उसे करके चले गए परन्तु सेठ जी का मस्तिष्क उनके चले जाने के पश्चात् फिर कर्मचारियों की समस्या पर उलझ गया। सरकारी आर्डर पूरा करना था, इसलिए उन्होंने उस समय उनकी माँगें मान ली थीं परन्तु स्थायी रूप से तो उन माँगों के सामने नहीं झुका जा सकता। कर्मचारी, कर्मचारी कहते हुए सेठ भानामल जी विमला विमला कहने लगे। विमला की कार्यवाहियों पर वह बैठे-बैठे दांत किट-किटाने लगे और बड़-बड़ाकर बोले, 'इस लड़की ने मेरी नाक में दम कर दिया है। रुपए का लालच देता हूं तो उसका इसपर प्रभाव नहीं पड़ता; प्यार के डोरे डालने का प्रयत्न किया तो बात उपहासस्पद हो उठी, बातों में किसी की वह आना नहीं जानती और फिर उसे काम से हटाया भी नहीं जा सकता।' इसी प्रकार बड़-बड़ करते हुए वह कितनी ही देर तक न जाने क्या कहते रहे और अन्त में

उन्होंने यही निश्चय किया कि कल सरकारी आर्डर का माल पूरा हो जाने पर वह कर्मचारियों के वेतनों में जो बढ़ोत्री हुई थी उसकी कटौती का प्रश्न खड़ा अवश्य करेंगे। कोई चिन्ता नहीं यदि इसके लिए उन्हें कुछ दिन को मिल भी बन्द करना पड़े। मिल मैनेजर कॉल साहेब का भी यही मत था। ऐसा करने से चौहान साहेब को कुछ बुरा अवश्य लगेगा क्योंकि मिल-कर्मचारियों को जो कुछ भी आश्वासन दिए गये थे वह उनके द्वारा दिए गये थे परन्तु कर्मचारियों से काम तो मैनेजर को ही लेना होता है। अपनी समस्याओं से कॉल साहेब स्वयँ झगड़ेंगे। चौहान साहेब का क्या है जहां एक और थैली रुपयों की उनके पास पहुँचाई और बस······बेचारे बड़े ही भले आदमी हैं, सब कुछ भुला डालेंगे। यार आदमी ठहरे। मेरे लिए तो बेचारे मैं जो कुछ भी चाहता हूं स्याह सुफ़ैद सभी कुछ करने पर उद्यत हो जाते हैं।

और सेठ भानामल जी फिर विचार-निमग्न हो गए।

: ३ :

मि० रामनाथ कॉल 'सेठ क्लाथ मिल्ज़' के मैनेजर हैं और सेठ भानामल जी के व्यापारिक कोल्हू के वह वह बेलन हैं कि जिनके सुपुर्द उस कड़े से कड़े गन्ने को किया जाता है कि जो अन्य किसी बेलन की दाब न खा सके। मिस्टर कॉल के जीवन में नवीन और पुरातन का वह जमाव है कि दोनों के कम्पार्टमेंट्स (स्थान) उन्होंने जीवन में प्रथक प्रथक निश्चित कर दिए हैं। जैसा माल भी उनके सामने आता है वह उसे उसी तराजू पर तौलते हैं। यदि कहीं सम्मिश्रण की भी आवश्यकता होती है तो दोनों कोठरियों में से आवश्यकतानुसार विचारधाराओं को जुटा कर कार्य सिद्धि की ओर अग्रसर हो जाते हैं। किसी सभा, किसी सोसाइटी, किसी समाज, किसी बैठक अथवा किसी भी पार्टी में बैठकर कभी मि० कॉल को ऐसा अनुभव नहीं होता कि वह उससे बाहर के व्यक्ति हैं और उस सभा सोसाइटी के सदस्य भी तुरन्त ही उनमें अपनापन अनुभव करने लगते हैं। मारवाड़ी सेठों के बीच पगड़ी, बन्द गले का कोट, नीचे धोती और पैरों में देसी जूती पहिन कर गले में मोटे मोटे हीरे माणिक के कण्ठे लटकाकर आप पूरे मारवाड़ी बन जाते हैं तथा फ़ैशोनेबिल आज के युग के सूटधारियों में गैवर्डियन का सूट पहिन कर फैल्ट हैट धारी टाई कालर के साथ वह अपटूडेट बाबू हैं। चिकन के बेलदार कुर्ते पर अलीगढ़ फैशन का खड़ा

लट्ठेदार पायजामा और सितारों वाली देसी जूती पहिने भी नवाबी वेश में कभी-कभी वह घूमते हैं और आधुनिकतम किश्तीनुमा एक इंच बाढ़वाली टोपी के साथ सिल्क के कुर्त्ते वाले कांग्रेसी सूट तो उनकी कपड़ों की आल्मारियों में न जाने कितने भरे पड़े हैं ?

कॉमरेड् विमला मैंनेजर साहेब को बहुरूपिया कहकर पुकारती है और साथ ही अन्य व्यक्ति उनकी अनेक रूपता का व्यावहारिक क्षेत्र में लोहा भी मानते हैं। परन्तु कॉमरेड विमला के मन में इस गिरगिट वाली व्यवहार-कुशलता के लिए कोई विशेष महत्वपूर्ण स्थान नहीं है। सचाई की कमी में, धोखेबाज़ी के युग में, मिलावट और बनावट के वातावरण में यह व्यवहार-कुशलता व्यापार कहलाती है। आज का व्यापारी केवल माल पर मोहर लगाने भर का मूल्य समझता है, माल का नहीं और यही दशा आज के क्रय-विक्रय करने वाले की भी है। माल में मिलावट और बनावट करके उसे कम दामों पर बेचना ही व्यवहारकुशलता की कसौटी है, माल में उन्नति करके ऊँचे दामों का माल बनाना नहीं। आज के व्यापारी वर्ग की इस निम्न स्तर पर ठहरने वाली प्रणाली के कर्णधार के रूप में वह कॉल साहेब का मूल्यांकन करती है।

कभी-कभी कॉमरेड विमला झल्लाती है अपनी वर्त्तमान सरकार की उस निर्बल नीति पर कि जिसके अन्दर व्यापारी समुदाय राष्ट्र के प्राणों के साथ यह घातक खिलवाड़ कर रहा है। जनता की सरकार जनता के हित और अहित की गहराइयों तक पहुँचने में असमर्थ है। चाहे जिस वस्तु के बाज़ार में भी निकल जाइए कहीं वास्तविकता का नाम मात्र भी देखने को न मिलेगा। फ़ैशन से लगा कर आवश्यकता की प्रत्येक वस्तु तक सब बनावटी हैं। दवाइयों की शीशियों पर लेबिल लगा कर उनमें रंगीन पानी भर दिया जाता है। बीमार मर रहा है और उसे औषधि के स्थान पर पानी पिलाया जा रहा है। यह है आज के समाज का पतन, यह है आज के राष्ट्र की दशा। इसे सुधारा नहीं जा सकता। यह नव-निर्माण चाहता है। दोषी घूस लेकर मुक्त कर दिया जाता है, दवाखानों में दवाइयाँ बेच कर रोगियों को रंगीन पानी पिलाया जाता है, सीमेंट बेचकर रेते से सरकार के भवनों का निर्माण होता है—चरित्र की निर्बलता पराकाष्ठा को पहुँच चुकी है) जनता का चरित्र सुधारने के लिए सरकार को अपने आचरण पर

ध्यान देना होगा और सरकार के आचरण में सचाई आए बिना राष्ट्र पतन की ओर जाता हुआ नहीं रुक सकता

का० विमला की बातें जब चौहान साहेब से होती हैं तो वह भी इस प्रकार की बातों का कड़े शब्दों में विरोध करते हैं परन्तु पिछले दिनों उन्हीं के लाए हुए मिलिट्री के सरकारी आर्डर के बिस्कुटों में अरारोट के स्थान पर जब मैदा का प्रयोग हुआ था तो वह सेठ भानामल जी के सम्मुख एक शब्द भी न बोल सके थे। यदि बोले तो भानामल जी ने कड़क कर कहा—'अरारोट का प्रयोग करके आप माल सप्लाई कर सकते हैं ? इंन्सपैक्टरों का पेट भर सकते हैं ? फिर इतने लो रेट पर माल भेजा भी किस प्रकार जा सकता है ? और यदि इस पर चौहान साहेब ने कहा कि—'तो न भेजिए' मैं कब कहता हूँ कि आप भेजिए। माल अवश्य भेजना है यह हकीम जी ने नुस्खे में नहीं लिख दिया। परन्तु इस प्रकार का माल भेजकर आप राष्ट्र को पतन की ओर लेजा रहे हैं।' यह सुनकर सेठ जी तुनक कर कह उठे, 'जी हाँ, न भेजिए। तनिक सी ज़बान हिलती है आपकी तो चौहान साहेब ! आपके इस डेढ़ कौड़ी के आर्डर के लिए मैं अपनी दस करोड़ रुपए की फ़र्म को ब्लैक लिस्ट करा लूँ। यही चाहते हैं आप ?' और चौहान साहेब को मुँह नीचा करके चुप रह जाना पड़ा। संध्या को सेठ जी स्वयँ चौहान साहेब की कोठी पर, जो कि उन्हीं ने चौहान साहेब को रहने के लिए दे रखी थी, जाकर एक दस हज़ार रुपए की गड्डी मेज पर पटकते हुए बोले "इस बार सर्दियों के कपड़े क्या बनेंगे ही नहीं ?" और उनके पीछे पीछे दर्जी पशमीने के दो थान लिए हुए आ पहुँचा। चौहान साहेब के चार कुर्ते और दो शेरवानियाँ नाप कर ले गया। ड्राइवर ने पशमीने का एक शाल लाकर मेज़ पर रख दिया। यह शाल सेठ जी स्वयँ चौहान साहेब के लिए गाँधी आश्रम चाँदनी चौक से ख़रीद कर लाए थे। और अरारोट के स्थान पर मैदा लग कर चली गई। इन्सपैक्टरों ने बिस्कुट पास कर दिए। अब बला से मिलिट्री के हॉसपिटल में पड़ा हुआ सैनिक उन्हें खाकर अपने प्राणों से हाथ धो बैठे। राष्ट्र के लिए प्राणों का बलिदान देने वाला भारत का सैनिक एक अरारोट के स्थान पर मैदे के बिस्कुट की भेंट चढ़ गया।

कॉमरेड विमला का मन इसी प्रकार के विचारों में छटपटा रहा था कि सामने से उसे मिल मैनेजर कॉल साहेब की कार आती हुई दिखलाई दी। कार

आकर कॉमरेड विमला के मकान के सामने रुक गई और उसमें से कॉल साहेब उतरे। कॉमरेड विमला ने बाहर मकान के बरांडे में आकर उनका स्वागत किया और आदर के साथ उन्हें अन्दर बैठक में लिवाकर ले गई।

कॉल साहेब अधेड़ आयु के व्यक्ति थे, कुछ रंगीन भी, परन्तु सीमा के अन्दर, कार्य पहिले और रंगीनियाँ बाद में। कॉमरेड विमला युवती थी परन्तु जीवन में बहुत व्यवस्थित। व्यर्थ के लिए एक शब्द भी मुख से निकालना तो उसने सीखा ही नहीं था। वह कॉल साहेब को अपने मकान पर देख कर समझ गई कि अवश्य कुछ न कुछ विशेष बात है, कुछ दाल में काला है और हो न हो वह कोई सेठ भानामल जी का संदेश लेकर ही उसके पास आए हैं। कॉल साहेब को अन्दर कुर्सी पर बिठला कर कॉमरेड विमला उनके सामने वाली कुर्सी पर सावधानी से बैठ गई।

जब दोनों आराम से बैठ गए तो काल साहेब अपना फैल्ट हैट उतार कर मेज़ पर रखते हुए मुस्कुरा कर बोले, "बैठक ऐसी सुन्दर और उसमें कोई सोफ़ासेट भी नहीं डलवाया हुआ; कामरेड विमला! जितना रुपया वेतन में पाती हो उसमें से कुछ अपने रहन सहन पर भी व्यय कर दिया करो। सादगी मैं नहीं कहता कि बुरी वस्तु है परन्तु ऐसी भी क्या सादगी कि जिसमें जीवन का स्वाभाविक विकास भी न हो सके।" और इतना कह कर कॉल साहेब ने लकड़ी की कुर्सी पर बैठने में कुछ कठिनाई सी अनुभव करते हुए उसके तकिए से अपनी कमर लगा ली। कॉमरेड विमला ने मुस्कुरा कर कॉल साहेब के मुख पर देखा और फिर अपने मुख पर हल्की सी गाम्भीर्य की रेखा लेकर धीरे से बोली, "जीवन के स्वाभाविक विकास को आँकने की कसौटी क्या मैनेजर साहेब की दृष्टि में सोफ़ा सेट ही है? यदि यही है तो मैं आज ही आर्डर प्लेस कर देती हूँ काश्मीरी गेट पर किसी फरनीचर-मर्चेन्ट को।"

कॉल साहेब कॉमरेड विमला की हाज़िरजवाबी पर खिलखिलाकर हँस पड़े और फिर धीरे धीरे हँसी को मुस्कान में बदलते हुए बोले, "खूब कहा कॉमरेड विमला तुमने, खूब कहा। कॉमरेड विमला तुम सच जानो मुझे जी हुज़ूरी करके हाँ में हाँ मिलाने वाले व्यक्ति के प्रति बड़ी भारी चिढ़ है। जी-हुज़ूरी करना मैं स्वयँ भी कभी पसंद नहीं करता। जिस प्रकार मैं सेठ भानामल जी की कभी जी-हुज़ूरी नहीं करता उसी प्रकार मैं अपने कर्मचारियों से भी यही आशा करता हूँ कि वह कभी

मेरी जी-हुजूरी न करें। जी-हुजूरी करने वालों को कामरेड विमला ! मैं आस्तीन का साँप समझता हूँ। इस प्रकार के चाटुकार ऐसा छुप कर डंक मारते हैं कि प्राणों पर ही बन आती है।" और इतना कहकर कॉल साहेब ने एक बार खाँसते हुए भेदपूर्ण दृष्टि से कॉमरेड विमला के मुख पर आने वाले हाव भावों को परखा।

"आपके अनभव सर्वोमुखी हैं मैनेजर साहेब ! इसलिए हम लोग आपकी पहुँच तक भला कहाँ पहुँच सकते हैं ? हम लोग तो कर्मचारी हैं। ईमानदारी के साथ परिश्रम करके अपनी योग्यता के अनुसार अपने कार्य का मल्य चाहते हैं। हमारे श्रम पर आपके अनुभव अवलम्बित हैं। वह क्या हैं, उनके क्या लाभ हैं और उन लाभों का प्रयोग इस संसार में कब तक किस रूप में होता रहेगा इसके *विषय में मैं कुछ नहीं जानती।" सरलता पूर्वक कॉमरेड विमला ने कितनी बड़ी* बात कह डाली कि उसे सुन कर ऊपर से प्रभाव रहित से प्रतीत होते हुए भी कॉल साहेब मन ही मन तिलमिला उठे। जी में एक बार आया कि इस गुड़िया सी चार हड्डियों की पसली वाली छोकरी को मसल कर पीस डालें और देख लें कि वह कैसी कर्मचारियों की नेता बनने चली है परन्तु उन्हें फिर अपने डाईंग डिपार्टमेंट (रंग विभाग) का ध्यान आ गया। कितने सलौने रंग वह तय्यार करती है कि ग्राहक के नेत्रों को अपने ऊपर चिपकाने की क्षमता उनमें होती है। फिर कॉमरेड विमला के जैसे फ़ास्ट कलर्स (पक्के रंग) तो भारत की किसी अन्य मिल का कोई डाइंग मास्टर (रंग विभाग का अध्यक्ष)आज तक दे नहीं पाया है।

"तुम तो सिद्धांतों की दुनियाँ में जा फँसी कॉमरेड विमला।" मुस्कुरा कर पैर पर पैर रखते हुए मैनेजर कॉल साहेब बोले, " मैं तुम्हारे निर्भीक विचारों का सम्मान करता हूँ। तुम्हें याद होगा कि गत मास मे जब चौहान साहेब भी कर्मचारियों का वेतन बढ़ाने और मँहगाई दुगनी करने के पक्ष में नहीं थे तो मैंने उसका समर्थन किया था। मैं भी अपने को एक कर्मचारी ही मानता हूँ।" गम्भीरता पूर्वक कॉल साहेब ने इतना कहकर जेब से डीमैक्रोपोलो एण्ड कम्पनी का सिगारनुमा सिग्रेट का टिन निकाल कर मेज़ पर रखते हुए उसमें से एक सिग्रेट सुलगाया और एक लम्बा कश खींच कर गोलाकार धुएँ के गुब्बारे बैठक के वायमण्डल में छोड़ने आरम्भ कर दिए।

कॉमरेड विमला मैनेजर साहेब के मुख पर अपने नेत्र गड़ाए मुस्कुरा रही थी और मन ही मन सोच रही थी कि देखो यह एक भूखा भेड़िया मुझे नासमझ

बकरी समझ कर कैसी बातें छौंक रहा है। नौ सौ चूहे खाकर यह बिल्ली आज पुजारिन बनने चली है। परन्तु ऐसे अवसर पर भी मैनेजर साहेब की हाँ में हाँ मिलाने से कॉमरेड विमला का मन विद्रोह कर रहा था। व्यर्थ के लिए किसी की हाँ में हाँ मिलाना कॉमरेड विमला ने नहीं सीखा था। जब कॉमरेड विमला को बोलने में देर हुई तो कॉल साहेब फिर स्वयँ ही बोल उठें, "तुम विश्वास नहीं कर सकोगी मेरे कथन पर कॉमरेड विमला! परन्तु मेरा आगामी जीवन तुम्हारे ऊपर मेरी सत्यता पूर्ण रूप से प्रमाणित कर देगा। तुम मेरे गत जीवन की झांकियों पर दृष्टि डाल रही हो।" यह बात मिस्टर कॉल ने इतनी गम्भीरता पूर्वक कही कि कॉमरेड विमला के विचार डाँवाडोल से हो उठे और वह समझ ही न पाई कि वास्तव में कॉल साहेब का जीवन इतना परिवर्तित कैसे हो चुका है और यदि वास्तव में वह हो चुका है तो उसका कुछ कारण अवश्य होना चाहिए।

कॉल साहेब इतना कहकर उठ खड़े हुए और अपनी कार की ओर चल दिए। कॉमरेड विमला कुछ भी न समझ पाई कि वह किस लिए आए, क्यों चल दिए और वास्तव में उनके आज यहां आने का क्या प्रयोजन था? बैठक से निकल कर जब बाहर आए तो कॉमरेड विमला उनके पीछे पीछे थी। ज्योंही वह कार में बैठने को थे कि एक ठेला सामने से आता हुआ दिखाई दिया। ठेले पर एक सोफ़ासेट लदा हुआ था और चार मैंडक नुमा बढ़िया सागौन की कुर्सियाँ तथा बीच की एक गोलाकार मेज़।

"यह फर्नीचर मैंने तुम्हरी बैठक के लिए मँगाया है कॉमरेड विमला" साधारणतया मुख पर स्वाभाविक गाम्भीर्य लाकर कॉल साहेब बोले। अपने व्यक्तित्व और उच्च पद के सम्पूर्ण प्रभाव में उन्होंने इस समय कॉमरेड विमला को दबा देना चाहा।

"परन्तु क्यों? मुझे तो इसकी आवश्यकता नहीं।" दृढ़ता पूर्वक कॉमरेड विमला बोली, "आपने व्यर्थ कष्ट किया है मैनेजर साहेब! मेरी बैठक में इस फ़र्नीचर को स्थान नहीं मिलेगा।" और इतना बहुत स्थिरता पूर्वक कहते हुए भी कॉमरेड विमल के मुख पर वही स्वाभाविक मुस्कान खेल रही थी।

"परन्तु क्यों? क्या इसलिए कि यह कॉल साहेब ने भेजा है? यह किसी चीज़ की घूस मैं तुम्हें नहीं दे रहा हूँ। यह कॉमरेड कॉल का कॉमरेड विमला को

उपहार है।" मुस्कराते हुए कॉल साहेब बोले और आगे बढ़कर अपनी कार में बैठने लगे।

"परन्तु नहीं ! आप एक बहुत बड़े बाजीगर हैं मैनेजर साहेब ! और आपकी बाजीगिरी से टक्कर लेना विमला के बूते की बात नहीं। आपको कॉमरेड कॉल बनने में अभी समय लगेगा। बनना आपको अवश्य होगा एक दिन परन्तु······।"

"परन्तु नहीं कॉमरेड विमला ! मेरे जीवन में क्रान्ति की आजकल एक लहर दौड़ रही है। तुम यदि यह फ़रनीचर इस समय लौटा दोगी तो समझ लो कि इससे मेरा अपमान होगा और मेरे विचारों को ठेस लगेगी।" और फिर कॉल साहेब ने ऐसी दृष्टि से कॉमरेड विमला के मुख पर देखा कि यदि कॉमरेड विमला के अतिरिक्त कोई अन्य व्यक्ति होता तो निश्चय ही फ़रनीचर को बैठक में उतरवाना स्वीकार कर लेता। परन्तु कॉमरेड विमला किसी रूप में भी उसे स्वीकार न कर सकी। कॉल साहेब इस समय भारी मन से फ़रनीचर वापिस लौटा कर कार में बैठ गए परन्तु उन्होंने कॉमरेड विमला से एक शब्द भी न कहा। चलते समय उन्होंने केवल इतना ही कहा, "कॉमरेड विमला तुमने हमें समझने में भूल की है। आज हम केवल इतना ही कहेंगे।"

"मैंने भूल नहीं की।" दृढ़ता पूर्वक कॉमरेड विमला ने उत्तर दिया। "मैंने आज तक जीवन में किसी का कोई उपहार कभी स्वीकार नहीं किया। उपहार देनेवाले समाज की पोल से मैं भली-भांति परिचित हूँ। उपहार चाहे मित्र का हो या अधिकारी का, विवाह का हो या दावत का, कभी भी मजदूरी नहीं हो सकता। मेरे मस्तिष्क में जिस समाज का ढाँचा है उसमें उपहार केवल चिन्ह [Token] के रूप में ही स्वीकार किया जा सकता है, किसी भी उपयोगी वस्तु के रूप में नहीं।" कॉमरेड विमला ने अपना मस्तक ऊँचा करते हुए कहा और वास्तव में इस समय कॉल साहेब को कॉमरेड विमला के विचारों का सम्मान करना पड़ा। कॉमरेड विमला के विचारों पर कॉल साहेब का सिर झुक गया।

कॉल साहेब ऊपर से उसी प्रकार मुस्कुरा रहे थे परन्तु उनका मन कह रहा था कि मिस्टर कॉल आज इस कल की छोकरी से मात खा गए। न उनके रौब ने काम दिया और न बनावट ने। सोफ़ासेट ठेले पर लदा लदाया ही वापस करना पड़ा।

कॉल साहेब की कार चली गई और कॉमरेड विमला अकेली आकर बैठक में बैठ गई। वह माथे पर हाथ रखे विचार निमग्न बैठी थी कि आखिर आज इस प्रकार काल साहेब के यहाँ आने का क्या कारण हो सकता था? अकारण तो यह धूर्त अपनी कोठी से हिल नहीं सकता। बड़े-बड़े सरकारी कर्मचारी इसके संकेतों पर नाचते हैं। कॉमरेड विमला विचार ही रही थी कि कॉमरेड अशफ़ाक ने बैठक के बाहर लाकर अपनी साइकिल खड़ी की और वह बहुत चिंता निमग्न सा अन्दर घुसता चला आया। कॉमरेड विमला के सम्मुख आकर भर्राई सी आवाज में बोला, "एक बहुत महत्वपर्ण सूचना मिली है कॉमरेड विमला!" और इतना कहकर वह सामने की कुर्सी पर बैठ गया। कॉमरेड अशफ़ाक की साँस चढ़ रहा था और होठ सूख रहे थे। बहुत तेजी से साइकिल दौड़ा कर लाने से उसका साँस फूलकर उखड़ गया था।

"क्या है विशेष सूचना?" आश्चर्य प्रकट न करते हुए कॉमरेड विमला ने पूछा और फिर कुछ उत्सुकता पूर्वक कॉमरेड अशफ़ाक के मुख पर आंखें टिका दीं।

"अभी अभी सेठ जी के टाइपिस्ट ने आकर सूचना दी है कि गत मास में कर्मचारियों को जो तरक्क़ी दी गई थी वह इस मास की इक्कत्तीस तारीख़ को समाप्त हो जाएगी। आगामी पहिली तारीख़ से फिर पुराने ही वेतनों पर कर्म-चारियों को काम करना होगा। ओवर टाइम और खुराक भी दुगने नहीं मिलेंगे।" कॉमरेड अशफ़ाक ने बहुत ही भारी स्वर में बतलाया।

कॉमरेड विमला समझ गई कि मिस्टर काल का आगमन आज उसके मकान पर किस कार्य के उपलक्ष में हुआ था और वह गम्भीर विचारों में निमग्न हो गई। कॉमरेड अशफ़ाक को कॉमरेड विमला ने कह दिया कि जब तक सेठ जी की ओर से इस आज्ञा की घोषणा न कर दी जाय उस समय तक किसी को कानों कान भी इसकी सूचना नहीं मिलनी चाहिए। टाइपिस्ट को कड़ाई के साथ सूचित कर देना कि वह इस महत्वपूर्ण सूचना को उस समय तक गुप्त ही रहने दे।

"यही होगा", कह कर कॉमरेड अशफ़ाक चल दिया और कॉमरेड विमला उठकर कमरे में चुपचाप नीचे को दृष्टि किए घूमने लगी। जब कॉमरेड अशफ़ाक साइकिल पर सवार होने को ही था तो कॉमरेड विमला को ध्यान आया कि उसने

कॉमरेड अशफ़ाक से एक प्याली चाय के लिए भी नहीं पूछा और तुरन्त शीघ्रता से बाहर जाकर कॉमरेड अशफ़ाक को रोकते हुए सुमधुर स्वर में बोली, "कॉमरेड ! एक प्याली गर्म चाय पीकर तो जाना ।" और अशफ़ाक नाँ न कर सका ।

टाइपिस्ट को गम्भीरता पूर्वक यह रहस्य छुपाए रखने का आदेश करके अशफ़ाक विमला के साथ अन्दर चला आया। अशफ़ाक के लिए कॉमरेड विमला अन्दर से स्वयं चाय बनाकर लाई और चाय पर भी कुछ गम्भीर बातें चलती रहीं। कॉल साहेब के आने की सूचना देते हुए विमला ने पूरी कहानी अशफ़ाक को कह सुनाई। अशफ़ाक सोफ़ा सेठ की बात सुनकर कुर्सी से उछलते हुए बोला, "कॉमरेड डलवा लेतीं इस धूर्त्त का माल तो। इस कम्बख्त का माल तो काज़ी को भी हलाल है। बैल क्या रोज-रोज ब्याने के लिए बैठता है?" और इतना कहकर वह जोर से हँस पड़ा।

: ४ :

'सेठ क्लाथ मिल्ज' के कर्मचारियों में सनसनी फैली थी। गत मास जो कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि की गई थी वह केवल इकत्तीस तारीख तक ही उन्हें दी जाएगी। आगामी मास की प्रथम तारीख से कर्मचारियों को पिछले ही वेतनों पर कार्य करना होगा। मैनेजर कॉल साहेब की इस नवीन आज्ञा की कापी नोटिसबोर्ड पर आ गई थी और मिल के प्रत्येक विभाग के अध्यक्ष के पास कर्मचारियों को सुनाने के लिए भी भेज दी गई। सभी कर्मचारियों ने मैनेजर की इस सूचना को भारी मन से सुना और उनके काम पर फुर्ती से चलते हुए हाथ धीमे पड़ गए। एक बार ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो किसी तीव्र वेग से चली जाती हुई कार को चालक ने हाथ का ब्रेक लगा दिया।

कॉमरेड अशफ़ाक ने अपने अध्यक्ष से मैनेजर कॉल की यह आज्ञा सुनी और वह तनिक व्यंग्य-भाव से बोला, "सरकारी आर्डर के माल की भी अन्तिम इन्सटालमेन्ट (किश्त) आज जा चुकी है। आज से और अच्छा दिन मैनेजर साहेब को इस शुभ समाचार के भेजने का भला और मिल भी कौनसा सकता था? अब यदि दो-चार दिन काम भी बन्द करना होगा तो सेठ जी सुगमतापूर्वक कर सकेंगे।" और इतना कहते हुए उस कर्मठ व्यक्ति ने अपनी आस्तीनों को पलटते हुए मुस्कुरा कर अध्यक्ष के मुख पर देखा।

"निश्चित रूप से यही बात है।" विभाग के अध्यक्ष ने भी मुस्कराते हुए कहा। "कॉमरेड अशफ़ाक! तुम भी जहाँ तक बातों की छान-बीन का सम्बन्ध है, बात की खूब गहराई तक पहुँचने का प्रयत्न करते हो। सागर की तह से कौड़ियाँ निकाल कर लाते हो। परन्तु सेठ भानामल जी की यह नीति अब चलनी कठिन है।" कुछ अपने शब्दों में दृढ़ता लेकर विभाग के अध्यक्ष साहिब ने आर्डर सुनाने के पश्चात् एकान्त में कॉमरेड अशफ़ाक से कहा।

"कठिन नहीं महाशय! असम्भव है। मज़दूरी का मूल्य कम नहीं हो सकता। वस्तु के मूल्य की अपेक्षा मज़दूरी का मूल्य आज के युग में बहुत बढ़ चुका है। वस्तु पूंजी है और पूंजी का मूल्य अब मज़दूरों के अपेक्षाकृत बढ़ने वाला नहीं।"

यह वाक्य कल कॉमरेड विमला देवी ने कॉमरेड अशफ़ाक की मानसिक परेशानी दूर करने के लिए सिद्धान्त रूप में कहा था। कॉमरेड अशफ़ाक का अध्यक्ष एक साधारण स्पिनिंग मास्टर से इतनी महत्वपूर्ण बात सुन कर दंग रह गया। वह सोचने लगा कि क्या वास्तव में आज का कर्मचारी अपनी शक्ति के प्रति इतना जगरूक हो चुका है और उसे अपने ऊपर इतना दृढ़ विश्वास हो गया है कि उसके विना पूंजी निरर्थक है? यदि हो गया है तो निश्चित रूप से सेठ भानामल जी को हार माननी होगी।

आज कॉमरेड विमला को विशेष रूप से सेठ भानामल जी ने बुलवा कर कहा, "विमला देवी! तुम्हें शायद मालूम नहीं है कि मिल बराबर हानि में जा रहा है। मैं इस मिल को अपना मिल नहीं मानता। यह राष्ट्र की सम्पत्ति है। मैं तो केवल इसका एक चौकीदार हूँ। राष्ट्र जब तक मुझ से इसकी चौकीदारी सम्भालने के लिए कहेगा मैं सम्भाले रहूँगा। तुम लोग मुझे सेठ जी कहकर पुकारते हो परन्तु वास्तव में यदि देखा जाए तो मैं तुम सब से बड़ा कर्मचारी हूँ। तुम्हारी ड्यूटी के कुछ घण्टे निश्चित हैं परन्तु मैं तुम लोगों का चौबीस घण्टे का नौकर हूँ। इस मिल को चलाना या बन्द कर देना अब तुम लोगों पर निर्भर करता है। मेरे पास जितनी भी स्थाई पूंजी थी वह मैं सब हानि की भेंट चढ़ा चुका। अब और अधिक हानि देना मेरी शक्ति से बाहर है। यदि तुम लोग सहयोग नहीं दोगे तो मुझे मिल बन्द कर देना होगा।" सेठ जी के अन्तिम शब्दों में अभिमान की वह ध्वनि वर्त्तमान थी कि जिसने ऊपर के

व्याख्यान की नक़ली क़लई को उतार कर उसे काला कर दिया था। सेठ जी मिल बन्द कर देंगे तो सब कर्मचारी बेकाम हो जायेंगे। दाने-दाने के लिए मुह-ताज होकर भूख और ग़रीबी के ग्रास बन जायेंगे। सेठ भानामल जी ने हानि होने पर भी इस मिल को आजतक केवल कर्मचारियों का ही पालन पोषण करने के लिए चलाया हुआ है। यदि कर्मचारी ऐसे कठिन समय में सेठ भानामल जी की आज्ञा का पालन न करके सेठ जी की दी गई दान स्वरूप नौकरियों को लात मारने का प्रयत्न करेंगे तो उन्हें मिल बन्द कर देना होगा। वह तो पहिले ही मिल चलाने में घाटा दे रहे हैं। मिल बन्द कर देने से उनको आजकल सहन करने वाली हानि से तो मुक्ति मिल जाएगी। यह सब विचार कर मौन रहते हुए भी कॉमरेड विमला मन ही मन इस कुटिलता पर विक्षुब्ध-सी हो उठी। परन्तु वह बोली एक शब्द भी नहीं, मौन शांति के साथ सब सुना और चुपचाप सेठ जी के सामने खड़ी रही।

"क्या विचार किया तुमने विमला देवी?" कॉमरेड विमला के मुख पर रहस्यपूर्ण दृष्टि डालकर सेठ भानामल जी ने पूछा।

इसी समय मिस्टर कॉल भी अन्दर आते हुए तनिक मुस्कुरा कर सिगार का कश कमरे के वायुमण्डल में छोड़ते हुए बोले, "अरे! तुम यहाँ हो कॉमरेड विमला! मैं तो तुम्हारे डिपार्टमेन्ट में देखने गया था तुम्हें। तुमने सुनी सेठ जी की अभी नई आज्ञा। तुम्हें शायद विश्वास नहीं होगा कि मैंने कितना विरोध किया था कल रात भर इस आज्ञा का परन्तु एकाउन्टेन्ट के आँकड़ों को मैं भी क्या करूँ? पाँच करोड़ रुपए का घाटा दिखला रहे हैं। मैं भी सुन कर दंग रह गया। रात दिन हम कर्म-चारियों ने ख़ून पसीना एक किया और फल यह निकला। अन्त में मुझे ही झुक जाना पड़ा और सेठ जी के मत का समर्थन करना पड़ा। परन्तु वैसे मैं हर प्रकार से एक कर्मचारी होने के नाते तुम लोगों के साथ हूँ। आज जब कि भारत में दिन प्रतिदिन कपड़े की कमी होती जा रही है तो हमें जुटकर इस कार्य में सहयोग देना होगा। यह राष्ट्र और राष्ट्र की वस्त्रहीन जनता का प्रश्न है। आज हमें व्यक्तिगत संकुचित क्षेत्र से बाहर मुँह निकाल कर झाँकना है। हमें वस्त्रहीन भारत के प्रतिनिधि अपने प्रधानमन्त्री की आवाज़ को सुनना है।

कॉमरेड विमला के हृदय में जलन हो रही थी इन धूर्त्त लोगों की बातें सुन-सुन कर। वह अभी तक एक शब्द भी नहीं बोली थी और न कुछ बोलना ही चाहती थी। वह समझ ही नहीं पा रही थी कि मिल के रात दिन चलने पर भी किसी प्रकार मिल को पाँच करोड़ की हानि हो सकती है? एक-एक पार्टी में शराब पी-पीकर दस-दस हज़ार रुपया व्यय कर दिया जाता है परन्तु दस पाँच हज़ार रुपया कर्मचारियों में बाँटते हुए इनकी जान टूटती है। कारण केवल यही तो है कि कर्म- चारियों को यह पूँजीवादी लोग पनपता हुआ नहीं देखना चाहते। यह चाहते हैं कि कर्मचारी सर्वदा अपनी आवश्यकताओं के दास बन कर इनके तलवे सहलाते रहें। परन्तु वह युग आज समाप्त हो चुका है; अपने मन ही मन कॉमरेड विमला ने सोचा। अब तो स्वत्वों के संघर्ष का युग है। मानव के सम्मुख पूंजी की विजय होनी असम्भव है। पूँजीवादी मानवता के सिद्धाँतों को ठुकराकर अपनी शक्तियों के बल से राष्ट्र की छाती पर मूँग दलना चाहते हैं, दल रहे हैं और सुविधाएँ आज भी इनके पास हैं। परन्तु यह समस्त सुविधाए किसी के बाप की बापौती नहीं, यह राष्ट्र की सम्पत्ति हैं और राष्ट्र के प्रत्येक बालक को उनका पूरा-पूरा उपयोग करने का पूर्ण अधिकार है। कॉमरेड विमला इन्हीं विचारों में डूबी हुई कमरे की छत पर न जाने क्या देख रही थी कि सेठ भानामल जी बहुत गम्भीर स्वर में बोल उठे, "विमला देवी! इस समय हमारे मिल की लाज तुम्हारे ही हाथों में है। यदि तुम मिल को अपना समझती हो तो......"

"तो......तो कर्मचारियों को अपना न समझूँ। यही कहना चाहते हैं न आप।" बहुत गम्भीरता पूर्वक कॉमरेड विमला ने कहा, "मैं आज ही संध्या को ट्रेड यूनियन की जनरल मीटिंग बुलाऊँगी और वह जो कुछ भी निर्णय इस विषय में करेगी उसकी सूचना रात्रि को ही आपकी कोठी पर पहुंचा दी जाएगी। अब मुझे आज्ञा दीजिए।" इतना कहकर कॉमरेड विमला कमरे से बाहर निकल आई और सेठ जी तथा मैनेजर साहब आपस में कानाफूँसी करते हुए वहीं पर बैठे रह गए।

कॉमरेड विमला ज्योंही सेठ भानामल जी के दफ़तर से बाहर निकली तो सामने से चौहान साहेब आते हुए दिखाई दिए और वह कॉमरेड विमला का उतरा हुआ खिन्न चेहरा देख कर समझ गए कि आज अवश्य कुछ दाल में

काला है। हो न हो सेठ भानामल जी या मैनेजर साहेब से मुठभेड़ हो गई है। मिस्टर कॉल पर एक बार यों ही चौहान साहेब ने दाँत किटकिटाए और फिर मनोभावों को दबाकर प्रेम-पूर्वक पूछा, "क्या बात है कॉमरेड विमला? क्या कोई विशेष दुर्घटना घटी है?" कॉमरेड विमला कुछ बोली नहीं, अपने ही विचारों में उलझी हुई आगे बढ़ती चली गई परन्तु चौहान साहेब लपक कर फिर कॉमरेड विमला के सम्मुख आ गए। आज वह नया पायजामा और उस पर पशमीने की नई शेरवानी, जो सेठ भानामल जी ने अपने शौक से सिलवाई थी, पहिन कर आए थे परन्तु कामरेड विमला का ध्यान उस पर न जाने से चौहान साहेब का उत्साह ही फीका पड़ गया। वह कॉमरेड विमला को पुकार कर पीछे से रोकते हुए बोले, "बड़ी लापरवाही से चली जा रही हो कॉमरेड विमला! क्या कोई अपराध बन पड़ा है हमसे जो बोलने के योग भी हम नहीं समझे जा रहे?"

कॉमरेड विमला रुक गई और व्यंग्य के साथ बोली, "अपराध बड़े आदमियों का कभी नहीं होता। मैं इस समय आप लोगों की ही पैदा की हुई परेशानी को भुगतने के लिए जा रही हूँ। आज मैं पूरी तरह समझ चुकी हूं कि आप लोग कितने धोखेबाज़ हैं? अवसर के समय गधे को बाप बना लेने की क्रिया में आप बहुत दक्ष हैं। अब यह भी समझ गई कि आप लोगों के शब्दों का कोई मूल्य नहीं!" कॉमरेड विमला यह विश्वास लेकर यह सब कुछ कहती ही चली जा रही थी कि चौहान साहेब को सम्भवत: सेठ भानामल जी की आज की आज्ञा का रहस्य अवश्य विदित होगा।

"तुम तो व्यर्थ ही बिगड़ती जा रही हो कॉमरेड विमला! सम्भवत: आज घर से निकलते ही कोई दुर्घटना घट चुकी है। आख़िर कुछ सुनूँ भी तो कि मुझसे क्या अपराध बन पड़ा है?" सरलता पूर्वक चौहान साहेब ने सिर से टोपी उतार कर हाथ में लेते हुए स्वाभाविकता से कहा और उत्तर की आशा से एकटक कॉमरेड विमला के छटपटाते हुए नेत्रों पर देखा।

"ऐसे भोले बनकर पूछ रहे हो कि मानो कुछ जानते ही नहीं। सेठ भानामल जी की नाक के बालों को भी यदि कुछ पता नहीं तो न मालूम फिर पता किसे हो सकता है? कर्मचारियों के वेतन फिर कटवा कर उतने ही करवा दिए जितने गत मास में थे। सरकारी आर्डर पूरा हो गया, परन्तु आर्डर फिर भी आयेंगे और अवसर जब तक मिल चलेगा, आते ही रहेंगे। सब कुछ होगा

परन्तु आपके शब्दों का मूल्य अब भविष्य में शून्य ही आँक सकेगा चौहान साहेब ! फिर लौटकर नहीं आएगा।" बहुत गम्भीरता पूर्वक कॉमरेड विमला ने मन में क्षोभ लेकर कहा।

चौहान साहेब यह सुनकर अन्दर ही अन्दर आगबबूला हो गए। उनके किए गए निर्णय को इस प्रकार रद्द कर देना ऐसे ही सम्भव नहीं था। यह सब कुछ बदमाशी केवल उसी कॉल के बच्चे की है। सेठ भानामल जी आज करोड़ों के सेठ हैं परन्तु यदि उन्हें कोई चार पैसे के लाभ की भी बात सुझा देता है तो वह उसी पर फिसल पड़ते हैं और उस समय यह नहीं सोचते कि इस चार पैसे के लाभ के लिए कितनी बड़ी हानि की सम्भावना हो सकती है। चौहान साहेब के हाव भाव देखकर कॉमरेड विमला ताड़ गई कि उसका विचार ग़लत था और चौहान साहेब को अभी तक यह रहस्य विदित नहीं था। चौहान साहेब कॉमरेड विमला से एक शब्द भी बिना बोले सीधे सेठ जी के कमरे में घुसते चले गए। इस समय चौहान साहेब आगबबूला होकर इस प्रकार त्योरियों को चढ़ाते हुए अन्दर घुसे थे कि मानो अन्दर जाते ही सेठ जी पर बरस पड़ेंगे। उनका सारा शरीर स्वाभिमान की ठेस खाकर काँप रहा था। सेठ जी कमरे में अकेले बैठे थे। चौहान साहेब का मुख देखकर वह समझ गए कि हो न हो मेरी आज्ञा के विपक्ष में ही यह सब भाव-प्रदर्शन है। सेठ जी ने आदर भाव से चौहान साहेब का स्वागत करते हुए कहा, "आइए चौहान साहेब ! मैं तो कितनी ही देर से आपकी राह देख रहा था। कई बार कोठी पर फ़ोन भी किया परन्तु आप वहाँ नहीं थे। देखिए न समस्या बड़ी जटिल हो गई है। अब भला किस प्रकार इस समस्या को सुलझाया जाए ? कल जब आपसे मैंने कर्मचारियों के वेतन की कटौती के विषय में परामर्श किया था तो आपसे पहिले मिस्टर कॉल मेरे पास आए थे। उनसे भी इस विषय में बातचीत हुई थी। उन्होंने कहीं भूल से मेरे परामर्श को मेरी आज्ञा मान लिया और आज मेरे मिल में आने से पूर्व ही वह आज्ञा प्रसारित भी कर दी। बड़ी ही कठिन समस्या पैदा हो गई है। मैं कॉल साहेब पर बहुत बहुत झुँझलाया और झल्लाया, बहुत नाराज़ होकर उन्हें डाण्टा परन्तु सब व्यर्थ। अब प्रश्न रुपए का नहीं रह गया है चौहान साहेब ! अब प्रश्न हो गया है मान और अपमान का। अब तो केवल आप ही इसका कोई सुझाव निकाल सकते हैं।" और इतना कहकर प्रश्नवाचक दृष्टि चौहान साहेब के मुख

पर डालते हुए सेठ भानामल जी बहुत दुखित तथा भारी-सा मन लेकर चुप हो गए। मानो वह गिड़गिड़ा रहे थे इस समय अपने मित्र चौहान साहेब के सम्मुख सहायता के लिए।

चौहान साहेब खड़े के खड़े रह गए। अन्दर आए थे यह विचार कर कि सेठ भानामल जी से आज करारी झपट होगी परन्तु यहाँ समस्या ही दूसरी खड़ी हो गई। चौहान साहेब यारों के यार थे। सेठ भानामल जी को जब एक बार यार कह दिया तो फिर उनका मान चौहान साहेब का अपना मान था और उनका अपमान चौहान साहेब का अपमान था। मन की बात मन में दबोच कर खोपड़ी पर हाथ फेरने लगे। अब क्या कहें और किससे कहें? बुद्धि हैरान हो गई। उसने काम करना बंद कर दिया और इसी परेशानी की दशा में वह सिर खुजलाते-खुजलाते सोफ़े पर बैठ गए।

चौहान साहेब को चुपचाप बैठते हुए देखकर सेठ भानामल जी का साहस बढ़ गया और वह समझ गए कि चौहान साहेब पर उनका जादू चल गया। यह कॉमरेड विमला को अवश्य ठीक कर लेंगे और कॉमरेड विमला के ठीक हो जाने से कोई कर्मचारी पर भी नहीं फड़फड़ाएगा। सेठ भानामल जी के विचार से बस कार्य सिद्ध हो गया। एक ऊँचा नीचा साँस लेकर सेठ भानामल जी फिर समस्या की गम्भीरता प्रकट करते हुए कहने लगे, "चौहान साहेब! मिस्टर कॉल भी है बड़ा कांटे का आदमी। कभी-कभी ऐसी मूर्खता अवश्य कर बैठता है परन्तु कभी-कभी तो वह लाजवाब काम करता है। उस दिन आपके चालान वाले केस को ही देखिए उसने किस सफ़ाई के साथ रद्द करा दिया था। बड़े सम्बन्ध हैं उस व्यक्ति के भी और फिर वह सम्बन्ध बनाना भी ख़ूब जानता है। सम्बन्ध बनाने की कला का मैं उसे आचार्य कहकर पुकारा करता हूँ चौहान साहेब! आप जैसे बड़े आदमियों के पास जाकर काम निकाल लाने की कला में वह बहुत ही निपुण है।" अपनी झोंक में आकर चौहान साहेब की बुद्धि को सह-लाते हुए भानामल जी अपनी झोंक में कहते ही चले जा रहे थे।

चौहान साहेब की दृष्टि में कॉल साहेब कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति नहीं थे और सेठ भानामल जी उनकी प्रशंसा में जो कुछ भी कह रहे थे उसका उनके निकट कोई महत्व नहीं था। वह इस समय उलझे हुए थे कर्मचारियों के वेतन वाली समस्या और अपने मित्र सेठ भानामल जी के अपमान की समस्या

के बीच । कोई हल उनकी समझ में नहीं आ रहा था और वह इसी परेशानी की समस्या को मस्तिष्क में लिए हुए सेठ भानामल जी से बिना कुछ कहे सुने ही दफ्तर से निकल कर बाहर चले आए।

चौहान साहेब सेठ भानामल जी के कमरे से निकल कर अपनी कार की ओर लपके जा रहे थे। कर्मचारियों की दृष्टि उन पर पड़ रही थीं और वह मन ही मन अनुभव कर रहे थे कि चौहान ! यह सब लोग तुझे क्या कह रहे होंगे ? क्या तेरे शब्दों का यही मूल्य था ? नहीं, तू अब इस मिल के अन्दर आने योग्य नहीं रहा और वह शीघ्रता से लपक कर अपनी कार में जा बैठे।

कार चल पड़ी और चौहान साहेब उसमें चुपचाप बैठे अपनी कोठी की ओर चले गए।

: ५ :

"परन्तु कॉमरेड विमला ! अब यह रुपए का प्रश्न नहीं है सेठ भानामल के मान और अपमान का प्रश्न है !" चौहान साहेब ने कॉमरेड विमला के सामने वाली कुर्सी पर बैठते हुए मस्तक पर सिलवटें डालकर कहा।

"मैं सब कुछ समझती हूँ चौहान साहेब !" कॉमरेड विमला ने भी माथे की सिलवटों में बल लाते हुए गम्भीरतापूर्वक खड़ी होकर कमरे में इधर उधर घूमते हुए कहा "वहाँ अकेले सेठ भानामल जी के मान और अपमान का प्रश्न है और यहाँ पर यह हमारे पाँच हज़ार कर्मचारियों के मान और अपमान का प्रश्न है। क्या आपकी दृष्टि में हम कर्मचारियों को अपने मान की रक्षा का कोई अधिकार नहीं !" और इतना कहकर कॉमरेड विमला गम्भीर मुख मुद्रा बना कर चौहान साहेब के सामने कुर्सी पर. बैठ गई। कॉमरेड विमला के नेत्र इस समय चौहान साहेब के मस्तक पर टिके हुए थे और चौहान साहेब की झुकी हुई गर्दन ऊपर को नहीं उठ रही थी।

चौहान साहेब चुप थे। अब क्या उत्तर दें कॉमरेड विमला के इन शब्दों का ? व्यवहार रूप में चाहे जो कुछ भी हो परन्तु मंच पर तो चौहन साहेब ने भी सर्वदा ग़रीब कर्मचारी के ही मान-रक्षा की दुहाई दी है, कर्मचारी के ही मान-रक्षण का दम भरा है। परन्तु आज सिद्धाँत के मार्ग में सेठ भानामल जी की

मित्रता का प्रश्न आकर बाधा बन गया। बड़ी ही विचित्र समस्या थी। यों अपने मन से चौहान साहेब मित्रता को बीच में न रख कर अपने शब्दों में दृढ़ता लाने का प्रयत्न कर रहे थे परन्तु कहने वालों की जबान पर ताला नहीं लगाया जा सकता। मारते हुए व्यक्ति का हाथ पकड़ा जा सकता है परन्तु जब लोगों ने चौहान साहेब को सेठ जी का 'ज़रख़रीद पिट्ठू' और यहाँ तक कि 'गुलाम' तक की उपाधि दे डाली तो उसे चौहान साहेब किस प्रकार रोक सकते थे? सेठ भानामल जी की मित्रता निभाना, जिसे चौहान साहेब इस समय अपना कर्तव्य समझ रहे थे, कर्मचारियों की दृष्टि में स्वार्थपरता की नीची से नीची पराकाष्ठा थी।

"कहिए न! चुप क्यों हो गए आप? क्या केवल सेठ भानामल जी का ही निर्माण करने में आपके भगवान ने रक्त-माँस और मज्जा का प्रयोग किया है और इन कर्मचारियों के बुतों को यों ही नाली की गली सड़ी मिट्टी से बना कर खड़ा कर दिया है? आपका जीवन स्वार्थ की ओर अग्रसर हो चुका है चौहान साहेब! जिस भावना को आप सेठ भानामल जी की मित्रता का रूप देना चाहते हैं वह आपके जीवन की वह निर्बलता है जो आपके चरित्र को गिरावट की ओर ले जा रही है।" कहती कहती कॉमरेड विमला शाँत हो गई और उसने इससे अधिक कड़े शब्द इस समय चौहान साहेब की शान में, व्यावहारिक सभ्यता को ध्यान में रखते हुए, कहने उचित नहीं समझे।

चौहान साहेब ने जीवन में आज प्रथम बार किसी व्यक्ति से यह सुना था कि उनका जीवन स्वार्थ के पथ पर अग्रसर है। नहीं, कदापि नहीं, वह स्वार्थ की ओर अग्रसर नहीं होंगे। आखिर क्यों वह स्वार्थी बनकर व्यर्थ की मित्रता का दम भरें? यदि वास्तव में किसी ने कोई भूल की है तो वह कॉल साहेब ने की है, चौहान साहेब ने नहीं की। चौहान साहेब ने आज जब सेठ भानामल जी की पूरी वार्ता कॉमरेड विमला को सुनाई कि किस प्रकार भूल ही भूल में यह सेठ भानामल जी की सूचना प्रसारित हो गई तो कॉमरेड विमला खिलखिला कर हँस पड़ी। वह कुर्सी पर बैठी न रह सकी और हथेली पटका कर हँसते हुए कमरे में एक ओर से दूसरी ओर घूमना प्रारम्भ कर दिया। फिर कुछ देर इसी प्रकार घूमकर कॉमरेड विमला बोली "क्या उपहास करते हैं आप भी चौहान साहेब!" चौहान साहेब का कंधा पकड़ कर हँसी में झँझोड़ते हुए कॉमरेड विमला बोली। "और आपने

विश्वास कर लिया सेठ जी की बातों पर। क्या आप समझते हैं कि मिस्टर कॉल ने केवल परामर्श के ही आधार पर यह विज्ञप्ति निकाल दी?" और इतना कह कर विमला ने चौहान साहेब के सामने वाली कुर्सी पर बैठकर मुस्कुराते हुए अपने नौकर को चाय लाने के लिए आवाज़ दी।

नौकर चाय लेकर आ गया और उसने मेज़ पर दो मोटी-मोटी देसी प्यालियाँ रखते हुए एक भारी सी मिट्टी की चायदानी रख दी। साथ ही एक प्लेट में कुछ नमकीन चने थे और दूसरी प्लेट में गुजराती चिउड़ा।

"चाय पीजिए।" चाय की प्याली चौहान साहेब के सामने सरकाते हुए कॉमरेड विमला बोली और दूसरी प्याली में अपने लिए भी चाय भर कर अपने सामने सरका ली। फिर चाय का एक घूँट भरते हुए विमला बोली, "आपको आनंद तो नहीं आ सकेगा ऐसी बेहूदा मोटी-मोटी प्यालियों में चाय पीते हुए परन्तु जो घर में है वह उपस्थित है। केक पेस्ट्री के स्थान पर भी आपके सामने नमकीन चने उपस्थित करते हुए मुझे लज्जा अवश्य आ रही है चौहान साहेब! परन्तु क्या करूँ जो कुछ मैं स्वयँ खाती हूँ वही आपकी सेवा में रख रही हूँ।" कॉमरेड विमला के मुख-मंडल पर स्वाभाविक सरलता खेल रही थी इस समय और उसके प्रत्येक वाक्य में वह सरल स्वाभाविक व्यंग्य छुपा हुआ था कि जो चौहान साहेब की चिर परिचित और चिर अनुभवयुक्त राजनीति और कूटनीति को एक प्रखर चुनौती था।

दो हजार रुपया मासिक वेतन पाने वाली कॉमरेड विमला का यह रूप देखकर चौहान साहेब आज वास्तव में दंग रह गए। कॉमरेड विमला ने नमकीन चने चबाते हुए चौहान साहेब की गम्भीर मुख-मुद्रा पर एक दृष्टि डालकर पूछा, "क्या वास्तव में चौहान साहेब! आपने सेठ भानामल जी के कहने पर विश्वास कर लिया?"

"मैं तो इसमें अविश्वास का कोई कारण नहीं समझता।" बहुत ही गम्भीरता पूर्वक चौहान साहेब बोले।

"फिर तो आपको इस समय जितना भी क्रोध आ रहा होगा वह सब अकेले बेचारे मिस्टर कॉल साहेब पर ही होगा।" गम्भीर मुख-मुद्रा बनाकर कॉमरेड विमला ने पूछा।

"निश्चित रूप से !" क्रोध में भरकर चौहान साहेब बोले। "और यदि यह कार्य कहीं उनकी भूल का परिणाम न होकर उन्होंने जान बूझकर किया होता तो कल कोई कारण नहीं था कि 'मैं सेठ जी से कहकर उन्हें पदच्युत करा देता। परन्तु भूल तो सभी की क्षम्य होती है।" चौहान साहेब बहुत गम्भीरता पूर्वक कह रहे थे कि इतने में मकान के सामने एक कार आकर रुकी। कॉमरेड विमला ने बाहर झाँक कर देखा तो कॉल साहेब थे। उनकी काली शेरवानी के नीचे लट्ठे का चूड़ीदार पायजामा था और पैरों में पेटेन्ट लैदर का शानदार सेन्डल चाल के साथ चर्र-मर्र कर रहा था। कॉल साहेब के बाल सर्वदा पीछे को बहे रहते थे और यह वह इसलिए बहाते थे कि पीछे को बहाने से उनकी चाँद का एक दाद, जिस पर एक भी बाल नहीं उगता था, सामने के बालों के नीचे पूरी तरह दब जाता था।

"ओह ! चौहान साहेब भी यहीं पर जमे हुए हैं।" बैठक में प्रवेश करते हुए कॉल साहेब बोले। कॉमरेड विमला ने कॉल साहेब का खड़े होकर स्वागत किया परन्तु चौहान साहेब ने अपने मित्र के एक नौकर के आने पर खड़ा होना अपनी मानहानि समझा। वह उसी प्रकार कॉल साहेब की बात को अनसुनी करके अपनी ही समस्या में उलझे हुए कमरे की छत पर आँखें गड़ाए ताकते रहे।

"मैंने कहा, किस समस्या में उलझे हुए हैं चौहान साहेब !" और चौहान साहेब के कन्धे पर हलकी-सी थपकी देते हुए कॉल साहेब अपनी नुकीली पैनी मूँछों पर ताव देकर पास वाली कुर्सी पर बैठ गए।

चौहान साहेब का मानो स्वप्न टूट गया और वह बहुत गम्भीरता पूर्वक कॉल साहेब के मुख पर दृष्टि डालकर बोले, "समस्या ! समस्या खड़ी करके अब आप पूछते हैं कि किस समस्या में उलझे हुए हो ? आज के युग में कर्मचारी और पूँजी की ही तो समस्याएँ हैं जिनके सुझाव प्रस्तुत करते-करते विश्व-शांति के महानतम नेता हार चुके हैं। वह समस्याएँ ज्यों की त्यों पर्वत के समान सामने खड़ी हैं। कोई सुझाव अभी तक सामने नहीं आ सका।" और इतना कह कर चौहान साहेब की मुख-मुद्रा और भी गम्भीर हो उठी।

"समस्या तो वास्तव में बहुत जटिल है चौहान साहेब !" मुख पर झूठा गाम्भीर्य लाकर मन ही मन चौहान साहेब को मूर्ख बच्चा समझते हुए कॉल साहेब ने तनिक आँखें तरेरते हुए कॉमरेड विमला की ओर देख कर कहा। "कॉमरेड

विमला देवी ! आप सच जानिए कि आजकल तो 'सेट क्लाथ मिल्ज़' बस केवल चौहान साहेब के ही दम पर चल रही है। मैं तो कभी-कभी एकांत में जब चौहान साहेब की योग्यता पर विचार करता हूं तो मुझे आपके चरित्र में वह गुण दिखलाई देते हैं कि जिनके बल पर कुछ व्यक्ति विश्व के इतिहास में अमर-पद प्राप्त कर चुके हैं।" यह बात कॉल साहेब ने इतने गम्भीर अभिनय के साथ कही कि चौहान साहेब के अन्दर का गाम्भीर्य अपने पूर्ण वेग के साथ उबाल खाकर उनके मुखमंडल पर नाच उठा। चौहान साहेब का व्यावहारिक जीवन स्वप्न के काल्पनिक करों में खेलने लगा और वह वास्तविकता से बहुत दूर कहीं ऐसे लोक में पहुँच गए जहाँ सब कुछ रंगीन ही रंगीन था, सत्य कुछ भी नहीं।

कॉमरेड विमला मन ही मन चौहान साहेब की सादगी पर, जिसे मूर्खता भी कह सकते हैं, यही नहीं बल्कि कॉल साहेब वास्तव में जिसे मूर्खता समझ रहे थे, रह रह कर मुस्कुरा रही थी। इसी समय नौकर ने कॉल साहेब के लिए भी सामने मेज़ पर लाकर एक मोटी भारी सी चाय की प्याली रख दी और साथ में नमकीन चनों की एक प्लेट भी।

"चाय पीजिए मैनेजर साहेब !" कॉमरेड विमला ने प्याली कॉल साहेब के सामने खिसकाते हुए कहा। "यदि यह नमकीन आपको रुचिकर न हो तो कुछ और आपके लिए पास की दूकान से मँगा दूँ।" चनों की प्लेट की ओर संकेत करते हुए कॉमरेड विमला बोली।

"क्यों ?" कॉल साहेब ने नमकीन चनों की प्लेट हाथ में उठाकर उसमें से चनों का चबैना मुँह में डालते हुए ऊपर से चाय का घूँट भर कर कहा। "कॉमरेड विमला ! तुम देखोगी कि मेरा जीवन अब कितनी शीघ्रता से प्रगति की ओर जा रहा है। मैंने भी अपने घर पर अब केक पेस्टरियों का प्रयोग बन्द कर दिया है। एक कर्मचारी को नमकीन चनों से रुचिकर और कोई वस्तु चाय के साथ खाने के लिए नहीं मिल सकती और फिर यह चिउड़ा तो वास्तव में बहुत ही स्वादिष्ट है।" चौहान साहेब के सामने से चिउड़े की तश्तरी खींच कर खाते हुए कॉल साहेब बोले।

कॉल साहेब का इस समय यहाँ पर आना चौहान साहेब को बुरी तरह से खल रहा था। वह एक शब्द भी उनसे बोल कर उनके यहाँ ठहरने की

अवधि को बढ़ाना नहीं चाहते थे। वह जानते थे कि यदि वह उनसे न बोलेंगे तो वह जिस काम की सूचना प्राप्त करने के लिए यहाँ आए हैं उसे प्राप्त करके और एक दो प्याली चाय पीकर चले जाएँगे परन्तु कॉल साहेब भी पुराने घाघ थे, पूरी तरह घिसे हुए। एक बार कहीं पहुँच कर वहाँ से यों ही चल देना उन्होंने नहीं सीखा था।

हज़रते दाग़ जहाँ बैठ गए बैठ गए।

बातों की दिशा बदल गई परन्तु आज बातें अधिक समय तक नहीं चल सकती थीं। कर्मचारियों की यूनियन की सभा कॉमरेड विमला के मकान पर ही होने वाली थी। सभा के समय से एक घन्टे पूर्व कॉल साहेब और चौहान साहेब को कॉमरेड विमला से विदा ले लेनी पड़ी। उनके चलते समय कॉमरेड विमला ने कह दिया कि यूनियन की सभा में जो कुछ भी निर्णय होगा उसकी सूचना आज ही रात्रि को सेठ भानामल जी की कोठी पर पहुँचा दी जाएगी।

चलते समय कॉल साहेब ने चौहान साहेब से अनुरोध किया कि वह उनकी कार पर चलें परन्तु चौहान साहेब ने पैदल ही जाने का निश्चय किया हुआ था और वह अपने निश्चय पर अटल रहे। चौहान साहेब को इधर कुछ दिन से कॉल साहेब के प्रति कुछ ऐसी घृणा हो गई थी कि वह उनका मुख देखना भी पसन्द नहीं करते थे, परन्तु परिस्थितियों से लाचार थे कि जहाँ भी वह जाते थे उन्हें यह भूतात्मा की तरह सामने ही विराजमान दिखलाई देते थे और यदि कहीं पर नहीं भी होते थे तो इनके रहते रहते वहाँ पर आकर उपस्थित हो जाते थे।

कॉल साहेब का हँसना मुस्कुराना, बातें करना और अपना मत प्रकट करना यह सब कुछ ऐसा था कि चौहान साहेब के हृदय पर नमक मलता हुआ चला जाता था। कॉमरेड विमला के साथ चौहान साहेब का जीवन एक व्यावहारिक बहाव और विकास की ओर अग्रसर हो चला था परन्तु इस मज़दूरों के वेतनों की कटौती ने उस बहाव में मानो बाँध लगा दिया, एक जड़ता ला दी।

कॉमरेड विमला के मानसिक कष्ट से चौहान साहेब दुखित थे परन्तु सेठ भानामल जी से एक दम दो टूक बातें करने को वह अपनी राजनीतिक भूल मान रहे थे। एक दम शीघ्रता में आकर कोई कार्य कर बैठना उन्होंने नहीं सीखा

था और यह रहस्य अपने ऊपर खुल जाने पर भी कि इस कटौती करने में विशेष रूप से सेठ जी का ही हाथ है वह यही अपने मस्तिष्क में स्थिर रखना चाहते थे कि वह सब किसी प्रकार कॉल साहेब के ही गले मढ़ा रहे ।

परन्तु कॉमरेड विमला को मूर्ख नहीं बनाया जा सकता था और इसीलिए चौहान साहेब को अपने पैरों की प्रत्येक लड़खड़ाती हुई पग-ध्वनि पर अपनी मूर्खता और कमज़ोरी की मरमराहट सुनाई दे रही थी ।

सभा में मिल के सभी विभागों के प्रतिनिधि उपस्थित थे और विषय पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया जा रहा था । आज की सभा के प्रधान-पद को कॉमरेड अशफ़ाक ने सुशोभित किया था । विषय को सभा के सम्मुख कॉमरेड विमला ने इस प्रकार प्रस्तुत किया :—

"उपस्थित कॉमरेड्ज़ !

मिल कर्मचारियों के वेतनों में गत मास जो वृद्धि की गई थी और यह आश्वासन दिया गया था कि एक मास पश्चात् इसे स्थाई कर दिया जाएगा, वह मिल मालिकों की एक चाल थी । उस समय यदि मिल में हड़ताल हो जाती तो मिल बन्द हो जाने से सरकारी माँग का माल समय पर न दिया जाता और इससे उन्हें बहुत बड़ी हानि सहन करनी होती । कल जब वह माल तय्यार हो चुका और उसकी अन्तिम किश्त भी मिल से चली गई तो सेठ जी ने अपने आश्वासन के अनुसार कर्मचारियों की गत मास वाली वेतन-वृद्धि को स्थाई रूप देने के स्थान पर समाप्त कर दिया । सेठ भानामल जी के आश्वासन के साथ ही साथ चौहान साहेब का दिया गया आश्वासन भी निर्मूल सिद्ध हुआ ।"

"शेम, शेम, शेम···" कुछ सभासद कर्मचारियों की आवाज़ें आईं ।

"अब प्रश्न सामने यह है कि हमारी ट्रेड यूनियन को इस परिस्थिति में क्या पग बढ़ाना चाहिए कि जिससे मान-हानि भी न हो और आज की बेरोज़गारी का ग्रास भी हमारे कर्मचारियों को न बनना पड़े । प्रश्न आप सब लोगों के सम्मुख है । सभी सभासदों को अपने स्वतंत्र विचार प्रकट करने का पूर्ण अधिकार है ।" और इतना कहकर कॉमरेड विमला ने सभा के सम्मुख प्रश्न को वाद-विवाद के लिए रख दिया ।

सभा में सभी विचारों के व्यक्ति थे, कुछ गर्म और कुछ नर्म । कुछ तो मिल मालिकों पर इतनी बुरी तरह उबल रहे थे कि मानो उन्हें उनकी धूर्त्ता का

दण्ड देने के लिए कच्चा ही चबा जाएँ और कुछ का विचार था कि समय और परिस्थिति को देखते हुए ठंडा करके खाना चाहिए। कोई भी कार्य जल्द-बाज़ी में आकर बिना विचारे कर डालने से बाद में पछताना होता है। इस प्रकार के विचार-धारियों को विरोधी गर्म दल के नेताओं ने कायर और नपुंसक ठहरा कर करारी फटकारें दीं और एक स्वर में आवाज़ उठाई कि मिल में तुरन्त हड़ताल प्रारम्भ कर देनी चाहिए। सभा दो दलों में विभाजित हो गई। एक दल तुरन्त हड़ताल की घोषणा कर देने के पक्ष में था तथा दूसरा मिल मालिकों की इस कार्यवाही पर खेद प्रस्ताव पास करने के पश्चात राष्ट्र की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए स्थिरता के साथ समय और समस्या के महत्व को समझ कर शीघ्रता न करके अवसर की प्रतीक्षा करने वाला दल बना।

कॉमरेड विमला भी शीघ्रता करने के पक्ष में नहीं थीं। झुकने का प्रश्न उसके सम्मुख नहीं था। कॉमरेड विमला ने झुकाना सीखा था, झुकना नहीं। आज यदि चौहान साहेब और सेठ जी अपने वचनों से हट गए तो क्या हुआ? अवसर आने पर उन्हें फिर झुकना होगा।

ट्रेड यूनियन के यह दो दल दो मतों को लेकर दो भागों में विभाजित हो गए और आज की सभा किसी निश्चित निर्णय पर न पहुँच सकी। सभासदों ने किसी निश्चित निर्णय पर पहुंचने के लिए यह विचार प्रकट किया कि विचारार्थ एक दिन का समय और मिल जाना चाहिए और इस पर सब सभासदों ने अनुमति दे दी। आज की सभा बिना कोई अन्तिम निर्णय किए ही दूसरे दिन की तिथि निश्चित करने के पश्चात समाप्त हो गई।

: ६ :

"आप नहीं जानते हैं सेठ जी! यह सिद्धान्त और मान अपमान का प्रश्न नहीं है, यह है डोरे डालने का प्रश्न।" मुस्कुराते हुए कॉल साहेब ने कहा।

"डोरे डालने का!" सेठ भानामल जी बन्द गले के कोट के बटन खोलकर कुर्ते के अन्दर अपने मोटे पेट पर हाथ फेरते हुए बोले। "तनिक मैं भी तो सुनूं कि यह डोरे-डालने का प्रश्न क्या होता है?" और इतना कहकर भानामल जी ने प्रश्नवाचक दृष्टि से कॉल साहेब के मुख पर बहुत ही गम्भीरता पूर्वक देखा।

"कॉमरेड विमला पर डोरे डाले जा रहे हैं सेठ जी! चौहान साहेब आज कल राजनीति के मैदान को छोड़कर प्रेम-बाटिका में विचरण कर रहे हैं।" अपनी समझ से एक रहस्य उद्घाटित करते हुए कॉल साहेब ने मूछों को पैनाकर बटन सी आँखों की पुतलियों को गोल जापानी लट्टू के समान जोर से घुमा दिया। कॉल साहेब का नाटा आकार इस रहस्य को उद्घाटित करते समय हाथ नचाने और आँखें मटकाने में इस प्रकार नाच उठा कि मानो कोई कूक भरा बबुआ है जो हिलने और आँख मटकाने के ही लिए उसके बनाने वाले ने बनाया है।

"कॉमरेड विमला पर ! वाह भाई वाह कॉल साहेब यह भी आपने खूब सूचना दी। परन्तु चलो अच्छा ही तो है। 'सेठ क्लाथ मिल्ज' के कर्मचारी पर डोरे ही डाले जा सकते हैं और वह भला क्या डाल सकते थे ? परन्तु इतना समझ लीजिए कि कॉमरेड विमला भी वह पत्थर की शिला है कि जिसपर जोंक नहीं लग सकती।" पहिले उपहास और वाक्य के अन्त में गाम्भीर्य लेकर सेठ भानामल जी ने कहा।

"यहाँ मैं आपसे सहमत हूँ।" सेठ भानामल जी की ही भांति गम्भीर होकर कॉल साहेब बोले। कॉल साहेब अपने को दूसरे के सांचे में ढालने वाली कला के आचार्य थे और अपनी इसी पटुता के कारण उनकी वास्तविकता को परखने वाले विरले ही व्यक्ति मिल सकते थे। परन्तु कॉमरेड विमला कॉल साहेब को खूब समझती थी। व्यक्ति को पढ़ लेने का गुण तो भगवान ने मानो उसे बपौती के रूप में प्रदान किया था।

"कॉल साहेब आपकी योग्यता का मैं कायल न हूँ यह बात नहीं परन्तु इस बार टक्कर करारी होगी। मैं चाहता हूं कि किसी प्रकार यह यूनियन समाप्त हो जाए। कॉमरेड विमला पर से यूनियन के सदस्यों का विश्वास उठ जाए और कॉमरेड विमला का मन यूनियन के कर्मचारियों की मूर्खता, कायरता और धोखेबाज़ी पर खीज उठे। परन्तु यह सब कुछ होने में कॉमरेड विमला को आँच नहीं आनी चाहिए, इसका पूरा-पूरा ध्यान रहे।" इतना कहकर सेठ जी ने पगड़ी उतारकर एक ओर रख दी और स्वयं गाऊ तकिए का सहारा लेकर आराम से लेट गए।

सेठ जी के यह वाक्य सुनकर कॉल साहेब बैठे-बैठे एकदम फुदक पड़े और हाथ में हाथ मारकर बोले, "सेठ जी ! आपने तो मेरे विचार ही मानो चुरा लिए। बिल्कुल यही विचारकर मैं आज कोठी से चला था।" और इतना कहते हुए कॉल साहेब ने जेब से अपनी पाकेटबुक निकालकर बीच के पन्ने खोलते हुए सेठ जी के सम्मुख कर दी। "देखिए यही तो लिखा है इसमें।" और सेठ जी को बिना पढ़े ही विश्वास हो गया। कॉल साहेब उनसे झूठ बोलेंगे इसका कोई कारण नहीं हो सकता। "मैंने पूरा प्रबन्ध कर लिया है सेठ जी ! इस बार हड़ताल को फलीभूत नहीं होने दिया जा सकता। ट्रेड यूनियन की सत्ता समाप्त होकर ही रहेगी। कॉमरेड विमला को मेरी नीति-कुशलता का

लोहा मानना ही होगा और चौहान साहेब ! उन्हें तो मैं पूरा काठ का उल्लू समझता हूँ। आपके मित्र हैं इसीलिए हम उनके विषय में कुछ कह भी तो नहीं सकते।" और इतना कहकर कॉल साहेब बहुत गम्भीर होकर पीछे हटते हुए कुर्सी पर बैठ गए।

"क्या व्यर्थ की बातें कर रहे हो कॉल साहेब ! मित्र हैं तो हुआ करें। तुम्हारे प्रबन्ध के क्षेत्र में तो उनका कोई हस्तक्षेप नहीं। व्यापार के क्षेत्र में मित्रता नहीं चलती। परन्तु फिर भी चौहान साहेब का क्या आपकी दृष्टि में कोई उपयोग नहीं?" सेठ भानामल जी ने इस समय बहुत गम्भीरता पूर्वक पूछा।

"है क्यों नहीं?" मुस्कुराते हुए कॉल साहेब बोले। "यह सच है कि वह व्यापार में कोई लाभ नहीं कर सकते परन्तु उनकी पूंछ पकड़ कर ही तो आप बड़े से बड़े सरकारी कर्मचारियों और मन्त्रियों तक को अपनी कोठी पर बुला सकते हैं।" और इतना कहते हुए गम्भीर विचारों की सिलवटें उनके मस्तक पर बन-बन कर बिगड़ने लगीं। चौहान साहेब को निरर्थक मानते हुए भी वह खुलकर सेठ भानामल जी के सम्मुख उन्हें निरर्थक घोषित करके अपनी नीति-कुशलता को बट्टा नहीं लगाना चाहते थे। चौहान साहेब के नाम से कॉल साहेब के हृदय और मस्तिष्क को रह-रह कर ठेस लगती थी परन्तु कॉल साहेब सब सहन कर लेते थे। इस लोहे को कॉल साहेब काटना अवश्य चाहते थे परन्तु घन और छैनी से नहीं तेज़ाब में डालकर सर्वमूल नष्ट कर देना चाहते थे।

"यही बात है।" हाथ में हाथ मार कर सेठ भानामल जी बोले। "व्यापारिक लाभ और हानि के क्षेत्र में मैं चौहान साहेब का पदार्पण नहीं होने देता। परन्तु अकेले चौहान साहेब सौ कनवैसरों का काम देते हैं। उस दिन जो तुम यह कह रहे थे कि मैं मित्रता के नाम पर रुपया पानी की तरह बहा रहा हूँ सो उतनी कच्ची गोलियाँ सेठ भानामल ने नहीं खेलीं। खारी बावली में पन्सारी की दूकान पर सात रुपया माहाना पर मुनीमगीरी सम्भाली थी और आज उसी पंसारी का छोकरा उसी दूकान पर मेरी मुनीमगीरी कर रहा है।" इतना कह कर गर्व के साथ सीना उभार कर सेठ भानामल जी ने कॉल साहेब के मुख पर देखा और इस बात की उन पर छाप लगा दी कि सेठ भानामल जी की व्यापारिक पटुता को चुनौती देना कोरी मूर्खता है। वह जो कुछ भी कर रहे हैं उसमें बहुत बड़ी दूरदर्शिता है। चौहान साहेब को सामने रख कर उन्होंने क्या-क्या लाभ उठाए हैं

और क्या-क्या स्वप्न उन्हें अभी कार्यान्वित करने हैं इसका अनुमान कॉल साहेब नहीं लगा सकते। सेठ भानामल जी की व्यापारिक शतरंज के कई प्रधान मोहरे थे और उनका प्रथक-प्रथक महत्व उन्हीं पर विदित था। किस मोहरे को कहाँ और किस रूप में उन्हें प्रयोग करना चाहिए यह वह भली प्रकार जानते थे। आज के युग में व्यापारिक कल को सञ्चालित करने के लिए केवल योग्य कल-चालक से ही काम नहीं चल जाता वरन् उसकी व्यवस्था को नियमित और सुचारु रूप से प्रवाहित करने के लिए आज अनेकों क्षेत्रों में अपने अनुभवों और सम्बन्धों का आश्रय लेकर चलना होता है। जीवन के सभी क्षेत्रों में किसी न किसी रूप में सेठ जी अपना प्रभुत्व स्थापित करने में नहीं चूकते। जहाँ सम्बन्ध और योग्यता साथ छोड़ देते हैं वहाँ धन का आश्रय लेकर सेठ जी को नौका की पतवारें सँभालनी होती हैं और उनका यह विश्वास है कि आज की दुनियाँ में धन के बल पर प्रत्येक साधन उपलब्ध हो सकता है। एक समय था जब योरोप में मानव को जन्म-जन्मान्तरों के पापों से मुक्ति दिलाने के लिए रोम के पोप ने स्वर्ग के पासपोर्ट (आज्ञा-पत्र) तय्यार करा दिए थे। तो क्या सेठ जी आज धन के बल से संसार में स्वर्ग की व्यवस्था नहीं कर सकते? उस स्वर्ग की झाँकी दिखला कर चौहान साहेब पर तो क्या बड़े-बड़े त्यागियों पर भी वशीकरण मंत्र फूँका जा सकता है। सेठ भानामल जी का तो विश्वास है, और अटल विश्वास है, और वह इसे निश्चित रूप से सत्य समझते हैं कि यदि किसी प्रकार लैनिन के स्थान पर उनका जन्म हो गया होता तो कोई कारण नहीं था कि आज का रूस आज का अमेरिका न होता। यदि भारत के धनपतियों में आज भारत को अमेरिका और रूस के बीच की परिस्थिति में रखने की क्षमता है तो क्या कारण है कि सेठ भानामल जी लैनिन-काल में रूस के प्रतिनिधि धनपति होकर वहाँ का पासा न पलट देते? यह विचारकर सेठ भानामल जी अपना मस्तक ऊपर उठाकर नेत्रों को आकाश की ऊँची से ऊँची सतह पर टिका देते थे और अपनी कल्पना की दुनियाँ में माया का वह जाल रचते थे कि जहाँ एकछत्र सेठ भानामल जी का ही राज्य रहता था। राज्य का मूलाधार धन था और धन के पासे पर सेठ जी मानव की मानवीयता से लेकर दानवीयता तक की सब शक्तियों का क्रय विक्रय करने में सफल हो चुके थे। सेठ जी का कोई भी परीक्षण आज तक असफल नहीं हुआ।

सेठ भानामल जी के स्वप्न बहुत ऊँचे थे। उनके जीवन में लोभ केवल धन के अतिरिक्त अन्य किसी वस्तु के प्रति नहीं था। यों दिखलाने को वह रोज़ मन्दिर जाते थे और उन्होंने अपनी सुविधा के लिए अपनी कोठी में ही एक मन्दिर बनवा लिया था परन्तु उनकी वास्तविक आस्था धन के अतिरिक्त अन्य किसी वस्तु में नहीं थी। सेठ भानामल जी का पहनावा वही था जो उनके पूर्वज पहिनते चले आ रहे थे और वह किसी मूल्य पर भी उसमें कोई परिवर्तन करने को उद्यत नहीं थे। फिर उनके बदन का आकार भी कुछ इस प्रकार का था कि उस पर कोई अन्य पहिनावा पहिनने की इच्छा रहते हुए भी फब नहीं सकता था।

कॉल साहेब सेठ जी से बातें करके अपनी कोठी पर चले गए। उनके जाने के पश्चात् एक बार सेठ भानामल जी के मन में आया कि वह स्वयँ कॉमरेड विमला के मकान पर जाकर उसे समझाने का प्रयत्न करें परन्तु ऐसा करने में उन्होंने अपनी मान-हानि का अनुभव किया। एक साधारण से डाइङ्ग अध्यक्ष के पास सेठ जी का चलकर जाना उनकी मान-हानि है। इसी समय उन्हें चौहान साहेब का ध्यान आगया और उन्होंने सोचा कि कल यहाँ से विदा होकर वह अब तक फिर मिलने के लिए नहीं आए और न ही उनका कोई फोन आया। इसमें अवश्य कुछ भेद है। हो न हो कहीं कॉल साहेब ने उनपर यह रहस्य प्रकट न कर दिया हो कि यह वेतन की कटौती मेरी ही आज्ञा के परिणाम स्वरूप की गई है। यह बात मस्तिष्क में आते ही सेठ भानामल जी उसी क्षण खड़े हो गए और कार में बैठ कर चौहान साहेब की कोठी पर जा पहुँचे।

चौहान साहेब अपने ड्राइङ्ग रूम में अकेले बैठे अखबार पढ़ रहे थे। अखबार उनके हाथ में था; पढ़ रहे थे या नहीं यह बात अनिश्चित थी। सेठ भानामल जी को आते देख चौहान साहेब खड़े हो गए और स्वाभाविक सरलता से आवभगत के पश्चात उन्हें अपनी गद्देदार चौकी पर बिठलाया। चौहान साहेब ने अपनी बैठक के निश्चित रूप से दो भाग किए हुए थे, एक पूर्ण रूप से योरोपियन और दूसरा पूर्ण रूप से भारतीय। चौहान साहेब को ढीली धोती पहिन कर भारतीय वस्त्रों की सुविधा के अनुसार बिछाए गए तख्त पर बैठने का शौक था और वहीं पर वह इस समय बैठे हुए थे। सेठ भानामल जी भी चौहान साहेब के पास में तख्त पर ही पसर गए और सहारे के लिए पास में पड़ा मखमल के अस्तर तथा खद्दर के गिलाफ़ वाला तकिया सरका लिया।

"कल आफ़िस से विदा होने के पश्चात चौहान साहेब ऐसे लापता हुए कि अब तक दर्शन ही न दिए। मैंने सोचा कि चलो मैं ही चलता हूँ। आप ठहरे चौहान, सो आपकी तो पर फड़फड़ाने से भी मानहानि होती है। मैं तो मित्रों का मित्र हूँ। यदि किसी मित्र के लिए कहीं प्राण भी देने की आवश्यकता पड़े तो भानामल हर समय उद्यत रहता है। यदि भानामल का महत्व तुम्हारे निकट इन मिल में काम करने वाले मक्खी मच्छर-तुल्य कर्मचारियों से भी कम है तो लो मैं कोरे कागज पर हस्ताक्षर करके तुम्हें दिए देता हूँ, तुम इनके वेतन ड्योढ़े नहीं दुगने और तिगुने कर दो।" इतना कहते हुए सेठ भानामल जी ने वास्तव में 'सेठ क्लाथ मिल्ज़' के एक छपे हुए कोरे लैटर पेपर पर हस्ताक्षर करके चौहान साहेब के सम्मुख फेंक दिया और उसे फेंक कर स्वयं चलने के लिए एकदम उठ खड़े हुए।

सेठ जी का अभिनय इस समय इतना प्रभावशाली था कि चौहान साहेब का हृदय द्रवित हो उठा और वह लपक कर सेठ जी का हाथ पकड़ते हुए बोले, "क्यों, चल क्यों दिए ? मैं नाराज़ तो नहीं। मिल कर्मचारियों को मैंने जो आश्वासन दिया था उसके फलीभूत न होने का खेद अवश्य है मेरे हृदय में परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि उसके लिए आप जैसे मित्र के मानापमान का ध्यान न रखूँ। कर्मचारी लाख पैदा हो सकते हैं परन्तु मित्र एक भी मिलना कठिन है।" और इतना कहते हुए चौहान साहेब ने गर्व के साथ सेठ भानामल जी का हस्ताक्षर किया हुआ लैटर पैड का वह कोरा काग़ज़ फाड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया जिसे सेठ जी उनकी ओर फेंक कर एक तुनक के साथ उठ खड़े हुए थे।

सेठ भानामल जी का हृदय खिल उठा और वह भावावेग में चौहान-साहेब से कौली भर कर लिपटते हुए बोले, "मुझे आपसे यही आशा थी चौहान साहेब ! आज मेरा वह कहना सत्य हो गया कि जिस पर एक दिन कॉल साहेब ने विश्वास नहीं किया था। मैंने कहा था कि चौहान मेरा वह मित्र है जो मेरे संकट के समय समुद्र में छलाँग लगा सकता है, अग्नि की लपटों को चूम सकता है और असम्भव को सम्भव करके दिखला सकता है।" और इतना कह कर सेठ भानामल जी ने चौहान साहेब की आँखों में आँखें डाल दीं।

चौहान साहेब सेठ भानामल जी के मुख से यह शब्द सुनकर मन ही मन प्रफुल्लित होते हुए मौन हो गए। चौहान साहेब धन के भूखे नहीं थे परंतु

अपनी प्रशंसा के पुल बँधते देख कर उनके मन में भी कुछ विचित्र प्रकार की लहरें सी उठने लगती थीं। आज चौहान साहेब को सेठ जी के इन प्रशंसासूचक शब्दों में अनेकों बार किए गए अपने आदर्श बलिदानों का वह सिला मिल गया कि जिसे पाने का इच्छुक उनका मन हर समय छटपटाया करता था। सभा में, सोसाइटी में, जुलूस में, जलसे में हर स्थान पर जहाँ भी चौहान साहेब जाते थे वहाँ उनका ध्यान अपनी प्रशंसा की वृद्धि की ओर ही विशेष रूप से रहता था। जिस प्रकार सेठ भानामल जी के जीवन का अन्तिम लक्ष्य धन और धन द्वारा शक्ति प्राप्त करना रहता था उसी प्रकार आज के जन-युग में चौहान-साहेब का ध्यान ख्याति, प्रशंसा और इनके द्वारा शक्ति को हस्तगत करने की ओर रहता था। इच्छाएँ दोनों की प्रबल थीं और दोनों एक दूसरे से अपना काम निकाल कर एक दूसरे से आगे बढ़ जाने में तत्पर थे।

आज का नेता जनता के हित की दुहाई देकर जब धन के ठेकेदारों से मित्रता करता है तो यही कॉमरेड विमला की दृष्टि में उपहासस्पद है, ढकोसला है, धोखेबाज़ी है परन्तु चौहान साहेब ने तो अपने पूर्वजों के पद् चिह्नों पर ही पग बढ़ाने का दृढ़ संकल्प किया हुआ था। महात्मा गाँधी का अमर बलिदान बिड़ला-भवन में हुआ था और कुछ-कुछ वैसा ही स्वप्न चौहान साहेब का भी था। लोक-हित का कार्य करते हुए यदि किसी दिन उनकी अर्थी सेठ भानामल जी के भवन से निकलेगी तो क्या निगमबोध घाट तक जनता की भीड़ के ठट्ट नहीं जुड़ जायँगे।

चौहान साहेब ने सेठ जी को रोक लिया और फिर दोनों ने बैठकर कर्मचारियों की गम्भीर समस्या पर विचार किया। यहाँ विचार विनिमय हो ही रहा था कि इसी समय कॉल साहेब ने आकर सूचना दी कि कर्मचारियों के एक दल ने हड़ताल की घोषणा कर दी। उनका पोस्टर रात्रि को ही शहर में लग चुका है और वह लोग मिल के सामने हैंडबिल तक्सीम कर रहे हैं।

"परन्तु कल की सभा में तो आज का दिन विचारार्थ निश्चित किया गया था और आज सन्ध्या की होने वाली सभा में अंतिम निर्णय होना था। फिर यह उतावलापन क्यों हुआ?" गम्भीरता पूर्वक चौहान साहेब ने पूछा और यह सुनकर उनका मन इतना उद्विग्न सा हो उठा कि चेहरे की बनावट में ही बल पड़ गए।

"चौहान साहेब ! इन कर्मचारियों की नसों को आप नहीं पहिचानते । आपने तो अभी लम्बी चौड़ी सभाओं में सीधे और सरल व्याख्यानों का ही धंधा किया है। इनकी नाड़ी को हम लोग पहिचानते हैं।" कॉल साहेब ने सामने के सोफ़े पर बैठकर पैर पर पैर रखते हुए अपने पाइप में तम्बाकू डाला और फिर उसे लाइटर से जलाकर तनिक खोपड़ी पर हाथ फेरते हुए बोले, "सरकार ! लातों का भूत बातों से नहीं मानता । कॉमरेड विमला को सेठ भानामल जी ने सिर पर चढ़ा लिया है। उसके मुँह पर ही कह डालते हैं कि बस उस जैसा रंग तय्यार करने वाला डाइङ्ग मास्टर आज तक संसार में कहीं पैदा ही नहीं हुआ। समझ में नहीं आता कि क्या बुद्धिमत्ता है इन शब्दों में। यदि मुझे अधिकार दिया जाए तो मैं इङ्गलेन्ड से नया डाइङ्ग-मास्टर बुलाना पसन्द करूँ परन्तु इन कर्मचारियों की माँगों पर न झुकूँ। यह सब इस समय कॉमरेड विमला के ही बल पर कूद रहे हैं। नया डाइङ्ग-मास्टर आजाने पर देखता हूँ इनकी अकड़ कहाँ तक चलती है ?" अकड़ कर कोट के सामने के बटन खोलते हुए कॉल साहेब कुर्सी पर तनिक और पसर कर बैठ गए। फिर पाइप में दो चार लम्बे लम्बे कश कॉल साहेब ने खींचे। कश वह उस समय तक खींचते ही रहे जब तक उसका तमाम तम्बाकू जल कर क्षार नहीं हो गया और धुँआ आना बन्द न हुआ।

चौहान साहेब की शान में इस कॉल के बच्चे मैनेजर ने इतनी बड़ी बात आखिर कहने का साहस किस प्रकार किया। चौहान साहेब मन ही मन आग बबूला हो उठे और क्रोध के आवेग में बिना एक शब्द भी मुख से बोले, माथे पर हाथ रख कर, कमरे में इधर-उधर घूमने लगे। कॉल साहेब ने इस समय यहाँ आकर चौहान साहेब की विचार धारा ही बदल दी। उनके कुछ-कुछ शाँत होते हुए मस्तिष्क में एक बार फिर से तूफ़ान ला दिया।

"कहिए चौहान साहेब ! आपका क्या विचार है कॉल साहेब के इस नवीन प्रस्ताव पर ?" सेठ भानामल जी ने गम्भीरता पूर्वक घूमते हुए चौहान साहेब के सम्मुख जाकर खड़े होकर पूछा।

"बकवास है सेठ जी ! यह सब गधेपन की बात है।" क्रोध में चौहान साहेब ने इस प्रकार कड़क कर कहा कि सेठ जी ही नहीं कॉल साहेब ने भी दुम दबाकर यहाँ से भागने का प्रयत्न किया और दोनों ही इधर-उधर की

बगलें झाँकने लगे। "अँगरेज़ डाइङ्ग-मास्टर बुलाया जाय और इनको निकाल कर एक अमरीकन मैनेजर को दावत दी जाए ; क्यों कैसा प्रस्ताव रहेगा कॉल साहेब !" और इतना कहकर अकड़ के साथ चौहान साहेब ने कॉल साहेब के नाटे कद पर इस प्रकार दृष्टि डाली कि उनका मन चौहान साहेब के तेज के सम्मुख झुलसा-झुलसा हो गया।

कॉल साहेब चुप हो रहे। मन में तो आया कि कह डालें—'यदि केवल चौहान साहेब का दम होता तो कॉल साहेब आज तक कभी के टिकट कटा गए होते, परन्तु अब तो नहले पर दहला लगता ही रहेगा। कॉमरेड विमला की साँठ गाँठ देखता हूँ मैं भी कि किस स्टेज तक पहुँचती है। मैंने भी यदि पतंग की डोर को पूरी ऊँचाई पर पहुँचते ही न काट दिया तो मेरा नाम भी कॉल नहीं—अपने मन में इतना कहकर दृढ़ संकल्प करते हुए कॉल साहेब ने नेत्र बन्द करके मूँछों पर ताव दिया। फिर पाइप से कश खींच कर गोल लच्छे बनाता हुआ धुआँ बैठक के वायुमण्डल में छोड़ दिया और सीना उभार कर कुर्सी के तकिए से कमर लगा ली।

"आज के स्वतन्त्र भारत में यदि हम भारतीय योग्य व्यक्तियों को निकाल कर उनका स्थान अँगरेज और अमरीकनों को देंगे तो जनता हमें क्या कहेगी ? भारत के पत्रकार टीका टिप्पणियाँ कर-करके जीना कठिन कर देंगे और लाभ के स्थान पर कर्मचारियों के आन्दोलनों को और उल्टा बल मिल जाएगा।" गम्भीरता पूर्वक चौहान साहेब ने कहा। बात रहस्यपूर्ण थी और चौहन साहेब की दूरदर्शिता पर सेठ भानामल जी का सिर डोल उठा। सेठ भानामल जी का सिर डोलता देखकर कॉल साहेब ने भी अपना सिर डुलाना प्रारम्भ कर दिया और तुरन्त अपने संकीर्ण विचारों से उत्पन्न हुए उन शब्दों के लिए क्षमा प्रार्थना की कि जिनका उच्चारण अभी कुछ क्षण पूर्व वह चौहान साहेब के लिए कर चुके थे।

बड़े से बड़ा अपराध करने वाले को भी केवल एक बार की क्षमा प्रार्थना पर क्षमा कर देना चौहान साहेब के जीवन का वह प्रधान गुण था कि जिसके बल पर चौहान साहेब ख्याति और उन्नति के इस उच्च शिखर पर पहुँचे थे। इसके पश्चात् चौहान साहेब से मिलने के लिए कुछ भारतीय संसद के सदस्य आ गए और सेट जी तथा कॉल साहेब दोनों साथ-साथ उठकर चले गए।

कॉल साहेब उठकर चले अवश्य आए परन्तु उनका हृदय अभी तक जल रहा था। मुख पर ऊपर से मुस्कान लिए हुए वह मार्ग में सेठ जी से बोले, "अब तो आप पर डोरे डालने की सत्यता प्रकट हो गई? 'सेठ कलाथ मिल्ज़' का संचालन अब चौहन साहिब की प्रेम-लीलाओं के ही संकेत पर हुआ करेगा।"

"क्या बच्चों वाली बातें करते हो कॉल साहेब? क्या मिल की स्थापना मैंने चौहान से पूछकर की थी। तुम जैसे मिल की नींव के पत्थर भी यदि इतनी छिछली विचार धाराओं से प्रभावित हो उठेंगे तो मैं नहीं समझता कि······"

"नहीं नहीं, प्रभावित मैं नहीं हो रहा परन्तु··· ···"

"तब फिर परन्तु क्या? आप अपने कार्य को दृढ़ता पूर्वक करते जाइए। आपके कार्य-क्षेत्र में चौहान साहिब का कोई हस्तक्षेप नहीं होगा।"

कॉल साहेब ऊपर से गम्भीर दीख पड़ते हुए भी मन ही मन प्रफुल्लित हो उठे और कॉल साहेब की इन परिवर्तित होती हुई मनोभावनाओं को परखते हुए भी सेठ भानामल जी ने अपना मुख गम्भीर बना लिया।

: ७ :

"मैं राष्ट्र की व्यवस्था में क्राँति चाहती हूं, झूठे समाज को छिन्नभिन्न करके नया समाज बनाना चाहती हूँ जिसमें समानता के सिद्धान्तों पर एकता की कसौटी लेकर राष्ट्र की प्रत्येक धातु को कसा जाएगा। बिना परखे नगीने अब पूरा मूल्य नहीं आँकवा सकेंगे। कुन्दन कुन्दन तपकर ही कहलाएगा, बिना तपे नहीं। झूठे झोल वाले रँगे हुए सियारों की पोल खुलकर ही रहेगी। परन्तु यह सब राष्ट्र के साधनों का सर्वनाश करके करने के पक्ष में मैं कदापि नहीं हूं। व्यक्ति और साधन दोनों के मूल्य को आँक कर हमें दोनों में समन्वय स्थापित करना होगा। व्यक्ति के हितों पर राष्ट्र के हितों को सर्वदा प्रधानता दी जाएगी। साधन किसी व्यक्ति की धरोहर बनकर राष्ट्र-निर्माण और उसकी उन्नति के पथ में बाधक नहीं बन सकेंगे।" बहुत गम्भीरता पूर्वक कॉमरेड विमला ने अपने मत का स्पष्टीकरण करते हुए कहा।

"परन्तु मेरा इससे मतभेद है।" मिस्टर बैनर्जी ने अपनी धोती की चूनट सँवारते हुए कहा। "तुम अभी क्राँति के पथ से बहुत दूर खड़ी हो कॉमरेड विमला! मेरे पास तक आने में तुम्हें अभी समय लगेगा। मैंने किसी भी आज होने वाली बात को कल पर टालना नहीं सीखा। मैं अकेला संघर्ष करूँगा और दिखलादूँगा कि मेरी हड़ताल सफल होगी।" इतना कहकर

मिस्टर बैनर्जी ने बाइस नम्बर की बीड़ी का कश खींचकर गर्व के साथ अपनी दृष्टि को क्षितिज से मिला दिया।

"हड़ताल!" आश्चर्य से कॉमरेड विमला ने पूछा। "परन्तु कैसी हड़ताल? कहाँ हड़ताल? यह तुम क्या कह रहे हो मिस्टर बैनर्जी?"

'सेठ क्लाथ मिल्ज़' में आज हड़ताल है। शहर में पोस्टर लग चुके हैं और मैं इस हड़ताल का नेतृत्व करूँगा। मिल को ख़ाक में मिला दूँगा परन्तु चलने न दूँगा, यह मेरा दृढ़ संकल्प है।" अपनी गोल लाल आँखों को निकाल कर सीना तानते हुए मिस्टर बैनर्जी बोले। "और मैं कहे देता हूँ कि तुम अब कर्मचारियों को और अधिक धोखा नहीं दे सकोगी कॉमरेड!" गर्दन हिलाते हुए मि० बैनर्जी ने व्यंग्य पूर्ण स्वर में कहा। "किसी भी पथ पर चलने का सिद्धान्त एक ही हो सकता है कॉमरेड विमला! तुम ज्वाला प्रज्वलित करके यह चाहती हो कि लपटें न निकलें और यदि लपटें निकलें भी तो उनसे हम मज़दूरों का खून चूसने वाले इन पूँजीपतियों की सम्पत्ति का सर्वनाश न हो। परन्तु यह नहीं होगा। अब ज्वाला जलेगी, उससे लपटें निकलेंगी और इन पूँजीपतियों को उसमें जलकर राख हो जाना होगा।"

कॉमरेड विमला की कुछ समझ में न आया कि यह बैनर्जी का बच्चा आखिर क्या बक रहा है? यह गधा हड़ताल का क्या नेतृत्व करेगा? उस हड़ताल की क्या दशा होगी? यह हड़ताल क्यों और कैसे हुई? वह समझ ही न सकी। मिस्टर बैनर्जी यह सूचना देकर वहाँ से झूमते हुए मस्त हाथी की भांति विदा हो गए और कॉमरेड विमला किंकर्तव्य विमूढ़ सी चिंतित परिस्थिति में बैठी रह गई।

इसी समय कॉमरेड अशफ़ाक ने बैठक से बाहर आकर साइकिल रोकी और वह बहुत परेशानी की दशा में अन्दर आया। कॉमरेड विमला वैसे ही परेशान थी कि यह सब हो क्या रहा है? कॉमरेड अशफ़ाक के बाल बिखरे हुए थे और ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मानो वह रात भर इसी वेश भूषा में शहर भर का चक्कर लगाता फिरा है।

कॉमरेड अशफ़ाक आज वास्तव में रात भर नहीं सोया था। अशफ़ाक के गुप्तचर नगर के प्रत्येक स्थान पर पूरी संलग्नता के साथ कार्य कर रहे थे। सेठ भानामल और कॉल साहेब की जो कुछ भी यूनियन में मतभेद पैदा करने के

विषय में बातें हुई थीं उन सबकी सूचना सेठ जी के टाइपिस्ट ने उन्हें लाकर दे दी थी। फिर उसके पश्चात् किस प्रकार मैनेजर कॉल साहेब ने बैनर्जी को बुला-कर शराब पिलाई और पाँच हजार रुपया कल इसलिए दिया कि रात-रात में पोस्टर छपवा कर वह हड़ताल की घोषणा कर डाले। एक सो सत्तर मिल-कर्म-चारियों को भी कल १००) रुपया प्रति कर्मचारी केवल इसलिए दिया गया है कि वह आज मिल के द्वार पर आकर पिकेटिंग करें और अन्य आने वाले कर्मचारियों को मिल के अन्दर काम करने के लिए न जाने दें।

जो कुछ हुआ था उसकी सूचना कॉमरेड अशफ़ाक ने कॉमरेड विमला को देते हुए अन्त में कहा, "उनकी एक और भी चाल अभी सामने आने वाली है और वह यह कि कर्मचारियों को आपके ख़िलाफ़ करने के लिए वह एक विचित्र प्रकार की अफवाह भी उड़ा रहे हैं।" यह अन्तिम वाक्य कॉमरेड अशफ़ाक ने सिर नीचा करते हुए कुछ लज्जा के साथ कहा।

"कैसी अफ़वाह?" आश्चर्य प्रकट करते हुए कॉमरेड विमला ने पूछा। "लज्जा की क्या बात है? आप स्पष्ट कह डालिए।"

"अफ़वाह ही नहीं, शहर में यह पोस्टर लगा है" और अशफ़ाक ने पोस्टर जेब से निकाल कर पढ़ना आरम्भ कर दिया 'कर्मचारियो! सावधान। चौहान साहेब के चंगुल में फँसकर जो कॉमरेड विमला आज आपके अधिकारों के छिन जाने पर भी शान्त बैठे रहना चाहती है उससे सावधान रहना। कॉमरेड विमला अब तुम्हारे अधिकारों का संरक्षण नहीं कर सकेगी। उसे अपने प्रेम-पथ पर अग्रसर होना है और आप लोगों की प्रदान की हुई लीडरी के फल स्वरूप उसपर चौहान साहेब की दृष्टि पड़ चुकी है। कॉमरेड विमला आपके साथ विश्वास-घात करने जा रही है। आप लोग सावधानी से अपने को उसके किसी भी प्रकार किए गए झूठे प्रचार से बचाएँ। आज इस कठिन समय में आपका पथ-प्रदर्शन केवल कॉमरेड बैनर्जी ही कर सकते हैं। इसलिए आप लोग अब जो भी कदम उठाएँ वह मि० बैनर्जी के ही नेतृत्व में उठाएँ। इसी में आप सबका हित है।" यह था पोस्टर का विषय।

पोस्टर को सुनकर कॉमरेड विमला न परेशान हुई और न दुखी ही। एक मुस्कान की सुकुमार पतली सी रेखा उसके मुख-मंडल पर थिरक उठी और वह रात भर के थके माँदे कॉमरेड अशफ़ाक के लिए अन्दर जाकर स्वयं अपने

हाथ से एक प्याली चाय बनाकर लिए हुए चली आई। चाय की प्याली मेज़ पर कॉमरेड अशफ़ाक के सम्मुख रखते हुए मुस्कुरा कर कॉमरेड विमला बोली, "तो फिर यों कहो कि कॉल साहेब अपनी बदमाशी पर पूरी तरह से उतर पड़े हैं। ख़ैर! देखा जाएगा। तुम चाय पीओ कॉमरेड अशफ़ाक! इस प्रकार की चीज़ें तो काम करने वालों के मार्ग में आया ही करती हैं। इन बातों से तुम्हारे किंचित मात्र भी विचलित होने का इस समय कोई कारण नहीं।" और कॉमरेड विमला के मुख पर सरल मुस्कान खेल उठी, मानो यह सब कुछ हुआ ही नहीं।

"तब क्या आपके विचार से उनके इस प्रचार का हमारी ट्रेड यूनियन के कार्यकर्त्ताओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा?" कॉमरेड अशफ़ाक ने गम्भीरतापूर्वक पूछा।

"पड़ेगा, निर्बल चरित्र वाले व्यक्तियों पर पड़ेगा। परन्तु साथ ही यह भी न भूल जाओ कॉमरेड अशफ़ाक! कि जो व्यक्ति इस झूठे प्रचार से प्रभावित हो सकते हैं उन्हें अपने सच्चे व्यक्तित्व के वशीभूत करने की क्षमता मैं अपने में रखती हूँ।" इस समय एक गम्भीर दृढ़ विश्वास कॉमरेड विमला के मुखमंडल पर छाया हुआ था। कॉमरेड विमला के यह आशापूर्ण शब्द सुनकर कॉमरेड अशफ़ाक का रात्रि भर का थकान काफ़ूर हो गया और उसका चिन्ताग्रस्त मन प्रफुल्लित हो उठा। उसके मस्तिष्क की परेशानी एकदम जाती रही और फिर उसने चौहान साहेब की कोठी पर होने वाली सम्पूर्ण वार्त्ता प्रसन्नचित्त होकर कॉमरेड विमला को कह सुनाई।

कॉमरेड विमला जब चौहान साहेब के चरित्र पर विचार करती है तो उनका चरित्र उसे विचित्र प्रकार के विरोधी विचारों और भावों का सामंजस्य-सा दिखलाई देता है। एक अजीब सम्मिश्रण है योग्यता और मूर्खता का, कठोरता और कोमलता का; दृढ़ता और निर्बलता का। देश भक्ति चौहान साहेब के चरित्र में कूट-कूट कर भरी है और निर्भीकता उनके जीवन का वह मूलमन्त्र है कि जिसके बल पर उन्होंने कभी भी किसी जेल में किसी जेल-अधिकारी की आज्ञा का पालन नहीं किया। चौहान साहेब का चरित्र सूखे हुए काठ के टुकड़े के समान था, जो मुड़ नहीं सकता था, परन्तु अब सेठ भानामल जी ने उसमें कुछ मुड़ जाने की क्षमता ला दी थी।

चौहान साहेब के विषय में विचारते-विचारते कॉमरेड विमला ने सोचा कि यदि यह प्रभावशाली व्यक्ति अपनी कुसंगति को छोड़कर वास्तव में जनहित

के कार्य पर जुट जाए तो अवश्य उन्नति के पथ पर बहुत आगे बढ़ सकता है।. सेठ भानामल जी के साथ चौहान साहेब की मित्रता को वह उनकी कुसंगति के अतिरिक्त और कुछ नहीं कह सकती थी। कॉमरेड विमला के विचार से चौहान साहेब का प्रयोग कांग्रेस सरकार के शासनकाल में सेठ भानामल जी ताश की तुरप चाल के रूप में कर रहे थे। इसके फलस्वरूप चौहान साहेब की ख्याति की धार को दिन प्रतिदिन ज़ंग लगता जा रहा था और सेठ भानामल जी की सान पर आब आती जा रही थी।

आज तक कॉमरेड विमला ने कभी भी एक शब्द चौहान साहेब के सम्मुख किसी की अप्रशंसा में नहीं कहा। यह कॉमरेड विमला के चरित्र की महानता थी कि वह मतभेद प्रकट करने के लिए आदेश कर सकती थी उपदेश नहीं। चौहान साहेब को कोई आदेश वह दे सके इसका अवसर उसके दृष्टिकोण से अभी तक नहीं आया था परन्तु अब और अधिक देर भी नहीं की जा सकती थी। कॉमरेड विमला ने मन ही मन सोचा कि यदि सेठ भानामल जी कॉमरेड विमला को पथभ्रष्ट करने के लिए उसके साथ चालें खेल सकते हैं तो क्या उसने नीति का प्रयोग न करने की शपथ ले ली है? नीति निपुणता में वह सेठ भानामल जी से कुछ कम नहीं। यह ठीक है कि उसके पास अपने कार्य-संचालन के लिए धन का अभाव है परन्तु उसके पास कॉमरेड अशफ़ाक जैसे कर्मठ कार्यकर्त्ताओं की कमी नहीं। उसके कार्यकर्त्ता जो कुछ भी कर रहे हैं वह मानवता को समानता और एकता के स्तर पर लाने के लिए अपने जीवन का कर्तव्य मानकर कर रहे हैं। चंद चाँदी के टुकड़ों की चकाचौंध उन्हें उनके कर्तव्य-पथ से विचलित नहीं कर सकती। उसके हाथ में वह शक्ति है जो सेठ भानामल जी के हाथों में कभी आ ही नहीं सकती।

कॉमरेड विमला का गुप्तचर विभाग सेठ भानामल जी और कॉल साहेब की पल-पल पर की जाने वाली कार्यवाहियों की सूचना कॉमरेड विमला के पास पहुँचा देता था। अभी-अभी सेठ जी का बेरूपियापन किस प्रकार चौहान साहेब पर छा गया इसकी सूचना चौहान साहेब के रसोईए ने आकर कॉमरेड विमला को दी थी। उसने बतलाया कि किस प्रकार कोरे कागज़ पर हस्ताक्षर करके और फिर मित्रता की दुहाई देकर उन्होंने चौहान साहेब को भावना की धारा में बहा कर उस कागज़ को उन्हीं के हाथ से फड़वा दिया। यकायक कॉमरेड विमला को

चौहान साहेब की सादगी और मूर्खता पर दया आ गई। "कोरे मूर्ख।" बड़-बड़ाते हुए धीरे से कॉमरेड विमला ने कई बार आप ही आप कहा।

"कॉमरेड विमला! सेठ भानामल जी और कॉल साहेब दोनों मिलकर चौहान साहेब को उल्लू बना रहे हैं।" गम्भीरता पूर्वक कॉमरेड अशफ़ाक ने चाय की प्याली मेज़ पर रख कर कहा।

"तुम्हारा विचार ठीक है कॉमरेड! परन्तु वह यदि स्वयं उल्लू बनें तो हम उन्हें रोकने का प्रयत्न ही क्यों करें? नेत्रहीन व्यक्ति को गढ़े में गिरता देख-कर हमारा कर्तव्य हो जाता है कि उसे रोक कर सीधे मार्ग पर खड़ा कर दें परन्तु यदि एक आँखों वाला व्यक्ति कुएँ की मन पर खड़ा होकर आत्महत्या करना चाहे तो जानते हो उसका क्या दण्ड है? उसे उसी क्षण हवालात में बन्द कर देना होता है और उसपर आत्महत्या करने का अभियोग चलाया जाता है। चौहान साहेब बच्चे नहीं हैं। तुम जिसे उनकी भावना और मित्रता का रूप देकर उन्हें अदोष ठहराने का प्रयत्न कर रहे हो मैं उसे उनकी स्वार्थपरता और निर्बलता मानकर उन्हें दोषी ठहराती हूं।" कॉमरेड विमला ने त्योरी चढ़ाते हुए कड़क कर कहा। "वह एक ओर जनता के प्रतिनिधि नेता बनकर कर्मचारियों के हितों के संरक्षक बनते हैं, ट्रेड यूनियनों की सभाओं के सम्मुख भाषण देते हुए उनके पथ-प्रदर्शक बनने का दम भरते हैं और दूसरी ओर अपने हृदय पर हिम-शिला रखकर सेठ भानामल जी के मुख से कर्मचारियों के लिए 'तुच्छ मक्खी और मच्छर' शब्दों का प्रयोग सुनते हुए भी नहीं लजाते। उनकी धमनियों में मैं समझती हूं कि रक्त का संचार ही नहीं होता। स्वार्थ के शीत से उनकी नसों का वह खौलता हुआ रक्त जो उन्हें ब्रिटिश साम्राज्यवाद से टक्कर लेने के लिए प्रेरित करता था आज जम चुका है।" और इतना कहते कहते कॉमरेड विमला को पसीना आ गया। उसका पतला छरहरा बदन काँप सा उठा और भावावेग में क्रोध प्रदर्शित करते हुए उसने मुट्ठी बाँधकर मेज़ पर एक हल्का-सा मुक्का लगा दिया।

कॉमरेड अशफ़ाक के बदन में कॉमरेड विमला का एक-एक शब्द सिद्धान्त की ज्वाला फूँकता जा रहा था और चौहान साहेब की कमज़ोरी इस समय उसके नेत्रों के सम्मुख साकार रूप में नाच रही थी। कॉमरेड अशफ़ाक भी भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम का पुराना सैनिक था, जो सन् तीस के नमक-आन्दोलन

से लेकर सन् बयालीस तक के प्रत्येक स्वतन्त्रता-संग्राम में सबसे आगे रहा था। कॉमरेड अशफाक एक कर्मचारी था जिसने अपने जीवन का धर्म मज़दूरी ही माना था। मस्जिद में वह कभी नहीं जाता और न कभी नमाज़ ही पढ़ता था परन्तु अपने को सच्चा मुसलमान वह बड़े गर्व के साथ कहता था। इन्सानियत का वह पुतला था, मानवता का प्रगतिशील अग्रदूत। सन् बयालिस के आन्दोलन में उसने चौहान साहेब के साथ कंधे से कंधा मिड़ाकर काम किया था और इसीलिए उसे चौहान साहेब में कुछ श्रद्धा भी थी परन्तु उनकी वर्त्तमान कार्यवाहियों से उसकी श्रद्धा को ठेस लगती जा रही थी। कल सेठ भानामल जी की आज्ञा द्वारा जो चौहान साहेब के एक मास पूर्व दिए गए आश्वासनों को समाप्त कर दिया गया उसका कॉमरेड अशफ़ाक के जीवन पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। वह समझ ही नहीं पाया कि वह व्यक्ति जो अँगरेज़ी (विदेशी) शासनकाल में अँगरेज़ी (विदेशी) चीफ़ कमिश्नर द्वारा एक बार अपने आश्वासन के फलीभूत न होने पर आग बबूला हो उठा था; उसने दिल्ली में वह कार्यवाहियाँ कर डाली थी कि स्वयँ चीफ़ कमिश्नर को उसे बुलाकर समझौता करना पड़ा था, वही व्यक्ति आज किस प्रकार इस सेठ की आज्ञा को शर्बत के घूँट की तरह पी गया। व्यक्ति के इस परिवर्तन पर कॉमरेड अशफ़ाक का विश्वास ठेस खा रहा था। कॉमरेड अशफ़ाक मन में सोचता था कि वह मानव नहीं मोम का पुतला है जो तनिक सी पैसे की गर्मी पाकर नीचे को झुक जाए और स्वयँ अपने ही हाथों से अपनी कमर तोड़ डाले।

संध्या समय जो ट्रेडयूनियन के सभासदों की सभा होनी थी वह निश्चित समय पर कॉमरेड विमला के मकान पर हुई। उसमें मि० बैनर्जी भी विराजमान थे। सभा के सम्मुख कॉमरेड अशफ़ाक ने एक ओजस्वी भाषण देते हुए पहिले हड़ताल पर बल दिया और हड़ताल को ही कर्मचारियों के हित-रक्षण का अमोघ अस्त्र बतलाया। सभा के सभी सभासदों के सिर डोल उठे और मि० बैनर्जी तो इस समय अपनी मूर्खता में नाच रहे थे। परन्तु भाषण के अन्त में एक दम उत्तेजित होकर कॉमरेड अशफ़ाक कह उठे, "हड़ताल करना उचित है और अपने मान की रक्षा के लिए हमें हड़ताल करनी ही चाहिए और करनी ही होगी परन्तु मैं आप सब सभासदों से पूछता हूँ कि इस हड़ताल की घोषणा करने का अधिकार किसको है? क्या वह अधिकार आपको नहीं है? और

यदि है तो क्यों बहुमत के अधिकारों की अवहेलना करके कोई एक व्यक्ति कर्मचारियों के नाम पर धब्बा लगाए ?" कॉमरेड अशफ़ाक का इतना कहना था कि सब सभासद बगलें झाँकने लगे और इसके पश्चात सभा के सम्मुख कॉमरेड अशफ़ाक ने कई रहस्यों को उद्घाटित करते हुए कहा, "यह सब चाल आप जानते हैं किस लिए है ? यह सब हमारी यूनियन को समूल नष्ट कर देने के लिए चाल चली जा रही है। क्या आप लोग चाहते हैं कि आपकी यूनियन का यह पौदा जिसे आपने अपने रक्त से सींचा है आपकी ही आँखों के सम्मुख आपकी ही मूर्खता के फलस्वरूप इस प्रकार नोंच-नोंच कर फेंक दिया जाए ? इसकी जड़ों को उखाड़ दिया जाए और आप लोगों को इतना निर्बल बना दिया जाए कि फिर कभी आप अपनी शक्ति को संगठित करने का स्वप्न भी न देख सकें। और इतना कहकर कॉमरेड अशफ़ाक शाँत हो गया। कॉमरेड विमला ने फिर सभा के सम्मुख समस्या को डाल दिया और एक हलका सा ओजस्वी भाषण मि० बैनर्जी की दग़ाबाज़ी तथा स्वार्थपरता और कॉल साहेब की चालों पर प्रकाश डालने वाला देकर सभासदों का मत प्राप्त करने के लिए छोड़ दिया।

"हम ऐसा नहीं होने देंगे। हम उनकी चालों में नहीं आयेंगे।" सभासदों ने ऊच्च स्वर में कहा और मिस्टर बैनर्जी की की गई कार्यवाही को सभा ने अपना अपमान समझा। सभासदों में यकायक गर्मी आ गई।

"हड़ताल करना बच्चों का खेल नहीं। यह संघर्ष है और संघर्ष अपनी शक्ति और शत्रु की निर्बलता को देखकर किया जाता है। अपनी निर्बलता और शत्रु की सबलता के अवसर पर किया गया संघर्ष अपमान और सर्वनाश के अतिरिक्त और कोई गुल नहीं खिला सकता।" कॉमरेड अशफ़ाक ने गम्भीरता पूर्वक कहा और सभी सभासदों की ओर से इसका समर्थन किया गया।

इसके पश्चात कॉमरेड विमला के भाषण ने तो सभा को इतना प्रभावित किया कि सभासदों में मि० बैनर्जी के प्रति घृणा की भावना उत्पन्न हो उठी और उन्होंने एक प्रस्ताव द्वारा मि० बैनर्जी को ट्रेड यूनियन की अन्तरङ्ग सभा से बाहर निकाल कर सदस्यता से पृथक कर दिया। सभा ने घोषणा की कि—'आज की हमारी यूनियन की यह बैठक मिल मालिकों को चेतावनी देती है कि उन्होंने जो अपने आश्वासनों को ठुकराया है वह उनकी संकुचित मनोवृत्ति का द्योतक

है। कर्मचारियों से सहयोग प्राप्त किए बिना वह सुचारु रूप से कभी भी मिल को नहीं चला सकेंगे। मिल के सुचारु रूप से न चलने पर राष्ट्र को हानि होती है और इस हानि का उत्तरदायित्व मिल-मालिकों पर है। हमारी यूनियन मिल मालिकों को विचारने के लिए फिर एक मास का समय देती है कि परिस्थिति के गम्भीर हो उठने से पूर्व वह पूरी तरह इस पर विचार कर लें। मिल मालिकों को चाहिए कि वह अँगरेज़ी साम्राज्यवादियों की छिछोरी आपस में फूट डालने वाली नीति का अवलम्बन छोड़कर सिद्धान्त की सचाई और गहराइयों तथा राष्ट्र और समय की आवश्यकताओं को समझें। हम आशा करते हैं कि मिल मालिक हमारी इस चेतावनी पर विचार पूर्वक ध्यान देने का प्रयत्न करके राष्ट्र को किसी भी प्रकार की हानि नहीं होने देंगे और कर्मचारियों को तुच्छ न समझकर उनकी ओर सहयोग का हाथ बढ़ायेंगे।'

साथ ही नीचे संक्षेप में मि० बैनर्जी की मूर्खता और कल के शहर भर में लगे पोस्टरों पर खेद प्रकट किया गया और खोलकर दिल्ली की जनता को समझाने के लिए एक बड़ा पोस्टर तय्यार किया गया जिसमें स्पष्ट कर दिया गया कि कल की होनेवाली हड़ताल की कार्यवाही यूनियन की न होकर स्वयं मिल मालिकों की ही कूट नीतिज्ञता का एक असफल प्रयास था।

दूसरे दिन शहर में इन पोस्टरों ने खलबली मचा दी।

: ८ :

चौहान साहेब दो सौ बीस रुपए का अपना कच्चा मकान बेचकर सत्याग्रही बने, जेल गए, संघर्ष किया, लीडर बने और लीडरी का सौदा करके कारधारी तथा कोठीधारी कहलाए। जीवन बदल गया। चौहान साहेब ने लेखकों के मुख से बड़े गर्व के साथ यह सुना था कि बाज़ार में नाम बिकता है और उसी का मूल्य रायल्टी के रूप में पुस्तक-प्रकाशक उन्हें देते हैं। आज की दुनियाँ में वस्तु की अपेक्षा नाम का मूल्य अधिक है और जिसका जितना नाम है उसी के अनुसार उसका सौदा पटता है। ख्याति प्राप्त लेखक पूरी रायल्टी का पैसा भी एडवाँस में प्राप्त कर लेते हैं। फिर यदि ख्याति ही मनुष्य के मूल्याँकन की कसौटी है तो चौहान साहेब ने अपने को उस कसौटी पर कस कर खरा उतारा है। खरा उतरने पर ही तो सेठ भानामल जी ने उनका मूल्याँकन किया। परन्तु लेखक की ख्याति प्रत्येक ग्रंथ के सौदे पर बढ़ती है और चौहान साहेब की ख्याति प्रत्येक सौदे पर घट रही थी इसका अनुभव चौहान साहेब मन ही मन करने लगे थे। अनुभव करते हुए भी चौहान साहेब का जीवन-स्तर आज उस धरातल पर पहुँच चुका था कि जहाँ से फिसलने पर उनका मन डाँवाडोल हो उठता था।

कांग्रेस-आन्दोलन-काल में चौहान साहेब एक निर्द्वन्द साँड की भांति साम्राज्यवाद की खेती में जहाँ अवसर मिल जाता था गर्व के साथ मुँह मारने में नहीं चूकते थे। जनता उन्हें गऊ का पूत समझकर उनपर श्रद्धा रखती थी, उनकी पूजा करती थी और दया तथा सहानुभूति प्रदर्शित करती थी। साम्राज्य-वादी ज़मींदार अपना बल्लम लेकर इस साँड के पीछे दौड़ता था, डराता था, धमकाता था, कभी साँड भी उसकी ओर को अपने नुकीले सींग लेकर दौड़ पड़ता था और जनता की सहानुभूति का बल पाकर उसे कोसों पीछे खदेड़ देता था, कभी ज़मींदार का बल्लम उसके पुटपुड़े में घुस जाता था परन्तु वह सब यह स्वतन्त्र प्रकृति वाला साँड गर्व और अभिमान के साथ सहन करता था। उसमें बल था, साहस था, जीवन का उभार था, स्वतन्त्रता की उत्कट अभिलाषा और उसका वेग था, देश-भक्ति की शक्ति थी और आगे बढ़ने की महत्वाकाँक्षा थी।

साँड का सौंदर्य और बल पूँजीपति पारखी के मन में गुभ गया। उसने अपने धन की तराज़ू पर साँड को तौल दिया और मित्रता के मायाजाल में उसके व्यक्तित्व को जकड़ लिया। समय ने करवट बदली। साम्राज्यवाद की कड़ियाँ विश्व की प्रगति के हथौड़े की चोटें खाकर छिन्न-भिन्न हो गईं। जनता ने निर्भीक व्यक्तियों को नेता मान कर सम्मानित किया और उन्हें अपना भाग्य विधाता बनाकर अपना जीवन उनके हाथों में सौंप डाला। परन्तु जनता नहीं जानती थी कि एक लम्बे काल से बड़ी-बड़ी राशियाँ चन्दे के रूप में देने वाले पूंजीपति कितनी दूरदर्शिता के साथ कितने दिन पूर्व उनके इन भाग्य-विधाताओं को चुकता मूल्य देकर ख़रीद चुके थे। मूल्य के अतिरिक्त धन और अहसान के ऋण में इतनी बुरी तरह जकड़ चुके थे कि उनका मन,उनकी आत्मा और उनका सर्वस्व जनता से सम्बन्ध विच्छेद करके किसी का दास बन चुका था। उनकी विचार-शक्ति पर प्रतिबन्ध लग गया था। विचारों की विस्तीर्णता का उनके मस्तिष्क से ह्रास हो चुका था।

इस कठोर सत्य का अपनी आत्मा में अनुभव करके भी चौहान साहेब पानी से बाहर निकली हुई मछली के समान छटपटाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर सकते थे। यह सच था कि सरकारी पदाधिकारियों में, संसद के सदस्यों में और मन्त्री मण्डलों में उनका गहरा प्रभाव था परन्तु जनता, जहाँ से जन्म लेकर उनका व्यक्तित्व इस महानता को प्राप्त हुआ था, उससे वह दिन प्रतिदिन

दूर होते चले जा रहे थे। उनका जीवन जनता की उन गहराइयों से प्रथक हो चुका था जहाँ से वास्तव में जनता की समस्याएँ जन्म लेकर चलती हैं।

कुछ इसी प्रकार के विचारों में निमग्न से चौहान साहेब अपनी बैठक में बैठे मौन मुद्रा के साथ कमरे की छत पर निहार रहे थे। 'सेठ क्लाथ मिल्ज़' की हड़ताल वाली समस्या इसी समय अचानक उनके मस्तिष्क में बड़े वेग के साथ आ गई। उनकी समझ काम नहीं कर रही थी। ट्रेड यूनियन के दूसरे पोस्टर को पढ़कर इतना तो वह निश्चय कर चुके थे कि मि० बैनर्जी को फुसला कर पहिला पोस्टर लगवाने और उन्हें बदनाम करने का प्रयत्न अवश्य इस बदमाश कॉल के बच्चे ने किया होगा परन्तु इस कार्यवाही में सेठ भानामल जी का भी हाथ था यह बात विश्वास करने को उनका मन अनुमति नहीं दे रहा था। उनके विचार से दूसरे पोस्टर में ट्रेड यूनियन के सदस्यों को यह आरोप मिल मालिकों पर न लगाकर मिल-मैनेजर कॉल साहेब पर लगाना चाहिए था। यदि वह ऐसा करते तो सम्भवत: उनके इस कार्य में वह भी उनका कुछ सहयोग देकर हाथ बँटा पाते परन्तु मिल मालिकों को साथ में लपेट कर तो उन्होंने पारस्परिक वार्त्तालाप और सुझाव की सम्भावना को भी असम्भव सा ही बना दिया।

चौहान साहेब इस प्रकार विचार कर ही रहे थे कि उन्हें सामने से कोठी में कॉमरेड विमला आती दिखलाई दी। चौहान साहेब की कोठी पर आने का कॉमरेड विमला का यह प्रथम ही अवसर था इसलिए भावुकता में बहकर चौहान साहेब नंगे ही पैर धोती की चूनटों को खुली ही छोड़कर उसे घसीटते हुए बैठक के बाहर वराडे में निकल आए। कॉमरेड विमला चौहान साहेब को इस प्रकार अपने स्वागत में श्रद्धा के साथ आगे बढ़ते देखकर मन ही मन कुछ लज्जित सी हो उठी परन्तु उसने अपने हृदय की भावना को मुखाकृति पर प्रतिविम्बित नहीं होने दिया और बहुत ही सतर्कता के साथ भावना पर विजय प्राप्त करके मुस्कुराते हुए धीमी सी व्यंग्य की रेखा खींच कर बोली, "बड़े आदमियों को छोटे आदमियों की ओर आने का अवकाश नहीं मिलता; इसलिए मैंने ही सोचा कि चलूँ आपके दर्शन कर आऊँ।" और इतना कहकर दोनों ही बैठक में घुसते चले गए। कॉमरेड विमला को अपनी बैठक में इस प्रकार देखकर चौहान साहेब का मन अन्दर ही अन्दर न जाने कैसा होता जा रहा था।

"जी हाँ! इससे पूर्व कि मैं कोई उलाहना दूँ, तुमने पहिला वार स्वयं ही कर दिया।" मुस्कुराकर प्यार तथा आदर-भाव से कॉमरेड विमला को सोफ़े पर बिठलाते हुए चौहान साहेब सामने वाली कुर्सी पर अपनी धोती की फेंट को सँवार कर बैठ गए।

"आज मिल में नहीं गई आप।" चौहान साहेब ने तनिक मुस्कुराते हुए पूछा।

"मिल से ही तो इस समय आ रही हूं।" कॉमरेड विमला ने सरलता पूर्वक उत्तर दिया और मुँह को ऐसा बना लिया कि मानो कोई विशेष बात हुई ही नहीं।

"यह हड़ताल वाला झमेला क्या था कॉमरेड विमला? इस बीच में तो आपसे मिलने का अवकाश ही नहीं मिला मुझे। मेरी तो बुद्धि ने कुछ काम नहीं दिया इस समस्या को विचारने में।" नौकर को चाय लाने के लिए कह अपनी दोनों कोहनियाँ मेज़ पर टिका कर हथेलियों पर मुँह को सँभालते हुए चौहान साहेब ने पूछा।

कॉमरेड विमला चौहान साहेब की गम्भीर मुख-मुद्रा देखकर सरलता से मुस्कुराते हुए बोली, "आप विश्वास नहीं कर सकेंगे चौहान साहेब! इसलिए पूछ कर भी क्या कीजिएगा? कोई और गप-शप की बात कीजिए। इस प्रकार की परिस्थितियों की गम्भीरता को समझने और उनका हल खोज निकालने के लिए मैं प्रर्याप्त बुद्धि और साधन रखती हूं।" परन्तु कहते-कहते अचानक उसके मुख पर गम्भीरता आ गई और भावावेग में वह कहती-कहती रुक गई।

चौहान साहेब की बात जानने की जिज्ञासा इससे शान्त न हो सकी। उनके नेत्र कॉमरेड विमला के मुख पर होने वाले परिवर्तनों को पढ़ रहे थे और वह भी तनिक गम्भीर होकर बोले "परन्तु कॉमरेड विमला! यदि मैं आपकी पोस्टर द्वारा की गई विज्ञाप्ति को सच भी मान लूँ तो भी मैं यह समझने में असमर्थ हूं कि सेठ भानामल जी स्वयं अपने ही मिल में हड़ताल कराने के लिए आख़िर क्यों उतारू हुए?" और इतना कहकर उत्तर की आशा में चौहान साहेब ने जिज्ञासा भरे नेत्रों से कॉमरेड विमला के मुख पर देखा।

कॉमरेड विमला मुस्कुराते हुए बोली, "चौहान साहेब! आपने राजनीति के दाव-पेंच देखे और चलाए हैं। फिर भी आप न जाने क्यों यह सब बचपने

की बातें पूछ रहे हैं। हड़ताल कराना तो साधारण सी बात है परन्तु मैं कहती हूँ कि एक दिन जब इन सब कल कारखानों का राष्ट्रीयकरण होगा तो उस दिन या तो मिल में आग लगवाने के प्रयत्न किए जायेंगे या सेठ भानामल जी के दिल की धड़कन रुक जायेगी।" और इतना कहकर कॉमरेड विमला बीच की मेज़ पर हाथ मारते हुए बोली, "परन्तु इनमें से पहिली बात का होना हम कभी सहन नहीं कर सकते। आप जानते हैं क्यों? क्योंकि इस मिल की दीवारों की चिनाई हमारे खून और पसीने में चूने को सानकर की गई है। इसकी ईंटों में मज़दूरों की हड्डियों का बल है। इसमें सेठ भानामल जी का क्या लग रहा है?" और इतना कहकर विमला चुप हो गई। चौहान साहेब ने अनुभव किया कि वह अभी और कुछ कहना चाहती थी परन्तु कहते कहते रुक गई।

"तुम अभी कुछ और कहना चाहती थीं विमला! कहते कहते रुक क्यों गईं तुम? कहो, मैं सुनना चाहता हूँ। तुम्हारी बातों को जब मैं सुनता हूँ तो प्रभावित हो उठता हूँ और उन बातों की सत्यता पर जब विचार करता हूँ तब भी मुझे उनमें कुछ झूठ दिखलाई नहीं देता, परन्तु वह प्रभाव स्थायी नहीं होता। क्या कुछ इसका कारण भी बतला सकोगी विमला?" यह बात चौहान साहेब ने इस समय ऐसी कही कि मानो विमला के सम्मुख अपना हृदय खोलकर रख दिया।

चौहान साहेब के इस वाक्य की सरल जिज्ञासा से विमला प्रभावित हो उठी और वह गम्भीरता पूर्वक बोली, "चौहान साहेब! वास्तव में मैं कुछ और कहना चाहती थी परन्तु वह बात आज नहीं कह सकूंगी। एक दिन वह अवश्य आएगा जब मुझे आपसे वह बात कहनी होगी और हो सकता है कि उस दिन मेरे जीवन के कार्यक्रम का आपके जीवन के कार्यक्रम से कुछ मेल हो सके। वह कोरी बातों की बात न होकर कर्त्तव्य-पथ की कसौटी होगी जिस पर केवल खरा ही व्यक्ति खरा उतर सकेगा झोल चढ़ा हुआ नहीं।"

इसी समय चौहान साहेब का नौकर चाय लेकर आ गया और फिर दोनों ने चाय पीनी आरम्भ कर दी। चाय की प्याली दोनों ने होठों से लगाई ही थी कि बाहर पोर्टिगो में कॉल साहेब की मोटर आकर रुकी और कॉल साहेब सिगार का कश लगाते हुए कार से उतरकर जूतों की चरमर ध्वनि के साथ सीधे अन्दर वहाँ तक चले आए जहाँ विमला और चौहान

साहेब चाय पी रहे थे। कॉल साहेब को आते हुए देखकर विमला उनके सम्मान में खड़ी हो गई परन्तु चौहान साहेब ज्यों के त्यों अकड़े हुए बैठे रहे। वह अपने सीने में तनिक और भी उभार ले आए कॉल साहेब को यह दिखलाने के लिए कि 'देख कॉल के बच्चे! जिस मेरे और कॉमरेड विमला के सम्बन्धों को तू अपनी चालों द्वारा विच्छेद करने का प्रयत्न कर रहा है वह और भी दृढ़तर होते जा रहे हैं। चौहान साहेब के नेत्रों में इस समय व्यंग्य की वह छाया वर्त्तमान थी कि जिसपर दृष्टि पड़ते ही कॉल साहेब को लजा जाना चाहिए था परन्तु कहाँ? कॉल साहेब ने तो आते ही बिना इस बात की प्रतीक्षा किए कि चौहान साहेब उन्हें बैठने को कहें पास पड़ी तीसरी कुर्सी सँभाल ली और ज़ोर से सिगार का धुँआ ऊपर छोड़ते हुए बोले, "मैंने कहा धन्यवाद इस युगल जोड़ी को।"

"कैसा धन्यवाद?" आश्चर्य प्रकट करते हुए चाय की प्याली होठों से लगा कर चौहान साहेब बोले, "और किस बात का धन्यवाद?"

"यह भी मुझे ही कहना होगा। आप दोनों साहेबान का मैं वास्तव में बहुत कृतज्ञ हूँ और मिल-मैनेजर होने के नाते आपका और भी अधिक कृतज्ञ हूँ कि आप लोगों ने मेरा ऐसे कठिन समय में साथ दिया। आज के कर्मचारियों को, जब कि भारत स्वतन्त्र हो चुका है, कॉमरेड विमला जैसे ही मज़दूर-नेताओं की आवश्यकता है। कॉमरेड बैनर्जी जैसे गधे मैं समझता हूँ, और ठीक समझता हूँ, कि अब भविष्य में कर्मचारियों का उल्लू बनाकर राष्ट्र का अहित नहीं कर सकेंगे।" और यह कहते कहते कॉल साहेब ने सैल्फ हैल्प (अपनी सहायता स्वयं) करके अपनी चाय की प्याली तय्यार कर ली और होठों से लगाकर मुस्कुराते हुए नेत्रों से विमला और चौहान साहेब के मुख पर घूर कर ताका।

विमला बिलकुल मौन थी और वह इस समय कॉल साहेब से कुछ बातचीत भी नहीं करना चाहती थी। चौहान साहेब के दिल में कॉल साहेब की यह बातें सुनकर कुछ अजीब ही विचारधारा जन्म लेती जा रही थी परन्तु उन्हें कॉल साहेब से कुछ हार्दिक घृणा सी हो गई थी और इसलिए वह उनके मुँह के सामने अपने मुँह की रूपरेखा सुधारने का प्रयत्न करते हुए भी उसमें असफल हो रहे थे। कॉमरेड विमला और चौहान साहेब को इस प्रकार बिल्कुल

मौन देख कर कॉल साहेब मुस्कुराते हुए बोले, "मैं समझता हूँ कि मैंने इस समय यहाँ आकर आपके पारस्परिक विचारविमर्श में बाधा उपस्थिति कर दी; परन्तु आप लोगों ने जो मेरी इतनी बड़ी सहायता की थी उसके लिए कृतज्ञता प्रकट करने के लिए आना मैं अपना कर्त्तव्य समझता था। इसीलिए मैंने आप को कष्ट दिया।" और इतना कहते हुए जाने की मन में इच्छा न रहने पर भी कॉल साहेब उठकर खड़े हो गए।

कॉल साहेब को खड़े होता देखकर चौहान साहेब गम्भीर ध्वनि में कहा "बैठिए कॉल साहेब! अभी आकर बैठे नहीं कि चलने के लिए खड़े हो गए। यदि ऐसी ही किसी काम की शीघ्रता थी तो वह काम समाप्त करके ही यहाँ आना था।" और मुस्कुराते हुए विमला की ओर मुख करके बोले, "कॉमरेड विमला! चाय पिलाइए न कॉल साहेब को। देख नहीं रही हो बेचारे कितनी जल्दी और कार्य-व्यस्तता में होते हुए भी तुम्हें और मुझे धन्यवाद देना नहीं भूले।"

कॉल साहेब को बहाना मिल गया कुछ देर और बैठने का। चौहान साहेब के वाक्य की आँतरिक जलन को पूरी तरह हृदय में अनुभव करके भी कॉल साहेब खूब मुस्कुराए, खूब मुस्कुराए और इस प्रकार अपने दृष्टिकोण से उन्होंने चौहान साहेब को पूरा ही मूर्ख समझा। कॉल साहेब जब कभी भी चौहान साहेब के चरित्र पर विचार करते थे तो उनका महत्व उनकी दृष्टि में नाखून के मैल के समान भी नहीं रहता था। वह अपनी बुद्धिमत्ता के सम्मुख चौहान साहेब के सम्बन्धों का कोई भी मूल्य नहीं समझते थे। कॉमरेड विमला कॉल साहेब के मार्ग का सबसे बड़ा काँटा था जिसने आज तक न जाने उनके कितने षडयन्त्र बहुत सुगमता पूर्वक विफल कर दिए थे। प्रारम्भ में जब यह कॉमरेड विमला के सम्पर्क में आए थे तो उन्होंने विमला की कार्यवाहियों को टालने का प्रयत्न किया था। जब वह और अधिक बढ़ने लगीं तो उनसे टक्कर लेने का प्रयत्न किया। जब टक्कर में सफलता न मिली तो उस पर मायाजाल बिछाना चाहा और जब मायाजाल के भी फलीभूत होने की सम्भावना न रही तो उतर आए बदमाशी और कूटनीतिज्ञता पर। परन्तु खेद का विषय था कि उनका यह दाव भी खाली गया और उन्हें अपने इच्छित लक्ष्य को प्राप्त करने में सफलता न मिल सकी।

"मैनेजर साहेब ! आप हमें बधाई देने आए हैं और मैं बधाई का पात्र आपको गिनती हूं ।" विमला मुस्कुराते हुए गम्भीर स्वर में बोली ।

"यह किस प्रकार ?" कॉल साहिब चाय की प्याली एक हाथ में लेकर दूसरे से टाई की नॉट को ठीक करते हुए बोले ।

"आपने अपनी नीति-कुशलता से हड़ताल को तोड़ दिया । आपने अपनी नीति द्वारा हमारी ट्रेड यूनियन में दो दल बनवा दिए । आप सच जानिए मैनेजर साहेब ! कि मैं कॉमरेड-बैनर्जी का साथ देने को पूरी तरह से उद्यत थी परन्तु बहुमत के सामने मुझे झुक जाना पड़ा । इस बहुमत को हड़ताल से हटा कर काम पर जुटाने की शक्ति केवल कॉल साहेब की ही नीति कुशलता में हो सकती है अन्य किसी वस्तु में नहीं !" और इतना कहकर कॉमरेड विमला ने मुस्कुराते हुए चौहान साहेब के मुख पर एक हल्की सी व्यंग्य की रेखा खींच दी ।

कॉल साहेब ने विमला की यह बात जोर की हँसी में अपने एक हाथ पर दूसरा हाथ मार कर उड़ाते हुए सहन कर ली और उस व्यंग्य को वह काल कूट की भांति शिव बनकर पी गए परन्तु विद्वेष की ज्वाला उनके तन बदन में और भी जलन के साथ दहक उठी और उन्होंने आज प्रण कर लिया कि, 'अच्छा कॉमरेड ! अब तक तो हमने क्या कूट नीति का प्रयोग किया है परन्तु हाँ ! अब अवश्य करेंगे और हमें देखना है कि अन्त में विजय किसकी होती है ।'

हृदय में विद्वेष का अथाह सागर लेकर भी कॉल साहेब ने अपने मुख पर उसे प्रतिविम्बित नहीं होने दिया । वह मुस्कराते हुए बोले, "कॉमरेड ! हम तो राष्ट्र के निर्माण-कार्य पर जुटने वाले मज़दूर हैं । नीतिकुशलता से हमारा क्या सम्बन्ध है ? तुम मज़दूरों की नेता हो और चौहान साहेब राष्ट्र के । हमें तो दोनों की ही आज्ञा का पालन करना है ।" और इतना कहकर कॉल साहेब ने घूरकर विमला के मुख पर ताका ।

"हमारी आज्ञा ? 'सेठ क्लाथ मिल्ज' के मैनेजर को सेठ भानामल जी की आज्ञा का पालन करना है ।" कॉमरेड विमला तीखे व्यंग्य के साथ मुस्कुरा कर कुछ ठहरती हुई बोली, "कॉल साहेब ! यहाँ वह बर्त्तन ही नहीं कि जिनपर क़लई चढ़ाई जाती है । आप सफल कलाकार हैं परन्तु आपकी वर्त्तमान कला-कारिता आपको राष्ट्र का शत्रु बना देगी, मित्र नहीं । जिस विष को आपने

अपने कोष में साम्राज्यवाद की घूंटी से एकत्रित किया है उसे उगल डालिए। इससे न आपका हित होगा और न राष्ट्र का ही।"

"यह व्याख्यान आप चौहान साहेब को क्यों नहीं देतीं कॉमरेड ?" कटु व्यंग्य के साथ मुस्कुराते हुए कॉल साहेब बोले, "सम्भवतः चौहान साहेब आपके व्याख्यान से प्रभावित हो उठें। मेरे पास दिल नहीं, पत्थर है कि जिसपर जोंक असर नहीं करती।" और इतना कहकर कॉल साहेब उठकर चल दिए परन्तु चलते-चलते भी उन्होंने कॉमरेड विमला के यह शब्द सुने—'इस पत्थर को या तो मोम बनना होगा कॉल साहेब ! अन्यथा यह टूटकर चकनाचूर हो जाएगा और फिर उसके टुकड़ों को पैरों से रौंदता हुआ राष्ट्र निर्माण-पथ का राही बन कर प्रगति के पथ पर अग्रसर होगा। उसके पैरों को जकड़ने वाली शृङ्खलाओं की कड़ियाँ स्वयं छिन्न-भिन्न होकर अशक्त सी उसके पथ में बिछ जायेंगी।'

: ९ :

कॉल साहेब चौहान साहेब पर मन ही मन खीजते थे परन्तु उनका कुछ कर सकें यह सामर्थ्य उनमें नहीं थी। चौहान साहेब, कुछ भी सही, एक भारी पत्थर थे जिन्हें हिलाना बालकों का खिलवाड़ नहीं था। वह आज तक कभी कॉल साहेब की कोठी की ओर नहीं झांके और कॉल साहेब को चौहान साहेब की कोठी पर नित्य ही सेठ भानामल जी की आज्ञा पालन करने के लिए आना होता था। बिगड़ते कॉल साहेब कॉमरेड विमला पर भी थे परन्तु केवल उस समय जब वह उनकी मैनेजरी का भी ध्यान न रखकर अपने व्यंग्य-बाण सीधे उन्हीं की छाती में गुभाने प्रारम्भ कर देती थी। वैसे कॉमरेड विमला के प्रति कॉल साहेब के मन में सहानुभूति भी थी परन्तु इस सहानुभूति के सही-सही स्पष्टीकरण का सुअवसर उन्हें आज तक विमला ने कभी नहीं दिया था।

जब कभी भी विमला का तीखापन कॉल साहेब को अधिक असहनीय हो उठता था तभी वह अङ्गरेज़ डाइङ्ग मास्टर की बात सोचते थे और आज तो वह दृढ़ संकल्प कर चुके थे कि किसी न किसी प्रकार अङ्गरेज़ डाइङ्ग-मास्टर को इङ्गलैंड से बुलाने की स्वीकृति वह सेठ भानामल जी से अवश्य ले लेंगे।

चौहान साहेब की कोठी से उठकर कॉल साहेब सीधे सेठ भानामल जी के बँगले पर पहुंचे। सेठ भानामल जी इस समय किसी जगह जाने की तय्यारी

कर रहे थे। कॉल साहेब ने आगे बढ़कर सेठ भानामल जी को प्रणाम किया और प्रणाम का उत्तर प्रणाम से पाकर एक ओर कुर्सी पर बैठ गए। सेठ भानामल जी कॉल साहेब को इसी कमरे में छोड़ कर दूसरे कमरे में चले गए और वह दस मिनट पश्चात उसी समय इधर आए जब कि बाहर चौहान साहेब की कार का हॉर्न बजा और चौहान साहेब कार से उतर कर अन्दर आ गए। कॉल साहेब को यहाँ बैठे देखकर चौहान साहेब को आश्चर्य न हुआ और एक साधारण व्यक्ति के समान उन्होंने उस ओर ध्यान न देकर अपनी दृष्टि दूसरी ओर को करली।

चलते समय सेठ जी ने कॉल साहेब को केवल यही सूचना दी कि 'हो सकता है आज भेंट न हो सके। इम्पीरियल होटल की पार्टी में जा रहा हूँ। आज स्वयं प्रधान मंत्री भी वहाँ पर आने वाले हैं।' और कॉल साहेब अपने दोनों हाथों की हथेलियों को आपस में मलते हुए चुप रह गए। सेठ भानामल जी और चौहान साहेब के चले जाने पर कॉल साहेब ने भी अपनी कोठी की राह ली परन्तु उनके हृदय में इस समय सेठ जी के व्यवहार पर रह-रह कर जलन पैदा हो रही थी। एकाएक उन्हें सेठ भानामल जी के लिए की गई अपनी सब सेवाएँ स्मरण हो आईं और उनके लिए किए गए अपने बलिदान और त्याग उन्हें ऐसे प्रतीत हुए कि मानो उन्होंने भूल से बालू रेत में थूक दिया। कॉल साहेब इतिहास के विद्यार्थी रहे थे और उन्होंने कई-कई वज़ीफ़े पाए थे। अचानक ही आज उनके कानों में हैनरी अष्टम के प्रधान मंत्री वूल्ज़ले के यह शब्द बज उठे जब कि उसने शोक भरे शब्दों में कहा था, "Had I loved God as I loved this King I hope he would have not for-gotten me in my old age" (जितनी सेवा मैंने इस राजा की की है उतनी यदि मैं भगवान की करता तो सम्भवतः वह मुझे मेरी वृद्धावस्था में न भुलाता) और तुरन्त कॉल साहेब के नेत्रों के सम्मुख उनके वृद्ध-भविष्य की रूप रेखा नाँच उठी। उनका हृदय कह उठा कि वास्तव में कहने वाले सच कहते हैं कि धनाधिक्य व्यक्ति को तोताचश्म बना देता है। अभी-अभी देखो न सेठ भानामल जी ने मेरे यहाँ आने का मूल्य इतना भी नहीं आँका कि जैसे उरद पर सुफ़ैदी। सेठ भानामल जी इस चार दिन के चौहान जैसे बे पैंदी के लोटों के साथ चाय पार्टियाँ उड़ाकर चार दिन की चाँदनी वाले लीडरों की

झलक में अपनी स्वार्थ-सिद्धि की स्कीमें बनाकर हम जैसी अपनी नींव की दीवारों को नगण्य समझने का प्रयत्न कर रहे हैं। फिर गर्व के साथ कॉल साहेब ने अपने आप से अपनी बैठक में घूमते हुए कहा—'कोई बात नहीं कॉल! तुम्हारे मस्तिष्क की नींव पर सेठ भानामल जी की आकाँक्षाओं का महल निर्मित हुआ है। जिस बुद्धि और चातुर्य के बल पर तुम चाट पकौड़ी वाले 'भाना' को सेठ भानामल बना सकते हो उसी के बल से तुम उसे ख़ाक में मिलाने की भी क्षमता अपने में रखते हो। सेठ भानामल को तुम्हारे सम्मुख झुकना ही होगा, नहीं...तो ...!'बस इससे आगे वह इस समय विचार न कर सके।

कॉल साहेब अपनी बैठक में परेशान से घूम रहे थे कि अन्दर से छोटी बहूरानी ने आकर कहा "आप तो इस मिल के मामले में मैं देखती हूँ कि पागल हो जायेंगे।" और मुँह बना कर एक प्यार-व्यंग्य छोड़ते हुए उसने कॉल साहेब का हाथ पकड़ कर उन्हें अपने पास सोफे पर बिठला लिया। बहूरानी ने उनके सिर से फ़ैल्ट हैट उतार कर मेज़ पर रखते हुए कहा, "न नहाना है न खाना। रात दिन इस मिल का रोग लग गया है। इस प्रकार व्यर्थ समस्याओं में पड़कर आप क्यों अपना स्वास्थ्य ख़राब करने पर तुले हैं?" दुखित होकर छोटी बहूरानी ने प्रेम-भरी दृष्टि से कॉल साहेब के उतरे हुए मुख मंडल को निहार कर कहा।

"यही तो मैंने रात भर इन्हें समझाया है छोटी बहूरानी!" बड़ी बहूरानी अन्दर से आकर बोलीं। "व्यर्थ के लिए मस्तिष्क में समस्यायें खड़ी कर लेते हैं। "कुछ और भी तो सुनो, यह कहते हैं कि जिस प्रकार पहलवान व्यायाम करके अपने बदन के मसिल्स (गोश्त के टुकड़े) पर ज़ोर डालकर उन्हें बलवान और हृष्ट-पुष्ट बनाता है उसी प्रकार मस्तिष्क में भी समस्याओं को उत्पन्न करके मस्तिष्क की शक्ति को बढ़ाया जाता है?" और इतना कहते हुए बड़ी बहूरानी सोफे पर कॉल साहेब के दूसरी ओर बैठ गईं। कॉल साहेब इस समय सोफे पर दोनों बहूरानियों के बीच में बैठे थे।

"तो फिर यों कहो कि यह परेशानी वरेशानी कुछ नहीं है, आपके मस्तिष्क का व्यायाम हो रहा है।" मुस्कान में हल्की सी हँसी मिलाते हुए छोटी बहूरानी ने कहा और यह कहते-कहते उन्होंने अपने गुदगुदे हाथों में कॉल साहेब का हाथ लेकर धीरे से दबा दिया।

"यह हंसी या मज़ाक की बात नहीं है छोटी बहू रानी !" तनिक गंभीर होकर बड़ी बहू रानी बोलीं, "इनकी इतनी ठोस गम्भीरता और मस्तिष्क का व्यायाम तो हमारे स्वास्थ्य को भी ले बैठेगा। इस समय तो हमारे सम्मुख भी यह एक समस्या बनकर उपस्थित हो गई है। व्यायाम हो रहा है इनके मस्तिष्क का और उस व्यायाम से एक प्रकार की परेशानी बढ़ती जा रही है हम लोगों के मस्तिष्क में।" और इतना कहकर बड़ी बहूरानी धीरे से मुस्कुरा दीं।

"यही तो मैं भी कह रही हूँ जीजी !" छोटी बहूरानी बोलीं, परन्तु कॉल साहेब की विचार-धारा न टूटी। मानो उन्होंने कुछ सुना ही नहीं। दोनों बहूरानियों के बीच योगी कृष्ण बने कॉल साहेब अपनी अविचल विचार-धारा लिए बैठे थे। यह दोनों ही बहूरानियाँ आपस में सगी बहिनें थीं। बड़ी बहूरानी के जब कोई सन्तान न हुई और कॉल साहेब ने सेठ भानामल जी के सहयोग से अतुल धन-राशि एकत्रित कर ली तो बड़ी बहूरानी ने यही उचित समझा कि अपनी छोटी बहिन को भी उसी घर में ले आयें। कॉल साहेब की माताजी यह तो चाहती थीं कि उनका इकलौता पुत्र कॉल अपना दूसरा विवाह कर ले परन्तु वह इस बाँझ स्त्री की बहिन को घर में दूसरी बहू बनाकर लाने के पक्ष में नहीं थीं। उन्हें यह भय था कि यदि कहीं बड़ी बहू की छोटी बहिन भी उसी के समान बच्चा न दे सकी तो फिर.........विधाता की इच्छा सर्वदा बलवान रहती है। एक तो कॉल साहेब पहिले से ही अपनी स्त्री की छोटी बहिन से बहुत प्रभावित हो चुके थे और जब उन्हें बड़ी बहूरानी की आज्ञा मिल गई तब तो फिर सोच विचार का कोई कारण ही न रहा। अन्त में वही हुआ जो कॉल साहेब की माता जी को आशंका थी। कॉल साहेब ने दूसरा विवाह किया और वह विवाह बड़ी बहूरानी की छोटी बहिन से ही हुआ परन्तु बेचारी वह भी कॉल साहेब की माता जी की हार्दिक इच्छा कोई बच्चा देकर पूरा न कर सकीं।

कॉल साहेब की दोनों बहूरानियों की उनकी माता जी से बिलकुल नहीं पटती थी। इसलिए इन दोनों के लिए कॉल साहेब ने काश्मीरी गेट से बाहर कोर्ट-रोड पर एक कोठी ले दी थी। कॉल साहेब भी अब इसी कोठी में रहते थे और अपनी माता जी से मिलने का अवकाश उन्हें सप्ताह में एक बार भी बड़ी कठिनाई से मिलता था। कॉल साहेब का जीवन-कार्य-क्रम बड़ा ही व्यस्त रहता था।

आज दोनों बहूरानियों के कहने पर भी कॉल साहेब की इच्छा सिनेमा जाने की नहीं हुई और न ही उन्होंने कहीं घूमने चलने का प्रस्ताव ही स्वीकार किया। उनके मन में तो इस समय सेठ भानामल जी घुसे हुए थे और घुसा हुआ था उनका आजका व्यवहार। कॉल साहेब उस दिन को भूले नहीं थे जब एक दिन प्रातःकाल से संध्या तक भूखे मर कर उन्होंने पच्चीस हज़ार का एक ठेका सेठ भानामल जी को दिलवाया था और उस ठेके में ओवरसीयर से मिल कर पाँच हज़ार की सीमेंट चोरबाज़ार में बेच कर ठेके से सेठ जी को दस हज़ार का लाभ कराया था। वह दस हज़ार का लाभ होना था कि वारे न्यारे होते चले गए। जिस वस्तु में भी हाथ डाला दुगने और चौगुने ही हुए। मिट्टी पर भी यदि कॉल साहेब ने कहीं अनजाने में हाथ रख दिया तो वह भी सोना बनकर बोल उठी। यह मिलें, यह कारखाने, यह धन, यह दौलत, यह कोठियाँ, यह बँगले, क्या सब कॉल साहेब की खून पसीने की कमाई से सम्बन्ध नहीं रखते? क्या कुछ नहीं किया कॉल साहेब ने इनके प्राप्त करने में? क्या यह सब चौहान साहेब ने पैदा कर दिया था सेठ भानामल जी के लिए। चौहान साहेब तो आज बनीबनाई के यार मुकन्दा हैं। आज इनकी बनी है तो ठेके इनके नाम छूटते हैं और कल इनसे बिगड़ जाएगी तो ठेके दूसरों के नाम पर छूटने लगेंगे। आज सेठ को याद नहीं रहा कि कॉल ने भानामल का हाथ किस दशा में पकड़ा था।

परन्तु जो बना सकता है वह बिगाड़ भी सकता है। व्यापार लोहे की दीवारों पर खड़ा नहीं होता, उसकी दीवारें बालू से बनाई जाती हैं। एक एक रहस्य पर लाखों का इधर उधर होता है और इतना अपने मन से कहकर एक अभिमान के साथ सीना उभारते हुए कॉल साहेब ने गंजी खोपड़ी पर हाथ फेरना प्रारम्भ कर दिया। कॉल साहेब को अपनी बुद्धि के बल और कार्य-कुशलता पर बड़ा भारी विश्वास था।

कॉल साहेब को गूढ़ विचारों की सरिता में अकेले ही डुबकियाँ लगाते रहने के लिए छोड़ दोनों बहिनें कार में बैठकर घूमने के लिए चली गईं। चलते समय उन्होंने कॉल साहेब से इतना भर अवश्य कहा, "कार हम लोग ले जा रहे हैं। यदि आपको कहीं जाना हो तो आप सेठ भानामल जी की कार मँगा लीजिए।"

सेठ भानामल जी के यहाँ दस कारें थीं, इसलिए अवसर पड़ने पर दूसरी कार वहीं से मँगा ली जाती थी। यह इस परिवार की पुरानी प्रथा थी परन्तु आज सेठ भानामल जी की कार का नाम सुनकर कॉल साहेब के नेत्रों में खून उतर आया। बहूरानियाँ इस पर कोई ध्यान न देकर कार में बैठ, घूमने को प्रस्थान कर गईं और कॉल साहेब क्रोध में रुँआसे से होकर चुपचाप प्रस्तर-मूर्ति के समान सोफे पर धरे रह गए। कॉल साहेब का मन आज वास्तव में बड़ा खिन्न था और वह मन ही मन छटपटा कर सोच रहे थे कि क्या वह अपने जीवन में हार गए, यह सच है?

संध्या का अँधेरा होने पर बत्तियाँ जल गईं और कमरे में चारों ओर प्रकाश छा गया। कॉल साहेब ने आज अकेले बैठे-बैठे कॉमरड विमला, चौहान साहेब, सेठ भानामल और अपने चरित्र पर स्वयं अपनी आत्मा की संतुष्टि के लिए विचार किया तो उन्हें वह स्वयँ सबसे बुद्धिमान प्रतीत होते हुए भी सबसे मूर्ख जचे। चौहान साहेब ने अपनी बुद्धि का प्रयोग अपने उत्थान के लिए किया; कॉमरेड विमला अपनी बुद्धि के बल से चौहान साहेब को नचा रही है और सेठ भानामल जी पर भी उसने अपने अपनत्व के अनिवार्यता की छाप लगा दी है। सेठ भानामल जी हैं बुद्धि के पुतले और उन्होंने अपनी बुद्धि के बल से साँसारिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सर्वसम्मानित स्थान प्राप्त कर लिया है परन्तु कॉल साहेब ने तो सर्वदा ही अपनी बुद्धि का प्रयोग दूसरों के लिए किया है। उन्होंने तो जीवन में सर्वदा ही सेठ भानामल जी का सौदा ख़रीदा और बेचा है, अपना नहीं। हाँ इतना अवश्य है कि सेठ भानामल जी का सौदा लेते और बेचते समय वह अपनी चौथ, जिसे कुछ कहने वाले कमीशन कहने में भी नहीं चूकते, लेने में संकोच कॉल साहेब ने भी नहीं किया। कोई भी सौदा लेते या बेचते समय अपना कमीशन ठोक बजा कर अग्रिम खड़ा कर लेते थे। इस कमीशन लेने की कॉल साहेब की प्रथा से सेठ भानामल जी अनभिज्ञ थे, ऐसी बात न थी, परन्तु सेठ भानामल जी से इस विषय में कुछ कहने की कभी आवश्यकता कॉल साहेब ने अनुभव नहीं की। पूछने का कभी कष्ट सेठ जी ने भी नहीं किया। हाँ इतना अवश्य सच है कि इस कमीशन या चौथ का लेन देन प्रारम्भ में गुप्त रूप से ही कॉल साहेब ने प्रारम्भ किया था परन्तु अब खुले आम उसे वह अपनी प्रथा के रूप में सेठ भानामल जी के सामने भी निश्चित कर लेते हैं।

इसी प्रकार की मानसिक उथल पुथल में समय न जाने कितना निकल गया। यकायक एक कार के कोठी में घुसने की ध्वनि आई और कॉल साहेब ने सोचा कि सम्भवतः दोनों बहूरानियाँ घूमकर लौटी हैं परन्तु कार सेठ भानामल जी की थी और उसके रुकने पर कॉल साहेब ने देखा कि सेठ भानामल जी उसमें से उतर पड़े। कॉल साहेब सेठ जी को इस प्रकार अपनी कोठी पर देखकर स्वागत के लिए दौड़ पड़े। पेंट की ऊपर की बैल्ट के बटन खुले हुए थे और वह ज्यों ही आगे को बढ़े कि पेंट नीचे खिसकने लगी परन्तु कॉल साहेब उसे सँवारते हुए बाहर जा पहुँचे और सेठ भानामल को बड़े आदर भाव के साथ अन्दर लाकर सोफे पर बिटलाया। अभी चन्द मिनट पूर्व सेट भानामल जी के विषय में कॉल साहेब जो कुछ विचार कर रहे थे वह इस समय एक क्षण में सब काफूर हो गए। उनकी दृष्टि में अभी अभी कुछ ही समय पूर्व जो सेठ जी महान धूर्त्तों के अवतार बन चुके थे वह इस समय भगवान के अवतार थे और अपने इष्ट मित्रों के तो वह सर्व संकट मोचनहार थे। सेठ भानामल जी का देवता-स्वरूप इस समय उनके सम्मुख था और मस्तिष्क का विकार भी समाप्त होकर वह ठीक-ठीक कार्य करने लगा था। उनके अन्दर की जलन दूर होकर इस समय हृदय शीतल हो गया था।

सेठ भानामल जी सोफे पर पसर कर इस प्रकार फैल गए जैसे कीचड़ में भैंस लेट जाती है। पहिले बैठकर सेठ भानामल जी ने अपने सिर की पगड़ी उतार कर सामने मेज़ पर रखी और फिर इधर उधर झाँक कर बोले "आज दोनों बहूरानियाँ कहाँ चलती बनी हैं, भाई कॉल!"

'कह नहीं सकता सेठ जी! मैं तो यहाँ बैठा-बैठा कुछ विचारों में निमग्न था कि वह दोनों कार लेकर कहीं घूमने निकल गई।"

"'भाई कॉल' शब्द सेठ जी के मुँह से सुनकर कॉल साहेब का कलेजा गद-गद कर उठा और प्रेम की वह धारा हृदय में उमड़ी कि सेठ जी के चरणों पर अपने मन को उन्होंने पूर्ण रूप से बिछा दिया। सेठ भानामल जी की आयु कॉल साहेब से एक दो वर्ष कम ही थी परन्तु सेठ भानामल जी मालिक होने के नाते कॉल साहेब को चाहे पुत्र तुल्य न देखते हों परन्तु बहूरानियों को पुत्र-वधू तुल्य अवश्य देखते थे और इसीलिए वह कॉल साहेब से उनके विषय में हर प्रकार का प्रश्न करने के अधिकारी थे।

इसके पश्चात् कॉल साहेब और सेठ जी में खूब घुट-घुट कर घंटों बातें होती रहीं। हड़ताल पर आपस में खूब विचार विनिमय हुआ, अपनी हार पर उन्हें खेद हुआ परन्तु कॉमरेड विमला की योग्यता और सफलता की दाद दिए बिना यह दोनों जीवन के खिलाड़ी न रह सके। आज सेठ जी और कॉल साहेब ने साथ साथ भोजन किया।

सेठ जी के विषय में दुनियाँ जानती है कि वह बहुत धर्मात्मा व्यक्ति हैं, मन्दिर में जाते हैं, धार्मिक संस्थओं को दान देते हैं, सीधा सादा जीवन व्यतीत करते हैं, उनके जीवन में अब कोई आकाँक्षा बाकी नहीं रही, उन्होंने जीवन में वह कर लिया जो कोई नहीं कर सकता परन्तु कॉल साहेब तो उन साथियों में से हैं जिनसे प्रथम परिचय एक दिन तेलीवाड़े के उस पुल की एक मुण्डेर पर हुआ था जिसके नीचे कभी नहर स-आदत खाँ बहा करती थी। क्या शानदार दिन था वह भी? मुण्डेर पर कॉल साहेब पेंट पहिने बैठे थे। पेंट अवश्य थी परन्तु पैर तथा सिर नंगे थे, कमीज़ का कॉलर और आस्तीनें फटी हुई थीं और पतलून के घुटनों पर दूसरे कपड़े का जोड़ लगा हुआ था परन्तु हाथ में बेंत उस दिन भी था। दो दिन से कॉल साहेब ने भोजन नहीं किया था। इतने में भानामल अपना पकौड़ियों का खोन्चा लेकर वहाँ आ बैठा और बातों ही बातों में दोनों का याराना हो गया।

कॉल साहेब को भानामल अपने साथ ले गया। भानामल मालीवाड़े की गली हीरानंद में एक लम्बे चौड़े पाँच मंज़िल के मकान के अन्दर सबसे नीचे की मंज़िल में ज़ीने की कोलकी के अंदर टट्टियों के पास एक एक रुपया आठ आने महावार किराये के मकान में रहता था। इसी कोलकी में आज आवभगत के साथ भानामल ने कॉल साहेब को ठहराया और संध्या को अपनी अँगीठी पर अपने हाथ से तेल के परांठे बना कर प्रेम पूर्वक खिलाए। इस आवभगत से कॉल साहेब इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने भाना चाट वाले को उसी दिन सेठ भानामल बनाने की ठान ली। खाने के पश्चात् दोनों साथ साथ कोलकी का ताला लगा कर चाँदनी चौक बाज़ार पार कर टाउन हॉल के पीछे कम्पनी बाग में घूमने चले गए। खूब तनमन की बातें हुईं और अन्त में भानामल ने दिल कड़ा करके कह ही डाला कि 'कॉल साहेब यदि कोई लाभदायक काम हो तो हम भी दो हज़ार रुपया लगा सकते हैं।'

'दो हज़ार! इतना बड़ा फ़ाइनेन्स! दुनियाँ पलट सकता हूँ सेठ! दुनियाँ को पलटने की ताक़त रखता है यह कॉल साहेब। हम तुम्हें जगत-सेठ बना सकते हैं इस फाइनेन्स से' और बस कारबार चल निकला।

वह दिन था और आज का दिन है कि मित्रता दोनों की बराबर दृढ़तर ही होती चली जा रही थी। उस समय भी कॉल साहेब ने अपने जीवन का लक्ष्य नौकरी ही चुना था और अपना लक्ष्य नौकरी चुनकर अपने जीवन को स्वामि के हाथों में समर्पित कर दिया था। उनकी दृष्टि में मालिक का हित भगवान के हित से ऊपर उठ चुका था और इस लक्ष्य की प्राप्ति में वह अपनी सम्पूर्ण नीति-कुशलता को लगा देते थे।

कॉल साहेब का जीवन पर्ण रूप से तामसिक था परन्तु सेठ जी का निताँत सात्विक। कभी कभी यदि कॉल साहेब की ज़िद पूरी करने के लिए मजबूरन मदिरा पान किया भी था तो वह केवल मुँह छुआने मात्र को, उन्हें कोई शौक नहीं था इसका। क्योंकि मदिरा आज के उच्च व्यापारी वर्ग के पारस्परिक सम्बन्धों का माध्यम बन चुकी है इसलिए व्यापारी होने के नाते सेठ जी इस धारा से मुक्त-भी न रह सके। यह समय की माँग थी और इस माँग के अनुकूल यदि सेठ जी अपने को न बनाते तो प्रगतिवादी दलों के नेता उन्हें रुढ़िवादी कहकर कहीं पीछे छोड़ जाते। सेठ जी अपने को पूर्ण रूप से प्रगतिवादी मानते थे! कांग्रेस के आप उन समर्थकों में से रहे हैं जिन्होंने महाराणा प्रताप सिंह के युग के सेठ भामाशाह बनकर अँगरेजी सरकार की आँखों की किरकिरी बनना पसन्द किया था। क्या कुछ बलिदान नहीं दिए हैं उन लोगों ने देश के स्वतन्त्रता संग्राम में? वह तो व्यापारी थे और व्यापार करने के लिए ही मारवाड़ से एक दिन निकल कर चले थे। वही व्यापार वह आज भी कर रहे हैं। आज विश्व की शक्ति धन और मानव में केन्द्रीत हो चुकी है। धन और मानव का संघर्ष छिड़ रहा है। धन साधन है और मानव साध्य। साधन से साध्य का महत्व सर्वदा अधिक होगा यह सेठ जी अपने मन से जानते हैं परन्तु जब तक साधन हाथ में हैं और उनकी शक्ति पर उनका अधिकार है तब तक वह क्यों न उसका उपभोग करें।

सेठ जी और कॉल साहेब ने प्रेम पूर्वक भोजन किया। माँस सेठ जी ने नहीं छुआ परन्तु अन्डे का एक टुकड़ा कॉल साहेब के विशेष आग्रह से उठाकर

नमक लगाते हुए अवश्य मुँह में रख लिया। सेठ जी के सम्मुख अण्डे को कॉल साहेब कई बार वैजीटेबिल (सब्जी) सिद्ध कर चुके थे और इसके अन्दर का पीला भाग तो निश्चित रूप से सब्जी ही है। उसे खाने में सेठ जी भी कोई हानि नहीं समझते। दुनियाँ में रहकर व्यक्ति को कुछ काम समाज के बन्धनों में जकड़े रहने के कारण ऐसे भी छोड़ने होते हैं जिन्हें बुद्धि करने की आज्ञा देती है और मन चाहता है कि करो और खूब करो। ऐसे स्थान पर सेठ जी को कॉमरेड विमला के सिद्धान्तों पर आस्था होने लगती है परन्तु उन सिद्धान्तों, उनकी व्यवस्था और अंतिम रूपरेखा को देखकर सेठ जी का स्थूल शरीर ही नहीं मन बुद्धि और आत्मा तक दहल उठते हैं।

दोनों बहूरानियाँ कोठी पर उस समय आईं जब सेठ जी भोजन करके जा चुके थे। इस समय कॉल साहेब अकेले अपनी मेज़ पर बैठे आनन्द पूर्वक ताश खेल रहे थे। सामने की खाली कुर्सी को प्रतिद्वन्दी मान कर उसकी चाल भी स्वयँ ही फेंक लेते थे और इस प्रकार बाज़ी पर बाज़ी जीत रहे थे।. बाजी आज उनके हाथ थी।

: १० :

गत मास की तीस तारीख़ को यूनियन ने मिल मालिकों को चेतावनी देते समय एक मास की अवधि दी थी कि इस बीच में वह समस्या पर पूर्ण रूप से विचार कर लें। अपने जिन आश्वासनों को आज उन लोगों ने ठुकराकर निरंकुश नीति का अनुशीलन किया है वह धर्म और नीति दोनों के विरुद्ध है। मिल मालिकों को चाहिए कि वह अपने आश्वासनों को पूर्ण करें और राष्ट्र-हित के लिए स्वार्थपरता को तिलाँजलि दे डालें। आज उसी चेतावनी का अन्तिम दिन था।

संध्या समय कॉमरेड विमला के मकान पर मिल-यूनियन के प्रायः सभी सदस्य बैठे थे और सोच रहे थे कि शायद अभी कोई समाचार सेठ भानामल जी के पास से आए और कल की आने वाली आपत्ति सामने से टल जाए। कॉमरेड अशफ़ाक बैठे-बैठे अचानक मुस्कुरा कर बोल उठा, "कॉमरेड विमला! उसका नाम भी सेठ भानामल है और फिर उसकी जड़ों पर चिपटा हुआ है कॉल साहेब! काला नाग है, काला नाग। सुना है कि जहाँ अधिक धन होता है वहाँ काला नाग उस पर अवश्य बैठ जाता।" अशफ़ाक का यह कहना था कि सब सदस्य एकदम खिलखिलाकर हँसते हुए कह उठे, "वास्तव में

कॉल है काला नाग हो। क्या मजाल जो उसके रहते एक क्षण के लिए भी सेठ की बुद्धि तक कोई बुद्धिमत्ता की बात पहुँचे।"

"इस व्यक्ति के दृष्टिकोण से समस्त सृष्टि का निर्माण केवल इसके अपने और सेठ भानामल जी के लिए ही हुआ है।" एक मजदूर ने तनिक खिन्न मन से कहा।

"बिलकुल यही बात है कॉमरेड ! बल्कि अपने और सेठ भानामल जी के लिए नहीं केवल अपने लिए। सेठ भानामल जी के पास तक तो इसका जूठन पहुँचता है।" दूसरा सभासद फुदक कर बोला।

"बड़ा ग़ज़ब का गोला है यार यह कॉल का बच्चा भी। जी में तो कभी-कभी ऐसा आता है कि इसे कच्चा ही चबा जायें।" तीसरा कड़क कर दाँत किटकिटाते हुए बोला। इस समय इस कर्मचारी का पतला छरहरा बदन क्रोध के कारण थर-थर काँप रहा था और सूखे हुए हड्डियों के पिंजर मात्र भुजदंडों में अनायास ही कुछ कर गुज़रने के लिए थिरकन पैदा हो गई।

"क्रोध करने का काम नहीं है कॉमरेड !" मुस्कुराते हुए विमला ने कहा। "अपनी करनी में कोई नहीं चूकता। जब जब जिसके हाथ में शक्ति आई है उसने निर्बल को कुचल डालने में कोई कसर नहीं छोड़ी, परन्तु समय बदल रहा है और इस बदलते हुए समय की प्रगति के सम्मुख बालू की दीवरों को ढ़ह जाना होगा। कॉल साहेब भी एक मज़दूर आदमी हैं और बहुत सी बातों में कुशल भी परन्तु अपने इसी सत्य रूप को भुला कर अपना सम्बन्ध पूँजी और पूँजीपति से जोड़ रहे हैं। यह उनकी भूल है और अपनी इसी भूल के कारण एक दिन उन्हें अपना अस्तित्व खो देना होगा।" एक दृढ़ विश्वास के साथ कॉमरेड विमला ने सभासदों के सम्मुख अपना मत प्रकट किया।

"अवश्य खो देना होगा कॉमरेड विमला !" अपने भुजदण्डों पर हाथ फेरते हुए अशफ़ाक ने कहा। "कॉमरेड विमला ! अवश्य खो देना होगा। यह ज़िंदा नहीं रह सकते। दुनियाँ झुकती है झुकाने वाला चाहिए। यदि हमारे अन्दर उन्हें झुकाने की क्षमता होगी तो कोई कारण नहीं कि उन्हें झुकना न पड़े और हम अपने उद्देश्य में सफल न हों।" वीरता पूर्वक कॉमरेड अशफ़ाक ने यह कहकर अपनी गर्दन को हिलाते हुए सीने को उभार दिया। कॉमरेड अशफ़ाक के नेत्रों में इस समय विश्वास और कर्मण्यता की आँधी झाँक रही थी।

कॉमरेड अशफ़ाक विमला के प्रत्येक वाक्य को कुरानशरीफ़ की आयत समझता था और सभी बातों के बीच में पूर्ण रूप से विमला की विचार धारा को न समझते हुए भी कुछ न कुछ वीरतापूर्ण मज़दूरों को ऐसा आश्वासन देता था कि जिससे उनके हृदयों में वीरता और दृढ़ता का संचार हो जाता था। कॉमरेड अशफ़ाक जीवन का पुतला था और उसके प्रत्येक कार्य और कार्य के संकेतों में कुछ कर गुज़रने का साहसपूर्ण सन्देश छुपा रहता था। अशफ़ाक का जीवन जीने के लिए था, मरने के लिए नहीं। आपत्ति के सम्मुख सीना खोलकर डट जाना उसे आता था और कठिनाइयों में मुस्कुराने की उसे बान पड़ गई थी। अपना सर्वस्व खोकर भी उसने एक दिन उफ़ तक नहीं की थी, उसे जीवन का एक स्वप्न कहकर टाल दिया था; यह रहस्य उसके सभी परिचित जानते थे परन्तु अपने इस त्याग की गाथा को स्वयं अपने मुख से कहना तो दूर की बात थी यदि कोई दूसरा भी कभी उसके सामने कहकर संवेदना प्रकट करता था तो अशफ़ाक उसपर हँसकर केवल यही कहता था, 'जाने भी दो कॉमरेड ! इन बातों को, व्यर्थ की बातों से क्या लाभ होता है ? जो होना था सो हो गया और जो करना था सो कर गुज़रा। अब मरे मुर्दे उखाड़ने से क्या बनता है ? आने वाली समस्याओं पर विचार कीजिए।'

"वह दिन दूर नहीं है जब यह सब पूँजी राष्ट्र की होगी और सभी व्यक्ति राष्ट्र के कर्मचारी होंगे। अपना हर प्रकार का प्रबन्ध राष्ट्र के कर्मचारी स्वयँ करेंगे। राष्ट्र की सम्पत्ति राष्ट्र के बाल बच्चों में बेची नहीं जाएगी, अधिकार स्वरूप केवल वितरित मात्र की जाएगी। राष्ट्र का प्रत्येक उद्योग-धंधा पारस्परिक सहयोग से ही चलेगा और अकर्मण्य व्यक्ति को राष्ट्र का सदस्य बनने का अधिकार नहीं होगा। दूसरों के परिश्रम का फल खाने का अधिकार किसी को नहीं होगा।" विमला दृढ़ता पूर्वक कह रही थी और यह कहते हुए विमला का उन्नत मस्तक ऊपर को उठ गया।

"यही होगा।" यूनियन के सदस्यों ने एक स्वर होकर ऊँची ध्वनि में कहा। "कॉमरेड विमला की भविष्यवाणी एक दिन अवश्य फलीभूत होगी।"

"जब इस प्रकर के राष्ट्र का भारत में निर्माण हो जाएगा उस समय राष्ट्र और समाज को कॉल साहेब और चौहान साहेब जैसे व्यक्तियों की क्या आवश्यकता रह जाएगी ? न तो उस रा॰ में व्यापारी को काले बाज़ार की आव-

श्यकता होगी और न ही सरकार से बड़े बड़े ठेके प्राप्त करने के लिए प्रधान मन्त्री या मन्त्री मडल के किसी सदस्य से मित्रता प्राप्त करने की।" और इतना वाक्य कॉमरेड विमला के मुख से निकलना था कि कॉमरेड अशफ़ाक ने एकदम 'कॉमरेड विमला जिंदाबाद' का नारा लगा दिया और फिर गर्व के साथ बोला, "क्या ख़ूब कहा कॉमरेड विमला तुमने, ख़ूब कहा। वाक़ई उस राष्ट्र में कॉल साहेब और चौहान साहेब जैसे व्यक्ति व्यर्थ हो जायेंगे और मान हमारे इन मेहनतकशों का होगा।" इतना कहते हुए गर्व के साथ कॉमरेड अशफ़ाक ने अपने कन्धों की सुदृढ़ माँसपेशियों को ऊपर उभार दिया।

कॉमरेड अशफ़ाक के हृदय में इस समय एक लहर दौड़ रही थी वीरता की। विमला के विचारों का सब यूनियन के सदस्यों ने समर्थन किया। विमला फिर बोल उठीं "झूठ और चालबाज़ी, जिसे आज व्यापार कहकर पुकारा जाता है, उसके लिए राष्ट्र के जीवन में कोई स्थान नहीं रहेगा। आज का व्यापार कमीशन के बल पर चल रहा है और यही कमीशन व्यापार की पोल है, राष्ट्र के जीवन की पोल है, खोखलापन है। इस कमीशन का अन्त कर देना होगा। हमें राष्ट्र के जीवन की पोल को बाहर निकाल कर उसमें वास्तविकता का संचार करना होगा, उसके खोखलेपन में ठोस व्यक्तित्व को भर देना होगा। राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति राष्ट्र का मज़दूर होगा और राष्ट्र का प्रत्येक मज़दूर राष्ट्र की प्रत्येक सम्पत्ति का स्वामी। राष्ट्र की प्रत्येक वस्तु उसकी अपनी वस्तु होगी तो फिर वह किस बात का कमीशन लेगा, किस चीज़ पर काला बाज़ार करेगा और क्यों आवश्यकता के समय माल को दबाकर राष्ट के बच्चों को भूखा तड़पा तड़पा कर मारने के लिए छोड़ देगा ? एक दिन वह आने वाला है कॉमरेड! कि जब इन सेठों को मिलों का चौकीदार बनाकर चाबियाँ इनके हवाले कर दी जायेंगी और कह दिया जायेगा कि 'लो तुम्हें इस धन सम्पत्ति से चिपकने का प्रलोभन है तो तुम अब यहीं पर चिपके रहो। तुम्हारे जीवन की शांति यदि इसी में है कि तुम इन मिलों के द्वारों से चिपट-चिपट कर प्राण दे डालो तो तुम इन्हीं से चिपटे रहो और इन्हें इस प्रकार मिल-द्वारों पर बिठलाकर मज़दूरों की यूनियन मिल का प्रबन्ध अपने हाथों में सँभाल लेगी। कॉल साहेब जैसे व्यर्थ व्यक्तियों को मिल से निकाल कर बाहर कर दिया जाएगा और विभिन्न विभागों के अध्यक्ष मिलकर अपना संचालक स्वयँ निर्वाचित कर लेंगे। वह

भारत के मज़दूर का स्वर्ण-युग होगा और वह अब बहुत दूर नहीं है। निकट भविष्य में वह दिन आना है और संसार की कोई शक्ति उसे रोक नहीं सकती। प्रगति के मार्ग में आनेवाली रूढ़ियों की शृङ्खलायें स्वयँ छिन्न-भिन्न होकर बिखर जायेंगी।" और इतना कहकर गाम्भीर्य के साथ कॉमरेड विमला शान्त हो गई।

"यही होगा।" अशफ़ाक ने ऊँचे स्वर में गर्व के साथ कहा। "राष्ट्र हमारा होगा, मिलें हमारी होंगी, कारख़ाने हमारे होंगे और इनका संचालन हमारी सुविधा के अनुसार किया जायेगा।" अशफ़ाक के नेत्रों में ज्योति झलक रही थी और था विश्वास मज़दूरों के जीवन में स्वर्ण युग लाने का।

"यही होगा।" यूनियन के सब सदस्यों ने ऊँचे स्वर में कहा और फिर सबने एक स्वर से 'कॉमरेड विमला ज़िन्दाबाद' का नारा लगाया।

मेज़ पर रखी हुई टाइमपीस घड़ी की सुई बराबर आगे बढ़ती जा रही थी। साढ़े नौ बज चुके थे और सेठ जी के पास से अभी तक कोई संदेसा नहीं आया। जिस समय दस बजने में दस मिनट रह गए तो मकान के सामने आकर दो कार रुकीं और उन कारों से चौहान साहेब तथा मिस्टर कॉल उतर कर अन्दर कमरे में चले आए। सब ने खड़े होकर दोनों का स्वागत किया और दो कुर्सियाँ उनके बैठने के लिए आगे बढ़ा दीं। मकान का वातावरण एक दम शाँत हो उठा और वहाँ एक मौन गाम्भीर्य छा गया।

मि० कॉल और चौहान साहेब दोनों बैठ गए। यूनियन के सभी सदस्यों की आँखें मि० कॉल और चौहान साहेब के मुखों पर टिकी हुई थीं और वह सोच रहे थे कि देखिए अब लाटरी किस रूप में खुलने वाली है। बैठने के एक क्षण पश्चात् कॉल साहेब बहुत गम्भीरता पूर्वक बोले, "कॉमरेड विमला और यूनियन के अन्य सदस्यो! सेठ जी ने आप लोगों के ड्योढ़े ओवर टाइम की माँग को स्वीकार कर लिया है परन्तु गत मास जो बढ़ोतरी आप लोगों के वेतनों में की गई थी वह स्थाई नहीं रह सकती। इस बीच में सेठ जी ने मिल के ऑडीटर से कई बार हिसाब चैक कराया परन्तु हिसाब में हर बार मिल को हानि ही निकली। ऐसी परिस्थिति में वेतन बढ़ाने की समस्या बहुत गम्भीर हो उठी है। सेठ जी ने आश्वासन दिया है कि वह लाभ होने पर अवश्य आप लोगों के वेतनों में बढ़ोतरी कर देंगे।" इतना कहकर कुर्सी की पीठ से कमर लगाते हुए कॉल

साहेब ने अपना फैल्ट हैट उतारकर मेज़ पर रख दिया और पैर पर पैर रखते हुए कुर्सी के तकिए से कमर लगाकर बैठ गए।

कॉमरेड विमला मुस्कुरा रही थी रह रहकर कॉल साहेब की बातें सुनकर और अशफ़ाक को क्रोध आ रहा था इनकी धूर्त्ता पर। कॉमरेड विमला गम्भीरता पूर्वक धीरे से बोली, "मैनेजर साहेब! सेठ जी ने जहाँ तक हमारी माँगों पर ध्यान दिया है वहाँ तक हम उनके कृतज्ञ हैं और जो शेष समस्याएँ हैं उन्हें हम कल यूनियन के समक्ष रखकर उनपर विचार करेंगे। यूनियन के सब सदस्य मिलकर जैसा भी निर्णय करेंगे वैसी सूचना आपकी सेवा में भेज दी जाएगी।" इतना कहकर अपनी स्वाभाविक मुस्कान छिटकाती हुई कॉमरेड विमला मौन हो गई और उसने एक बार कॉल साहेब तथा चौहान के मुखों पर देखकर उपस्थित सभासदों के मुख पर देखा। कॉमरेड विमला से आँखों को मिलाते हुए चौहान साहेब लजा रहे थे और इसीलिए उनकी आँखें ऊपर को नहीं उठ रही थीं। वह कुछ कहना भी चाहते थे परन्तु उनके होठ बारबार फड़फड़ाकर रह जाते थे और उनकी मौन भाषा अपने भाव व्यक्त करने में असमर्थ रह जाती थी। आज किसी प्रकार साहस बटोर कर चौहान साहेब विमला के पास आ अवश्य गए थे परन्तु उनका अपना हृदय उन्हें अन्दर ही अन्दर दोषी ठहरा रहा था।

"परन्तु कॉमरेड बैनर्जी तो हड़ताल के पक्ष में हैं कॉमरेड विमला!" कटु व्यंग्य के साथ अशफ़ाक ने कॉल साहेब के मुख पर देखते हुए विमला की ओर देखकर मूछों पर ताव देते हुए कहा।

कॉल साहेब यह बात नहीं कि व्यंग्य को न ताड़ सके हों परन्तु समय और परिस्थिति की गम्भीरता को समझते हुए वह चौहान साहेब के मुख पर देखकर चुप रह गए। कॉमरेड विमला का जो उत्तर उन्हें मिला वह तो ना के ही बराबर था और उनका समझाने का ढंग भी उपहासस्पद ही समझा गया। चौहान साहेब चुपचाप बैठे थे कि अचानक उनकी दृष्टि कॉमरेड अशफ़ाक पर पड़ गई और वह एक दम स्वप्न से में से जाग्रत होते हुए खड़े होकर कह उठे 'अरे, अरे! अशफ़ाक! तुम! तुम यहाँ कहाँ? मैं तो समझा था कि तुम पाकिस्तान चले गए। एक दिन तुम्हारे मकान की तरफ़ गया था परन्तु वहाँ तो अब तुम्हारा घर भी नहीं रहा।" इतना कहकर चौहान साहेब ने अशफ़ाक

को कौली में भर कर ऊपर उठा लिया और नयनों में चिर-विस्मृत स्वप्न साकार हो उठे। कॉमरेड अशफ़ाक की आँखों में भी आँसू उमड़ आए। पुरानी मित्रता ने बल पकड़ा और हृदय गद्‌गद् हो उठा। एक क्षण दोनों मौन रहने के पश्चात् कॉमरेड अशफ़ाक बोला, "मेरा घर एक दिन जलकर खाक हो गया। चौहान! मेरे बाल बच्चे सब उसमें फुँक कर राख हो गए। मैं उन्हें बचा न सका। किसी प्रकार सिसकते हुए मैं और माँ पड़े रह गए, मर न सके। न जाने किसने किस प्रकार हमें हस्पताल में पहुँचा दिया और वहाँ डाक्टरों की दवाइयों के बल से हमें फिर जिन्दा हो जाना पड़ा। ज़िन्दा हो जाने के पश्चात् हमें सब मिलने वालों ने पाकिस्तान जाने की अनुमति दी परन्तु अपने समस्त परिवार को भारत की भूमि में भस्म करके उन्हें रोने के लिए पाकिस्तान जाना मेरे मन ने सहन नहीं किया। यह मेरा बचपन का साथी दिल्ली शहर, जिसकी गलियों और सड़कों पर घूमकर मैं इतना बड़ा हो गया, उसे छोड़कर भला क्यों मैं उस अजनबी देश में जाता जहाँ पर मुझे भगोड़ा समझा जाता।" इतना कहते कहते कॉमरेड अशफ़ाक का गला रुँध गया, ज़बान रुक गई मुख से निकलती हुई भाषा मौन हो गई। कॉमरेड अशफ़ाक को चौहान साहेब ने कसकर कौली में भर लिया और इस समय सबने देखा कि दोनों के नेत्रों से आँसुओं की धारा बह रही थी। कॉमरेड अशफ़ाक जिसे कॉमरेड विमला ने कठिन से कठिन परिस्थिति में भी द्रवित होते हुए नहीं देखा था और जो अपने बाल-बच्चों को अपने नेत्रों के सम्मुख भस्म होते देखकर प्रस्तर हो गया था, इस समय मित्र के गले लगकर यकायक व्याकुल हो उठा था।

सभा का वातावरण ही बदल गया। कॉल साहेब के लिए तो चौहान साहेब और कॉमरेड अशफ़ाक का मेल हो जाना इस समय एक समस्या बन गई। आये थे यहाँ पर नमाज़ बख्शवाने के लिए और रोजे गले पड़ गए। इधर एक महीने के अन्दर कॉल साहेब की धारणा इस ट्रेडयूनियन के कार्यकर्त्ताओं के विषय में काफी बदल चुकी थी। पहिले वह जितना खतरनाक कॉमरेड विमला को समझते थे उससे कहीं अधिक भयभीत वह आजकल अशफ़ाक से रहने लगे थे। अब तो उन्होंने मन में यह धारणा निश्चित कर ली थी कि कोई भी अवसर मिलने पर मिल से कॉमरेड अशफ़ाक का पत्ता वह अवश्य साफ़ कर डालेंगे। परन्तु इस चौहान साहेब और अशफ़ाक की मित्रता ने तो बीच में

आकर उनके मस्तिष्क की परेशानी को और भी बढ़ा दिया। यह नई मुसीबत आकर उनके गले में फँस गई।

चौहान साहेब वास्तव में आज कॉमरेड अशफाक से भेंट करके बहुत ही प्रसन्न हुए और जब उन्हें यह पता चला कि कॉमरेड अशफाक कितने ही दिन से इच्छा रहते हुए भी उनसे जानबूझ कर नहीं मिल रहा था तो उन्होंने उसे काफी लानत मलामत दी और अशफाक को सब बातें सिर नीचा करके सुन लेनी पड़ीं।

"आप लोग मुझे धन्यवाद दीजिए कि मैंने दो पुराने बिछुड़े हुए मित्रों का मेल करा दिया।" बीच में बातों का रुख बदलते हुए कॉमरेड विमला बोल उठी और उसने अपने नयनों में एक इठलाती हुई मादकता लेकर दोनों के मुख पर दृष्टि डाली।

"अवश्य!" चौहान साहेब ने मुस्कुराते हुए कहा। "तुम तो वास्तव में धन्यवाद की पात्र हो कॉमरेड विमला!"

"हाँ भाई! देना तो अवश्य धन्यवाद चाहिए विमला तुम्हें।" कॉमरेड अशफ़ाक ने अभिमान पूर्वक सीना उभारकर कहा और पीछे को हटते हुए अपनी लम्बी-लम्बी मूँछों पर रौब के साथ ताव दिया।

चौहान साहेब से भेंट होने की खुशी में आज कॉमरेड अशफ़ाक की ओर से चाय पार्टी उड़ी। नाश्ते के लिए मिट्टी की तश्तरियों में नमकीन चने मुरमुरे भी थे और फलों के स्थान पर एक-एक केला और चार-चार खजूर थे। पार्टी में मज़ा आ गया। चौहान साहेब ने बड़े शौक के साथ सब खाया परन्तु कॉल साहेब के दिमाग में बस यही एक प्रश्न घूम रहा था कि अब वह कॉमरेड अशफ़ाक को किस प्रकार मिल से निकाल देने में सफल हो सकेंगे। चाय उनके गले में अटक रही थी परन्तु अन्त में उन्होंने हृदय को दृढ़ करते हुए निश्चय कर लिया कि वह अपने संकल्प में एक इञ्च भी परिवर्तन नहीं कर सकते। वह कॉमरेड अशफ़ाक को मिल में कदापि नहीं रहने देंगे चाहे उनके ऐसा करने में उन्हें चौहान साहेब से भी टक्कर ही क्यों न लेनी पड़े। वह मिल के मैनेजर हैं और मिल के किसी भी कर्मचारी को रखने या निकाल देने से केवल उनका ही सम्बन्ध है। वह अपने कार्य-क्षेत्र में चौहान साहेब का हस्तक्षेप कभी भी सहन नहीं कर सकते। कॉमरेड अशफ़ाक यदि चौहान साहेब का मित्र है

तो हुआ करे परन्तु इससे कॉल का कोई सम्बन्ध नहीं । यह पूर्ण रूप से उनकी स्वतन्त्र इच्छा पर निर्भर करता है कि वह उसे रखें या निकाल दें और यह सब विचारकर उन्होंने अपना संकल्प पहिले से भी अधिक दृढ़ कर लिया ।

"मैनेजर साहेब को हम मज़दूरों की मोटी-मोटी भारी प्यालियों में भरी हुई गुड़ की चाय पसन्द नहीं आई और यह नाश्ता तो शायद आपका बैरा भी खाना पसन्द नहीं करे।" मुस्कुराते हुए कटु व्यंग्य के साथकॉल साहेब के मुख पर दृष्टि डालते हुए विमला ने कहा।

कॉल साहेब ने "नहीं नहीं, यह बात नहीं है" कहते हुए सिटपिटाकर प्याली मुँह से लगाली और फिर एक चुस्की लगाकर मेज़ पर टिकाते हुए बोले, "मैं कुछ विचारने लगा था कॉमरेड विमला ! तुमने यह क्या कहा कि मुझे पसन्द नहीं आई ? आजकल सर्दियों में तो मैं अक्सर गुड़ की चाय बनवाकर पीता हूँ । सच जानो मेरी धर्मपत्नी को तो गुड़ की चाय बहुत ही पसन्द है विमला !" और इतना कहकर कॉल साहेब ज़ोर लगाकर मुस्कान को अपने मुख पर समेट लाए ।

"आपकी धर्मपत्नी को या धर्मपत्नियों को ?" मुस्कुराकर चाय की प्याली मेज़ पर रखते हुए कॉल साहेब के मुख पर देख कर चौहान साहेब एक मधुर हास्य के साथ बोले ।

कॉमरेड विमला इस मज़ाक को सुनकर मन ही मन मुस्करा दी परन्तु कॉमरेड अशफ़ाक आज चौहान साहेब से भेंट हो जाने पर इस समय पुराने जीवन में विचरण कर रहे थे । वह यहाँ यह भूल ही गए कि वह मिल में एक साधारण स्पिनिंग मास्टर है और इस समय मिल के जनरल मैनेजर कॉल साहेब के सम्मुख बैठा हुआ है । चौहान साहेब की बात सुनकर वह खिल-खिलाकर ज़ोर से हँस पड़ा और चौहान साहेब की कौली भरते हुए कह उठा, "क्या ख़ूब कहा यार तुमने भी, बस ख़ूब ही कह डाला।"

कॉमरेड अशफ़ाक के मुख से यह शब्द निकलने थे कि कॉल साहेब आगबबूला हो उठे और एकदम कड़क कर बोले, "बत्तमीज़ कहीं का ! तुम हमसे मज़ाक करने वाले कौन होते हो ?" और यह कहते हुए कॉल साहेब के नेत्र जल उठे और अपमान के भार को न सम्भालते हुए उनका तमाम बदन थर-थर काँपने लगा ।

कॉल साहेब का इतना कहना था कि कॉमरेड अशफ़ाक ने कॉल साहेब को गर्दन से पकड़कर ऊपर उठा लिया और दाँत पीसकर कड़कते हुए बोले, "हमें बत्तमीज़ कहता है, बदमाश कहीं के लुच्चे ! अगर और जबान निकाली तो ज़बान खींच लूँगा, कुत्ता कहीं का। जानता नहीं मेरी नसों में मुग़लिया खानदान का रक्त बह रहा है" और इतना कहकर उन्हें नीचे पटक दिया। रङ्ग में भंग पड़ गया। चौहान साहेब ने बीच में पड़कर किसी प्रकार इस समय मामला समाप्त किया और वह कॉल साहेब को अपने साथ लेकर वहाँ से विदा हो गए। विमला ने कॉल साहेब की कार के पास खड़े होकर कॉमरेड अशफ़ाक की ओर से क्षमा प्रार्थना की परन्तु इस समय कॉल साहेब का कलेजा क्रोध के कारण इतनी बुरी तरह उबाल खा रहा था कि उन्होंने विमला की क्षमा-प्रार्थना का कोई उत्तर नहीं दिया।

चौहान साहेब और कॉल साहेब के चले जाने पर धीरे-धीरे सभी सदस्य चले गए। जब सब चले गए तो कॉमरेड अशफ़ाक ने विनम्रतापूर्वक कहा, "कॉमरेड विमला ! हुई तो मुझ से भूल ही परन्तु क्षमा अब मैं नहीं माँगूँगा और क्षमा माँगने के लिए तुम मुझे मजबूर भी न करना।"

विमला ने भी गम्भीरतापूर्वक आश्वासन दिया, "ऐसा नहीं होगा कॉमरेड अशफ़ाक ! तुमने ठीक किया, जो कुछ किया। उस पाजी को भी तुम्हें बत्तमीज़ कहने का कोई अधिकार नहीं था।" और इतना कहकर कॉमरेड विमला ने वीर अशफ़ाक के मुख पर गर्व के साथ निहारा। कॉमरेड अशफ़ाक का हृदय नौ बाँस ऊँचा हो गया और उसने मन ही मन में कहा—'शाबाश ! कॉमरेड विमला ज़िंदाबाद।'

: ११ :

"चौहान साहेब ! आख़िर आपने मेरा अपमान कराकर ही दम लिया।" गम्भीरतापूर्वक कॉल साहेब ने कहा। कॉल साहेब के नेत्रों में से कॉमरेड अश-फ़ाक की मूर्ति अभी तक प्रथक नहीं हुई थी।

"यह आपका विचार बिलकुल ग़लत है कॉल साहेब ! मैंने इस समय रात्रि के दस बजे आपसे कॉमरेड विमला के मकान पर आने के लिए कब आग्रह किया था ? आप स्वयं ही तो मेरे पास आए थे यहाँ आने के लिए और चलते समय भी मैंने आप से न चलने के लिए ही अनुरोध किया था।" इतना कहकर चौहान साहेब अकड़ कर कॉल साहेब से भी अधिक गम्भीर हो उठे और उन्होंने अपना मुख दूसरी ओर को कर लिया।

कॉल साहेब ने मन ही मन सोचा कि वास्तव में दोष चौहान साहेब का नहीं था और उन्होंने चलते समय भी चलने में कितनी टालमटोल की थी परन्तु यह कॉल साहेब का अपना ही आग्रह था कि जिसके कारण चौहान साहेब को उस समय चलना पड़ा था। वास्तव में सच्ची बात तो यह थी कि कॉल साहेब इस समय चौहान साहेब को यहाँ इसलिए लाए थे कि वह मज़दूरों और चौहान साहेब दोनों के साथ उपहास करके अपनी मानसिक व्यंग्य-भावना की तृप्ति कर सकें परन्तु यहाँ परिस्थिति बिलकुल ही उल्टी हो गई। आए थे चौहान साहेब का

मज़ाक बनाने और मज़दूरों के साथ खिलवाड़ करने परन्तु आफ़त का परकाला वह अशफाक का बच्चा फँस गया कॉल साहब के अपने ही गले में। बेचारे चौबे बनने चले थे और यहाँ अशफ़ाक ने उनका धर्म बिगाड़ कर दूबे कहलाने में भी संदेह उत्पन्न कर दिया।

कम्बख्त के हाथों की उँगलियाँ क्या थीं कि मानो किसी लुहार ने लाहे की छड़ें काट काट कर हथेली में टोक दी थीं। गले के जिस भाग पर भी जो उँगली पड़ गई उसने वहीं से रक्त का प्रवाह बन्द कर दिया। गले की नसें फूल उठीं और जो माँसपेशियाँ जहाँ से भी दब गईं वहीं से उन पर सूजन आ गया। अशफ़ाक की हथेली के दबाव ने कॉल साहब के गले की बोलने वाली नली को भी दबा कर ऐसा बेडौल कर दिया कि उनका स्वर छितरा रहा था और आवाज़ आपसे आप कुछ दर्दभरी हो गई थी।

कॉल साहब स्वयँ मन में यह अनभव करते हुए, परन्तु फिर भी दोष किसी सीमा तक चौहान सा ब पर ही डालकर बोले, "यह सच है चौहान साहब कि लाया मैं ही आपको था परन्तु इतना तो आपको मानना ही होगा कि यदि वह कम्बख्त आपकी मित्रता का दम न भर बैठता तो उसे इस प्रकार मेरा उपहास करने और मुझपर हाथ छोड़ने का साहस न होता। केवल आपकी मित्रता का ही बल पाकर वह मज़दूर का बच्चा इतना उभर गया कि मुझ पर हाथ छोड़ बैठा और उसने मेरा गला दबोच लिया। मेरे जीवन में किसी मज़दूर से इस प्रकार आमने सामने होने का यह प्रथम ही अवसर है।"

"होगा, परन्तु हरकतें तो आपकी नित्य ही पिटने की होती हैं," गम्भीरता पूर्वक चौहान साहब ने उसी प्रकार अकड़ के साथ कहा। "आपको किसने अधिकार दिया था उसे गाली देने का और इस प्रकार डाटने डपटने का? यह दफ्तर नहीं था। कॉमरेड विमला का मकान था। वहाँ उसके और भी न जाने कितने साथी बैठे थे। सब के बीच यदि आप केवल गम्भीरता पूर्वक उसका मज़ाक सहन भर कर जाते तो आप देखते कि वह स्वयँ ही लजा जाता और न केवल लजा ही जाता बल्कि अपनी भूल पर आपसे क्षमा माँगता। अब यह जो आप साहस की बातें कर रहे हैं यह सब आपका भ्रम है। आप अशफाक को अभी नहीं जानते। मौत के मुख पर लात मार देने वाला यह वह इन्सान है जिसका भय से जीवन में कभी कोई सम्बन्ध नहीं रहा। अँगरेज़ चीफ कमिश्नर की कोठी

पर पहुँच कर इसने एक दिन उसे गले से इसी प्रकार पकड़कर ऊपर उठा लिया था जिस प्रकार आज आपको उठाया था। अशफाक का वह रूप आपने नहीं देखा, मैंने देखा है।" और इतना कहकर चौहान साहेब ने अपनी त्यौरी ऊपर को अभिमान के साथ चढ़ा ली।

जब कॉल साहेब का यह रङ्ग भी चौहान साहेब पर न चढ़ सका तो वह सिटपिटाते हुए एक बार तो मौन हो गए परन्तु तुरन्त ही कुछ सोच समझ कर फिर बोले, "चलिए मेरी भूल ही सही परन्तु आज मैं देख रहा हूँ कि आपकी मेरी चोट के प्रति भी कोई सहानुभूति नहीं। ऐसे कठोर व्यवहार की तो मैं आप से स्वप्न में भी कभी आशा नहीं करता।" कुछ गम्भीर होकर कॉल साहेब कह रहे थे और इस समय उनके शब्दों में चौहान साहेब ने भी कुछ वास्तविक दर्द का अनुभव किया।

"मैं कठोर आपके प्रति ही नहीं कॉल साहेब! कभी किसी के प्रति नहीं होता परन्तु आपने जो यह व्यर्थ का मेरे ऊपर दोषारोपण कर दिया कि आपको मेरे कारण चोट आई यह मैं मानने के लिए उद्यत नहीं।" गम्भीरता पूर्वक परन्तु कुछ द्रवित होकर चौहान साहेब बोले। "मेरा आपसे किसी भी रूप में प्रति-स्पर्द्धा करने का कभी कोई प्रश्न सामने आ ही नहीं सकता परन्तु फिर भी मैं देखता हूँ कि आप व्यर्थ अपने मस्तिष्क को इस दिशा में हर समय परेशान रखते हैं।" और इस प्रकार चौहान साहेब ने बातों का विषय एकदम ही बदल दिया।

कॉल साहेब कुछ समझ ही न सके कि चौहान साहेब क्या कह गए। उन्होंने बाद में बहुत कुछ पूछने का प्रयत्न किया परन्तु चौहान साहेब मौन हो गए और उन्होंने फिर कॉल साहेब की किसी भी बात का उत्तर नहीं दिया।

यह बातें कॉमरेड विमला के मकान से चलकर कुछ दूर पर कॉल साहेब और चौहान साहेब में हो रही थीं। इसके पश्चात् चौहान साहेब अपनी कोठी की ओर चले गए और कॉल साहेब ने सीधे अपनी कोठी पर न जाकर सेठ भानामल जी की ओर अपनी कार को घुमा दिया। सेठ भानामल जी की कोठी पर जाकर कॉल साहेब ने कॉमरेड विमला के मकान पर घटने वाली समस्त गाथा पूरी तरह से नमक मिर्च लगाकर उन्हें सुना डाली। साथ ही चौहान साहेब की मज़दूरों के प्रति सद्भावना पर भी व्यंग्य कस-कसकर उन्होंने सेठ जी को काफी उत्तेजित करने का प्रयत्न किया।

कॉल साहेब के अपमान की बात सुनकर सेठ भानामल जी आग बबूला हो उठे और उन्होंने अपनी ओर से कॉल साहेब को आज्ञा दे दी कि वह कोई भी अवसर खोजकर अशफ़ाक को नौकरी से प्रथक कर दें और साथ ही कॉमरेड विमला की भी कार्यवाहियों पर कड़ी दृष्टि रखें।

"परन्तु चौहान साहेब कहीं बीच में न अटक बैठें, इस बात का ध्यान रहे।" कॉल साहेब ने सिर खुजलाते हुए और गले पर मफलर सँवारकर लपेटते हुए कहा।

"वह मैं सब देख लूँगा!" सेठ भानामल जी अभिमान के साथ बोले। "मैंने भी रुपया पानी की तरह बहाया है। मैंने भी मित्रता निभाई है। इन लोगों की राजनीति मेरे टुकड़ों पर पली है और पल रही है आज भी, इस कठोर सत्य को यह भुला नहीं सकते। मैंने अपने खून पसीने की कमाई इनकी राजनीति की दीवारों को मज़बूत बनाने में व्यय की है।" बटन सी आँखों को निकालते हुए एक ओर को पसर कर काले भिड्डार सेठ जी ने कुर्त्ता उठाते हुए पेट पर हाथ फेर कर कहा। सेठ जी इस समय कॉल साहेब के आने की ही प्रतीक्षा में जागे हुए थे। कई बार नींद आने पर भी भानामल जी ने अपनी आँखों पर ठंडे पानी के छबके मारकर उसे भगा दिया था। वह उतावले हो रहे थे यह जानने के लिए कि उनके निर्णय को सुनकर कॉमरेड विमला पर क्या प्रभाव पड़ता है और ट्रेड यूनियन के सदस्य उसे किस रूप में ग्रहण करते हैं परन्तु यहाँ तो समस्या ही दूसरी खड़ी हो गई। सेठ जी के दिल में जलन पैदा हो गई। उन्होंने कॉल साहेब के अपमान को अपना अपमान समझा और उनका मन कह उठा कि जो मज़दूर आज इस प्रकार कॉल साहेब की गर्दन दबोच सकता है वह कल अवसर पाकर उनके ऊपर भी हाथ साफ करने में संकोच नहीं करेगा। सेठ जी ने निश्चय कर लिया कि चाहे मिल बन्द कर देना पड़े परन्तु मज़दूरों की इस मनोवृत्ति को बढ़ावा नहीं दिया जा सकता, कदापि नहीं दिया जा सकता। अशफ़ाक ने जो कुछ किया है उसका दण्ड उसे भरना ही होगा।

कॉल साहेब इस समय इतनी ही बातचीत करके अपनी कोठी पर चले आए। उनका चेहरा उतरा हुआ था और मुख पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। गले के जिस भाग को कॉमरेड अशफ़ाक के अँगूठे ने दबाया था वह स्थान बहुत बुरी तरह दर्द कर रहा था। कोठी तक पहुंचने में जितना भी समय लगा उसमें

वह यही सोचते रहे कि गले के दुखते भाग को सेंकने के लिए छोटी बहूरानी से कहा जाए अथवा बड़ी बहूरानी से या दोनों को ही सूचना न देकर केवल टॉंसिल्स (गदूदों) की तकलीफ बतलाते हुए पहाड़ी नौकर से ही सिकवा लिया जाए। कोठी पर पहुंचकर कॉल साहेब अन्दर गए तो दोनों ही बहूरानियाँ कोठी पर उपस्थित नहीं थीं। कॉल साहेब के मन में बड़ा खेद हुआ कि दो-दो बहूरानियाँ रखते हुए भी इस समय उनके पास गला सेंकने के लिए एक भी उपस्थित नहीं। किसी प्रकार आज के प्रगतिवादी युग की स्वच्छन्दता और उसके विस्तृत तथा व्यापक क्षेत्र पर दृष्टि फैलाते हुए वह चुप होकर सोफे पर जा बैठे और अपने पहाड़ी नौकर को ही बिजली की अङ्गीठी जलाकर गला सेंकने का आदेश किया।

कॉल साहेब की दोनों बहूरानियाँ संध्या समय ही घूमने निकल गई थीं। आजकल इन दोनों के सम्मुख भी एक विचित्र समस्या पैदा हो रही थी। इनकी तीसरी सगी बहिन कान्ता बलखाते हुए यौवन में प्रवेश करके विवाह योग्य हो चुकी थी। कान्ता की इच्छा किसी बड़े व्यक्ति से विवाह कराने की थी। कॉल साहेब चाहते थे कि यह विवाह यदि उन्हीं के साथ सम्पन्न हो जाए तो क्या हानि है? परन्तु इस बात के लिए कान्ता की माता जी सहमत नहीं थीं। छोटी बहूरानी के विवाह के समय जैसा विरोध कॉल साहेब को माता जी का था बिलकुल वही रूप इस समय कान्ता की माता जी ने ग्रहण कर लिया था। भगवान की कृपा से उन्होंने तीन लड़कियों को जन्म दिया था और दुर्भाग्य इतना कि एक भी धेवता या धेवती खिलाने को नहीं मिला। कान्ता के विवाह से अपनी इसी इच्छा के फलीभूत होने की आशा उन्हें थी और इसीलिए उन्होंने कॉल साहेब के साथ कान्ता का विवाह करने के लिए बिल्कुल स्पष्ट रूप से इन्कार कर दिया था।

कान्ता की झलक एक बार एक पार्टी में सेठ भानामल जी को भी देखने के लिए मिली थी और तभी उन्होंने अपने नए मिल का हाथीदाँत का बना हुआ डिज़ाइन उसे भेंट किया था। मिस कान्ता को वह नमूना बहुत पसन्द आया। उसके पश्चात् एकदम माता जी की अस्वस्थता के कारण कान्ता को लखनऊ चला जाना पड़ा। कान्ता लखनऊ से आज ही संध्या को आई थी और आते ही दोनों बहिनों को साथ ले सेठ भानामल जी से मिलने के लिए उनकी कोठी पर चली गई।

कॉल साहेब ने बैठक में कई अटैची, बिस्तरबन्द और सामान की टोकरियाँ रखी देखीं तो नौकर से पूछा, "यह सामान किसका है ?"

"सरकार ! बहूरानी जी की छोटी लखनऊ वाली बहिन जी आई हैं।" पहाड़ी ने उत्तर दिया।

"अरे ! कब ?" और हृदय में कॉल साहेब के कुलमुलाहट-सी पैदा हो गई। कान्ता का नाम सुनकर तो एक क्षण के लिए उनके गले का दर्द भी जाता रहा परन्तु साथ ही अपनी सास का उनके साथ कान्ता का विवाह न करने का दृढ़ निश्चय स्मरण आते ही उनका दिल बुझ गया और जिस उभार के साथ उन्होंने कान्ता का नाम लिया था वह होठों पर ही जकड़ कर रह गया। उनके मन में कुछ और कहने की आई परन्तु पहाड़ी से क्या कहें।

"आज ही तो आई थीं संध्या को।" नौकर बोला।

"और आते ही घूमने भी निकल गईं ?" मन में कुछ पीड़ा-सी लेकर कॉल साहेब बोले। कपड़े उतार कर अपने पलंग पर लेट गए। कान्ता के आने और इस प्रकार घूमने चले जाने से कॉल साहेब को बहूरानियों पर रह-रहकर क्रोध आ रहा था। इस समय उनका ध्यान अचानक जीवन की निस्सारता पर चला गया। वास्तव में पीड़ा में ही व्यक्ति को अपनों की याद आती है और उन्हीं पर क्रोध भी आता है। दो रानी होते हुए भी गला आज पहाड़ी नौकर से सिकवाना पड़ रहा था। जीवन एक विडम्बना है, बस यही उनके दुखी मन ने कहा। किस पर विश्वास किया जाए और किस के लिए इस जीवन की नौका को तूफ़ानों के समुद्र में बवंडरों के बीच से असंख्य आपत्तियों को सहन करते हुए लेकर लेजाया जाए ? एक क्षण के लिए मन कुछ विक्षुब्ध सा हो उठा और कॉल साहेब कम्बल में अपना मुँह ढाँपकर मृत के समान लेट गए। नींद को बुलाने का भी प्रयत्न किया परन्तु दुर्भाग्यवश नींद न आ सकी। उन्होंने फिर उठकर बैठे होते हुए घंटी बजाकर नौकर को बुलाया और पलंग के साथ दीवार से अपने मख़मली तकियों को लगाकर उनसे कमर लगाकर सहारा लेते हुए पीछे सरक कर कुछ बैठ और कुछ लेट गए। नौकर के अन्दर आने पर कॉल साहेब ने अपने दुखी नेत्र उसके मुँह पर डालते हुए पूछा, "चलते समय कुछ कह गई थीं क्या बड़ी बहूरानी ?"

"जी ! कुछ नहीं ।"

"और छोटी बहूरानी ?"

"जी ! वह भी कुछ नहीं कह गईं ।"

"अच्छा जाओ ।" और नौकर फिर कमरे से बाहर चला गया ।

कॉल साहेब मौन मुद्रा में उसी प्रकार कुछ सोचते हुए मखमली तकियों से अपनी कमर टिकाए पैरों पर शाल डाले बैठे रहे। अपना पश्मीने का मफ़लर उन्होंने क़रीने के साथ गले में लपेटा हुआ था परन्तु जहाँ उस अशफ़ाक के बच्चे का मोटे नाखून वाला अँगूठा टिका था वह स्थान रह-रहकर कसक जाता था। उन्हें बार-बार अशफ़ाक पर क्रोध आता था और दाँत किट-किट करके बजने लगते थे परन्तु तुरन्त ही उन्हें फिर कान्ता का ध्यान आ जाता था। बड़ी बहूरानी और छोटी बहूरानी कान्ता को लेकर निश्चित रूप से सेठ भानामल जी की कोठी पर गई होंगी यह उनका मन कह रहा था। उनका वहाँ जाना उन्हें बहुत ही बुरा लग रहा था। केवल बुरा ही नहीं बल्कि इस समय तो उन्हें अपनी दोनों बहूरानियों की पति-भक्ति में भी संदेह होने लगा था। कभी बहूरानियों पर क्रोध आता था और कभी सेठ भानामल जी की कपट-वृत्ति पर। सेठ भानामल जी का इस प्रकार कॉल साहेब के ही ऊपर हाथ साफ़ करना उनकी दृष्टि में नितान्त अनुचित था। पर उन्हें तुरन्त ध्यान आ गया कि वह तो अभी-अभी सेठ भानामल जी की कोठी से ही आ रहे हैं यदि वह इस समय वहाँ से न आ रहे होते तो निश्चित रूप से इस समय यह समाचार पाकर वह सीधे सेठ जी की कोठी की तरफ़ चल दिए होते।

कॉल साहेब को चैन नहीं पड़ रही थी। वह बार-बार पूरे लेटकर फिर उठ बैठते थे और कोई-न-कोई पुस्तक हाथ में लेकर समय व्यतीत करने का प्रयास कर रहे थे। काफी देर इसी प्रकार तपस्या करने के पश्चात् दोनों बहूरानियों ने कान्ता के साथ कॉल साहेब के कमरे में प्रवेश किया।

कान्ता ने कॉल साहेब का दूर से ही, "जीजा जी नमस्ते," कहकर अभि-वादन किया और कॉल साहेब ने भी मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। इस समय कॉल साहेब का मुँह ऐसा हँसमुख बना हुआ था कि मानो बहुत देर से वह इसी प्रसन्नचित्तता के साथ बैठे हुए हैं। दोनों बहूरानियाँ तो आज बहुत ही प्रसन्न थीं।

और छोटी बहूरानी यकायक कह उठीं, "आज तो मार्ग में हमारी भेंट आपके मित्र चौहान साहेब से हो गई।" इतना कहकर वह इठलाती हुई सामने के सोफे पर अपनी आँखों की पुतलियों को घुमाते हुए सुधर कर बैठ गई। इस समय छोटी बहूरानी के नेत्रों से एक विचित्र मादकता बरसी पड़ रही थी।

"चौहान साहेब से!" आश्चर्य सूचक मुख-मुद्रा बनाते हुए कॉल साहेब ने पूछा और आज छोटी बहूरानी के यह शब्द सुनकर उनके आश्चर्य का पारावार ना रहा था।

"जी!" बड़ी बहूरानी बोल उठीं, "बड़े ही भले आदमी हैं बेचारे। अचानक हमारी कार पँचकुइयाँ रोड पर पहुँचकर ख़राब हो गई। वहाँ कई घन्टे ड्राइवर के परेशान होने पर भी कॉर न चल सकी। कोई अन्य सवारी भी नहीं मिल सकती थी कि इतने में एक कार उधर से गुज़री और हमने उसे हाथ का संकेत करके रोक लिया। चौहान साहेब उसी कार में थे। हमने उनसे कहा "क्या आप कृपया हमें सेठ भानामल जी की कोठी पर पहुँचा सकेंगे? कोठी बारह खम्भा रोड पर है। आपको कष्ट तो अवश्य होगा परन्तु हमारी कार बिगड़ गई है और यहाँ पर कोई अन्य सवारी मिलने की सम्भावना नहीं।"

उन्होंने कहा, "अवश्य" और फिर हमारे बैठने के पश्चात् न जाने किस प्रकार हमें पहिचानकर बोले, "आप लोग कॉल साहेब की कोई सम्बन्धिनी प्रतीत होती हैं।" यह कहते समय उनका मुख मुस्कुरा रहा था, सम्भवतः व्यंग्य भी था उसमें कुछ-कुछ, परन्तु बहुत ही मधुर व्यंग्य था वह।

"सम्भवतः नहीं वास्तव में जीजी! बहुत ही मधुर व्यंग्य था उनके इन साधारण से शब्दों में!" छोटी बहूरानी ने कहा और साथ ही कान्ता ने भी उनके शब्दों का समर्थन किया। कान्ता के इस समर्थन में एक विशेष प्रकार की संलग्नता थी। कान्ता के बदन से नव विकसित यौवन फूटा पड़ रहा था और उसके मुख से निकलने वाले शब्द-शब्द में कॉल साहेब को न जाने क्या सुनाई पड़ रहा था। कान्ता को देखकर कुछ क्षणों के लिए तो कॉल साहेब का सब दुःख जाता रहा और उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो उन्हें चोट आई ही नहीं थी।

मन में कटुता होते हुए भी कॉल साहेब ने कान्ता के शब्दों का इस समय समर्थन कान्ता को प्रसन्न करने के लिए कर दिया परन्तु उनके हृदय में

एक जलन सी पैदा हो गई। यह विचार रहे थे कि कहीं सेठ भानामल जी के अतिरिक्त उनके मार्ग में चौहान साहेब न आकर फँस जाएँ। यदि चौहान साहेब बीच में आकर फँस गए तो इनका फिर बाहर निकाल फेंकना असम्भव हो जाएगा।

"कल सन्ध्या को चौहान साहेब ने हमें चाय पर बुलाया है और साथ में आपको भी निमन्त्रण दिया है।" बड़ी बहूरानी प्रसन्नता पूर्वक बोली। "वह कह रहे थे कि आप भी अभी अभी तो उनके साथ से पृथक होकर आ रहे हैं। आजकल तो बड़ी रात रात तक चौहान साहेब के साथ मित्रता घुट रही है।"

कॉल साहेब की मुखाकृति से उनके हृदय को परखना कोई खेल नहीं था। वह अपने हृदय को ऐसी साधारण वस्तु नहीं समझते थे कि उसका प्रत्येक रहस्य हर किसी पर उद्घाटित कर दिया जाए। उनकी दोनों बहू-रानियाँ भी अपना सम्बन्ध कॉल साहेब के केवल ऊपरी रूप से ही रखती थीं और घर को सोसाइटी का केवल एक लघु रूप मात्र समझती थीं। इस लघु सोसाइटी के प्रत्येक मैम्बर को वह अपनी अपनी कार्यवाहियों के लिए स्वतन्त्र समझती थीं। ऐसी परिस्थिति में कॉल साहेब यदि अपने मन में कुछ गुप्त बातें रखें भी तो रखा करें इससे उनका कुछ बनता बिगड़ता नहीं। उन्होंने अपने जीवन का एक स्वतन्त्र कार्यक्रम बना लिया था और उसी पर चलते हुए वह आनन्दपूर्वक अन्य किसी की परेशानियों में न पड़कर स्वच्छन्द जीवन व्यतीत करती चली जा रही थीं। उनका जीवन मंगलमय था, आनन्दमय था। न उसमें कोई समस्या थी और न सोच विचार के लिए स्थान ही। अच्छा खाना, अच्छा पहिनना, सैर सपाटा, सभा सोसाइटी, कॉकटेल पार्टी इत्यादि जहाँ भी उन्हें जाना होता था स्वच्छन्दता पूर्वक जाती थीं। कॉल साहेब का कोई प्रतिबन्ध उनके मार्ग में बाधा उपस्थित नहीं कर सकता था, यह उन्होंने विवाह से पूर्व ही खोलकर निश्चय कर लिया था। उनका विवाह एक पारस्परिक ऐग्रीमेन्ट (इकरारनामा) था जिसके अन्दर दोनों बहूरानियों ने अपनी मुक्ति के मार्ग में नियंत्रण रखने की धारा कॉल साहेब के अधिकार से छीन ली थी।

कान्ता से आज कॉल साहेब खूब खुलकर बातचीत न कर सके क्योंकि एक तो उनका मस्तिष्क कॉमरेड अशफ़ाक को नौकरी से पृथक करने का कोई बहाना सोचने में व्यस्त था और दूसरे कान्ता का उनसे मिले बिना सेठ भानामल

जी की कोठी की ओर अकेले ही चले जाने का उनके मन में खेद था। तीसरी समस्या जो बहूरानियों की कार खराब हो जाने के कारण उनकी चौहान साहेब से मुट-भेड़ ने पैदा करदी थी वह तो बहुत ही गम्भीर थी। परन्तु भवितव्यता पर कॉल साहेब का अधिकार नहीं, लाचारी थी। यदि अधिकार ही होता तो क्या वह नाचीज़ अशफ़ाक का बच्चा इस प्रकार कॉल साहेब को उनके गवर्डियन के सूट और फैल्ट हैट के साथ गर्दन से पकड़ कर ऊपर उठा लेता। टाइ की गाँठ भी खराब हो गई उस कम्बख्त की झपटा झपटी में और सूट की क्रीज़ का तो खात्मा ही हो गया।

कॉल साहेब ने प्रण किया कि यदि मेरा नाम भी कॉल है तो मैं भी कल ही अशफ़ाक को नौकरी से पृथक करके दम लूँगा और मन ही मन इस बात का दृढ़ निश्चय करते हुए कॉल साहेब ने पास की मेज़ से अपना बुझा हुआ सिगार का टुकड़ा उठाकर सिलगा लिया।

"आप कुछ आज परेशान से प्रतीत हो रहे हैं जीजा जी!" कान्ता ने स्वाभाविक सरलता से पूछा और दोनों बहूरानियों के अपने अपने कमरों में चले जाने पर भी वह वहीं पास की कुर्सी पर बैठी रही।

"परेशानी नहीं कान्ता! कुछ तकलीफ़ है गले में। देख नहीं रही हो यह मफ़लर लपेटा हुआ है।" गले का लिपटा हुआ मफ़लर दिखलाते हुए कॉल साहेब बोले, "अभी अभी तुम लोगों के आने से पूर्व पहाड़ी से मैंने गला सिकवाया था।" मफ़लर तनिक ढीला करके फिर लपेटते हुए ठीक करके उसे गले से लपेट लिया।

"आखिर यह हुआ क्या?" उत्सुकता पूर्वक कान्ता ने पूछा।

"कुछ नहीं यूँ ही शायद ग्लैंड्स [गदूद] दुख रहे हैं, ठीक हो जायेंगे। तुमने क्या चिन्ता की इन बातों की?" मनोभावों को मन में समेट कर कॉल साहेब मुख पर अस्वाभाविक मुस्कुराहट लाते हुए बोले।

"गदूद जीजा जी! परन्तु गदूद तो गर्दन के ऊपर नहीं फूलते।" हँसते हुए कान्ता ने कहा। कॉल साहेब को अपनी बात की बनावट और फिर उसके भी अधूरा रह जाने पर लज्जा आने लगी। वह तुरन्त बात बदलकर बोले, "भाई हम तो जानते नहीं यह क्या है? हाँ इतना अवश्य जानते हैं कि कुछ दुख रहा है।" इतना कहकर कॉल साहेब चुप हो गए।

कान्ता लखनऊ मैडीकल कॉलेज से एम० बी० बी० एस० की परीक्षा देकर आ रही थी। यह उसका फ़ाइनल ईयर समाप्त हुआ था। इसलिए अब वह एक पूर्णरूपेण डाक्टरनी थी और उसके सम्मुख बैठकर इस प्रकार का अनर्गल झूठ नहीं बोला जा सकता था।

कान्ता आज सफर के कारण थकी हुई थी और रात के एक बज कर पच्चीस मिनट हो चुके थे इसलिए सोने को चली गई। छोटी बड़ी बहूरानियाँ तो पहिले ही शयनागार में जा चुकी थीं। कॉल साहेब बेचारे अकेले ही अपनी समस्याओं से पलंग पर पड़े-पड़े उलझते और झगड़ते रहे। उनके इस कार्यक्रम में रुकावट पैदा करना दोनों बहूरानियों में से किसी ने भी नहीं सीखा था।

कॉल साहेब को न जाने कब नींद आई यह किसी को पता नहीं।

: १२ :

आज 'सेट क्लाथ मिल्ज़ ' में काम करने वाले कर्मचारियों की स्वाभिमान पूर्ण दृष्टि कॉमरेड अशफ़ाक पर पड़ रही थी। कॉमरेड अशफ़ाक ज्यों ही मिल के द्वार पर आया तो उससे भेंट करने के लिए कर्मचारी लोग दृष्टि फैलाए खड़े थे। कॉमरेड अशफ़ाक आज सबसे जी खोलकर मिला और कर्मचारियों ने भी 'अशफ़ाक ज़िन्दाबाद' के नारे लगाए। मिल का वायु मंडल इन 'ज़िन्दाबाद' के नारों से गुंजायमान हो उठा। कॉमरेड अशफ़ाक को मज़दूरों ने अपने स्वाभिमान का प्रतीक मानकर सम्मानित किया और अपने हृदय की शुभाकाँक्षाओं को उस पर न्यौछावर कर दिया। सभी मित्रों ने अशफ़ाक की कमर ठोंकी और उसके साहस का गर्व के साथ गुणगान किया। वीर साहसी कॉमरेड अशफ़ाक के संकेतों पर आज मिल का मज़दूर बच्चा-बच्चा प्राण देने को उद्यत था।

कॉमरेड विमला के मकान पर घटने वाली घटना मज़दूरों में रातों रात फैल चुकी थी। कॉमरेड बैनर्जी के जितने भी आदमी थे वह सब भयभीत हो उठे थे और स्वयँ बैनर्जी भी कॉमरेड अशफ़ाक के सामने आने का साहस नहीं था। बैनर्जी जानता था कि एक बार अशफ़ाक के पंजे में यदि वह फँस गया तो फिर प्राणों की खैर नहीं। जो व्यक्ति कॉल साहेब को गर्दन से ऊपर उठा सकता है वह बैनर्जी को किस खेत की मूली समझता है। वातावरण की इसी

उत्तेजना में एक ओर से अचानक मैनेजर कॉल साहेब की कार मिल के द्वार में प्रविष्ट हुई। उसे देखकर तो कर्मचारियों का जोश और भी उबाल खा गया। एक मनचला कर्मचारी सीना उभार कर ऊँचे स्वर में बोल उठा, "चाटुकारी पर मज़दूरी की विजय हो।" और इतना कहकर उसने अपने कोट के बटन गर्व के साथ खोलकर जेब से रूमाल निकालते हुए आकाश में हिला दिया।

"विजय हो" अन्य सब मज़दूरों ने उसका समर्थन करते हुए कहा और सब ने मिलकर एक बार इतने ज़ोर से 'कॉमरेड अशफ़ाक ज़िंदाबाद' का नारा लगाया कि कॉल साहेब के कान गूँज उठे। "असत्य नीति पर सत्य की विजय हो।" फिर उसी पहिले कर्मचारी ने सिर ऊँचा करके अभिमान पूर्वक अपने साथियों को उत्तेजित करते हुए कहा।

"विजय हो" और सब कर्मचारियों ने साथ देते हुए ऊँचे स्वर से नारा लगाया।

"मज़दूर और मज़दूरी अमर हों।" कॉमरेड अशफ़ाक अपने को न सम्भालते हुए गम्भीर ध्वनि में कह उठा और इस समय उसका बदन कर्तव्य की महानता अपने में लिए हुए एक विशाल भूधर के समान खड़ा था।

"अमर हों" मज़दूर वर्ग ने इसका करतल ध्वनि के साथ आवेगपूर्ण समर्थन किया।

इसी समय कॉमरेड विमला वहाँ पर आ पहुँची। यह सब गुलगपाड़ा देखकर अशफ़ाक से बोली, "यह शोर कैसा था?" और परिस्थिति जानने के लिए एक क्षण वहाँ पर ठहर गई।

"कुछ नहीं, यों ही जोश में आकर कर्मचारी कुछ कह रहे थे। मैंने सब को शान्त कर दिया है।" इतना कहकर कॉमरेड अशफ़ाक ने अपने नायक के सम्मुख कुछ त्रुटि-सी अनुभव करते हुए मुख नीचे को कर लिया। वातावरण एक क्षण में शाँत हो गया और सभी कर्मचारी इधर-उधर को खिसक लिए।

विमला सीधी अपने डिपार्टमेन्ट में चली गई। अधिक बातें करना इस समय उसने उचित नहीं समझा। कर्मचारियों की भीड़ भी तित्तर-बित्तर हो गई। अभी जहाँ कर्मचारियों का जमघट जुड़ा था वहाँ एक भी कर्मचारी नहीं रह गया।

कॉल साहेब को रात भर नींद नहीं आई थी और अब मिल के द्वार में घुसते ही इस प्रकार के कटु शब्दों की बौछारें सहन करनी पड़ीं। खून एकदम

खौल उठा और आँखों के डोरे लाल हो गए। जी में आया कि आफ़िस में बैठते ही केवल दो शब्द लिखकर स्पिनिंग इञ्चार्ज के पास भेज दें, 'अशफ़ाक को काम पर न लिया जाए। वह अपना हिसाब बनवाकर मय नोटिस के वेतन के चुकता रुपया लेकर मिल की सीमा से बाहर हो जाए,' परन्तु तुरन्त ही उन्हें ध्यान आया कि सेठ भानामल जी ने कोई बहाना खोजकर उसे जवाब देने के लिए कहा था। क़लम उठी की उठी ही रह गई और कोई बहाना कॉल साहेब की समझ में न आया। वह इसी प्रकार चिंता-निमग्न बैठे थे कि सामने से चौहान साहेब कमरे की चिक उठाकर अन्दर आते हुए बोले, "यार कॉल साहेब! तुम भी हो बड़े मज़ेदार आदमी। आख़िर किस परेशानी में फँसे रहते हो रात दिन? तुम बस पागल हो जाओगे इन मज़दूरों से झगड़ते झगड़ते। मैं कहता हूँ कि आख़िर तुम क्यों इतनी बुराई अपने सिर पर लेते हो किसी से?" कॉल साहेब के साथ सहानुभूति प्रकट करते हुए चौहान साहेब गूढ़ नीति से बोले और फिर इस प्रकार मित्रता प्रकट करके उनकी कुर्सी के डंडे पर ऐसे बैठ गए कि मानो उनको अभिमान छू तक नहीं गया है। चौहान साहेब से इस प्रकार घुल-मिलकर बातें करने की इच्छा कॉल साहेब की भी पहिले कई बार हुई थी परन्तु अवसर केवल इसलिए न मिल सका कि वह चौहान साहेब से कुछ भयभीत से रहते थे। वास्तव में कॉल साहेब को इस अवसर के न मिलने का कारण ही उनके जीवन की वह जलन बन गया था कि जिसके फल स्वरूप वह खिसियाकर चौहान साहेब से चिढ़ने लगे थे। चौहान साहेब का मूल्याँकन कॉल साहेब ने प्रथम भेंट में ही कर लिया था और यह भी अनुमान लगा लिया था कि उनसे जीवन में कितना लाभ उठाया जा सकता है परन्तु उस लाभ की विस्तार पूर्वक योजना चौहान साहेब के सम्मुख रखने का न तो कोई अवसर ही उन्हें मिला था और न कोई माध्यम ही वह खोज पाए थे। वह अवसर भगवान की दया से आज स्वयं ही इनके सामने आ लपका।

आज चौहान साहेब उस से कहने लगे "तुम चाहे जितनी भी सेठ भानामल जी की चाटुकारी क्यों न कर लो आख़िर रहोगे नौकर के नौकर ही कॉल साहेब।" और इतना कहते हुए चौहान साहेब ने कॉल साहेब का हाथ पकड़ कर ऊपर उठाते हुए बोले, "आओ चलें। आज मैं तुमसे एक बहुत ही रहस्यपूर्ण बात करने के लिए कोठी से विचार कर चला हूं।"

कॉल साहेब यन्त्र की भांति बिना कुछ सोचे विचारे चौहान साहेब के साथ उठकर चल दिए। इस समय कुछ सोचने विचारने का चौहान साहेब ने कॉल साहेब को अवसर ही नहीं दिया।

कॉल साहेब को साथ लेकर चौहान साहेब मिल से बाहर अपनी कार तक ले आए। फिर अन्दर बैठने का संकेत करते हुए बोले "बैठिए।" और कॉल साहेब चुप चाप कार में बैठ गए।

"आप अधिक से अधिक इस समय कॉमरेड अशफ़ाक को नौकरी से पृथक करने की समस्या पर विचार कर रहें होंगे कॉल साहेब?" मुस्कुराते हुए कार स्टार्ट करके चौहान साहेब बोले, "परन्तु यदि आप अपने और कॉमरेड अशफ़ाक के स्टेटस पर विचार करें और फिर गम्भीरता पूर्वक ध्यान से सोचें तो आपको ज्ञात होगा कि आपने मस्तिष्क की उस बहुमूल्य शक्ति को, जिसका कि उपयोग आप किसी अन्य बहुमूल्य कार्य के लिए कर सकते हैं, अपदार्थ वस्तु पर नष्ट कर रहे हैं।" और इतना कहकर चौहान साहेब कार चलाने में व्यस्त हो गए।

कॉल साहेब ने भी जब गम्भीरता पूर्वक चौहान साहेब के शब्दों पर विचार किया तो उन्हें उसमें बहुत कुछ सचाई दिखलाई दी और उन्होंने हृदय से अनुभव किया कि वास्तव में कहाँ वह और कहाँ कॉमरेड अशफ़ाक। कॉल का वह मस्तिष्क, जिसने इतना बड़ा मिल बनाकर खड़ा कर दिया, जिसने सरकार के इन्टैलीजेन्ट डिपार्टमेन्ट (गुप्तचर विभाग) की आँखों में दिन दहाड़े धूल झोंक कर न जाने कितनी गाँठ कपड़ा पाकिस्तान भेज दिया, जिसने अंगरेजी शासन काल में सन् ४२ के आँदोलन के कितने ही सरकार के विद्रोही नेताओं का बाल भी बाँका नहीं होने दिया, जिसने आज तक शेर और बकरी को एक घाट पर पानी पिलाया है, क्या केवल इस नाचीज़ अशफ़ाक को नौकरी से पृथक करने की समस्या को ही विचारने के लिए रह गया है? मन में आप से आप अपने ही विचारों के प्रति एक ग्लानि सी उत्पन्न हो उठी और तुरन्त निश्चय कर लिया कि अब वह अपनी विचार-शक्ति का स्तर ऊँचा कर देंगे और इस प्रकार की व्यर्थ समस्याओं में उलझकर अपना मस्तिष्क ख़राब नहीं करेंगे।

चौहान साहेब की कार कनॉट प्लेस पर पहुँच कर क्वीन्सवे के एल्प्स रेस्टोरेन्ट के सामने जाकर रुक गई। दोनों व्यक्ति उतर कर रेस्टोरेन्ट के अन्दर घुसे और सीधे बढ़ते ही चले गए। रेस्टोरेन्ट हॉल को पारकर के बाँए हाथ के कोने

से ऊपर जाने वाले जीने से ऊपर चढ़कर दूसरे कमरे में जा बैठे और बैरे को कॉफी का आर्डर देकर बातें करनी प्रारम्भ कर दीं। कॉल साहेब और चौहान साहेब की प्रथम बार इतनी घुल मिलकर बातें हो रही थीं।

"आपने क्या जीवन भर गुलामी करने का ही निश्चय कर लिया है कॉल साहेब ?" कटु व्यंग्य कसकर चौहान साहेब बोले परन्तु उनके इस व्यंग्य में आज तीखापन न होकर प्रेम और सद्भावना की झलक थी।

पहिले तो कॉल साहेब तनिक सहमे और झिझके परन्तु तुरन्त ही उन्हें गत रात्रि की बहूरानियों वाली चौहान साहेब की भेंट का स्मरण हो आया और उन्होंने मन में दृढ़ भावना बना ली कि हो न हो यह उसी भेंट का परिणाम है जो वही चौहान साहेब जो फूटे मुँह भी कभी उनसे बात करना पसन्द नहीं करते थे आज इस प्रकार प्रेम पूर्वक मन तन की बातें कर रहे हैं। अपनी बहूरानियों की व्यवहार कुशलता पर इस समय कॉल साहेब का मन द्रवित हो उठा और उनके हृदय में चौहान साहेब के लिए जो व्यापक जलन स्थान पा चुकी थी वह समूल नष्ट हो गई। वह बोले, "गुलामी करना तो नहीं चाहता चौहान साहेब ! परन्तु व्यापार करने में भय लगता है। आज तक हमने व्यापार क्षेत्र में जितना भी जुआ खेला है वह सब सेठ भानामल की छाती पर खेला है। जब लाभ हो गया है तो उसमें अपना हिस्सा पूरा-पूरा बाँट लिया है और जब हानि हुई है तो वह सेठ जी को ही सहन करनी पड़ी है। परन्तु भानामल की भी छाती बहुत चौड़ी है चौहान साहेब ! यह मानना ही होगा। मैं तो उनकी ही छाती पर आज तक इस प्रकार फिसलता फिरा हूँ जिस प्रकार कैरमबोर्ड के ऊपर स्ट्राइकर काली और लाल गोटों को मारता पीटता फिरता रहता है।" कॉल साहब ने गम्भीरता पूर्वक कहा। कॉल साहेब इस समय मन तन की बातें कर रहे थे चौहान साहेब से।

"रहे हैं आप स्ट्राइकर ही, निर्जीव वस्तु।" मुँह पिचका कर चौहान साहेब बोले। "परन्तु मैं आज आपको स्ट्राइकर न देख कर स्ट्राइकर पर चोट लगाने वाले के रूप में देखना चाहता हूँ।" इतना कहकर गर्व के साथ चौहान साहेब ने अपना सीना तान कर मूँछों पर ताव दिया और तनिक सँवरते हुए गद्देदार सीट पर खिसक कर कोने में दीवार से कमर लगाते हुए बैठ गए।

कॉल साहेब ने मन में विचार किया कि यह कोई कठिन बात नहीं जो चौहान साहेब कह रहे हैं। यदि वास्तव में चौहान साहेब उन्हें सहायता दें तो वह

सेठ भानामल जी से भी कहाँ आगे बढ़ सकते हैं। एक दिन २०००) रु० का फाइनेन्स देखकर उनकी आँखें चमक उठी थीं और आज तो कई कई बैंकों का फाइनेन्स उनको उपलब्ध था। कितने ही बैंकों के मैनेजर उनके पास संध्या को चाय पीने आते थे और कितनी ही बार जब सेठ भानामल जी का फाइनेन्स फेल हो जाता था तो कॉल साहेब ही उसे पूरा करते थे। अपनी जिस शक्ति का प्रयोग उन्होंने आज तक सेठ भानामल जी के लिए किया था और आज भी कर रहे हैं क्या उसी का प्रयोग वह अपने लिए नहीं कर सकते? रही बात चौहान साहेब की सो इन बेचारों को मिलता ही क्या है? इन्हें क्या मालूम कि हम व्यापार में किन किन हथकंडों का प्रयोग करके कहाँ कहाँ और किस किस प्रकार रुपया बचा जाते हैं। हम लोग तो रुपया काटने छाँटने की कैंची ठहरे। सेठ भानामल जी इन्हें केवल पाँच ही हज़ार माहाना तो देते हैं। आदमी सस्ते से सस्ता पटाकर लाता है सेठ भानामल भी। परन्तु क्या है, मैं इन्हें दस हज़ार रुपया महीना भी दे सकता हूँ। इनके लाए हुए पिछले सरकारी आर्डर पर हमने दस लाख रुपया बचाया था और इस प्रकार चौहान साहेब की पूरी उपयोगिता कॉल साहेब के नेत्रों में चित्रित हो उठी।

इतना विचार कर कॉल साहेब मौन हो गए परन्तु उनके मुख पर मुस्कान खेल रही थी और इस मुस्कान को पढ़ लेने की क्षमता चौहान साहेब में वर्त्तमान थी। उन्होंने गर्म लोहे पर चोट की और एक दम कॉल साहेब के कंधे पर हाथ मार कर बोले, "यही समय है कुछ कर गुज़रने का। आजकल सरकार के हर विभाग में अपना ज़ोर है, जो चाहें सो कर सकते हैं। चुनाव सामने हैं, पता नहीं कल क्या हो? वैसे सम्भावना पूर्णरूप से कांग्रेस की ही विजय की है। यदि भगवान ने चाहा तो पौबारे फिर भी अपने ही रहेंगे।" और इतना कहकर वह पैर पैर रखते हुए आराम से बैठ गए।

"क्यों नहीं? विजय अवश्य कांग्रेस की होगी। कांग्रेस ने किसका भला नहीं किया। ग़रीब काश्तकार से लेकर मिल मालिकों तक का ध्यान रखा है। जैसा जैसा जिसका ख़र्च है वैसा वैसा उसे दिया है। भगवान भी तो यही करते हैं चौहान साहेब! किसी कवि ने ख़ूब कहा है :—

राम भरोसे बैठ कै सबका मुजरा लेंय,
जैसी जाकी चाकरी वैसा वाको देंय।"

और इतना कहकर उन्होंने कॉफी की दो प्यालियाँ बना कर उनमें से एक चौहान साहेब के सामने खिसका दी।

"आपकी विचारधारा वास्तव में बहुत व्यवस्थित है कॉल साहेब! बहुत सुन्दर, बहुत सुन्दर। अब मैं आपको आज एक सम्मति और दूँगा और वह यह कि यदि आप मज़दूरों में नाम पैदा करना चाहते हैं तो तनिक धन से सम्बन्ध ढीला करके उनकी तरफ उदार हो जाइये।" स्वाभाविक सरलता के साथ चौहान साहेब बोले।

परन्तु अपनी इस मनोवृत्ति पर कॉल साहेब का अधिकार नहीं था। यों चौहान साहेब के कहने पर कॉल साहेब ने उन्हें आश्वासन अवश्य दे दिया मज़दूरों के प्रति उदार होने का परन्तु वह अपनी विचार धारा को क्या करें? जब किसी मज़दूर को वह छुट्टी के दिन भी सफ़ेद चिट्टी पतलून पहिने देखते थे तो मन कहता था, 'देखो बदमाश के बच्चे को, कैसा लाट साहेब का नाती बना फिरता है' और यदि उनका वश चलता तो वह मशीन की कालिख से ऊँगली भरकर उसकी पतलून से रगड़ने में तनिक भी न चूकते। कॉल साहेब अपने को मानते थे मजदूरों का भाग्य विधाता और उनके विचार से भगवान ने स्वेच्छानुसार उन्हें मजदूरों का जीवन संचालित करने के लिए भेजा था। कॉल साहेब किसी पर दया करना जानते अवश्य थे परन्तु यदि कोई बलवान बनकर उनके सम्मुख आता था तो वह उसे सहन नहीं कर सकते थे। चौहान साहेब को भी अपने से सबल मानने में यह उनकी सबलता नहीं थी कि जिसने उन्हें प्रभावित किया था परन्तु यह उनकी उपयोगिता थी जिसे निचोड़ कर कॉल साहेब उसमें से रस निकालना चाहते थे। परन्तु कर्मचारियों के साथ चौहान साहेब वाली बात नहीं थी। उनका रस तो कॉल साहेब कोल्हू में पेलकर ही निकालने के पक्ष में थे। मज़दूरों के साथ यदि कभी वह कोई सहानुभूति दिखलाने पर उद्यत हो भी जाते थे तो वह उनकी कूटनीति के परिणाम स्वरूप होता था, मानवीय भावना के विकास के कारण नहीं। वास्तव में मानव को जिन जिन वर्गों में कॉल साहेब के मस्तिष्क ने विभाजित किया हुआ था जब उन वर्गों को किसी भी प्रकार यह छिन्न-भिन्न होते देखते थे तो उनके हृदय को ठेस लगती थी और कभी-कभी तो वह उनके लिए इतना असहनीय हो उठता था कि वह अपने को सँभाल ही न पाते थे। अभी उस दिन कॉमरेड विमला के मकान पर जो उनके

मुख से अशफ़ाक के लिए अपशब्द निकल गए थे वह केवल उनकी इसी विचार-धारा के फलस्वरूप थे जो कि इस समय उनके जीवन का एक अंग बन चुकी थी। कॉल साहिब की इस विचार धारा में कहीं पर भी बनावट के लिए कोई स्थान नहीं था और जो कुछ भी वह कहते या करते थे वह उनके अंत:करण की प्रेरणा होती थी।

फिर बात सन्ध्या की टी पार्टी की तरफ़ झुक गई और वास्तव में आज चौहान साहिब ने इस पार्टी की शोभा को बढ़ाने में दिल खोल दिया था। पार्टी के अन्दर एक ओर सेठ जी और दूसरी ओर कॉमरेड विमला तथा कॉमरेड अशफ़ाक भी सम्मिलित थे। भारतीय संसद के भी कई सदस्य इसमें सम्मिलित थे और एक दो विदेशों के राजदूतों ने भी इसमें भाग लिया था। नगर के भी कई चौहान साहिब के प्रतिष्ठित मित्र उसमें आए थे और कुछ पत्रकारों को भी उसमें भाग लेने के लिए निमंत्रित किया गया था। कुछ दिल्ली के अच्छे लेखक भी उस पार्टी में निमन्त्रित थे।

खाने-पीने के साथ कुछ उपहास और व्यंग्य की रेखाएँ भी कभी-कभी इधर उधर से खिंच जाती थीं परन्तु दोनों बहू रानियों को उन्हें समझने का अवकाश नहीं थी। कान्ता की दृष्टि पड़ रही थी केवल दो व्यक्तियों पर, एक सेठ भानामल जी और दूसरी चौहान साहिब पर। कॉल साहिब को तो वह पहिले ही अपने मन से रिजैक्ट (नापसन्द) कर चुकी थी। कान्ता आजकल अपने वर की खोज में दत्तचित्त थी और यह चुनाव का भार उसने स्वयँ अपने ही सिर पर ले लिया था। इसलिए जिस किसी भी सभा सोसाइटी में आजकल वह जाती थी वहाँ उसके नेत्र अपने इसी कार्य में व्यस्त हो जाते थे। जीवन के सभी पहलुओं पर विचार कर वह वर खोजने का प्रयत्न करती थी। कुछ दिन पूर्व उसकी इच्छा किसी बहुत धनाड्य व्यक्ति से विवाह करने की थी। परन्तु जब से उसने एम० बी० बी० एस० की परीक्षा पास की थी तब से उसका मन उस विचार से उदासीन हो चुका था।

"दावत तो चौहान साहिब! कुछ-कुछ शादी की सी मालूम देती है।" मुस्कुराते हुए व्यंग्य के साथ कॉमरेड अशफ़ाक ने कहा।

"मैं कॉमरेड अशफ़ाक के अनुमान का समर्थन करती हूँ और चौहान-साहिब को उनकी प्रगति के लिए धन्यवाद देती हूँ।" कॉमरेड विमला ने अपनी

ही सीट से मुस्कुराते हुए कहा और फिर प्लेट से उठाकर एक शंतरा छीलना प्रारम्भ कर दिया।

कॉमरेड विमला के व्यंग्य को कान्ता और चौहान साहेब की दृष्टि और कानों के अतिरिक्त और कोई नहीं भाँप सका परन्तु कॉल साहेब को कुछ-कुछ शक अवश्य होने लगा था। यह शब्द सुनकर सेठ भानामल जी का मन भी कुछ उद्वेलित सा हो उठा परन्तु उनके मुख में कुछ कहने के लिए एक शब्द भी न आया।

दावत के समाप्त होने में अभी देर थी कि बीच में ही कामरेड विमला और अशफ़ाक खड़े हो गए। कलाई में बँधी घड़ी पर दृष्टि डालकर कॉमरेड विमला ने कहा, "केवल दस मिनट शेष हैं और हमें पहुँचना है। यूनियन के सब सदस्य हम दोनों की राह देख रहे होंगे।" और जाने की आज्ञा पाने की प्रतीक्षा करने लगे।

"आपकी इच्छा, परन्तु मैं कैसे कहूँ?" चौहान साहेब बोले।

"दावत के बीच से इस प्रकार चले जाना कुछ रुचिकर तो प्रतीत नहीं होता।" कान्ता बीच में ही बोल उठी।

"मैं मानती हूँ आपका कहना परन्तु मैंने आने से पूर्व चौहान साहेब से इस विषय में खोलकर निश्चय कर लिया था। हाँ आपसे भी निश्चय करना आवश्यक था, यह मेरी भूल हुई। इस भूल के लिए इस समय आपसे क्षमा माँगती हूँ।" सुमधुर मुस्कान बिखेरते हुए विमला ने कान्ता के नेत्रों में नेत्र डाल कर अपनी घुँघराली लटों को सँवारा और इतना कह कर चलने के लिए उद्यत होते हुए अपना पोर्टफ़ोलियो सँभाल लिया।

"परन्तु यदि मैं क्षमा न करूँ तब?" उसी प्रकार गम्भीरतापूर्वक मुस्कुराते हुए कान्ता बोली।

"क्षमा आज आपको करनी ही होगी। पहिली भूल तो आपका भगवान भी क्षमा कर देता है।" और फिर चौहान साहेब की ओर मुख करते हुए विमला बोली, "आज आपको ही हमारी सिफ़ारिश करनी होगी क्योंकि भूल आपकी ही है।"

"मेरी भूल?" आश्चर्य प्रकट करते हुए चौहान साहेब बोले, "भाई यह भला किस प्रकार?"

"यह इसलिए कि आपको मुझे खोल कर बतलाना था कि यहाँ आकर मुझे अपनी भूल की किसी से क्षमा याचना करनी होगी और यह सम्भव है कि वह क्षमा मुझे माँगने पर भी प्राप्त न हो सके।" कॉमरेड विमला हाथ की घड़ी पर बराबर देखती हुई कहती जा रही थी, "अच्छा अब नमस्कार, मेरा समय हो चुका। मैं अपने प्रतिनिधि के रूप में चौहान साहेब को ही यहाँ क्षमा-याचना करने के लिए छोड़ कर जा रही हूँ।"

इतना कह कर कॉमरेड विमला ज्योंही चलने को थी तो कान्ता व्यंग्य भरी मुस्कान के साथ उसी गम्भीरतापूर्वक बोली, "और यदि आज्ञा न देने के लिए कोई अन्य व्यक्ति चौहान साहेब को अपना प्रतिनिधि चुन ले तब ?"

"तब ! तब तो समस्या हल हो गई कान्ता बहिन ! चौहान साहेब को स्वयँ अपने वचनों का पालन करना होगा !" और इतना कह कर बिना उत्तर की एक क्षण भी प्रतीक्षा किए कॉमरेड अशफ़ाक के साथ विमला वहाँ से चल पड़ी।

कॉमरेड विमला और अशफ़ाक के चले जाने पर दावत में और कितनी ही प्रकार की गप्प शप्प होती रहीं परन्तु सेठ भानामल जी का मन कुछ खिन्न सा ही रहा। कॉल साहेब कुछ देर मौन रह कर इस प्रकार उभारा खा गए जिस प्रकार कोई व्यक्ति पानी में डूब कर लहर के एक उछाले से ऊपर आ जाता है और फिर किसी अन्य व्यक्ति द्वारा पानी से निकाले जाने पर उसमें प्राणों का संचार हो उठता है। उसी प्रकार चौहान साहेब डूबते हुए कॉल साहेब को घसीट कर किनारे पर लाते हुए बोले, "कॉल साहेब ! आप वास्तव में भगवान की विशेष कृपा के पात्र हैं।"

"वह किस प्रकार ?" मुस्कुराने का प्रयास करते हुए कॉल साहेब ने पूछा।

"वह इसलिए कि शास्त्रों में लिखा है अच्छा सम्बन्ध बड़े भाग्य से मिलता है। मैंने तो कल आपकी छोटी बहूरानी से चार बातें करके ही यह अनुमान लगा लिया था कि आप बहुत भाग्यशाली व्यक्ति हैं।" यह कहते हुए इस समय चौहान साहेब ने अपनी मुख-मुद्रा इतनी सरल और गम्भीर बना ली थी कि किसी भी श्रोता को उनके शब्दों में उपहास अथवा बनाने की बू नहीं आ रही थी। चौहान साहेब और भी भावुक होते हुए आदर भाव से बोले, "और बड़ी बहूरानी वह तो साक्षात् देवि की अवतार हैं। मेरा हृदय कहता है कि भगवान ने अपनी विशेष ही सुकृपा से उनका निर्माण किया है।"

कान्ता अपनी प्रशंसा में भी चौहान साहेब से कुछ सुनना चाहती थी परन्तु कान्ता के सम्मुख इस प्रकार हलका हो जाना चौहान साहेब की नीति-कुशलता की हार हो जाती और हार जाना चौहान साहेब ने जीवन में सीखा नहीं था। चौहान साहेब का रुझान एक बार प्रबल वेग के साथ कॉमरेड विमला की ओर हुआ था परन्तु वहाँ तो उन्हें पग-पग पर हार प्राप्त करने की सम्भावना थी और इसी लिए गत कुछ दिनों से उनका उत्साह फीका पड़ चुका था। जब से उनके आश्वासनों को सेठ भानामल जी द्वारा ठुकराया गया था तब से तो उनका जीवन कॉमरेड विमला के समक्ष और भी हलका हो उठा था और एक बार जो प्रेम-रस की धारा इस ढलती हुई आयु में भी चौहान साहेब ने अपने जीवन में संचारित कर ली थी उसका प्रवाह धीमा ही नहीं पड़ता जा रहा था बल्कि अनेकों स्थानों पर धारा के बीच में रेती उभर कर ऊपर आ गई थी और उसमें अनेकों झाड़ झंकाड़ पैदा हो गए थे।

परन्तु 'ऊधो कर्मन की गति न्यारी' वाली सूरदास की पंक्ति एक नए ही अर्थ के साथ चौहान साहेब के जीवन में मुखरित हो उठी। प्रेम रस की धारा सूखते-सूखते एक प्रबल वेग के साथ बह निकली और उसमें ऐसा बहाव आया कि जिसने चौहान साहेब के हृदय को तरंगित करते हुए आजकल में मुर्झा जाने वाले प्रेम-सुमन को दुबारा खिला दिया। प्रेम-धारा अपने मार्ग में आने वाले झाड़ झङ्काड़ों को बहाकर ले गई और जीवन एकदम कान्तामय हो उठा।

"कैसे विचार निमग्न हो गए एकदम।" कान्ता ने मुस्कुराते हुए पूछा, "सम्भवतः कॉमरेड विमला के चले जाने से दावत आपको कुछ फीकी-फीकी प्रतीत होने लगी।"

"यही बात है।" मुस्कुराते हुए कॉल साहेब कान्ता की बात में बात मिलाकर तनिक कुर्सी पर आसन बदलते हुए बोले।

सेठ भानामल जी जो अभी तक मौन बने हुए बैठे थे और अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे यकायक बहुत गम्भीर होकर बोले, "क्या वास्तव में यह बात सच है चौहान साहेब?"

"बिलकुल सच।" चौहान साहेब ने उत्तर दिया और सेठ जी की बात को आगे बढ़ने से इस प्रकार रोक दिया कि मानो उन्होंने कुछ कहा ही नहीं था। सेठ जी ने यह वाक्य इसलिए कहा था कि चौहान साहेब उनके प्रश्न के उत्तर में

उनसे पूछेंगे, 'क्या बात सेठ भानामल जी ?' और फिर सेठ भानामल जी उसी गम्भीरता के साथ अपना नीति-बाण छोड़ते हुए कहेंगे, 'क्या यह सच है कि आप कॉमरेड विमला को प्रेम करते हैं और वह भी आप पर मोहित हो चुकी है।' और इस पर चौहान साहेब को कान्ता के सम्मुख लज्जित होना होगा परन्तु चौहान साहेब ने तो इस सब संवाद के पतंग की डोर को आकाश में पहुँचने से पूर्व ही काट दिया।

सेठ जी के मस्तिष्क की विचार-धारा मस्तिष्क में ही जमी रहकर और भी बोझिल हो उठी और उसके बाहर निकालने का जब उन्हें कोई मार्ग न मिला तो कुछ बहाना करते हुए खड़े होकर बोले, "अच्छा अब आज्ञा दीजिए चौहान साहेब ! कुछ मित्र लोगों को समय दिया हुआ है इस समय का। वह कोठी पर आते होंगे।" और फिर कान्ता की ओर मुख करके मुख पर किसी प्रकार मुस्कान लाते हुए बोले, "यदि अवकाश मिले तो हमारी कोठी पर भी आने का प्रयत्न करना कान्ता !"

"अवश्य, क्यों नहीं ? अवश्य दर्शन करूँगी सेठ जी !" विनम्र भाव से कान्ता ने खड़ी होकर नमस्कार करते हुए कहा।

सेठ जी को कार तक छोड़ने के लिए कान्ता चौहान साहेब के साथ बाहर पोर्टिको तक गई।

: १३ :

सेठ भानामल जी आज चौहान साहेब की कोठी पर इस दावत में भाग लेने के लिए आए तो अवश्य परन्तु उनका मन कुछ खिन्न सा ही रहा। न तो उनके मुख-मण्डल पर वह मुस्कान की रेखा ही थी और न वह जिह्वा में बल तथा चलतापन ही कि जो कान्ता को सम्मुख देखकर स्वाभाविक रूप से आजाती थी। उनकी मुख-मुद्रा देखकर साधारण मनोविज्ञान का पंडित भी आज यह अनुमान लगा सकता था कि इनका अवश्य कुछ न कुछ खो गया है जिसकी चिंता इनके मुख मंडल पर आने वाली प्रसन्नता की लहरों को बीच ही में विचलित कर डालती है। मुख पर प्रसन्नता का चढाव न होकर पीड़ा का उतराव था।

कॉल साहेब अपनी ही धुन में मस्त बैठे थे। न जाने क्या क्या गुनताला लगा रहे थे। चौहान साहेब के विचार से यह जो कुछ भी सोच विचार कर रहे थे वह सब उनके उस नए व्यापार की रूपरेखा थी जिसका केवल हल्का सा प्रकाश इस समय तक उनके मस्तिष्क में हुआ था और पूर्ण प्रकाश के लिए तमाम रात पलंग पर पड़े पड़े सोचना विचारना शेष था। उनके विचार से नए कार्यक्रम की रूप-रेखा बन चुकी थी और उसकी व्यवस्था के कार्यक्रम पर इस समय विचार हो रहा था।

दोनों बहूरानियाँ केक पेस्ट्रियों में उलझी हुई थीं और क्रीमरौल उन्होंने ताज़े न मानकर एक ओर रख दिए थे। पकौड़े भी ठंडे हो जाने के कारण विशेष रुचिकर नहीं प्रतीत हुए परन्तु और कई डिशें बहुत लाजवाब बनी थीं। दोनों को अपने काम से काम था, कभी कभी इधर उधर देखभर वह अवश्य लेती थीं और सभी की बातों का कुछ न कुछ उत्तर भी अवश्य दे देती थीं परन्तु उनमें किसके ऊपर क्या बीत रही थी और किस पर कैसी बन आई थी यह सब विचारने का उनके पास अवकाश नहीं था, मस्तिष्क नहीं था। दोनों ही बहूरानियों ने भगवान से कुछ ऐसा स्वतन्त्र स्वभाव पाया था कि वह दोनों हर समय अपनी ही मौजों में बहती रहती थीं। मार्ग में किसी को चोट खाया हुआ पड़ा देख एक सेकिंड के लिए कार रोक कर आपस में यह कहना वह अवश्य जानती थीं, 'देखो बेचारा कैसी चोट खा गया' परन्तु उस बेचारे को अपनी कार में डालकर इर्विन हस्पताल तक छोड़ आना उनके लिए कभी सम्भव नहीं था। यहाँ तक ही क्या, अभी-अभी कल की ही तो बात है बेचारे कॉल साहेब को अपना गला पहाड़ी नौकर से सिकवाना पड़ा था। गले से मफलर लिपटा हुआ देख कर सैर सपाटे से लौटी हुई बहूरानियों ने तो उसके विषय में कुछ पूछना भी उचित नहीं समझा। सीधी जाकर अपने अपने पलंगों को सुशोभित करती हुई निद्रा देवि की गोद में मौन हो गईं। कौन पूछता और कौन व्यर्थ की परेशानी सिर लेता।

चौहान साहेब कान्ता के पास बैठे थे और आज कान्ता की आवभगत में ही उन्होंने अपनी सम्पूर्ण कुशलता और चातुर्य का प्रयोग कर दिया था। कान्ता भी आज बहुत प्रसन्न थी और बार बार मन ही मन अपने कल वाले कार के ड्राइवर की अयोग्यता की सराहना कर रही थी कि जिसके फल स्वरूप उसकी चौहानसाहेब से भेंट हुई। चौहान साहेब वास्तव में एक ख्याति-प्राप्त योग्य व्यक्ति थे जिनके सम्पर्क में आकर जीवन का स्तर बहुत ऊँचा उठ सकता था, ऐसा कान्ता अनुभव कर रही थी। इस समय चौहान साहेब की आयु कुछ अधिक अवश्य थी परन्तु यह कोई विशेष बात नहीं। क्या जवान व्यक्ति नहीं मर जाते? कान्ता ने जीवन में वह स्वतंत्र स्वभाव पाया था कि जिसकी प्रगति में प्रतिबन्ध तो वह सहन कर ही नहीं सकती थी। अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए कान्ता ने एम०बी० बी० एस० की परीक्षा पास की थी। पहिले कुछ दिन पूर्व एक बार उसके मन का राजनीति से भी लगाव हो गया था परन्तु कोई सहयोगी या मार्ग प्रदर्शक न

मिलने से वह आकाँक्षा फलीभूत न हो सकी। कल और आज चौहान साहब के सम्पर्क में आकर कान्ता की वह दबी हुई महत्वाकाँक्षा फिर से अँकुरित होने के लिए हृदय के भीतर ही भीतर कुलमुलाने लगी। मन मयूर ने नाँचना प्रारम्भ कर दिया और कल्पनाएँ कस्तूरिया हिरन की भांति उड़ानें भरने लगीं।

"दावत पसंद नहीं आई आपको ?" दावत के अन्तिम-काल में चौहान साहेब ने मुस्कुराते हुए कान्ता से पूछा, "देहली की दावत में लखनऊ का अंदाज़ शायद आप खोज रही होंगी ?" और इतना कहते हुए चौहान साहेब ने अपने प्रश्नवाचक नेत्र कान्ता की कटीली पुतलियों से मिला दिए।

बात कुछ लजाने की थी परन्तु कान्ता आँखों की पुतलियों को अपने ही स्थान पर चार पाँच चक्कर खिलाकर मुस्कान को होटों में दबाते हुए बोली, "अब आप पहिले मुझे खूब खिला पिला कर बाद में यों बनाने के लिए उद्यत हुए हैं चौहान साहेब ! और यदि यही बात है तो मैं इस प्रकार बनने वाली नहीं। क्योंकि आज की दावत में जहाँ बहुत सी रंगीनियाँ हैं वहाँ कुछ न कुछ रूखापन भी है।" और इतना कह कर कान्ता धीरे से मुस्कुरा दी।

"रूखापन !" आश्चर्य चकित होकर चौहान साहेब ने पूछा, "वह किस प्रकार कान्ता देवि ?" और उन्होंने समझा कि हो न हो पकौड़ों में रसोइया नमक डालना भूल ही गया है परन्तु जो पकौड़ा उन्होंने खाया था उसमें तो नमक था। गुलाब जामुनों में भी रूखेपन का प्रश्न नहीं उठता। रूखा तो यहाँ कुछ है नहीं परन्तु कान्ता की बात भी सार रहित नहीं हो सकती।

"जी हाँ रूखापन चौहान साहेब ! दावतें खाली प्लेट साफ़ करने के लिए ही नहीं होतीं। देखिए न ! हमारी दोनों जीजियाँ किस प्रकार निर्दयता से प्लेटों के साथ झगड़ रही हैं। साथ ही सेठ जो का मुँह आज ऐसा लटका हुआ है कि मानो अभी अभी टेलीफोन पर कुछ घाटे का सौदा काट कर आए हैं। तथा हमारे जीजा जी, उनकी तो कुछ पूछो ही नहीं; वह तो ऐसा मालूम होता है कि किसी लिमिटेड कम्पनी के कागज़ात ऑडिट करने के लिए अपने मस्तिष्क में बटोर लाए हैं। देखिए न कितनी फुर्ती के साथ कठपुतली के नृत्य की भांति आपकी उँगलियों की रेखाओं पर आपके अंगूठे का नाखून नाच रहा है। दावत का रूखापन केवल बेचारे उन दोनों महानुभावों में नहीं था सो वह पहिले ही विदा होकर चले गए।"सरलता पूर्वक कान्ता ने मुस्कुराते हुए नयनों से मादकता बिखराकर कहा।

कान्ता की यह व्याख्या सुन कर चौहान साहेब तनिक मुस्कुरा दिए परन्तु अन्य किसी को मुस्कुराहट नहीं आई। दोनों बहूरानियों और कॉल साहेब के पास तो इसे सुनने के लिए अवकाश ही नहीं था और सेठ भानामल जी ने उसे सुनकर भी अनसुना कर दिया। यह वही कान्ता थी और यह कान्ता के वही मधुर व्यंग्य-पूर्ण वाक्य थे जिन्हें सुनकर भानामल जी वाह वाह की रट लगा कर लोट पोट हो जाया करते थे और प्रशंसा की झड़ी लगा देते थे परन्तु आज यह उनके लिए वास्तव में सब कुछ नीरस था, सारहीन। रस के स्थान पर एक प्रकार की जलन सी इन वाक्यों से उनके हृदय में संचरित हो रही थी और शब्दों के कोमल होने पर भी उन्होंने उनमें तीखेपन का अनुभव किया।

दूसरे दिन संध्या के समाचार पत्रों में दिल्ली निवासियों ने पढ़ लिया कि चौहान साहेब ने पचास वर्ष की आयु तक बाल ब्रह्मचारी रहने के पश्चात आज इक्कीस वर्षीय कन्या डा० कान्ता से विवाह कर लिया। चौहान साहेब ने भारत स्वतन्त्र होने तक विवाह न करने का प्रण किया था। यह बात वह भारत स्वतन्त्र होने के पश्चात से अपनी मित्र-मण्डली में बैठकर कहने लगे थे। जब भगवान ने उन्हें वह दिन दिखलाया कि भारत स्वतन्त्र हो गया तो भगवान भला उन्हें सेहरा बाँध कर घोड़ी पर चढ़ने और नव वधू लाने का ऐतिहासिक दिन क्यों न दिखलाता? स्वतन्त्र भारत में स्वतन्त्र पत्नी पाकर स्वतन्त्र चौहान साहेब आज बहुत ही प्रसन्न थे।

यह विवाह कॉल साहेब ने स्वयँ अपनी देख रेख में सम्पन्न कराया था। उपस्थित सेठ जी भी अवश्य थे उस समय परन्तु उनकी दृष्टि कान्ता से नहीं मिल रही थी। सेठ जी की दृष्टि में बात कान्ता की ओर से गलत हो रही थी परन्तु लज्जा न जाने क्यों सेठ जी को आ जाती थी। इस समय चौहान साहेब ने जो कुछ भी किया वह उन्हें करना नहीं चाहिए था क्योंकि सेठ जी की दृष्टि में इस प्रकार का कार्य मित्रों के बीच विश्वासघात ही कहलाता है। चौहान साहेब के इस विश्वासघात को सेठ जी शर्बत के घूँट की तरह पीकर एकाँत में उनसे मुस्कुराते हुए बोले, "चौहान साहेब! शेर नहीं रहे, गीदड़ बन गए।"

"सो किस तरह सेठ जी!" मुस्कुरा कर चौहान साहेब ने पूछा।

"सो इस तरह कि शेर दूसरों का मारा हुआ शिकार नहीं खाता" इस समय इतना कह कर सेठ जी ने अभिमान के साथ अपने सफ़ाचट मुँह और

घड़े जैसे पेट पर हाथ फेरा और एक बार अपने मोटे मोटे नथनों को फुला कर उनसे साँप जैसी फुँकार छोड़नी प्रारम्भ कर दी।

एक क्षण के लिए यह बात सुन कर चौहान साहेब को भी अपने ऊपर ग्लानि सी हुई और कुछ लज्जा भी अवश्य आई कि वास्तव में दूसरे के मारे हुए शिकार पर हाथ डालना उन जैसे भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम के विजयी योद्धा, वह योद्धा जिसने सन् बयालिस में अँगरेज़ी टॉमी गन्स के सामने बेधड़क सीना खोल दिया था, के लिए अपमानजनक था परन्तु तुरन्त ही कान्ता के मुख मंडल की यौवनपूर्ण शोभा ने उनके इस विचार को काफ़ूर कर दिया और चौहान साहेब सीना उभार कर गर्व के साथ बोले, "सेठ जी! मैं राजनीति का खिलाड़ी हूँ। आपकी यह लोमड़ी वाली चालें मेरे पंजों से शिकार को छुड़ा कर नहीं लेजा सकतीं, यह चौहान-शेर का पंजा है साधारणतया ढीला होने वाला नहीं।" और सेठ भानामल जी भी समझ गए कि वास्तव में चौहान का हाथ पूरा पड़ चुका है, अब उसके ढीला होने की कोई सम्भावना नहीं रही। भानामल जी ऊपर से चौहान साहेब को उनके शुभ विवाह पर शुभ कामनाएँ देने का प्रयास करते हुए भी मुख से एक शब्द उच्चारण न कर सके।

कॉल साहेब को कोई खेद का कारण इसलिए नहीं रहा था कि वह तो कल संध्या से ही यह धारणा निश्चित रूप से बना चुके थे कि कान्ता का विवाह उनके साथ होने वाला नहीं। उनकी सास इसके विरुद्ध थीं, फिर उनकी दोनों बहूरानियाँ भी उन्हें सहायता देने में असमर्थता प्रकट कर चुकी थीं और इन सब से प्रधान कारण यह था कि इस समय कान्ता स्वयँ इसके पक्ष में नहीं थी। केवल इसीलिए कल रात्रि को कान्ता से घंटों एकाँत में बातें करते रहने पर भी कॉल साहेब ने अपनी ओर से कोई इस प्रकार का प्रस्ताव सामने नहीं रखा, बल्कि चौहान साहेब की प्रशंसा स्वरूप कान्ता के हृदय में बहने वाली सरस प्रेम-धारा को उन्होंने और प्रश्रय ही दिया। कान्ता के सम्मुख उन्होंने चौहान साहेब की सरसता और योग्यता के पुल बाँध दिए। अभी कल जब से चौहान साहेब ने कॉल साहेब को अपना स्वतंत्र व्यापार करने और सेठ भानामल जी की गुलामी छोड़ कर स्वयँ सेठ बन जाने की राय दी थी तब से उन्हें उनके अन्दर विशेष आत्मीयता के दर्शन होने लगे थे। चौहान साहेब ने कॉल साहेब को उनके कार्य में पूर्ण सह-योग देने का आश्वासन दिया था और कॉल साहेब भी पीछे यह देख चुके थे कि

उन दिनों चौहान साहेब के संकेत मात्र पर सेठ भानामल जी कितना लाभ उठा रहे थे। कॉल साहेब ने कान्ता से जो चौहान साहेब अपनी प्रशंसा में स्वयँ नहीं कह सकते थे उसकी पूर्ति उसमें और चार चाँद लगा कर कर दी और चौहान साहेब कान्ता की कल्पना के इष्ट देव बन बैठे।

सेठ भानामल जी गत कई दिन से कॉल साहेब की प्रत्येक बात को चौहान साहेब की बात से ऊपर स्थान देते जा रहे थे, उसमें भी कुछ रहस्य था, परन्तु उन्हें यह पता नहीं था कि यह इस प्रकार 'चट्ट रोटी और पट्ट दाल' बन कर मामला समाप्त हो जाएगा। कॉल साहेब ने कान्ता के सम्मुख सेठ जी की प्रशंसा न करके चौहान साहेब की प्रशंसा की होगी इसका तो उन्हें स्वप्न में भी भ्रम नहीं हो सकता था। सेठ भानामल जी को यह ध्यान तो अवश्य था कि कॉल साहेब स्वयँ कान्ता से विवाह करना चाहते हैं परन्तु परसों जब वह कान्ता के मुख से उसका अंतिम निर्णय यह सुन चुके थे कि वह कॉल साहेब से विवाह नहीं करेगी तो उन्होंने अपने लिए मैदान साफ़ समझ लिया था।

सेठ भानामल जी की शकल इस योग्य नहीं थी कि कोई युवती उनसे विवाह करना पसंद करे परन्तु उनके धन में यह आकर्षण अवश्य था कि युवतियाँ उनके आकार की ओर से नेत्र बन्द करके उनपर रीझ उठती थीं। सेठ भानामल जी को विवाह करने की वास्तव में एक बीमारी थी जिसने उनके मन और हृदय पर अपना अधिकार कर लिया था। लाख प्रयत्न करने पर भी वह इससे मुक्त नहीं हो सकते थे और उनकी इस बीमारी के कीटाणु साधारणतया उस युवती पर प्रभाव कर ही जाते थे जिसे वह प्राप्त करने का प्रयत्न करते थे परन्तु कान्ता उनके इस साधारण नियम में एक आपत्ति (Exception) स्वरूप उनके सामने आई।

परसों रात्रि को कॉल साहेब ने उनके हाथ में हाथ मारकर कहा था, "कोई कारण नहीं जो कान्ता आपको न वरे। मैंने एकाँत में भी उससे बातें की हैं और उसका रुझान भी आपकी ही ओर है। आपकी ओर उसका रुझान देखकर ही तो मैंने अपना विचार बदल दिया।"

"तुमने तो सर्वदा ही मेरे कार्य में सहयोग दिया है कॉल साहेब! यह सब कोठी, बँगले, मिलें, कारखाने, बैंक सब तुम्हारे ही तो सहयोग के फल स्वरूप प्राप्त हुए।" कॉल साहेब को फुलाते हुए सेठ जी ने कहा।

"मुझ से जो कुछ भी सेठ जी की सेवा में बन पड़ेगा वह मैं जीवन भर करता ही रहूँगा।" सेठ भानामल जी के शब्दों से फूल कर कॉल साहेब बोले और चलते समय पूर्ण आश्वासन देकर वह कोठी से आए थे।

पर आज तो सारा रंग ही बदल गया। चौहान साहेब यों बीच में पड़ कर सेठ भानामल जी की लक्षित चिड़िया को ले उड़े और कान्ता ने भी सेठ जी को ऐसे भुला दिया कि मानो पहिचानती ही नहीं थी।

सेठ भानामल जी का मन आज बहुत ही भारी हो उठा था। अच्छा यही हुआ कि उन्हें कॉल साहेब के विश्वासघात की सूचना न मिली नहीं तो आज उनका दिल चकनाचूर हो जाता और उन्हें उनकी कोठी तक पहुँचाने के लिए भी चौहान साहेब को जाना होता।

: १४ :

आज मिल यूनियन की बैठक में कॉमरेड अशफ़ाक का प्रस्ताव कॉमरेड विमला की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से पास हो गया। मिल-मालिकों को मिल-कर्मचारियों की मांगें पूरी करने और अपने आश्वासनों को कार्य रूप में परिणित करने के लिए मिल-यूनियन की गत बैठक में एक मास की अवधि विचारार्थ दी गई थी। वह अवधि कल समाप्त हो चुकी थी और मालिकों के कानों पर एक जूँ तक नहीं रेंगा। कर्मचारियों के धैर्य का बाँध टूट चुका था और वह अब और अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकते थे। कल से मिल में हड़ताल प्रारम्भ हो जाएगी यह सर्व सम्मति से निश्चय हो गया। इस बार जो हड़ताल प्रारम्भ होगी उसका अन्त कोरे मिल मालिकों के आश्वासन मात्र ही नहीं कर सकेंगे। जिस समय तक मिल मालिक अपनी की गई भूलों और चालाकियों की क्षमा माँग कर कर्मचारियों के साथ सचाई और मानवता का व्यवहार, ज़बानी नहीं कार्य रूप में, नहीं करेंगे उस समय तक एक भी कर्मचारी काम पर नहीं जाएगा। कर्मचारियों ने आज दृढ़ संकल्प के साथ यह निश्चय किया और प्रण किया कि इस बार वह अपने प्राणों को कर्तव्य की वेदी पर न्यौछावर कर देंगे। उनकी यह हड़ताल केवल उनकी माँगों की पूर्ति भर को लक्ष करके नहीं होगी वरन् कर्मचारी-वर्ग के मान की कसौटी मान कर इस हड़ताल को फलीभूत किया जाएगा। मिल

यूनियन के सभी सदस्यों ने एक स्वर होकर प्रस्ताव का समर्थन किया और सभा का वातावरण एक दम बहुत गम्भीर हो उठा।

कॉमरेड विमला ने सब के बीच में खड़े होकर गम्भीर ध्वनि से ओजस्विनी भाषा में कहा "डीयर कॉमरेड्ज़ ! किसी कार्य को प्रारम्भ करना एक खिलवाड़ होता है परन्तु उसे निभाना और फल-प्राप्ति तक सफलता पूर्वक पहुँचा देना ही आदर्शों की सफलता है। फल प्राप्त करना अथवा उसके लिए मर मिट जाना जीवन की महानता है, कर्तव्य की पूर्णता है। हड़ताल प्रारम्भ करने से पूर्व एक बार आप फिर उसके परिणामों पर एक दृष्टि डाल लें, पूर्ण रूप से विचार कर लें। मार्ग में अनेकों बाधाएँ आयेंगी, कठिनाइयाँ आयेंगी, संकट आयेंगे, प्रलोभन दिए जायेंगे—उन सभी के सम्मुख तुम्हें अडिग रहना होगा। आप लोग आग से खेलने जा रहे हैं, तपस्या की कसौटी पर अपने आदर्शों को कसने जा रहे हैं इसलिए जाने से पूर्व एक बार स्थिर विचार धारा के साथ दृढ़-संकल्प होकर निश्चय करो कि क्या तुम वास्तव में हड़ताल को कठिनाइयाँ सहन कर सकोगे ? क्या तुम मार्ग में आने वाले प्रलोभनों को ठुकरा सकोगे ? क्या तुम कठिन से कठिन आपत्ति में भी मुस्कुरा सकोगे ? क्या तुम अपने प्रिय से प्रिय जनों को अपनी आँखों के सम्मुख भूख से तड़पते हुए देख कर भी स्थिर रह सकोगे ? परिस्थितियों की गम्भीरता तुम्हें मिल-मालिकों के सम्मुख गिड़गिड़ाने के लिए तो बाध्य नहीं कर देगी ? याद रखो कि एक बार पैर आगे बढ़ाकर फिर पीछे नहीं हटेगा।

"नहीं हटेगा।" यूनियन के सदस्यों ने एक स्वर में कहा। उनके स्वर में गम्भीर घन-गर्जन का बल था और विद्युत की ज्वाला।

"तब हड़ताल सफल होगी और निश्चित रूप से सफल होगी।" दृढ़ विश्वास के साथ कॉमरेड विमला बोली और सब ने एक स्वर में कहा, "मज़दूरों की माँगें अमर हों, मज़दूरों के संकल्प दृढ़ हों, मज़दूरों की आशायें फलीभूत हों।" मज़दूरों के शब्दों से वायुमंडल आच्छादित हो गया।

दूसरे दिन मिल से एक-एक फ़र्लांग की दूरी पर मिल-यूनियन के प्रधान कर्मचारियों ने मिल में आने के सब मार्ग चारों ओर से रोक दिए और मिल में पूर्ण रूप से हड़ताल हो गई। सेठ जी तथा कॉल साहिब की कारों को किसी ने मिल में जाने से नहीं रोका। कॉमरेड बैनर्जी ने कुछ कर्मचारियों को फुसला कर मिल में ले जाने का प्रयत्न भी किया परन्तु कॉमरेड अशफ़ाक के जाँबाज़

कार्यकर्त्ताओं ने उनमें से अधिकाँश कर्मचारियों को जाने से रोक दिया। कॉमरेड बैनर्जी के साथ केवल दस कर्मचारी मिल में प्रवेश कर पाए और उन दस की भी दृष्टि पृथ्वी से समतल होकर चल रही थी। उनमें साहस नहीं था कि वह अपने साथी मज़दूरों के साथ दृष्टि मिलाकर आँखें चार कर पाते। उनके हृदय उन्हें स्वयं धिक्कार रहे थे और मन ग्लानि से भरकर उनके मस्तक ऊँचे करने का साहस उन्हें प्रदान नहीं कर पाते थे।

कॉल साहिब ने कल संध्या को मिल-यूनियन का निश्चय मालूम हो जाने पर कॉमरेड बैनर्जी को अपनी कोठी पर बुलाया था और किसी भी मूल्य पर कर्मचारियों को काम पर लाने के लिए कहा था। कल प्रथम बार कॉल साहिब ने कॉमरेड बैनर्जी को अपने साथ मेज़ पर बिठलाकर जानीवाकर की बोतल खुलवाई थी और एक मज़दूर के गिलास से अपने को मज़दूर कहते हुए गिलास मिलाकर मित्रता का दम भरा था। जो आश्वासन आज कॉल साहेब ने कॉमरेड बैनर्जी को दिए वह गुप्त थे। कॉमरेड बैनर्जी ने कॉमरेड अशफ़ाक और कॉमरेड विमला की संचालित हड़ताल को छिन्न-भिन्न कर डालने की शपथ लेकर एक हल्का-सा घूंट भरते हुए गिलास को मेज़ पर टिका दिया और फिर अपने नाटे क़द में कार्य की महानता को स्थापित करते हुए गर्व के साथ सीना उभार कर मस्तक ऊपर को कर लिया।

कॉमरेड बैनर्जी अपने अपमान की जलन को हृदय में लिए हुए इस अवसर की एक मास से प्रतीक्षा कर रहा था और आज अवसर पाते ही उसके हृदय की दबी हुई ज्वाला कॉल साहिब के आश्वासनों के झोंके से एक दम दहक उठी। बैनर्जी ने शहर में एक पोस्टर लगवाया जिसमें लिखा था:—

"सेठ क्लाथ मिल्ज़ के कर्मचारियो !

आज एक मास पश्चात् मुझे आपसे नम्र निवेदन करने का अवसर मिला है। आपको याद होगा कि आज से ठीक एक मास पूर्व मैंने मिल-मालिकों द्वारा उनके आश्वासनों के पूरा न करने पर हड़ताल की घोषड़ा की थी। उस समय मिल यूनियन के कुछ प्रमुख कर्मचारियों द्वारा मेरा विरोध किया गया और मज़दूरों के मान अपमान को भुलाकर मेरी संचालित हड़ताल को छिन्न-भिन्न कर डाला गया।

आप जानते हैं क्यों ?

मिल के कर्मचारियों को मिल-यूनियन के नाम पर धोखा दे देकर कॉमरेड विमला और कॉमरेड अशफ़ाक अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए नचाना चाहते थे। उस समय इन स्वार्थी लोगों की मिल मालिकों से कुछ सुलह की बातचीत चल रही थी। यह लोग अपने स्वार्थों पर मिल कर्मचारियों के सब हितों को बलिदान करने पर तुले हुए बैठे थे। परन्तु कल मिल मालिकों ने जब उनकी माँगों को ठुकरा दिया और उनके गुप्त स्वार्थों की पूर्ति में उनका साथ नहीं दिया तब उन स्वार्थी लोगों ने यह हड़ताल की घोषणा की है।

इस प्रकार यह हड़ताल मिल-कर्मचारियों के हितों की सुरक्षा के लिए न होकर कॉमरेड अशफ़ाक और कॉमरेड विमला के स्वार्थों की पूर्ति के लिए हो रही है। आज मैं आशा करता हूँ कि मिल के कर्मचारी इन स्वार्थी व्यक्तियों के धोखे में नहीं फँसेंगे और नियमित रूप से अपने-अपने काम पर जाकर इस बेरोज़गारी के युग में अपने बाल-बच्चों और परिवारों के हितों की अवहेलना व्यर्थ की भावुकता में फँसकर की नहीं करेंगे।"

कॉमरेड बैनर्जी का यह पहिला पोस्टर था जिसका कोई उत्तर देना कॉमरेड अशफ़ाक और कॉमरेड विमला जैसे ठोस मिल-कार्यकर्त्ताओं ने मूर्खता समझा। कॉमरेड विमला और कॉमरेड अशफ़ाक दोनों ही मिल कर्मचारियों के निस्वार्थ कार्य-कर्त्ता थे, जिनका व्यक्तिगत स्वार्थ क्या कुछ था इसे मिल के सभी कर्मचारी भली प्रकार जानते और समझते थे। कॉमरेड विमला का मकान यूनियन का दफ्तर था। कॉमरेड विमला की समस्त आय मिल-यूनियन के संचालन में व्यय होती थी। कॉमरेड अशफ़ाक ने भी आजकल अपना सर्वस्व इसी मिल-यूनियन पर न्यौछावर कर दिया था और उसके मस्तिष्क में दिन के चौबीस घंटे मिल-यूनियन ही मिल-यूनियन चक्कर लगाती रहती थी। उसका जीवन मिल-यूनियन मय हो चुका था और यूनियन उसका जीवन बन चुकी थी।

दूसरे दिन हड़ताल के विपक्ष में कॉमरेड बैनर्जी का दूसरा पोस्टर लगा जिसमें राष्ट्र के हितों का बखान करते हुए हड़ताल की निंदा की गई थी और उसके साथ ही कॉमरेड अशफ़ाक तथा विमला की संकीर्ण स्वार्थप्रिय-मनोवृत्तियों पर भी टीका-टिप्पणी की गई थी। हड़ताल तोड़ने के इस पोस्टर पर चौहान साहेब तथा कुछ अन्य कांग्रेसी सदस्यों के भी हस्ताक्षर छपे थे जिन्होंने मज़-

दूरों से देश के नाम पर जनता की ओर से काम पर आने के लिए एक अपील की थी और मिल का कार्य सुचारु रूप से चलने लगने पर उनकी माँगों के ऊपर पुन: विचार करने का आश्वासन दिया था।

मिल की हड़ताल पर इन पोस्टरों का कोई प्रभाव नहीं हुआ। हड़ताल के ठोस कार्यकर्त्ता अपने कार्य पर दत्त चित्तता से जुटे हुए थे और उन्होंने निर्णय कर लिया था कि अब वह मिल मालिकों के सामने किसी भी प्रकार झुकने वाले नहीं। कॉमरेड विमला ने हड़ताल प्रारम्भ करने का यह अवसर बहुत अच्छा खोज कर निकाला था क्योंकि अभी दो ही दिन पूर्व भारतीय सरकार ने पाकिस्तान के साथ सन्धि करके उसे कुछ कपड़ा देने का निश्चय किया था और उसी के फल स्वरूप 'सेठ क्लाथ मिल्ज़' को भी सरकारी ऑर्डर के अनुसार माल देने का कार्य मिला था। कल से ही मिल में तीन शिफ़्टों में कार्य प्रारम्भ होना था और कल से ही मिल में हड़ताल प्रारम्भ हो गई।

हड़ताल का प्रत्येक आने वाला दिन बीते दिन से अधिक सुदृढ़ होता जा रहा था। कार्यकर्त्ताओं में उमंग थी, विश्वास था और कॉमरेड विमला जैसी पथ-निर्देशिका को पाकर तो उनका उत्साह दिन प्रतिदिन और भी बढ़ता जा रहा था। कॉमरेड विमला ने आज संध्या को गाँधी ग्राउन्ड में मिल-कर्मचारियों की एक सभा बुलाई। सभा में घोषणा की कि मिल कर्मचारियों को चाहिए कि वह अपने परिवारों को अपने-अपने देहात में भेज दें और इस प्रकार अपना भार हल्का करके पूँजीवाद से टक्कर लेने और गम्भीर परिस्थितियों का सामना करने के लिए उद्यत हो जाएँ। कर्मचारियों ने कॉमरेड विमला के सुझाव का समर्थन किया और दूसरे दिन देखते ही देखते मिल कर्मचारियों की कोठियों पर ताले लग गए। कल जहाँ बच्चों और स्त्रियों की चहल पहल थी वहाँ आज कुछ छड़े मिल-मज़दूर अपनी अपनी खटिया बिछाए बैठे थे और आपस में इस प्रकार बातें चलरही थीं:—

"दादा तुम कॉमरेड अशफ़ाक को नहीं जानते।" एक ने कहा।

"मैं क्यों नहीं जानता? जी जान पर खेल जाने वाला वही तो हमारे कर्मचारी-वर्ग की नाक है। कॉमरेड अशफ़ाक को देखकर वह कॉल बाबू का बच्चा भीगी बिल्ली की तरह एक ओर को आँख बचा कर खिसक जाता है।" इतना कहकर दादा ने गर्व के साथ अपनी मूँछों के सुफ़ैद बालों पर ताव दिया।

और आस पास बैठे हुए कर्मचारी सब खिलखिला कर हँस पड़े। सबने एक स्वर में तालियाँ बजाईं और आर्थिक कठिनाइयों के होते हुए भी वहाँ एकबार आनन्द का वातावरण छा गया।

"परन्तु दादा यह बैनर्जी का बच्चा बहुत बदमाश निकला। मालूम होता है इस पर कॉल साहेब ने अपना जादू का हाथ फेर दिया है।" तीसरे कर्मचारी ने खटिया पर से खड़े होकर सामने आते हुए कहा।

"और नहीं तो क्या? कल मुझी को सौ रुपए दिखला रहा था। कहता था सौ रुपए ले लो और चलकर अपनी मशीन चालू कर दो।" एक बूढ़ा कारीगर आँखें लाल पीली करते हुए बोला।

"फिर तुमने क्या उत्तर दिया उस पाजी को?" बूढ़े दादा ने आँखें चढ़ा कर पूछा।

"मैंने कहा—बदमाश! तू ही कर्मचारी-वर्ग का द्रोही है। हट जा मेरी आँखों के सामने से वरना सीने पर लात मार कर कोठरी से बाहर निकाल दूँगा। यह सौ रुपए दिखलाकर तू मुझे ज़लील करने के लिए आया है। मेरी आत्मा का सौदा करने चला है। तुझ जैसे कुत्तों के प्रलोभनों पर हम हड़ताल नहीं तोड़ सकते।" यह सुनकर जितने भी कर्मचारी वहाँ बैठे थे सभी क्रोध में भर कर अपने दाँत किट किटा कर हथेलियाँ मलने लगे।

"मार नहीं दी लात तुमने दादा! उस पाजी के सीने पर। कम से कम मुझे ही बुला लेते उस समय। मैं आ गया होता तो उस की सारी हड्डी पसलियाँ तोड़ कर रख देता।" उस नौजवान कर्मचारी के नेत्रों के डोरे इससमय लाल हो रहे थे और क्रोध से तमाम बदन थर-थर काँप रहा था। हृदय के भाव उसके मुख पर छा गए थे और होंठ बार-बार फड़क कर रह जाते थे।

आजकल कॉमरेड बैनर्जी को लेने के लिए कॉल साहेब की कार उसके घर पर आती थी और जब कहीं उसे जाना होता था तो संगीनी पहरे के अन्दर ही वह जाता था। एक मिल-कर्मचारी से बातें करने के लिए जाते समय भी उसे दो राइफ़ल वाले संतरी साथ लेकर जाना होता था और वह संतरी सेठ भानामल जी ने चौबीस घंटे के लिए उसे दे दिए थे।

कॉमरेड अशफ़ाक मस्त हाथी की तरह झूमता हुआ मिल-द्वार के सामने से दिन में दो-तीन बार निकल जाता था। गर्व के साथ सन्नाटे से आच्छादित

मिल और उसके सुनसान वातावरण पर मूँछों को पैनाते हुए अभिमान के साथ उसकी दृष्टि जाती तो हृदय अपनी विजय पर उमंगों में भरकर खिल उठता था और मन मयूर नाचने लगता था। जिस मिल में चंद दिन पूर्व हज़ारों कर्मचारियों की चहल-पहल से जीवन का आभास मिलता था वहाँ आज ऐसा प्रतीत होता था कि मानो यह मिल एक बड़ा भारी शमशान है कब्रिस्तान है और उस में मुँह लटकाए मिस्टर कॉल तथा सेठ भानामल जी घूम रहे हैं। आज सेठ भानामल और कॉल साहेब की आकाँक्षाओं के शव को कंधा देने के लिए भी चार व्यक्ति उपलब्ध नहीं हो रहे थे। कॉमरेड अशफाक की भुजाएँ अपने पराक्रम पर फड़क उठीं और वह गर्व के साथ बन्द पड़े मिल के द्वार पर दृष्टि डालते हुए अपने मन से बोला—'सेठ भानामल और कॉल साहेब! देखी तुमने मज़दूर की शक्ति। तुम मृतक के समान हो और मज़दूर तुम्हें जीवन प्रदान करता है। तुमने आज तक वैज्ञानिक आविष्कारों के बल से कर्मचारी पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न किया है परन्तु सफलता न मिल सकी। तुम्हारा विज्ञान भी मानव-चेतना से शून्य है। उसे भी संचालित करने के लिए कर्मचारी की आवश्यकता रहेगी और इस आवश्यकता को समाप्त कर देना तुम्हारे वश में नहीं। शक्ति का केन्द्र कर्मचारी है और इसलिए तुम्हें झुक जाना होगा कर्मचारी के चरणों पर।' इतना कहकर कॉमरेड अशफ़ाक मिल-द्वार से आगे निकल जाता था। उसका हृदय उत्साह से पूर्ण था, उसके मस्तक पर विजय की आशा थी, उसके जीवन में कर्तव्य की ज्वाला थी।

कॉल साहेब और सेठ भानामल जी कॉमरेड अशफ़ाक को बड़ी ही भेदपूर्ण दृष्टि से ताकते थे और जी चाहता था कि उसे कच्चा ही चबा जायें परन्तु उसके विशाल वक्षस्थल और लम्बी-लम्बी भुजाओं के बल पराक्रम के सामने उनका साहस विलुप्त हो जाता था। कॉल साहेब के पास कुछ शहर के छँटे हुए गुन्डे भी थे। उनका प्रयोग वह पहिले अनेकों बार अपने कार्य की सिद्धि के लिए कर चुके थे और उन्हें उसमें पूर्ण सफलता मिली थी। सन् १९३१ के कांग्रेस आन्दोलन के समय जब आंदोलन से सहानुभूति प्रकट करने के लिए मज़दूरों ने हड़ताल की थी तो कॉल साहेब ने कांग्रेस से सहानुभूति रखने वाले मज़दूर नेताओं को सरेआम पिटवाकर सीधा कर दिया था। इसी प्रकार सन् १९३६ और सन् १९४२ के आँदोलनों में भी हुड़दंगेबाज़ी मचाने वाली मनोवृत्ति के

कर्मचारियों को कॉल साहेब ने अपने इन्हीं पले हुए गुन्डों के सुपुर्द कर दिया था। झुकना कॉल साहेब ने सीखा ही नहीं था। पुलिस तथा दिल्ली प्राँत के अन्य अफसर कॉल साहेब के संकेतों पर नाचते थे। परन्तु कॉमरेड अशफ़ाक पर हाथ छोड़ते हुए कॉल साहेब और उनके गुन्डे थर्राते थे। गुन्डों ने दाँत के नीचे उँगली दाबकर कॉल साहेब को कोरा जवाब दे दिया था और कह दिया था, 'कॉमरेड अशफ़ाक पर हाथ छोड़ना अपने बूते की बात नहीं।' कॉल साहेब ने कुछ हिंदू गुन्डों को भी उकसाने का प्रयत्न किया परन्तु सफलता न मिली और अन्त में उन्हें लाचार होकर इस दिशा में विचारना बन्द कर देना पड़ा।

कॉमरेड अशफ़ाक का गुप्तचर-विभाग इतना व्यवस्थित था कि कॉल साहेब और सेठ भानामल जी की हर प्रकार की कार्यवाही की सूचना उसके पास पहुँच जाती थी और वह रत्ती-रत्ती सूचना को लेकर कॉमरेड विमला के पास पहुँच जाता था। कॉमरेड विमला ने हड़ताल का संचालन इतने सुचारू रूप से किया था कि कहीं पर भी कोई उपद्रव खड़ा नहीं हुआ और जहाँ कहीं भी उपद्रव की सम्भावना प्रतीत हुई वहाँ स्वयँ अवसर से पूर्व पहुँच कर उसका उचित रूप से निपटारा कर दिया। इस हड़ताल के अवसर पर कॉल साहेब ने कई बार पुलिस को बीच में लाने का भी प्रयास किया परन्तु कॉमरेड विमला के चातुर्य के सामने उन्हें मुँह की खानी पड़ी और उन्हें उनके उद्देश्य की पूर्ति में सफलता न मिल सकी। बेचारों को लाचार होकर चुप रह जाना पड़ा।

सरकारी आर्डर के सप्लाई करने में एक दिन एक सप्ताह के बराबर कटता जा रहा था और नित्य नए-नए सरकारी रिमाइन्डरों ने कॉल साहेब तथा सेठ भानामल जी को बुरी तरह से विचलित कर दिया था। दोनों का मस्तिष्क परेशान था कि आख़िर क्या किया जाए? यदि कर्मचारी वर्ग की माँगों के सम्मुख झुक गए तो यह लोग सिर पर पैर रखना प्रारम्भ कर देंगे और फिर आगे के लिए प्रत्येक कठिन अवसर पर अकड़ जाने को इनका मार्ग खुल जाएगा। कर्मचारी वर्ग में बल और उनके अपने अन्दर निर्बलता आ जाएगी।

इन्हीं विचारों में बैठे-बैठे कॉल साहेब और सेठ जी को सुबह से शाम हो जाती थी। आज सेठ भानामल जी कुछ अधिक परेशान थे। संध्या तक जब कोई उपाय न बन पड़ा तो वह कॉल साहेब से बोले, "इस बार बाज़ी फिर विमला के ही हाथ जाती दिखलाई देती है कॉल बाबू।"

"जी हाँ, आप लट्टू जो हैं विमला पर।" एकाँत में सेठ भानामल जी पर झुँझलाते हुए कॉल साहब बोले। "पहिले किसी को उठाकर सिर पर अपने आप चढ़ा लेते हैं और जब वह सिर नोंचने लगता है तब कहते हैं--'कॉल बाबू! इस बला को मेरे सिर से उतारकर जमीन पर पटखो।'--एक अजीब तमाशा बनाया हुआ है आपने।--अब अपने इस गोरखधंधे को आप ही सम्भालिए। कॉल बाबू बेचारा क्या करे? अंगरेजी डाइङ्ग मास्टर बुला लेते तो सब पाप कट जाता। पहिले आस्तीन में साँप पालते हैं, उसे दूध पिलाते हैं और जब वह पलकर काटने को दौड़ता है तो कहते हैं, 'कॉल बाबू इसे मारो।' कॉल बाबू तो जीवन भर तुम्हारे ही लिए दुनियाँ से झंझट खरीदता रहेगा। यही चाहते हैं न आप कि आप तो भले ही बने रहें और बुरा बनने के लिए आपने कॉल बाब को पाला हुआ है। बंदर की बलाएँ नित्य तबेले के गले मँढ़ी जाती रहें।" और इतना कहकर परेशानी में दो-चार बार दफ्तर में इधर-उधर घूमकर कॉल साहब कुर्सी पर जम कर बैठ गए।

"काल साहब आज आपके धीरज ने आपसे अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया प्रतीत होता है।" गम्भीरतापूर्वक सेठ भानामल जी बोले। "परन्तु इस प्रकार खिसियाने से काम नहीं चलता। यह तो चालें हैं अर्थ-नीति की। आपने पासा फेंका और विमला ने उसे काट दिया। आपके जादू ने असर नहीं किया कॉमरेड विमला पर। मेरे विमला पर लट्टू होने का तो तुम्हारी कार्य-कुशलता से कोई सम्बन्ध ही नहीं। मैं समझता हूँ कि यदि इतनी सुविधाएँ जितनी तुम्हें दी हुई हैं उतनी किसी......"

"गधे को भी दे दी जाएँ तो वह भी मुझ से अधिक सफल हो सकता है। यही कहना चाहते हैं न आप। लीजिए मैंने आपका वाक्य पूरा कर दिया और अब आप आज से यह सुविधाएँ किसी गधे को ही दे डालिए।" बस इतना कहकर कॉल साहब ने मन में सोचा कि वास्तव में इस सेठ गधे को गधों की ही आवश्यकता है। यह मनुष्य और वह भी 'कॉल' जैसे हीरे-मनुष्य का मूल्यॉकन नहीं कर सकता। कॉल साहब एक अकड़ के साथ खड़े हो गए और उन्हें तुरन्त अपने उस मिल का स्मरण हो आया जिसका ढाँचा उन्होंने रात्रि को तय्यार किया था। चौहान साहब से ऐग्रीमेन्ट हुआ और मिल चला। अब क्या जीवन भर इस गधे की नौकरी ही करते रहेंगे। कल से सूट पहिनना छोड़कर शेरवानी

और बस फिर सेट बने बनाए हैं। हमारी सिटाई में क्या कमी है? जो काम सेठ नहीं कर सकते वह हम कर सकते हैं। हम सेठ बना और बिगाड़ सकते हैं। हम स्वयं सेठ बन सकते हैं।

सेठ भानामल जी ने मुस्कुराते हुए कॉल साहेब को हाथ पकड़ कर बिठलाया और फिर नर्मी के साथ बोले, "कॉल साहेब इस प्रकार भाग खड़े होने से पीछा नहीं छूट जाता। आपको तो जीवन भर हमारे ही साथ नाड़े से साड़ा घिसना है।"

"जी नहीं।" मुँह पिचकाते हुए कॉल साहेब ने उत्तर दिया, "आपके साथ नाड़े से साड़ा घिसना हकीम जी ने नुसखे में नहीं लिख दिया है। आप ठहरे सेठ सो आपको तो यहाँ रहना ही है परन्तु हम हैं मज़दूर आदमी। हमारी तो चलती फिरती दुनियाँ है। जो चार पैसे अधिक देगा और चार बार जी कॉल साहेब, कॉल साहेब कहकर बात करेगा हम तो उसी के नौकर हैं। आपको क्या मालूम कि मैंने आपकी खातिर कितने एक से एक लाजवाब ऑफर (प्रस्ताव) रिजेक्ट (अस्वीकार) कर दिए।" और इतना कहकर मूछों पर ताव देते हुए अकड़ कर कॉल साहेब फिर कुर्सी पर विराजमान हो गए।

सेठ भानामल और कॉल साहेब में ऐसी कुत्ते बिल्ली की झड़प अनेकों बार होती थीं परन्तु इधर पाँच चार दिन से इनमें पर्याप्त मात्रा में वृद्धि हो गई थी। दिन भर कोई काम न होने के कारण बात बात पर यहाँ तक नौबत आ जाती थी। कॉल साहेब के मौन होकर बैठ जाने पर सेठ भानामल जी फिर तनिक आँखों को तरेर कर बोल उठे, "इस प्रकार बैठे रहने से काम नहीं चलेगा कॉल साहेब।"

"तब फिर क्या कसरत करने लगूँ? कुछ काम भी तो हो।"

"काम, काम तो आपने सब समाप्त ही करा दिया।" सिर झुकाकर सेठ जी तनिक गम्भीरता पूर्वक बोले।

"मैंने करा दिया?" कड़क कर कॉल साहेब ने फिर खड़े होते हुए आँखें निकालीं। "तीतर और बटेर की झड़पें देखने में तो आपको आनन्द आता है और काम मैंने बन्द करा दिया। मात तो आप किसी को देना चाहते हैं और शतरंज मैं खेल रहा हूं। मिल-यूनियन को छिन्न-भिन्न करके मजदूरों को कुचल डालने का उद्देश्य तो आपका है और आज असफल होने का दोष मेरे सिर पर मँढ़ा जा रहा है?"

"चलो कुछ भी सही कॉल साहेब ! परन्तु विमला ने मात आपको अवश्य दी है इस बार भी।" बहुत गम्भीरता पूर्वक अन्त में सेठ जी ने मुस्कुराते हुए उपहास के साथ गर्दन हिलाकर कहा।

कॉल साहेब इसे हार मानने के लिए किंचित मात्र भी तय्यार नहीं थे। काल साहेब ने जीवन में आज तक किसी से हार नहीं मानी। कान्ता का विवाह भी चौहान साहेब के साथ उनके ही सहयोग के फल स्वरूप हुआ, उनकी हार के फलस्वरूप नहीं। हार मानने से मिट जाना कॉल साहेब को अधिक प्रिय था। कॉल साहेब ने सेठ जी से यह हार वाले शब्द वापिस लेने के लिए कहा और सेठ जी को मुस्कुराते हुए वह शब्द वापिस लेने पड़े।

यह कॉल साहेब की विजय थी।

: १५ :

चौहान साहेब ने जीवन में सैर सपाटे बहुत किए थे परन्तु उन्होंने सुना था कि स्त्री के साथ सैर करने में जो आनन्द आता है वह अकेले सैर करने में प्राप्त नहीं हो सकता। इसीलिए कान्ता को साथ लेकर विवाह से दूसरे ही दिन चौहान साहेब काश्मीर की सैर के लिए जाने को उद्यत हो गए। चलने को ही थे कि सेठ जी आ पहुँचे और भानामल जी ने उन्हें परिस्थिति की गम्भीरता बतलाते हुए काफ़ी रोकने का प्रयत्न किया परन्तु जब कान्ता ने चौहान साहेब का हाथ अपने हाथ में लेते हुए मुस्कुराकर कहा, "जाने भी दीजिए सेठ जी! यही यहाँ रहकर और क्या हींग लगा लेंगे गम्भीर से भी गम्भीर परिस्थिति को सँभालने के लिए हमारे जीजा जी जो बैठे हुए हैं। मैं तो सच जानिए सेठ जी! अपने जीजा जी को परिस्थितियों का पिता कहकर पुकारती हूँ। परिस्थितियों का निर्माण करना और उन्हें समाप्त कर देना मानो उनके लिए बाँए हाथ का खेल है। यह तो उनके हाथों की साधारण सी करामातें हैं।" और इतना कहकर एक कटीली मादक दृष्टि से कान्ता ने चौहान साहेब के मुख मंडल पर निहारा।

"कान्ता ठीक ही कह रही है सेठ जी! सचमुच कॉल साहेब जैसा व्यवहार-चातुर्य और अनुभव मुझ में भला कहाँ रखा है? हमारे तो बाप दादों ने भी कभी व्यापार नहीं किया। हम तो सीदे साधे भारतीय-स्वतन्त्रता-संग्राम के सत्याग्रही हैं

जिन्होंने कर्तव्य पर मिट जाना भर ही सीखा है। इससे अधिक तो हम और कुछ नहीं जानते।" कान्ता के सम्मुख गर्व के साथ अपना सीना उभार कर चौहान साहेब सेठ जी की ओर मुँह करते हुए बोले इस समय एक विजय और अभिमान की रेखा चौहान साहेब के नेत्रों में साकार हो उठी थी।

"परन्तु आज भी तो आपका कर्तव्य आपको पुकार रहा है। केवल भारत को स्वतन्त्र भर करा देने पर आपका सब कर्तव्य समाप्त नहीं हो जाता। मिल बन्द हो रहा है, इतने दिन से हड़ताल चल रही है। उत्पादन में क्षति होना क्या राष्ट्र की हानि नहीं है? इन सब बातों को क्या आप व्यर्थ समझते हैं? क्या इनका आपके कर्तव्य से कोई सम्बन्ध नहीं?" सेठ जी ने आशा भरी दृष्टि से चौहान साहेब के मुख पर देखते हुए कहा और फिर अपने कथन के समर्थन के लिए ललचाई हुई दृष्टि से कान्ता के मुख पर देखा।

परन्तु चौहान साहेब ने टालमटोल सी करते हुए इसका कुछ विशेष उत्तर न दिया और बात सबकी सब कान्ता के ऊपर ढालते हुए अन्त में यही निश्चय किया कि वह इस समय काश्मीर अवश्य जायेंगे। कान्ता के साथ काश्मीर जाने का यह अवसर जीवन में पचास वर्ष पश्चात आया है और फिर सम्भवतः आने वाला नहीं। रही बात मिल में हड़ताल की सो तो नित्य के जीवन में आने वाले काम हैं, कोई नई बात नहीं। सेठ भानामल जी के लिए यह हो सकता है कि बहुत महत्वपूर्ण कार्य हो परन्तु चौहान साहेब के लिए तो इसमें कोई विशेष महत्व नहीं दिखलाई दिया। एक महीना या पंद्रह दिन के लिए यह मिल कपड़ा नहीं बनाएगी तो इससे राष्ट्र का क्या बनता बिगड़ता है? भारत के सभी निवासी कोई इसी मिल का तो कपड़ा पहिनते नहीं हैं जो पंद्रह दिन में सब नंगे फिरने लगेंगे।

चौहान साहेब अपने को राष्ट्र का सेवक मानते हैं। उनकी दृष्टि में राष्ट्र का पैसा राष्ट्र के पास रहना चाहिए। यदि वह मज़दूरों में बँट गया तब क्या और सेठ भानामल जी के पास रह गया तब क्या? सेठ भानामल जी भी अपने को राष्ट्र का सेवक मानते हैं और कहते हैं कि हम राष्ट्र के खजाँची हैं। हम राष्ट्र की सम्पत्ति को सुरक्षित रखते हैं। यदि हम अधिक धन कमाते हैं तो क्या हुआ? खाते तो वही मूँग की दाल के साथ चार चपातियाँ हैं। इससे अधिक तो और कुछ नहीं खाते। जो पैसा हमारे पास एकत्रित होता है उसे राष्ट्र के कारोबार में ही तो लगा देते हैं। इन कारोबारों में राष्ट्र के बच्चे काम करते हैं और इससे

राष्ट्र की उन्नति होती है। यदि यह रुपया जो हमारे पास जुड़ता है कर्मचारियों में बाँट दिया जाए तो निश्चित रूप से राष्ट्र की महान हानि होगी। देश के अनेकों कारोबार बन्द हो जायेंगे और उस रुपए को यह कर्मचारी-वर्ग खा पीकर यों ही उड़ा देगा, नष्ट कर देगा।

बात चौहान साहेब की समझ में यह भी आती है परन्तु इसके विपक्ष में जब कॉमरेड विमला से उनकी बातें होती हैं और वह कहती है कि यह सेठ भाना-मल जी की बातें ढकोसले की टट्टी हैं। यह केवल अपने स्वार्थों को राष्ट्र-हित की छत्र छाया में फलीभूत करने का ढोंग मात्र है। वह कहती हैं कि यदि भारत का कर्मचारी वर्ग आज अपने कर्तव्य को समझने में असमर्थ भी है तो उसका कारण भी साधनों का अभाव है और साधनों का अभाव केवल इस लिए है कि पूंजी का वितरण देश वासियों में अनियमित और अव्यवस्थित रूप में हो रहा है। पूंजीपति लोग समाज की छाती को अपने स्वार्थ के जूतों से कुचलते जा रहे हैं। वह दिन अब दूर नहीं है जब कुचला जाता हुआ भारत का गरीब समाज ऊपर उठकर उन स्वार्थ-प्रिय व्यक्तियों के जूतों को ही नहीं उनके पैरों को भी तोड़ डालेगा। यह समाज अपने पैरों पर खड़ा होकर अपने अधिकारों की स्वयं रक्षा करेगा और अपने धन का स्वयं ख़ज़ाँची बनकर अपना निजी बैंक स्थापित कर लेगा। वह शक्ति इसमें आ रही है।

बात यह भी चौहान साहेब की समझ में आती थी परन्तु इस समय तो वह काश्मीर जा रहे थे। कल किसके पैर टूटेंगे और आज किसके मिल में हड़-ताल है इन समस्याओं से व्यर्थ अपने मस्तिष्क को परेशान करना चौहान साहेब ने उचित न समझा। कान्ता ने भी मुस्कुराते हुए चौहान साहेब का हाथ अपने हाथ में लेते हुए कह दिया, "मरने भी दीजिए जो मरता है। आपके पास कौनसा रामबाण है जिसे चलाकर आप हड़ताल रोक देंगे। यह तो पूंजीपति और कर्म-चारी वर्ग का संघर्ष है जो शक्ति के लिए हो रहा है। एक युग से चलता चला आ रहा है और चलता ही जाएगा। हम लोग तो मध्यम वर्ग के व्यक्ति हैं। जिधर का भी पलड़ा भारी देखेंगे उधर का ही राग अलापने लगेंगे। फिर क्यों व्यर्थ इन लोगों के झमेले में पड़कर अपनी सैर और तफ़री भी ख़राब करें ?

कान्ता की यह बात चौहान साहेब की समझ में आ गई और उसकी इस योग्य सम्मति का चौहान साहेब ने हार्दिक स्वागत किया और वह काश्मीर की

सैर के लिए चलने को उद्यत हो गए। अभी जाने को तय्यार ही हुए थे कि कॉल साहेब सामने से आते हुए दिखलाई दिए। सेठ भानामल जी निराश होकर इस समय तक यहाँ से विदा हो चुके थे। कॉल साहेब कमरे में प्रवेश करके मुस्कुरा कर बोले, "मैंने कहा तनिक मैं भी तो सुनूँ यह कहाँ जाने की तय्यारियाँ हैं ?" और सीधे आगे बढ़ते हुए चौहान साहेब तथा कान्ता के सामने जा खड़े हुए।

"कहीं नहीं जीजा जी ! मैंने सोचा कि इधर दस पाँच दिन जब तक आप इस मिल की हड़ताल वाली समस्या को सुलझाने में व्यस्त हैं तब तक हम लोग ज़रा काश्मीर की ही सैर कर आयें। बहुत दिन से इच्छा थी काश्मीर जाने की। आपसे भी कई बार कहा काश्मीर की सैर के लिए परन्तु आपको तो रुपए ने अपना ऐसा दास बना लिया है कि अवकाश ही नहीं मिला।" कान्ता ने आँखों की पुतलियों को घुमाते हुए वहाँ के आस पास के वातावरण में मुस्कान-छवि बिखराकर कहा।

कान्ता के दाँतों की विद्युत-दमक इस समय अचानक ही कॉल साहेब के हृदय से पार हो गई और वह किसी प्रकार हाथ का कागज़ चौहान साहेब की ओर बढ़ाते हुए बोले, "परन्तु मैं तो यह ऐग्रीमेंन्ट ड्राफ़्ट (इकरार नामे का मसविदा) लाया था।"

"ऐग्रीमेंन्ट !" कान्ता ने उत्सुकता से पूछा। "कैसा एग्रीमेंन्ट जीजा जी ?" और कान्ता सामने के सोफ़े पर जमकर बैठ गई।

"परन्तु अब देर करोगी तो जहाज़ छूट जाएगा कान्ता !" चौहान साहेब ने गम्भीरता पूर्वक कहा।

"छूट भी जाने दीजिए। क्या फिर नहीं जाएगा कोई जहाज़ काश्मीर को ? परन्तु मैं नहीं समझती कि आप यह भेदपूर्ण बातें मुझसे क्यों छुपाने का प्रयत्न कर रहे हैं ?" और फिर कॉल साहेब की ओर मुँह करके बोली, "लाइए मुझे दिखलाइए न जीजा जी ! क्या कोई बिज़नेस प्रोप्रोज़ीशन (व्यापार सम्बन्धी प्रस्ताव) है ?" और इतना कहते हुए कान्ता ने कागज़ कॉल साहेब के हाथ से अपने हाथ में ले लिया।

तीनों कमरे में सोफ़ों पर बैठ गए। कान्ता ने जीजा जी के लिए नौकर से चाय लाने को घन्टी बजाई और स्वयँ उस कागज़ को पढ़ने लगी। चौहान साहेब समझ गए कि अब काश्मीर का प्रोग्राम तो समाप्त ही हो गया परन्तु उन्हें

इसका कोई खेद नहीं था क्योंकि वह तो काश्मीर इस समय केवल कान्ता के ही कहने पर जा रहे थे, वरना वह तो काश्मीर में एक लम्बे काल तक रह चुके थे। काश्मीर गाँधी आश्रम में दो वर्ष उन्होंने कार्य किया था। यों तो उस समय वह चालीस रुपया मासिक वहाँ आश्रम से पाते थे परन्तु आजकल अपनी मित्र-मंडली में जब चर्चा चल जाती थी तो उसे वह अवैतनिक देश सेवा ही बतला कर गौरवान्वित होते थे।

कॉल साहेब को चौहान साहेब ने सेठ भानामल जी से पृथक होकर अपना व्यापार करने का जो सुझाव दिया था वह तो उस समय चौहान साहेब की एक राजनीतिक चाल थी कान्ता को प्राप्त करने के लिए और उसमें उन्हें सफलता भी मिल चुकी थी। चौहान साहेब जानते थे कि कान्ता को उनके साथ विवाह करने पर उद्यत करना कॉल साहेब की ही कला थी। परन्तु अब चौहान साहेब अपनी स्वतन्त्रता को किसी व्यापारिक चक्कर में फँसकर समाप्त नहीं करना चाहते थे। सेठ भालामल जी से चौहान साहेब की मित्रता होने के अतिरिक्त एक निश्चित आय भी थी। सेठ भानामल जी के वृक्ष के पके हुए फल बिना किसी परिश्रम के डलिया में भरकर नित्य नियमित रूप से चौहान साहेब की कोठी पर सवेरे ही सवेरे आ जाते थे। अब उस वृक्ष को काटकर कॉल साहेब का नया पौदा लगाना और फिर उससे फल प्राप्त करने की आशा में प्रतीक्षा की तपस्या करना यह उनकी समझ में कोरी शेख़चिल्ली की कथा के अतिरिक्त और कुछ नहीं था।

कान्ता ऐग्रीमेन्ट-ड्राफ्ट को बहुत ध्यानपूर्वक पढ़ रही थी परन्तु चौहान साहेब उसकी ओर से बिल्कुल उदासीन थे। यहाँ उदासीन होने का यह अर्थ नहीं कि उनके मुख पर स्वाभाविक मुस्कान न खेल रही हो और उनकी चहल पहल में किसी प्रकार का अन्तर आ गया हो। चौहान साहेब इस समय अचानक ही पूछ बैठे, "कहिए कॉल साहेब! इस बार क्या-क्या प्लान बनाए हैं हड़ताल को छिन्न-भिन्न कर डालने के लिए?" और उत्तर के लिए भेदपूर्ण दृष्टि से कॉल साहेब के मुख पर देखा।

"प्लान!" मुस्कुरा कर कॉल साहेब अपनी गंजी खोपड़ी पर हाथ फेरते हुए बोले, "प्लान तो अनेकों हैं चौहान साहेब! आप जानते ही हैं कि हमें दुनियाँ हमारे मस्तिष्क के ही लिए तो मानती है और मस्तिष्क की शक्ति के सम्मुख न

तो पशुबल काम देता है और न धन-बल। इन दोनों को ही हमारे इर्द गिर्द घूमना पड़ता है। सेठ जी अपने धन को लेकर कुछ नहीं कर सकते और कर्मचारी अपने पशु बल को लेकर व्यर्थ हैं। यह हमारा ही तो मस्तिष्क है जो दोनों को संचालित करके फल-प्राप्ति तक ले जाता है।" और इतना कह कर कॉल साहेब ने गर्व के साथ अपना मस्तक ऊँचा करके अभिमान पूर्ण दृष्टि कमरे की छत से मिला दी।

"क्यों नहीं? क्यों नहीं?" मुस्कुराते हुए कॉल साहेब के मुख पर चौहान साहेब ने उनकी बात का समर्थन किया परन्तु इसी समय उन्हें कॉमरेड विमला की वह बात याद आ गई जब बिल्कुल यही शब्द उन्होंने विमला के सामने कहे थे और विमला ने स्पष्ट उत्तर दे दिया था—'यह सब व्यर्थ की बातें हैं चौहान साहेब! आप नहीं जानते कि यह सब केवल तभी तक सम्भव है जब तक धन सेठ भानामल जी के स्वार्थी हाथों में बन्दी पड़ा है और कर्मचारी-वर्ग अपने कर्तव्य से अनभिज्ञ होकर स्वार्थी समुदाय की स्वार्थी मनोवृत्तियों से प्रभावित हो उठता है। जब धन राष्ट्र का होगा, कर्मचारी राष्ट्र का होगा और राष्ट्र का धन कर्मचारी के लिए होगा तब यह बीच की पोल स्वयं समाप्त हो जाएगी। आज भारत में दलाली का पेशा और सब पेशों से बढ़ा चढ़ा है चौहान साहेब! और इस प्रकार के मैनेजमैंट को मैं दलाली के अतिरिक्त और कुछ नहीं मानती। दलाली का महत्व तभी तक है जब तक राष्ट्र सट्टे पर आधारित है और जब राष्ट्र अपनी वास्तविकता को पहिचान कर सट्टे से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लेगा तो यह दलाली स्वयं समाप्त हो जाएगी।' कॉमरेड विमला की यह बात उस दिन चौहान साहेब के भावुक हृदय में पूरी तरह गड़ गई थी और विमला की उस बात में इतना वज़न था, इतना बल था कि उसके सम्मुख कॉल साहेब की बातें छिछोरी, फीकी और स्वार्थ में पगी हुई प्रतीत होती थीं। कॉल साहेब की बातों में जीवट का अभाव था।

"तो यों कहिए कि आपने मेरे काश्मीर-सैर के प्रस्ताव पर अपना इतना बड़ा बिज़नेस प्रोप्रोज़ीशन (व्यापारिक-प्रस्ताव) भुला दिया?" ड्राफ्ट पढ़कर कान्ता ने इठलाते हुए चौहान साहेब के नयनों में नयन डालकर कहा और एक बारगी ही उसका तमाम बदन इस प्रकार बल खा गया कि मानो रेशमी धागों की आटी के बल खुल गए हैं।

"तुम्हारे प्रस्ताव पर क्या कुछ नहीं किया जा सकता कान्ता ? मेरे जीवन का अन्तिम विकास तुम्हारे ही तो प्रस्तावों पर आधारित होगा।" चौहान साहेब बोले और मुस्कुराकर उन्होंने अपनी कमर धीरे से सोफ़े की पीठ पर लगा ली।

"तो फिर हस्ताक्षर कर दीजिए इस ऐग्रीमेंट पर।" कान्ता ऐग्रीमेन्ट चौहान साहेब के सामने बढ़ाते हुए बोली और स्वयँ इठलाकर बल खाती हुई मिल-मालकिन बनने की महत्वाकाँक्षा मन में लेकर सोफ़े की पीठ से कमर लगा ली।

"ऐसा नहीं होगा कान्ता ! मैं कॉल साहेब की निस्वार्थ सेवा करूँगा।" और इतना कहकर चौहान साहेब हल्की सी मुस्कुराहट के साथ प्रेमपूर्वक मुस्कुरा दिए। "तुम यह नहीं जानती हो कान्ता देवि ! कि मेरे और कॉल साहेब के कैसे सम्बन्ध हैं ? यह इनकी उदारता है कि यह अपनी ओर से ऐग्रीमेन्ट बना लाए परन्तु मेरे लिए तो इनके शब्द ही ऐग्रीमेन्ट हैं। इनके उपकारों को क्या मैं इस जीवन में भुला सकता हूँ ?" और इतना कहकर चौहान साहेब ने अपना मुख बहुत ही गम्भीर बनाकर कान्ता तथा कॉल साहेब के मुख पर देखा।

कान्ता कुछ न कह सकी और उसे मन ही मन चौहान साहेब की यह उदारता उनका बुद्धूपन प्रतीत हुआ परन्तु कॉल साहेब चौहान साहेब के इस साफ़ निकल भागने को ताड़े बिना न रह सके और एकदम चोट खाए हुए सर्प की भांति अंदर ही अंदर झुँझलाकर कटु-व्यंग्य के साथ बोले, "चौहान साहेब पूरे खिलाड़ी हैं, अधूरे नहीं। आज मान गए आपको।" और यह कहते हुए उन्होंने ऐग्री-मेन्ट पीछे को खिसका लिया।

चौहान साहेब मुस्कुरा दिए परन्तु कॉल साहेब मुस्कुराने का प्रयास करते हुए भी न मुस्कुरा सके। कान्ता अभी वास्तव में बच्ची थी इस सब गोल-माल को समझने के लिए। दोनों की मुस्कान में मुस्कान मिलाकर उसने भी अपनी अनभिज्ञता को छुपालेना चाहा परन्तु वह छुपा न सकी। शतरंज के दोनों खिलाड़ी उसे भाँप रहे थे। आज की बाज़ी चौहान साहेब ने जीती थी और उन्होंने गर्व के साथ अपने मन से कहा—'बच्चा कॉल ! तुम अभी बच्चे ही हो हमारे सामने। हमने अँगरेज़ सरकार को मात दी है और शासन की बाग डोरें सँभाली हैं। तुम्हारी क्या हस्ती है हमारे सम्मुख ? तुम सेठ भानामल जी को अवश्य नचा सकते हो, चौहान को नहीं; भानामल जी की नाक में नकेल डाल सकते हो चौहान की नाक में नहीं। चौहान ने जल में कमल-पुष्प की तरह रहना सीखा है। वह

तुम्हारे माया-जाल में फँसकर अपनी सैंतालीस वर्ष की कमाई को नष्ट नहीं कर सकता। कान्ता एक गुड़िया है, सुन्दर खिलौना है, उससे खेला जा सकता है, उसके आमोद प्रमोद के लिए काश्मीर की सैर के लिए जाया जा सकता है परन्तु उसके कहने पर कॉल साहेब के ऐग्रीमेंट पर हस्ताक्षर नहीं किए जा सकते।

इसके पश्चात तीनों ने बैठ कर चाय पी और चाय पर हड़ताल विषयक इधर उधर की बातें छिड़ गईं। यहाँ चौहान साहेब ने कॉल साहेब को काफ़ी इधर-उधर पलट कर पछाड़ना चाहा परन्तु चित्त न कर सके। कॉल साहेब भी पुराने पहलवान थे, नीचे आ गए तो क्या हुआ? विजय तो चित्त करने पर ही प्राप्त होती है। कॉल साहेब ने अपनी एक भी गुप्त रहस्य पूर्ण बात चौहान साहेब पर नहीं खुलने दी।

कॉल साहेब अन्दर से कुढ़ते हुए भी ऊपर से मुस्कुरा कर बोले, "कुछ भी सही परन्तु आप भी हैं वास्तव में उस्ताद आदमी चौहान साहेब!"

"वह किस प्रकार?" मुस्कुराते हुए कान खड़े करके चौहान साहेब ने अपनी मूछों पर हाथ फेरते हुए पछा।

"चातुर्य की दीक्षा यदि किसी को लेनी हो तो आपके ही स्कूल में नाम लिखाना चाहिए।" ऊपर के दांतों से नीचे के होठ को दबा कर तनिक मुस्कुराते हुए कॉल साहेब बोले, "अन्यथा शिक्षा अधूरी ही रह जाएगी।"

"आख़िर कैसे? तनिक मैं भी समझ सकूँ। मेरे अन्दर आपने वह ऐसी चातुर्य की क्या योग्यता देखी जो ऐसी ठोस धारणा बनाली?" मन में सब कुछ समझते हुए भी गुँडला कर उसी प्रकार सादगी और सरलता से मुस्कुराते हुए तनिक एक पैर पर दूसरा पैर रखते हुए चौहान साहेब बोले।

"घर में आग लगाय जमालो दूर खड़ी; ख़ूब चौहान साहेब ख़ूब। मैं तो कभी-कभी एकाँत में बैठकर जब आपके चरित्र पर विचार करता हूँ तो आपको करामाती व्यक्ति मानता हूँ।" तनिक गम्भीर होकर कॉल साहेब ने कहा।

"यह तो सब कुछ ठीक है जो कुछ आप मेरे विषय में विचार करते हैं। आप करामाती समझ लें या पैग़म्बर और अवतार समझ लें परन्तु मैं अभी तक यह नहीं समझ पाया कि आप यह जो कुछ भी कर रहे हैं यह मेरे गुणों का बखान कर रहे हैं या मेरी मक्कारियों का प्रदर्शन। आपके वाक्य इतने गढ़ हैं कि मुझ जैसी स्थूल-बुद्धि वाला व्यक्ति उन्हे बिना व्याख्या के नहीं समझ सकता।"

बहुत ही सरलतापूर्वक चौहान साहेब ने कहा और अपना मुख इतना सादा और भोला बना लिया कि मानो वह वास्तव में कुछ भी नहीं समझ पाए।

"हाँ जीजा जी! समझ तो कुछ वास्तव में मैं भी नहीं सकी।" चाय की प्याली गोल मेज़ पर टिकाती हुई कान्ता ने कॉल साहेब के मुख पर गम्भीरता-पूर्वक निहारते हुए पूछा, "आपकी बातों की गहराई का भाँपना गहरे सागर से रत्न निकालना होता है—मुझे याद है यह वाक्य एक दिन आपने मुझसे कहा था।"

कॉल साहेब चाहते थे चौहान साहेब को लज्जित करना परन्तु फँस गए स्वयँ ही असमंजस में। अब कॉल साहेब इस बात का क्या उत्तर दें यह सोच ही रहे थे कि चौहान साहेब बीच में ही मुस्कुराकर कह उठे, "कोई बात नहीं है कॉल साहेब! यदि इस समय आपके पास मेरी बात का उत्तर प्रस्तुत न हो और यह बात आपने यों ही कुछ कहने के लिए कह डाली हो तो आप कल विचार कर उत्तर दे डालिए और यदि न भी देना चाहें तो न दीजिए परन्तु मुस्कुरा कर बातें करना तो बंद न कीजिए।" यह कहकर वह खिलखिला कर हँस पड़े।

कान्ता ने भी चौहान साहेब का ही साथ दिया जिसे देखकर कॉल साहेब मन ही मन बहुत झुँझला उठे। वह आशा कर रहे थे कि कान्ता उनका साथ देगी परन्तु आज यह सब कुछ उल्टा ही हो रहा था। वह यह भूल ही गए थे कि अब यह कान्ता, केवल उनकी दो पत्नियों की छोटी बहिन मात्र नहीं, चौहान साहेब की धर्मपत्नी है और उसका उनकी राय में राय मिलाने की अपेक्षा चौहान साहेब की हँसी में हँसी मिलाना अधिक आवश्यक है।

पासा आज हर पहलू पर कॉल साहेब के विपरीत ही पड़ रहा था इसलिए अब और अधिक यहाँ बैठकर बराबर बाज़ी पर बाज़ी हारते जाना कॉल साहेब ने उचित नहीं समझा।

"मैंने कहा चाय ठंडी हो रही है।" चौहान साहेब मुस्कुराते हुए बोले।

"पीता हूँ।" तनिक सिटपिटा कर प्याली उसके कुन्दे से पकड़कर उठाते हुए कॉल साहेब ने होठों से लगा ली।

"एक बात कहूँ कॉल साहेब! परन्तु यदि बुरा न मानें तो तब कहूँगा और यदि बुरा मानने की स्थिति हो तो मैं नहीं कहता।"

"अवश्य कहिए। आप तो गालियाँ भी देंगे तो प्यार से ही देंगे चौहान साहेब!" मन में अथाह जलन लेकर कॉल साहेब बोले। "अपनों के कहने का

भी कहीं बुरा माना जाता है ? परन्तु इतना ध्यान रहे कि जो कुछ कहें बस अन्तिम बात कह डालें। ऐसा न हो कि यह कहने के पश्चात् भी आपके मन में कसक शेष ही रह जाए कि कुछ कहना चाहते थे और कह न सके।" झूठी मुस्कान अपने मुख पर लिए नुकीली मूँछों को पैनाते हुए प्याली मेज़ पर रख कर कॉल साहेब ने चौहान के मुख पर देखा।

चौहान साहेब का मुखमण्डल खिल उठा और वह सोचने लगे कि यह व्यक्ति भी है 'धक्काड़' अर्थात् लज्जित होना तो इसने सीखा ही नहीं। जीवन में फ़ायर-प्रूफ़, वाटर-प्रूफ़ (अग्नि में न जलने वाला, पानी में न गलने वाला) इत्यादि तो वस्तुएँ देखी थीं परन्तु कॉल साहेब लज्जा-प्रूफ़ (कभी लज्जित न होने वाले) के अद्वितीय उदाहरण हैं। उन्होंने अपने मन से कहा कि ऐसे व्यक्ति के लिए मैं गँवारू ही सही परन्तु 'हैंकड़' शब्द की उपाधि का ही प्रयोग कर सकता हूँ। इस प्रकार उन्होंने कॉल साहेब को समझने के लिए 'धक्काड़' और 'हैंकड़' शब्दों का खोज निकाला और जो कुछ वह पूछना चाहते थे इस समय पूछना उचित नहीं समझा। कॉल साहेब ने भी इस बात पर कोई विशेष बल नहीं दिया और कान्ता तो इन व्यर्थ की बातों से ऊब चुकी थी। उसके दृष्टिकोण से आज जितनी भी बातें हुईं वह सभी व्यर्थ थीं और इन व्यर्थ की बातों ने उसका काश्मीर जाने का कार्यक्रम भी नष्ट कर दिया।

कान्ता किसी बहाने से उठ कर अन्दर चली गई और जब चौहान साहेब तथा कॉल साहेब अकेले रह गए तो कॉल साहेब ज़हर उगलते हुए बोले, "चौहान साहेब ! बहुत गहरा डंक मारा है आपने।"

"परन्तु आपके विष पर मेरा डंक क्या असर करेगा ?" चौहान साहेब यह कह कर मुस्कुरा रहे थे।

"असर हो या न हो परन्तु आपने अपनी करनी में कोई कसर नहीं रहने दी। एक बार अन्त में मैं आपसे फिर कहता हूँ कि आप विचार कर देख लें। पन्द्रह हज़ार रुपया महीना मैं आपको दे सकता हूँ।" इतना कह कर कॉल साहेब बहुत गम्भीर हो उठे।

"छी छी ! क्या बात कहते हो कॉल साहेब ? मैं कहता हूँ रुपये का हमारे और आपके सम्बन्धों में क्या मूल्य है ? आपकी कृपा से तो हमें वह वस्तु प्राप्त हुई है जिसके साथ यदि पलड़े पर दूसरी ओर सेठ भानामल जी की सारी सम्पत्ति

भी रख दी जाए तो आपका पलड़ा ही नीचा रहेगा। परन्तु आज मैं देख रहा हूँ कि आपका मस्तिष्क कुछ स्वस्थ नहीं है। इसलिए इस गम्भीर विषय को किसी और दिन के लिए उठा रखिए।" और इतना कह कर कटु व्यंग्य के साथ चौहान साहेब मुस्कुरा दिए।

कॉल साहेब समझ गए कि यह चौहान का बच्चा अब साफ निकल भागा है और पुट्ठे पर हाथ नहीं रखने देगा। वह कब और किस प्रकार वहाँ से उठ कर चल दिए यह पता ही न चला। कार अन्दर ही रह गई और वह बाहर सड़क पर आ लिए। उन्हें पता तभी चला जब पीछे से ड्राइवर ने कार रोक कर उन्हें कार में बैठने के लिए कहा।

सेठ भानामल जी को दूसरे दिन यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि चौहान साहेब ने 'सेठ क्लाथ मिल्ज़' की हड़ताल की गम्भीर परिस्थिति को विचारते हुए अपना काश्मीर जाना स्थगित कर दिया।

: १६ :

कॉल साहेब चौहान साहेब की कोठी से अपना ऐग्रीमेन्ट का ड्राफ्ट बगल में दबाए हुए यह सोचते आ रहे थे कि अब किस प्रकार चौहान साहेब, कॉमरेड विमला और कॉमरेड अशफ़ाक को परास्त किया जाए। आजकल कॉल साहेब अपने को जीवन के प्रत्येक पहलू पर पराजित देख कर मन ही मन बहुत कुछ दुखी थे और मानसिक परेशानियों ने उन्हें इतना घेर लिया था कि उनका जीवन विचित्र प्रकार की उधेड़ बुनों का कार्यक्रम मात्र बन गया था। उनके जीवन की शांति उनके जीवन की पराजित विचार धारा में बह चुकी थी।

कॉल साहेब की दोनों बहूरानियों ने यह देखकर कि कॉल साहेब उनके जीवन में कोई सहयोग नहीं देते, अपना स्वतन्त्र मार्ग ग्रहण कर लिया था और उनकी इस स्वतंत्रप्रियता में कोई बाधा उपस्थित करने का न तो कॉल साहेब में साहस ही था और न कभी उन्होंने इस दिशा में कुछ विचार ही किया था। एक ओर जहाँ कॉल साहेब का जीवन दिन प्रति दिन नीरसता की ओर अग्रसर हो रहा था वहाँ दूसरी ओर उनकी दोनों बहूरानियों के जीवन में नित्य नई से नई रंगीनियाँ स्थान लेती जा रही थीं। कान्ता का विवाह चौहान साहेब से हो जाने के बाद तो इन रंगीनियों को और भी प्रश्रय मिल गया था और राजधानी की अब कोई भी ऊँचे दर्जे की ऐसी दावत या पार्टी नहीं होती थी कि जहाँ कान्ता देवि के साथ यह

दोनों बहूरानियाँ नहीं जाती थीं। कान्ता से विवाह करते ही चौहान साहेब का जीवन-उद्यान एक दम लहलहा उठा, महक उठा। तीनों बहिनों ने चौहान साहेब के जीवन-उद्यान में वह रंगीन पुष्प खिलाए कि चौहान साहेब का जीवन एका-एक बुढ़ापे की दिशा में जाता जाता युवावस्था की ओर लौट लिया। जीवन की अशक्ति शक्ति में परिणित होने लगी।

कॉल साहेब ने बहूरानियों की स्वतन्त्र प्रकृति के बहाव में आज तक कभी बाँध लगाने का प्रयत्न नहीं किया था परन्तु अब उनका इस प्रकार चौहान साहेब के साथ नित्य नई पार्टियों में जाना उन्हें अखरने लगा था। कभी कभी तो कॉल साहेब को उनका रात्रि के समय बारह बारह बजे कोठी पर लौट कर आना बहुत बुरा लगता था। वह सोचने लगते थे कि दरबान से कह दें कि वह उन्हें अन्दर न आने दे परन्तु फिर यह सोच विचार कर चुप हो जाते थे कि यदि ऐसा करने पर दोनों बहूरानियों ने चौहान साहेब की ही कोठी पर रहना प्रारम्भ कर दिया तब क्या होगा? फिर सोचते थे कि जब उनके यहाँ रहने से उन्हें कुछ लाभ ही नहीं तो उनके वहाँ रहने लगने से ही उन्हें क्या हानि होने की सम्भावना थी। परन्तु ऐसा करने का उनमें साहस नहीं था और अपनी अशक्तता को देख कर ही उन्हें मन में कुढ़कर भी चुप रह जाना होता था। बड़ी बहूरानी ने अब बाद में आकर अपनी कुछ ढिलाई के कारण कॉल साहेब को अपने सामने कुछ कहने और कभी कभी तन जाने का भी साहस प्रदान कर दिया था परन्तु छोटी बहूरानी ने अपने इस अधिकार को पूर्ण रूप से सुरक्षित रखा हुआ था। इसी लिए कॉल साहेब इन दोनों को अपनी आँखों के सम्मुख सबकुछ करते देखकर भी केवल अपने ही मन में जलते और अपना रत्ती दो रत्ती रक्त सुखाने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं कर सकते थे। छोटी बहूरानी ने अपने से सम्बन्ध रखने वाला कोई भी अधिकार कॉल साहेब के कर-कमलों में नहीं सौंपा हुआ था। वह पूर्णरूप से स्वतन्त्र थीं अपने जीवन-क्षेत्र में।

कॉल साहेब चौहान साहेब की कोठी से चले थे अपनी कोठी की ओर परन्तु अनायास ही पहुंच गए कॉमरेड विमला के मकान पर। विमला इस समय अकेली बैठी अखबार पढ़ रही थी। कॉल साहेब को आते देख, खड़े होकर उनका स्वागत किया और बहुत आदर पूर्वक उन्हें कुर्सी पर बिठला कर आप उनके सामने बैठ गई। विमला का आदर सत्कार देख कर कॉल साहेब के मन में यकायक

अपनी बहूरानियों के प्रति ग्लानि उत्पन्न हो गई और वह मन ही मन सोचने लगे कि क्या उन बहूरानियों को उनका इतना भी आदर सत्कार नहीं करना चाहिए कि जितना इस समय उनका कॉमरेड विमला ने किया, उस विमला ने किया जो पति को भगवान मानना तो दूर की बात है, भगवान में भी आस्था नहीं रखती।

कॉमरेड विमला ने कॉल साहब का ध्यान दूसरी ओर आकर्षित करते हुए पूछा, "कहिए मैनेजर साहब! आनन्द पूर्वक तो हैं। इधर कई दिन से तो आपके दर्शन ही नहीं हो सके।" और इतना कहकर उत्तर की प्रतीक्षा में उनके मुख पर सरल भाव से देखा।

"दर्शन! कॉमरेड विमला! दर्शन क्या होते? इधर कई दिन से सेठ जी को बराबर यही समझाने का प्रयास कर रहा हूँ कि यह हठ करना बुरी बात है। हठ से कोई लाभ नहीं होता। मिल मालिक को चाहिए कि वह अपने कर्मचारियों को अपने बच्चों के तुल्य समझे। परन्तु उन पर मेरे कहने का प्रभाव ही नहीं पड़ता। चौहान साहेब की मित्रता ने सब खेल ख़राब किया हुआ है।" और इतना कहकर कॉल साहेब ने अपनी मुखमुद्रा एकदम गम्भीर बना ली।

"वह किस प्रकार?" मन में यह समझते हुए भी कि कॉल साहेब यह मक्कारी की बातें कर रहे हैं कॉमरेड विमला ने अपनी बहुत ही गम्भीर मुखमुद्रा बनाकर पूछा और इस प्रकार भोले पन से उनके मुख पर ताका कि मानो उसे कुछ ज्ञान ही नहीं कि दुनियाँ किधर जा रही है।

"किस प्रकार क्या? चौहान साहेब ने कल कह दिया है, 'सेठ भानामल जी! दबने की कोई आवश्यकता नहीं है। इन कर्मचारियों को अपनी ज़िद अंत में छोड़नी ही होगी। सरकारी आर्डर का माल यदि समय पर न भी जा सकेगा तो बला से न जाए परन्तु मैं सेठ जी की मान हानि न होने दूँगा।' और कॉमरेड विमला! जब से उन्होंने कान्ता से विवाह किया है तब से तो उनका बिल्कुल ही मस्तिष्क सातवें आकाश पर रहने लगा है।" इतना कहते हुए कॉल साहेब कुर्सी पर तकिया लगा कर आराम से तन कर बैठ गए।

"परन्तु वह विवाह सम्पन्न तो आपने ही कराया था।" कॉमरेड विमला ने मुस्कुराते हुए कहा। "शायद कान्ता देवी के अन्दर भी पूँजीवादी मनोवृत्ति का आभास मिलता है?" और विमला भी उनके सामने एक लकड़ी की कुर्सी खिसका कर उसपर बैठते हुए कॉल साहेब के मुख पर देखने लगी।

"यही बात है कॉमरेड विमला ! बिल्कुल ठीक यही बात है। कान्ता का स्वभाव अपनी दोनों बहिनों से सर्वथा भिन्न निकला। मेरी दोनों ही बहूरानियाँ तो स्वभाव की बहुत सरल हैं। कान्ता के साथ भी मेरे विवाह का प्रस्ताव सामने आया था परन्तु वह केवल कान्ता की पूँजीवादी मनोवृत्ति के ही फल स्वरूप मुझे रिजेक्ट (नामंजूर) कर देना पड़ा था।" तनिक गर्व के साथ पाइप का कश खींचते हुए कॉल साहेब ने विमला के उन्नत मस्तक पर दृष्टि डाल कर कहा।

"आपको रिजेक्ट कर देना पड़ा!" आश्चर्य प्रकट करते हुए कॉमरेड विमला बोली, "यह भला आपने क्या किया! आपके सम्पर्क में आकर तो उनकी पूँजीवादी मनोवृत्ति आप से आप काफ़ूर हो जाती। आप जैसे मज़दूर की पत्नी को तो मज़दूरिन बनना ही होता।" व्यंग्य पूर्ण मुस्कान के साथ कॉमरेड विमला ने कहा और फिर खड़ी होती हुई तनिक इठला कर बोली, "परन्तु मैं यह नहीं समझ पाई कि कान्ता देवि का आपके साथ विवाह करने का प्रस्ताव किसकी ओर से आया था?"

"उनकी माता जी की ओर से। उनकी यही इच्छा थी कि तीनों बहिन एक ही घर में रहकर सुख तथा शांति के साथ अपना जीवन व्यतीत कर सकें।" बहुत गम्भीरता पूर्वक कॉल साहेब ने सिर पर हाथ फेरते हुए अपना फ़ैल्ट हैट एकओर मेज़ पर रखकर कहा और जेब से पाइप का तम्बाकू निकाल कर पाइप में भरते हुए उसे लाइटर से जलाया।

कॉमरेड विमला मुस्कुरा कर रह गई और उसने मन ही मन सोचा कि मनुष्य भी कितना मूर्ख होता है। दूसरों को मूर्ख समझकर बातें करने की मनोवृत्ति उसमें न जाने क्यों इतनी प्रश्रय पाती जा रही है। कभी-कभी व्यक्ति उन बातों में भी झूठ बोलता है कि जिनसे उसे कोई भी लाभ नहीं होता। कॉमरेड विमला जीवन में जब किसी से बातें करती थी तो उसकी बातों पर उसे कमीशन काटना होता था। यह कमीशन का दर प्रत्येक व्यक्ति की बातों पर पृथक पृथक रहता था। आज कॉल साहेब की बातों पर विमला को सौ प्रतिशत कमीशन काटते हुए कुछ लज्जा प्रतीत हुई और वह मानवता के नाम पर उपहास की इस प्रतिमा को सामने बैठी देखकर मन ही मन खीजते हुए भी ऊपर से मुस्कुरा कर बोली, "मैनेजर साहेब! आप भी हैं बहुत ही विचित्र व्यक्ति। यदि आपको मेरी बातें सुनकर इस समय कष्ट न हो तो मैं आपका भ्रम दूर कर देने के लिए यह

आपको बतला देना उचित समझूँगी कि आपने यहाँ इस समय आकर जो कुछ भी बातें कही हैं उनमें सत्य का लेश नहीं।" और इतना कहकर भी कॉमरेड विमला ने बहुत सरल दृष्टि से कॉल साहेब के मुख पर देखा। कॉल साहेब का झूठ उसके शब्दों में कोई परिवर्तन नहीं कर पाया था।

"क्या कहती हो विमला?" त्योरी चढ़ाकर कॉल साहेब ने विमला के मुख पर देखते हुए एकदम विचलित होकर कुछ चकित से स्वर में कहा।

"हाँ! सत्य कह रही हूँ मैनेजर साहेब!" उसी प्रकार मुस्कुराकर खड़े होकर घूमते हुए कॉमरेड विमला बोली। "आपके जीवन के विषय में सम्भवतः आपसे अधिक मैं जानती हूँ। परन्तु अपने को धोखा देकर आप अब जीवन में उन्नति की ओर अग्रसर नहीं हो सकते।" दृढ़तापूर्वक कॉमरेड विमला कहती ही चली गई।

कॉल साहेब तुरन्त उठकर खड़े हो गए और बिना एक शब्द भी मुख से बोले उन्होंने अपना हैट उठा कर अपने सिरपर रख लिया। वह चलने को ही थे कि कॉमरेड विमला ने उनके सम्मुख आकर मुस्कुराते हुए पूछा, "क्या जा रहे हैं आप? परन्तु आपने यह नहीं बतलाया कि जब सेठ जी ने आपके प्रस्तावों को ठुकरा दिया तो उसका आप पर क्या प्रभाव हुआ?" कॉमरेड विमला इस समय व्यंग्य पूर्ण मुस्कान नेत्रों में लिए कॉल साहेब के सकपकाए हुए मुख पर निहार रही थी।

कॉल साहेब चलते चलते रुक कर बोले, "क्या करोगी यह सब पूछ कर कॉमरेड विमला? जब हमारे जीवन का सच से कोई सम्बन्ध ही नहीं तो हम जो कुछ भी कहेंगे वह सब झूठ होगा।" और इस प्रकार उन्होंने अपनी लज्जा पर इन शब्दों का आवरण डालने का अंतिम प्रयत्न किया।

"यह सच है जो कुछ आप कह रहे हैं परन्तु झूठ से सच को खोज निकालने की क्षमता मुझ में है मैनेजर साहेब!" मुस्कुराते हुए विमला बोली और पैर पर पैर रख कर कॉल साहेब के सामने वाली कुर्सी पर तनिक रौब के साथ डट कर बैठ गई।

"तुम बड़ी चतुर हो कॉमरेड विमला!" इतना कहकर कॉल साहेब फिर कुर्सी पर बैठना ही चाहते थे कि उन्हें सामने से कॉमरेड अशफ़ाक सीना ताने, मूँछों पर ताव दिए आस्तीनों को चढ़ाता हुआ आता दिखलाई दिया।

कॉमरेड अशफ़ाक पर दृष्टि पड़ते ही कॉल साहेब के होश उड़ गए और वह बैठते बैठते रुककर खड़े होते हुए बोले, "अच्छा कॉमरेड विमला ! अब हम चलें। सेठ जी हमारी राह देख रहे होंगे। आज बहुत देर हो गई यहाँ तुम्हारे पास बातों ही बातों में।" और वह तुरन्त नीचा सिर किए कॉमरेड अशफ़ाक से बचते हुए कमरे से बाहर निकल जाना चाहते थे।

"परन्तु देखने दीजिए राह। यह सब कुछ तो चलता ही रहता है मैनेजर साहेब ! कोई नई बात नहीं है आपके लिए। बातें बनाने में तो आप बहुत प्रवीण हैं। मैं समझती हूँ कि बातों की कला में आपसे विजय प्राप्त करने वाले विरले ही जन्म लेकर इस संसार में आए हैं।" कॉमरेड विमला गम्भीर व्यंग्य की छटा छिटकाते हुए बोली।

"तो तुम्हारा तात्पर्य यह है कि हम केवल बातें बनाना ही जानते हैं, काम करना नहीं जानते।" चलते चलते कॉल साहेब ने गम्भीर दृष्टि से विमला के मुख पर देखते हुए पूछा।

"बिलकुल यही बात है।" कड़क कर कॉमरेड अशफ़ाक ने कहा और वह सीना तान कर सामने खड़ा हो गया। "तुम खाते ही बातों का हो। अब मज़दूरी करके खाना सीखना होगा बातों का युग समाप्त हो चुका महाशय ! यह मज़दूरी का युग है। आगामी युग में कर्मचारी की कमाई बातों के आधार पर अपहरण नहीं की जा सकेगी।" इतना कहते हुए अभिमानपूर्वक कॉमरेड अशफ़ाक आगे बढ़ा और सामने से एक कुर्सी खींच कर उस पर बैठ गया।

कॉल साहेब अशफ़ाक के बच्चे के मुँह नहीं लगना चाहते थे। इसलिए उसकी बात का उत्तर दिए बिना ही चुपचाप धीरे से खिसक लिए। कॉमरेड अशफ़ाक को वह उस दिन से जानवर समझ कर घृणा की दृष्टि से देखने लगे थे जिस दिन से उसने कॉल साहेब को गले से पकड़ कर ऊपर उठा लिया था और उन्हें अपना गला पहाड़ी नौकर से तेल लगवा कर सिकवाना पड़ा था।

कॉल साहेब के चले जाने पर अशफ़ाक ने विमला को बतलाया कि चौहान साहेब काश्मीर जाते जाते रुक गए हैं।

"आख़िर इस बार आपके मित्र चौहान साहेब इस प्रकार हड़ताल के प्रति इतने उदासीन क्यों हैं ?" बात बदल कर विमला ने अशफ़ाक से प्रश्न किया।

"उदासीन ! उदासीन वह इसी लुच्चे कॉल के बच्चे के कारण हैं। यह मैं मानता हूँ कि इस समय स्वार्थपरता चौहान के अन्दर भी पूरी तरह घर कर चुकी है परन्तु फिर भी वह काटे का आदमी है। सेठ भानामल जी ने इस कॉल के कहने में आकर चौहान के दिए गए सब आश्वासनों को रद्द कर दिया। इसी-लिए वह इस बार बीच में नहीं पड़ रहा। आपको नहीं मालूम कि कल तो उसने सेठ जी के लाख गिड़गिड़ाने पर भी अपना काश्मीर जाने का प्रोग्राम स्थगित नहीं किया था। फिर कह नहीं सकता कि उसके प्रोग्राम में यह परिवर्तन किस प्रकार हुआ ?" विमला के प्रश्न का उत्तर देते हुए अशफ़ाक ने कहा।

कॉमरेड विमला ने अशफ़ाक के शब्दों में इस समय चौहान साहेब के प्रति सद्भावना की झलक पाई। फिर बातों की दिशा बदल कर विमला बोली, "वैसे तो सेठ भानामल जी भी इस समय तिलमिला उठे हैं। कल उन्होंने जब मुझे बुलाया था और कई बातों का आश्वासन देते हुए कहा था कि वह हमारी माँगों को बहुत कुछ अंशों में पूरी कर देंगे। परन्तु मैंने तो स्पष्ट कह दिया—'इस बार आश्वासनों से काम नहीं चलेगा सेठ जी ! यूनियन की मांगें एक एक करके माननी होंगी।' उनकी नए कर्मचारी भर्ती करने की बात जब सामने आई तो मैंने मुस्कुरा कर दो अक्षरों में उत्तर दे दिया 'यह मुझ से कहने की बात नहीं। ऐसा आप जब चाहें कर सकते हैं। मिल-यूनियन को भी जो करना होगा वह करेगी।" गम्भीरतापूर्वक कॉमरेड विमला ने बतलाया।

"करें नई भरती।" कड़क कर कॉमरेड अशफ़ाक बोला। "हमें क्या चून का समझ बैठा है सेठ भानामल ? एक एक की हड्डी पसलियाँ बराबर न करके रख दें तो नाम नहीं; ईंट से ईंट बजा देंगे।" और इतना कह कर गर्व के साथ सीना तानते हुए आस्तीनें चढ़ा कर भुजदण्डों पर पूर्ण गर्व से वीर अशफ़ाक ने हाथ फेरा।

"तुम तो हर समय लड़ने के लिए ही उद्यत रहते हो अशफ़ाक ! मुझे सदा यही भय लगा रहता है कि कहीं किसी दिन तुम बेचारे कॉल का खून न कर डालो।" मुस्कुरा कर नयनों में हल्की-सी मादक मदिरा भरकर कॉमरेड विमला बोली और फिर खड़ी होकर अन्दर से कॉमरेड अशफ़ाक के लिए एक प्याली गरम चाय की बना लाई।

"खून की बात कुछ न पूछो कॉमरेड विमला ! यह कॉल का बच्चा इस योग्य है कि इसे धरती में गड़वाकर इसके ऊपर कुत्ते छुड़वा दिए जायें। तुम सम्भवतः अभी नहीं समझ पाई हो इस कपटी को। इसकी अनेकों चालें तो मैं तुम्हारे पास तक पहुँचने से पूर्व ही विफल कर चुका हूँ। इस समय यह हर सम्भव और असम्भव, उचित और अनुचित रीति से मुझे, आपको और चौहान को मजा चखाने के प्रयत्न में कटिबद्ध है।" और इतना कहकर कॉमरेड अशफ़ाक ने प्याली होठों से लगा ली। वीर अशफ़ाक के नेत्रों से बड़े भारी क्रोध की ज्वाला बरस रही थी। कॉल साहेब को सामने देखकर कॉमरेड अशफ़ाक का रक्त उबाल खाने लगता था और स्वभाव में अनायास ही गर्मी आ जाती थी। अशफ़ाक ने कॉल साहेब की हर चाल को विफल किया था और कॉल साहेब फनन्चिथे सर्प की भांति कॉमरेड अशफ़ाक से बदला लेने पर उतारू थे।

"चौहान साहेब को ?" आश्चर्य में भरकर विमला ने पूछा, "यह तो तुमने बहुत ही रोचक बात सुना डाली। आखिर सुनूँ भी तो कि चौहान साहेब से इनकी कैसे खटकी ? अभी चार दिन हुए तो यह चौहान साहेब के बड़े गुण गा रहे थे।" यह कहकर कॉमरेड विमला उत्तर की प्रतीक्षा में एकटक अशफ़ाक के मुख पर देखने लगी।

चाय की प्याली को मेज़ पर टिका कर अशफ़ाक बोला, "एक से एक चढ़ता हुआ है कॉमरेड विमला ! चौहान साहेब ने यह खिलाड़ी पछाड़ दिया है बस इस समय तुम इतना ही समझ लो।" और फिर प्याली मेज़ पर से उठाकर होठों से लगा ली।

"कान्ता के विषय में ?" मुस्कुराते हुए कॉमरेड विमला बोली और अशफ़ाक ठहाका मार कर बहुत ज़ोर से हँस दिया। "इन लुच्चों की ज़िन्दगी ही क्या है कॉमरेड विमला ! स्वार्थ पर तुल चुका है इनका जीवन; इनका संसार ही स्वार्थमय हो चुका है। इनका पारस्परिक प्रेम और मतभेद इनके व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति और उसकी विफलता पर अवलम्बित रहता है।" दृढ़तापूर्वक अशफ़ाक ने कहा।

इसके पश्चात् अशफ़ाक ने खुलकर कॉल साहेब की कूट नीतिज्ञता पर प्रकाश डाला और कुछ सम्भावित घटनाओं की ओर संकेत भी किया। उसने स्पष्ट कह दिया कि अब बहुत ही सचेत रहने का अवसर आ गया है और यह

कॉल साहेब इस अवसर पर जो कुछ भी न कर गुज़रें वही कम है। कॉमरेड बैनर्जी उसका पूरी तरह साथ दे रहा है। कुछ लुच्चे लफ़ंगे और कर्मचारी भी पैसे का प्रलोभन देकर इसने अपने साथ कर लिए हैं। वह धन के लालच में फँसकर अँधे बन चुके हैं।

कॉमरेड विमला को अपने कर्मचारियों के इस गिरते हुए चरित्र की गाथा सुनकर दुःख अवश्य हुआ परन्तु इससे वह विचलित तनिक भी नहीं हुई। गम्भीरता पूर्वक अशफ़ाक से पूछा, "रुपया तो इस समय कॉल साहेब ख़ूब खुलकर बाँट रहे होंगे मेरे विचार से ?"

"ख़ूब खुलकर। सौ-सौ रुपया प्रति कारीगर प्राप्त कर लेना तो साधारण सी बात है।" अशफ़ाक ने सूचना दी।

"तब ठीक है। तुम एक काम करो कॉमरेड अशफ़ाक!" गम्भीरता-पूर्वक विमला ने कहा। "हम लोगों के पास इस समय रुपए की कमी हो गई है। रुपया कहीं से मांगे नहीं मिल रहा। रुपए की कमी में कर्मचारियों का चरित्र गिरता जा रहा है। इसलिए तुम कुछ अपने पक्के कर्मचारियों को इस बात के लिए तय्यार करो कि वह कॉल साहेब से जाकर रुपया भी ले आयें और फिर काम पर भी न जायें। इससे दो लाभ होंगे; एक तो कुछ कर्मचारियों में उस रुपए को बाँटकर उनकी वर्त्तमान कठिनाइयों को दूर कर दिया जाएगा और दूसरे जब रुपया लेकर भी इतने कर्मचारी एकदम काम पर नहीं जायेंगे तो कॉल साहेब को एक गहरी चोट लगेगी और फिर भविष्य में वह किसी को भी रुपया देकर हड़ताल तोड़ने का प्रयत्न नहीं करेंगे।"

कॉमरेड अशफ़ाक का मुर्झाया हुआ मन खिल उठा और वह उसी क्षण अपनी साइकिल लेकर कर्मचारियों के द्वार-द्वार पर पहुँचा और रात रात में उसने सात सौ कर्मचारियों को इस कार्य के लिए एकत्रित कर लिया। दूसरे दिन प्रातः काल ही इन सात सौ कर्मचारियों का एक प्रतिनिधि-मण्डल कॉल साहेब से मिला और उनकी वर्त्तमान अव्यवस्थित परिस्थिति में कॉल साहेब ने सेठ भानामल जी से मिलकर उन्हें सौ-सौ रुपया प्रति व्यक्ति देना निश्चित करके खजाँची को रुपया बँटवाने के लिए आज्ञा दिला दी।

जिस समय रुपया बाँटा जा रहा था उस समय कॉल साहेब उसके आस-पास घूम रहे थे। उनका पैर आज पृथ्वी पर नहीं पड़ रहा था और अपनी इस

सफलता पर वह मन ही मन लड्डू फोड़ रहे थे। चौहान साहेब और कॉमरेड विमला को उन्होंने करारी मात दी और अब संध्या को वह कॉमरेड विमला से मिलकर इन कर्मचारियों के दुर्बल चरित्र पर जो प्रकाश डालेंगे उसमें हो नहीं सकता कि विमला को कर्मचारियों का छिछलापन स्पष्ट दिखलाई न दे उठे और कोई कारण नहीं है कि वह इस प्रकार अपने कार्य-पथ में ठोकर खाकर सही रास्ते पर आ जाए। इसी समय कॉल साहेब को विमला के विषय में विचारते-विचारते उसके रूप, घुँघराली लटों और हर समय मुस्कुराते हुए मुखमण्डल का स्मरण हो आया। विमला के हिरनी-जैसे कटीले नयन कॉल साहेब के गोल-गोल बटन से नेत्रों में चित्रित हो उठे और उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो इसबार विमला ने अपनी हार मानकर आज उनसे कह दिया, 'अब और लज्जित न कीजिए कॉल साहेब! मैं हारी और आप जीते, बस यही कहलाना चाहते हैं न आप। आप अपनी ही पसन्द का सोफ़ासेट मेरी बैठक के लिए भिजवा दीजिए और खिड़कियों के लिए कुछ शोदार पर्दे भी।'

रुपया बँट गया और जिसे जिसे रुपया मिला वह उसे लेकर चलता भी बना परन्तु दूसरे दिन मिल में कॉमरेड बैनर्जी और उसके सौ डेढ़ सौ आदमियों के अतिरिक्त और एक भी कर्मचारी न आया। दोपहर तक कर्मचारियों की प्रतीक्षा करने के पश्चात् कॉल साहेब ने आफ़िस में जाकर अपना माथा ठोंक लिया और वह तुरन्त भाँप गए कि विमला उनके साथ गहरी चाल खेल गई।

कॉल साहेब इसी परेशानी की दशा में बैठे थे कि बाहर से चिक उठाते हुए चौहान साहेब अन्दर घुस आए और मुस्कुरा कर कॉल साहेब की झुकी हुई गर्दन ऊपर को करते हुए बोले, "मैंने कहा किसका मातम मना रहे हो? यह तो चोट पर चोट है, परन्तु तुमने तो पुरुष-जाति के भी नाम को दाग़ लगा दिया कॉल साहेब! एक दो पसलियों की छोकरी तुम्हारे जैसे लुरंट को चूना लगा गई।" और इतना कहकर वह मुस्कुराते हुए सामने की कुर्सी पर डट गए।

"चूना तो अवश्य लगा गई चौहान साहेब!" मुस्कुराने का प्रयास करते हुए भी न मुस्कुरा सकने पर लाचारी में बेचारे कॉल साहेब ने उत्तर दिया। "परन्तु यह ठीक नहीं किया उसने।"

"Every thing is fair in love & war (लड़ाई और प्यार में सब उचित होता है) कॉल साहेब!" और यह कहते हुए चौहान साहेब

ने अपने नेत्रों की पुतलियों को इस प्रकार घुमाकर मूँछों को ताव दिया कि कॉल साहेब तिलमिला उठे। उनका हृदय इस समय जल रहा था।

"यह सब रुपया कल संध्या को ही कॉमरेड विमला की मेज़ पर पहुँच गया। अब वह दो महीने भी यदि हड़ताल चलती रही तो तब भी तुमसे मार खाने वाली नहीं।" चौहान साहिब ने मुस्कुराते हुए कहा।

कॉल साहेब ने इसका कोई उत्तर देना उचित नहीं समझा और वह फिर माथे पर हाथ रखकर बैठ गए।

चौहान साहेब ने आज फिर कॉल साहेब के पुट्ठे पर हाथ रखकर उन्हें नई दिल्ली में सैर करने के लिए चलने को कहा परन्तु आज कॉल साहेब ने पुट्ठें पर हाथ नहीं रखने दिया और नथनों को फुन फुनाते हुए बोले, "चौहान साहेब! वह छोकरी नाग के साथ खेल रही है।"

"यह वह जानती है कॉल साहेब! परन्तु वह भी सपेरे की लड़की है। उसने बचपन से साँप खिलाने का ही अभ्यास किया है। उसका जहर मोहरा नहीं देखा आपने? वह जीता जागता अशफ़ाक का बच्चा उसका ज़हर मोहरा ही तो है।" खड़े होते हुए चोहान साहेब ने कॉल साहेब की ओर तिरछी दृष्टि घुमाकर अकड़ते हुए कहा। "बड़े-बड़े विष सोखे हैं उस जहर मोहरे ने" और चिक उठा कर कमरे से बाहर हो गए।

कॉल साहेब मन ही मन बिल-बिलाते हुए केवल बलखाकर रह गए, एक शब्द भी मुँह से न बोल सके।

: १७ :

सेठ भानामल जी इस समय बौखला उठे थे। आज एक महीना सात दिन हड़ताल को चलते हुए हो गए और अभी तक कोई उचित सुझाव उनकी समझ में नहीं आया कि जिससे वह समस्या को सुलझा सकें। न जाने कितना रुपया हड़ताल को असफल बनाने के लिए व्यय हो गया परन्तु सब व्यर्थ। एक वह लफँगा बैनर्जी का बच्चा है कि जो मौज उड़ा रहा है और कॉल साहेब लगे हुए हैं अपनी सनक पूरी करने में। हड़ताल को असफल बनाने ही बनाने में लाखों रुपया इधर उधर हो गया।

चौहान साहेब की उदासीनता देखकर कभी कभी सेठ जी मन ही मन झुँझला कर खीज उठते थे और दाँत किटकिटा कर दोनों मुट्ठियों को भींचते हुए एकाँत में पागल की भांति बड़बड़ा कर कहते थे—'नीच कहीं का, मेरे ही टुकड़ों पर पल कर आज मुझे ही गुर्राता है, शिक्षा देता है और अक्ल बतलाता है। मैं दौड़ा दौड़ा उस पाजी के पास जाता हूँ और एक वह है कि जो अपनी रँग-रलियों में मस्त है। सावन के अन्धे को संसार रँगीन ही रँगीन दिखलाई दे रहा है। कभी कोठी पर संगीत समाज जुड़ता है तो कभी कवि सम्मेलन और मुशायरा, कभी नाटक खिलता है तो कभी नृत्य होते हैं। कोठी क्या है अच्छा ख़ासा अय्याशी का एक अड्डा बनाया हुआ है। अभी कोठी खालीकरा लूँ तो बच्चू

की सब रँग रलियाँ रखी ही रह जायें। एक वह कान्ता की बच्ची है। उसे भी देखो पहिले कैसी दौड़ी दौड़ी मेरे पास आती थी। दिन में कोठी के चार फेरे डालती थी। परन्तु आज तो मानो पहिचानती ही नहीं। मैं कोठी पर जाता भी हूं तो ज़नानखाने में चली जाती है, मुझ से मुँह चुराती है, सामने नहीं आती। उसके मुस्कुराने का भी अब मूल्य हो गया है। यह दुनियाँ है, दुनियाँ।' यह कहते हुए सिर खुजला कर पेट पर हाथ फेर कर सेठ जी बैठ जाते थे और फिर वही रामकहानी। हड़ताल की ही समस्या उनके मस्तिष्क में चक्कर लगाने लगती थी। कुछ समझ नहीं पाते थे कि क्या करें? परिस्थिति सुधारने की कोई सूरत दिखलाई नहीं देती थी। दशा दिन प्रति दिन गम्भीर ही होती जा रही थी।

मिल-मज़दूर सिर पर पैर रख कर चलना चाहते हैं जिसे सेठ भानामल जी कभी सहन नहीं कर सकते। मिल-यूनियन ने उनके आश्वासनों को ठुकरा कर हड़ताल को नहीं तोड़ा और कॉमरेड विमला ने मक्कारी के साथ उनकी बात क हँस कर चुटकियों में उड़ा दिया। मज़दूरों के लिए उस सेठ भानामल की ज़बान का कोई मूल्य नहीं जिसकी हाँ नाँ पर लाखों के वारे न्यारे हो जाते हैं। सेठ भानामल के दिल में जलन पैदा हो गई। परन्तु साथ ही उन्हें जब अपने पिछले आश्वासनों से बिछुड़ जाने की स्मृति हो आई तो वह एक दम कॉल साहेब पर बलबला उठे—'इस नालायक के बच्चे ने मुझे कहीं का नहीं छोड़ा। मेरी बात दो कौड़ी की कर दी। मेरे ही कर्मचारियों के सम्मुख मुझे झूठा बना दिया। क्या होता यदि मेरे कर्मचारी कुछ और अधिक वेतन पा जाते? इससे मेरी आय में तो कुछ बल आने वाला नहीं था। मैं डिविडेन्ड (वह लाभ जो मिल के हिस्सेदारों में बाँटा जाता है) कुछ कम करके बाँट सकता था। भागीदारों की भी तो आँखें नहीं फूट गई थीं। परिस्थिति नित्य पत्रों में पढ़ते ही थे। बेचारे चौहान साहेब का आदेश मान लेता तो आज यह परिस्थिति क्यों सामने आती?'

सेठ जी इसी प्रकार के विचारों में गोते लगा ही रहे थे कि उन्हें सामने कोठी के द्वार पर कॉल साहेब आते दिखलाई दिए। कॉल साहेब का सामने आना था कि सेठ जी एकदम लाल पीले होकर उनपर बरस पड़े। धोती की फेंठ सँवारते हुए अपने मोटे मोटे नयनों को फुला फुला कर वह आँधी मेह की भांति कॉल साहेब पर बरस रहे थे। सेठ भानामल जी क्या कह रहे थे इस बात पर ध्यान दिए बिना ही कॉल साहेब ने भी अपने मोटे मोटे होठों को लपका-लपका कर मन

मानी उड़ाने लेनी प्रारम्भ कर दीं। कॉल साहेब ने भी अपना मैगज़ीन खाली कर दिया। दोनों में खूब लम्बी चौड़ी नपी और अन्त में कॉल साहेब ने यहाँ तक कह दिया कि बस अब वह उनके यहाँ कार्य नहीं करेंगे। पुराने पुराने मामले उखड़ कर सामने आने लगे। सेठ जी ने अपनी अगली पिछली सब कृपाएँ खोल खोल कर कॉल साहेब के सामने रखीं और कॉल साहेब ने अपने चातुर्य के रामबाण जिन पर चढा कर उन्होंने सेठ जी को सेठ जी बनाया था तरकश से निकाल कर बाहर फेंक दिए। दोनों के हृदय का गुबार खूब निकला और अंत में दोनों ठंडे भी पड़ गए। बाद में यही निश्चय हुआ कि दोनों मिलकर चौहान साहेब की कोठी पर चलें और वहाँ पर बैठ कर इस मिल में चलने वाली हड़ताल को समाप्त करने का कोई निश्चय हल निकाला जाए।

चौहान साहेब की कोटी पर पहुँचे तो क्या देखते हैं कि कवि सम्मेलन का पूरा ठाट जुटा हुआ था। कविगण मसनदों पर गाऊ तकिए लगाए इधर उधर ढुलके पड़े थे और श्रोतागण कविता श्रवण कर कविता की रस-तरङ्गिणी में स्नान कर रहे थे। सम्मेलन की सभापति थीं कान्ता जिनकी बगल में ही चौहान साहेब विराजमान थे और उन्हीं के पास दोनों बहूरानियाँ कविता श्रवण कर बैठी मुस्कुरा रही थीं। कविता के लिए बहुत ही सरस वातावरण कान्ता ने यहाँ पर उपस्थित किया था। कविगण वातावरण से रस ले ले कर अपनी अपनी सुमधुर कविता द्वारा सभा में रस उडेल रहे थे और झूम-झूम कर अपनी रचनाएँ सुनाने में लीन थे। सुमधुर साहित्य का श्रोत बह रहा था चौहान साहेब की कोठरी में। इसी समय सेठ भानामल जी कॉल साहेब के साथ वहाँ पर पहुँच गए। सेठ भानामल जी का स्वागत हुआ और उन्हें भी लाकर कविगणों के ही पास मंच पर बिठला दिया गया। सेठ भानामल जी सोच कर आए थे क्या और यहाँ आकर मिला उन्हें क्या? परन्तु सेठ भानामल जी भी बहुत सरस व्यक्ति थे। हड़ताल की सब बातें भूल कर कविता के रस-श्रोत में वह निकले। सेठ भानामल जी कविता में रस लेने लगे लेकिन कॉल साहेब के लिए यह दृश्य असहनीय हो उठा। उनकी दोनों बहूरानियों का इस प्रकार शृङ्गार कराकर जो चौहान साहेब ने उन्हें कवियों की प्रेरणा का साधन बना दिया था यह उनके हृदय में काँटे की भांति चुभ गया। कॉल साहेब ने इसे अपना अपमान समझा और यह अपमान उन्हें और भी दुखदाई उस समय प्रतीत हुआ जब कान्ता ने उनके स्वागत में

इस समय एक शब्द भी मुख से उच्चारण नहीं किया। कान्ता उसी प्रकार अपनी गम्भीर मुद्रा बनाए सभापति-पद को सुशोभित करती रही। कॉल साहेब की सम्मति में उसे खड़ी होकर कॉल साहेब का स्वागत करना चाहिए था और उनका बैठने का स्थान कान्ता और चौहान साहेब के बीच में होना चाहिए था।

कविताओं का दौर बराबर चल रहा था और चलता ही गया। कवि-गण प्रत्येक रस मे कवितायें पढ़ रहे थे परन्तु प्रधान रस शृङ्गार और वीर ही थे। कभी कभी बीच बीच में हास्य रस की भी पुट आ जाती थी और उसके फल स्वरूप सभा का गम्भीर वातावरण कुछ हल्का हो उठता था। इसी समय कॉमरेड विमला और कॉमरेड अशफ़ाक सामने से आते हुए दिखलाई दिए और सभी ने देखा कि सभा अभिनेत्री कान्ता और चौहान साहेब ने उनका खड़े होकर स्वागत किया। चौहान साहेब तनिक आगे बढ़कर उन्हें मंच पर लिवा लाए। सेठ गूदड़मल जी इस समय कवितामय हो चुके थे इस लिए उनका यहाँ आना और आकर बैठ जाना उनके लिए कोई महत्वपूर्ण घटना नहीं थी; परन्तु कान्ता और चौहान साहेब द्वारा प्रदर्शित उनका स्वागत कॉल साहेब के हृदय को चीरता चला गया। कॉमरेड विमला ने सेठ भानामल जी के पास बैठते हुए धीरे से सेठ जी को प्रणाम किया और सेठ जी स्वप्न से जाग्रत होते हुए प्रणाम का उत्तर देकर बोले, "विमला! अरे! तुम भी आ गईं। भई बहुत ही अच्छा किया तुमने। बड़ी ही सरस कविताएँ हो रही हैं। परन्तु तुम रसास्वादन भी कर सकोगी?" और इतना कहकर सेठ भानामल जी ने गम्भीरता पूर्वक कॉमरेड विमला के मुख पर देखा।

"क्यों? न क्यों कर सकूँगी सेठ जी?" मुस्कुराते हुए धीरे से कॉमरेड विमला ने सेठ भानामल जी के अकस्मात गम्भीर बन जाते हुए मुख पर देख कर पूछा।

"चिन्ताओं से ग्रस्त होगा न तुम्हारा मस्तिष्क तो! इस छोटे से कलेवर में न जाने इतनी प्रखर समस्याएँ क्यों और कैसे बटोर लेती हो, विमला? देख नहीं रही हो सामने बैठी कान्ता को। क्या तुम इस योग्य नहीं हो कि अपने जीवन में इसी प्रकार की रंगीनियों को प्रवाहित कर सको?" बड़ी गूढ़ बात कह डाली सेठ जी ने परन्तु कॉमरेड विमला ने इस समय इसका उत्तर केवल एक मुस्कुरा-हट से देकर ही टाल देना उचित समझा और उस मुस्कुराहट में सेठ जी ने भी

पढ़ लिया कि कॉमरेड विमला उन्हें और उनके शब्दों को भली प्रकार पहिचानती और समझती है। सेठ जी ने इस मुस्कुराहट के पश्चात् एक बार कान्ता के मुख पर देखकर फिर कॉमरेड विमला के मुख पर देखा तो उन्हें लगा कि मानो यदि कान्ता का निर्माण उसके बनाने वाले ने रूई के फूले फूले डोट्टों से किया है तो कॉमरेड विमला सर से पैर तक स्पात (Steel) की बनी हुई है। सेठ जी ने आँखें मींच मींच कर कई बार दोनों को देखने का प्रयत्न किया परन्तु उनका यह अन्तर बना ही रहा। अन्त में उन्होंने अपनी आँखों का भ्रम मान-कर अपने नेत्र सीधे हाथ के अँगूठे और दो ऊँगलियों से मले और एक बार फिर देखने का प्रयास किया परन्तु अन्तर बराबर वैसा ही था।

सेठ भानामल जी कविता सुनना भूल गए और उसमें से आने वाला रस भी समाप्त हो गया। वह कुछ कहना चाहते थे कॉमरेड विमला से परन्तु जिह्वा ने काम नहीं दिया। कॉमरेड विमला उनके चित्त की उद्विग्नता को देख कर गम्भीरतापूर्वक बोली, "यह उलझन में पड़ने का स्थान नहीं है सेठ जी! कविता सुनिए। देखिए अभी अभी कितनी सरस कविता हो रही थी। मुझे आप कान्ता बहिन के साथ लगाने का प्रयत्न न कीजिए। उनके गुण मुझ में वर्त्तमान नहीं हैं।" और इतना कहकर कॉमरेड विमला भी गम्भीरतापूर्वक मुस्कुरा कर कविता सुनाने वाले कवि के मुख पर देखने लगी।

"हाँ! हाँ सुन रहा हूँ विमला! वास्तव में यह कविता बहुत सरस थी।" कहते हुए सेठ जी ने कॉमरेड विमला के व्यंग्य का कटु अनुभव किया परन्तु आज वह सच सा भी सेठ भानामल जी को प्रतीत हुआ। सेठ जी कुछ समझ हीं न सके। सेठ भानामल जी इच्छा रहने पर भी कॉमरेड विमला के मुखमण्डल पर अपने नेत्र अधिक देर न ठहरा सके।

चौहान साहेब कनखियों से सेठ जी की परिस्थिति का बराबर निरीक्षण कर रहे थे और कॉल साहेब के मौन गाम्भीर्य में क्या गुप्त भेद छुपा था यह भी उनपर पूर्ण रूप से विदित था। दोनों बहूरानियाँ और कान्ता अपने कवि सम्मेलन में व्यस्त थीं और उनके पास इस ओर देखने अथवा विचारने का अवकाश ही नहीं था। सेठ भानामल जी के सम्मुख जब कुछ स्त्रियों का जमघट आ जाता था तो वह उनके विषय में कुछ न कुछ विचारना अपना कर्तव्य समझते थे। इस समय भी उन्होंने कान्ता, दोनों बहूरानियों और कॉमरेड विमला

को अपने मस्तिष्क की वैज्ञानिक प्रयोगशाला (Laboratory) में रख कर एक छोटा सा परीक्षण (Experiment) कर ही डाला। इस प्रकार का परीक्षण करके सेठ जी अपने को मानव-मनोविज्ञान का आचार्य घोषित करने में कभी नहीं चूकते थे और अपनी मित्र-मंडली में अभिमान के साथ कह डालते थे कि किसी भी स्त्री को परखने की जो क्षमता उनके अन्दर विद्यमान है वह अन्यत्र मिलनी कठिन है। इस विषय में सेठ जी अपने को योगी मानते थे और आजकल उनका रुझान कुछ कुछ योग की दिशा में भी होता जा रहा था। स्त्री के प्रति उनके हृदय के अन्दर आकर्षण था, खिन्चाव था; सुन्दर स्त्री के सम्पर्क में आने के लिए उनके मन में बेचैनी सी भी पैदा होने लगती थी परन्तु आजकल वासनावृत्ति का उनके अन्दर से निताँत लोप हो चुका था। कुछ उनकी आयु का आग्रह था और कुछ उनकी योग-प्रवृत्ति। दोनों मिलकर सेठ जी को जीवन के उस आदर्श की ओर घसीट रहे थे कि जहाँ पहुँच कर यदि सेठ जी भी राजऋषि कहलाने के अधिकारी बन जायें तो कुछ असम्भव नहीं था। अपने अन्दर दैविक-शक्ति का आभास उन्हें आज कल दिखाई देने लगा था और इस दैविक शक्ति का विशेष रूप से प्रस्फुटन अपनी कलात्मकता के साथ उसी समय होता था जब उसके अनुकूल वातावरण उपस्थित हो जाता था। इस समय का वातावरण विशेष रूप से कलात्मक हो उठा था और इसीलिए सेठ जी कुछ क्षण को संसार की मोहमाया से एक दम ऊपर उठ गए थे। वह भूल ही गए कि वह यहाँ पर किस अभिप्राय से आए थे और एक स्वप्न से में विलीन होकर कविता सुनते सुनते कान्ता के मुख मंडल की शोभा पर निहारते हुए अपनी दृष्टि को घुमाकर बहूरानियों के मुख तक ले गए। उनके सम्मुख नारी सौंदर्य को परखने की इस समय यह प्रयोग शाला प्रस्तुत हो गई थी।

कॉल साहेब को सेठ जी का यह व्यवहार बिल्कुल ही असहनीय हो उठा परन्तु वह इस समय कुछ कह भी नहीं सकते थे। एक सभ्य विद्वान व्यक्ति थे और सभा के नियमों से भी अपरिचित नहीं थे। वह यह भी जानते थे कि सभा की शोभा को निहारने का सभी सभासदों को समान अधिकार होता है। यदि वह ऐसा नहीं चाहते थे तो उन्हें अपनी बहूरानियों को अपनी कोठी पर ही रोक लेना चाहिए था। अवसर पाकर सेठ भानामल जी का हाथ दबाते हुए कॉल साहेब धीरे से बोले, "मैंने कहा यहाँ इस रंग-रलियों में सम्मिलित होने के लिए

आए थे क्या आप ? क्या यह रँग रलियाँ आपकी अपनी कोठी पर नहीं जुटाई जा सकतीं ?" यह बात कॉल साहेब ने इस प्रकार त्यौरी चढ़ा कर कही जिस प्रकार कोई पिता व्यर्थ के कामों में फँसे हुए अपने नादान बच्चे से कहता है ।

"क्यों नहीं ?" सेठ जी ने स्वप्न से जाग्रत होते हुए कहा । "अरे ! मैं तो मानो कविता-कला के सागर में डूब ही गया था कॉल साहेब ! वास्तव में मैं भूल ही गया कि यहाँ किस प्रयोजन से आया था ?" विनम्र भाव से कुछ लजाते हुए सेठ जी ने कहा ।

"बहुत खूब ! बस आपने चला लिए मिल और कर लिया व्यापार । मैं करता हूँ सेठ जी ! कि यदि इस दुनियाँ में यह कॉल तुम्हारा हाथ पकड़ कर तुम्हें मार्ग न दिखलाए तो तुम्हारे तो एक भंगिन की छोकरी भी दाम खड़े कर सकती है । जहाँ गए बस वहीं के हो लिए ।" और इतना कहकर कॉल साहेब ने अपनी बहुत गम्भीर मुख-मुद्रा बना ली । कॉल साहेब की इस मुख-मुद्रा को चौहान साहेब तथा कॉमरेड विमला ने पढ़ने में देर नहीं की और वह एक दूसरे की ओर देखकर मुस्कुरा दिए ।

शायद और समय सेठ जी को कॉल साहेब की यह बात मानने में संकोच होता परन्तु इस समय तो वह कह ही उठे, "तुम सच कहते हो यार कॉल साहेब ! मैंने हृदय ही इतना भावुक पाया है ।" इतना कहकर सेठ जी कॉल साहेब की गम्भीर मुख-मुद्रा के सम्मुख मुर्झा गए ।

"यही बात है ।" मुस्कुराते हुए कॉल साहेब ने गिरगिट की तरह रंग बदल कर सेठ जी को मन में पूरा गधा समझा और अपना तीर निशाने पर छोड़ दिया । इसके पश्चात् एक बार फिर गम्भीरता पूर्वक बोले, "देखा आपने चौहान साहेब को ! आज कितना अभिमान हो गया है ? अब तो ठीक से बातें करना भी पसंद नहीं करते । कॉमरेड विमला और कॉमरेड अशफ़ाक के स्वागत में तो कान्ता और चौहान साहेब दोनों खड़े हो गए और हमसे यह भी नहीं पूछा कि तुम किस खेत की मूली हो ?' कॉल साहेब के हृदय में जलन हो रही थी और इस जलन में उनके बदन का रोम रोम जल भुन कर राख हुआ जा रहा था ।

कॉल साहेब खड़े होते हुए बोले, "अच्छा सेठ जी ! मैं तो चला; आप जब आना चाहें आते रहें ।" और इतना कहकर बिना चौहान साहेब तथा कान्ता की ओर देखे ही चलने को उद्यत हो गए ।

"अरे ! भाई मैं भी चलता हूँ।" कहते हुए इच्छा न रहने पर भी सेठ जी उठ खड़े हुए और उन्हें विदा करने के लिए चौहान साहेब कोठी के द्वार तक आए। कवि सम्मेलन का कार्यक्रम ज्यों का त्यों चलता रहा। किसी अन्य विषय पर कोई बात न हो सकी। सेठ जी किसी दूसरे समय बातें करने के लिए विचार कर वहाँ से चले गए और चौहान साहेब फिर अपने कवि सम्मेलन में पहुँच गए।

"देखा आपने इन धूर्तों का रागरंग" चौहान साहेब के चले जाने पर कार स्टार्ट करते हुए कॉल साहेब ने भानामल जी से कहा। "किसी का घर जल रहा है और इन्हें तापने की पड़ी है। मैं पूछता हूं क्या यह सब रागरंग, ठाट बाट और कवि सम्मेलन तथा मुशायरे 'सेठ क्लाथ मिल्ज़' के ही रुपए पर नहीं हो रहे हैं ?"

"बिल्कुल उसी पर हो रहे हैं।" गम्भीर होकर सेठ भानामल जी ने कहा। "मैं भूला नहीं हूँ अभी सीताराम के बाज़ार में लाल दरवाजे के अन्दर दूर जाकर सब से नीचे की मंज़िल की उस तीन रुपए माहाना वाली कोठरी को जिसके फ़र्श को सैंकड़ों जगह से चूहे और छछूंदरों ने बिल बना बना कर उधेड़ रखा था और इनके हज़ार बार गिड़ गिड़ाने पर भी मकान मालिक ने उसकी मरम्मत कराना उचित नहीं समझा था। उसी कोठरी से निकाल कर एक दिन मैं लाया था इन महाशय चौहान साहेब को जो आज मेरी मुसीबत में मेरे पास आना तक उचित नहीं समझते।" इतना कहते कहते सेठ भानामल जी को क्रोध आ गया और वह बड़ बड़ा कर बोले' "परन्तु उनका न आना भी यह सब मेहरबानी आपकी ही है कॉल साहेब !"

"मेरी !" आश्चर्य प्रकट करते हुए कॉल साहेब ने एक लम्बी श्वाँस ली, "ठीक है। आज आप भी मुझे ही दोषी ठहरायेंगे। यह मैं पहिले से जानता था। Nothing succeeds like success वाली बात है सेठ साहेब ! परन्तु मैं साहस खो देने वाला व्यक्ति नहीं। संकट-काल में आपत्ति से जूझ जाना मुझे आता है और असफलता को किस प्रकार सफलता में बदला जाता है यह गुर मैंने अपने गुरु से पढ़ा है।"

कॉल साहेब की यह साहसपूर्ण बातें सुनकर सेठ भानामल जी के नेत्र चमक उठे और उन्होंने साहस के साथ कॉल साहेब की पीठ ठोंक कर कह दिया,

"कोई चिंता की बात नहीं कॉल ! परन्तु झुकना नहीं है । कॉमरेड विमला ने हमें मूर्ख बनाकर धन ऐंठा है, इसका मज़ा उसे अवश्य चखाया जाएगा । अब तुम उसकी कोई चिंता न करते हुए पूर्ण कुशलता से हड़ताल को विफल बनाने का प्रयत्न करो । तुरन्त अंगरेज़ डाइङ्ग मास्टर को अपाइंट करके पत्रों में घोषणा कर दो और इङ्गलैंड सूचना भेज दो ।"

"जो आज्ञा !" मन ही मन प्रफुल्लित होकर कॉल साहेब ने सेठ जी की मूर्खता पर विचार किया कि यदि यह आज्ञा यह पहिले ही दे डालते तो सम्भवतः हड़ताल होने की नौबत ही न आती । परन्तु अभी भी कोई हानि नहीं हुई । यदि सुबह का भूला संध्या को घर लौट आए तो उसे भूला नहीं कहा जाता । "मैं आज ही अपने अंगरेज़ डाइङ्ग मास्टर मित्र को सूचित किए देता हूं और उसके आते ही यहाँ खलबली मच जाएगी । कल पत्रों में पढ़कर ही कर्मचारी तिलमिला उठेंगे ।" मन में दृढ़ गाम्भीर्य लेकर कॉल साहेब ने कहा ।

सेठ भानामल जी को कॉल साहेब उनकी कोठी पर छोड़ कर अपनी कोठी पर चले गए । आज वह बहुत प्रसन्न थे और उनकी प्रसन्नता का मूल कारण यह था इस प्रकार वह कल गर्व के साथ चौहान साहेब के सामने उन्नत मस्तक लेकर जा सकेंगे । एक दिन चौहान साहेब ने कॉल साहेब के इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया था और उस दिन सेठ भानामल जी ने भी उनके मत का समर्थन किया था परन्तु आज सेठ साहेब को अपनी वह भूल अनुभव करनी पड़ी ।

कॉल साहेब अपनी बैठक में बैठे प्रसन्नता पूर्वक गुन गुना रहे थे । उन्हें अभी आए अधिक समय नहीं हुआ था कि उनके पोर्टिगो में सेठ भानामल जी की कार आकर रुकी। कार से उतर कर सेठ भानामल जी कुछ विचलित से अंदर आए और वह गम्भीरता पूर्वक कॉल साहेब से बोले, "हाँ देखिए कॉल साहेब ! अभी आप अपने मित्र अंगरेज़ डाइङ्ग मास्टर को निमंत्रण न दें ।"

"परन्तु क्यों ?" एकदम तिलमिलाकर कॉल साहेब ने खड़े होते हुए पूछा, लेकिन सेठ भानामल ने कोई उत्तर न दिया और वह तुरन्त ही बिना कुछ और अधिक बोले उल्टे जाकर कार में बैठ कर वहाँ से चले गए ।

कॉल साहेब किंकर्त्तव्यविमूढ़ से उसी जगह बैठे रह गए और बहुत देर तक तो यह समझ ही न सके कि सेठ भानामल को क्या हो गया है ! सेठ जी को कभी कभी कुछ दौरा सा हो जाता था परन्तु इस समय तो वह दौरे की परि-

स्थिति प्रतीत नहीं हो रही थी। कॉल साहेब ने मन में अनुभव किया कि कहीं आज सेठ भानामल जी के स्थान पर उनको दौरा न पड़ जाए और इसी अशंका में वह पलंग पर चुप चाप लेट गए। उन्होंने काफ़ी प्रयत्न किया कि उनका मस्तिष्क काम करना बन्द करके आराम करले परन्तु मस्तिष्क ने इस समय उनकी आज्ञा का पालन करने से साफ इन्कार कर दिया। मस्तिष्क के पटल पर भांति भांति के चित्र चित्रित हो उठे और उनके अन्दर से ध्वनियाँ इतने प्रबल वेग तथा तीव्र स्वर के साथ निकलीं कि कॉल साहेब को अपने अस्तित्व के सम्बन्ध में भी संदेह हो उठा और वह पलंग से उठकर हाथों की मुठ्ठियों को भींच भींच कर दाँतों को किट किटा कर सेठ भानामल जी को गालियाँ फटकारने लगे। नौकरों ने चुप चाप पर्दों के पीछे से झाँक झाँक कर कॉल साहेब की यह दशा देखी परन्तु उन्हें सँभालने के लिए किसी का अंदर घुसने का साहस न हुआ।

इसी समय छोटी तथा बड़ी बहूरानी ने कोठी में प्रवेश किया और कॉल साहेब की यह दशा देखकर छोटी बहूरानी ने उन्हें इतने ज़ोर से फटकारा कि उनका बहकता हुआ मस्तिष्क ठिकाने पर आ गया और फिर बड़ी बहूरानी ने उन्हें सावधानी से पलंग पर लिटा दिया।

हड़ताल प्रारम्भ होने के पश्चात कॉल साहेब की यह परिस्थिति दूसरी बार हुई थी।

: १८ :

मिल की परिस्थिति दिन-प्रतिदिन गम्भीर होती जा रही थी। सरकारी आर्डर का माल समय पर दिया जा सकेगा इसकी सम्भावना नष्ट हो चुकी थी। 'सेठ क्लाथ मिल्ज़' के कर्मचारियों के साथ सहानुभूति प्रकट करने के लिए दिल्ली शहर में एक दिन पूरी हड़ताल हुई। सेठ भानामल जी के अन्य सब मिलों में भी ट्रेड यूनियनों ने एक दिन 'टाकेन स्ट्राइक' के लिए निश्चित किया और उस दिन सभी जगह एक बड़ी व्यवस्थित हड़ताल हुई। इस हड़ताल को देखकर सेठ जी के कारोबार का ढाँचा ही हिल उठा। सेठ भानामल जी परेशान थे और परेशान कॉल साहेब भी थे परन्तु अपनी ज़िद से विचलित हो जाना कॉल साहेब ने नहीं सीखा था। सेठ भानामल जी भी पिघलते जा रहे थे परन्तु कॉल साहेब टस से मस होने के लिए उद्यत नहीं थे। वह अपने स्थान पर भारी पत्थर की भांति पड़े थे और उन्हें चिन्ता नहीं थी कि चाहे उनके भार से नौका ही क्यों न डूब जाए।

आज रात्रि को कॉल साहेब ने बैठे-बैठे निश्चय किया कि चाहे मिल को आग लगाकर भस्म ही क्यों न कर देना पड़े परन्तु कर्मचारियों के वेतनों में वृद्धि नहीं की जाएगी। मिल जल जाएगा तब देखता हूँ कि यह कॉमरेड शामरेड़ कहाँ से रोटियाँ खायेंगे? कॉल को परेशानी नहीं होगी। उसने तो भगवान् की कृपा से इतना कमा लिया है कि जीवन भर बैठकर खा सकता है। कॉल साहेब ने...

अपने मन में यही धारणा निश्चित कर ली और फिर पागलों की भाँति खिल-खिलाकर एक बार इतने ज़ोर से हँस पड़े कि कोठी का समस्त वातावरण गूँज उठा और नौकरों में खलबली पड़ गई।

कॉल साहेब का यह ठहाका मारकर हँसना सुनकर छोटी बहूरानी, जो पास के ही कमरे में आराम कुर्सी पर लेटीं नौकरानी से अपने पैर के तलुवों पर बादाम रोगन की मालिश करा रही थीं, चप्पल पहिनकर इधर आ निकलीं और धीरे से मुस्कुरा कर पूछा, "इस प्रकार बुरी तरह हँसने का क्या कारण बन पड़ा? आख़िर मैं भी तो जानूँ।" और इतना कहकर सामने सोफ़े पर मुस्कुराती हुई जा बैठीं। अपनी बात का उत्तर पाने के लिए रानी ने अपने मद भरे नेत्र कॉल साहेब के विवर्ण मुख पर डाले और उत्तर की प्रत्याआशा की।

"तुम जान कर क्या करोगी रानी? बस मैंने आज हल खोज निकाला है इन बदमाशों को मज़ा चखाने का। अब यही होगा, मैं निश्चय कर चुका हूँ।" इतना कहकर कॉल साहेब ने माथे पर सलवट डाले हुए कमरे में तेज़ी से घूमना प्रारम्भ कर दिया। कॉल साहेब की गंजी चाँद के इधर उधर लम्बे-लम्बे बाल मुक्त होकर बिखर रहे थे और उनके मोटे-मोटे होंठ सर्प के फन के ऊपर नीचे के भाग की भांति तीव्र गति से फड़फड़ा रहे थे। मस्तक में बार-बार सिलवटें पड़ पड़कर खुल जाती थीं और चपटी नासिका से अन्दर और बाहर जाने वाले श्वासों के साथ नाक के अन्दर वाले बाल फरफराते हुए स्पष्ट दिखलाई दे रहे थे। कभी-कभी कॉल साहेब अपने ऊपर के सामने वाले दो दाँतों के नीचे के मोटे रोड को दबाने का भी प्रयत्न करते थे परन्तु चौकड़े के दो दाँत गिर जाने और बचे हुए दोनों के हिलने के कारण वह होंठ बराबर उनकी दाब से निकल भागता था।

छोटी बहूरानी कॉल साहेब को जब इस प्रकार घूमता हुआ देखती थीं तो उन्हें किसी न किसी सिनेमा के खेल की स्मृति हो आती थी और वह मन ही मन मुग्ध होकर कह उठती थीं कि वास्तव में उनका पति एक कलाकार है। कलाकार का अर्थ छोटी बहूरानी की डिक्शनरी (शब्द कोष) में वह व्यक्ति था जो इस संसार में उधारा उधारा होकर फिरे, उधारी उधारी बातें करे और कल्पना के परों पर उड़ानें लेकर संसार के साधारण जीवन से अपने सब सम्बन्ध विच्छेद कर ले।

अभी उस दिन इसी विषय को लेकर तो चौहान साहेब की कोठी पर कवि-सम्मेलन समाप्त होने पर उनकी कॉमरेड विमला से बहस छिड़ गई थी। दोनों के दृष्टिकोण में आकाश-पाताल का अन्तर था। छोटी बहूरानी कलाकार का कर्तव्य आकाश-कुसुम बीनना मानती थी और विमला का स्पष्ट मत था कि कलाकार का कर्त्तव्य अपनी अनुभूति द्वारा जीवन की गहराइयों को मापना है। कोरी कल्पना की उड़ानें भर-भरकर वह अपने उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर सकता और निरुद्देश्य कला को उसने कला नहीं माना। कला कला के लिए है यह सिद्धान्त कॉमरेड विमला की दृष्टि मे एक छिछोरा स्वार्थपूर्ण विचार था जिसका 'मानव-जीवन के उत्थान और पतन तथा जीवन की गहराइयो से कोई सम्बन्ध नहीं। उस दिन कॉमरेड विमला के अकाट्य प्रमाणो के सम्मुख यह सच है कि बहूरानी को चुप रह जाना पड़ा था परन्तु उनकी सुकुमार विचार धारा के अन्तर्गत कॉमरेड विमला का ठोस तर्क स्थान पाने मे असमर्थ था। उस समय चुप हो जाना और बात थी परन्तु विचारो का बदलना उसका फल नहीं हो सकता। कला की साक्षात प्रतिमा इस समय उनके समक्ष थी।

इस समय कॉल साहेब के इस प्रकार घूमने में भी एक कला थी और उसे निहार कर छोटी बहूरानी मन ही मन मुग्ध हो रही थीं। इस कला का लाभ केवल बहूरानी की क्षणिक प्रसन्नता के अतिरिक्त और कुछ नहीं था परन्तु छोटी बहूरानी की दृष्टि में उसका यही महत्व बहुत महत्वपूर्ण था। छोटी बहूरानी कभी कभी जब बहुत गम्भीर विचार-धारा के अन्दर पैठ जाती थीं तो उन्हे अपने ही अन्दर समस्त संसार के दर्शन होने लगते थे। अपनी प्रसन्नता मे ही उन्हें समस्त संसार हँसता खेलता दृष्टिगोचर होने लगता था। वह मुस्कुराती थी तो संसार मुस्कुराता था, वह नेत्र घुमाती थी तो संसार झूम उठता था, वह बोलती थी तो संसार में फूल बिछ जाते थे—यही तो कहा था एक दिन कॉल साहेब ने। परन्तु उन्हें दुःख था कि आजकल कॉल साहेब की उस कला में से कल्पना का लोप हो चुका था।

"मैं भी तो सुनूँ कि आपने क्या हल खोज निकाला है बदमाशों को ठीक करने का? और यह बदमाश हैं भी कौन तनिक यह भी तो जान लूँ।" मुस्कुराते हुए छोटी बहूरानी ने पूछा और उत्तर पाने की आशा से टकटकी लगाकर कॉल साहेब के मुख पर देखने लगी।

"क्या करोगी रानी! मैंने आजकल सब चिंताओं को अपने मस्तिष्क में बटोर कर तुम लोगों को स्वच्छंद जीवन की मुक्त तरंगों में बहने के लिए छोड़ दिया है। क्यों व्यर्थ अब यह सब कुछ जान कर तुम अपने मस्तिष्क का सम्बन्ध चिंताओं से जोड़ना चाहती हो?" गम्भीरतापूर्वक कॉल साहेब छोटी बहूरानी के सम्मुख खड़े होते हुए बोले और वह गूढ़ दृष्टि से छोटी बहूरानी के मुख पर देख कर फिर मुख पर मुस्कान ले आए।

कॉल साहेब की दृष्टि से दृष्टि मिला कर अपने नेत्रों का जादू कॉल साहेब पर डालने की कला में छोटी बहूरानी बारह वर्ष की आयु से ही प्रवीण थी। उस समय से ही जब कॉल साहेब अपनी सुसराल जाया करते थे तो छोटी बहूरानी अवकाश निकाल कर औरों की दृष्टि बचाती हुई कॉल साहेब पर अपना सौंदर्य-प्रदर्शन किया करती थीं और कॉल साहेब भी उसका उत्तर कभी मूक और कभी नयनों की भाषा से स्पष्ट देने में कभी नहीं चूकते थे। वह सरल भाव से दीनता के साथ कह ही डालते थे कि वह तो अपने जीवन का भविष्य बस केवल छोटी बहूरानी के ही कर कमलों में समर्पित करना चाहते हैं।

कॉल साहेब की बात सुन कर छोटी बहूरानी खड़ी होकर इठलाती हुई अपने कमरे में चली गईं, मानो उनका कर्तव्य पूरा हो गया।

बड़ी बहूरानी ने अपनी नौकरानी को भेज कर ही कॉल साहेब के इस प्रकार ज़ोर से हँसने का कारण पता लगा लिया था। एक बार पलंग पर लेट कर फिर किसी भी कार्य के लिए उठ कर इधर उधर जाना बड़ी बहूरानी के सामर्थ्य की बात नहीं थी। पलंग पर बैठे बैठे ही वह सब सूचनाएँ प्राप्त कर लेती थीं। फिर यह कॉल साहेब का इस प्रकार हँसना तो अब उनकी नित्य की बान बन चुका था। इसके लिए तो नौकरानी को भेजना भी खानापुरी के अतिरिक्त और कुछ नहीं था क्योंकि नौकरानी भी द्वार के शीशों में से ही झाँक कर सब सूचनायें बड़ी बहूरानी के पास पहुँचा देती थीं।

छोटी बहूरानी इठलाती हुई चली तो गईं परन्तु न जाने फिर क्या विचार उनके मस्तिष्क में आया और वह लौट कर कॉल साहेब से बोलीं, "देखिए! यदि आप वास्तव में मिल को चलाना ही चाहते हैं तो कॉमरेड विमला से बात चीत कीजिए और अपने इस कार्य को करने में यदि आप मेरा या कान्ता बहिन का कुछ सहयोग चाहें तो ले सकते हैं।"

कॉल साहेब ने दीन सी दृष्टि से छोटी बहूरानी के मुख पर देखा और उनका उत्साह भरा दिल एक दम बुझ गया। उन्हें प्रतीत हुआ कि जिस दिशा में वह सोच रहे हैं उस दिशा में उनकी छोटी बहूरानी भी नहीं सोच सकतीं। परन्तु यह कर्मचारी वर्ग और पूँजीपतियों की घातें प्रतिघातें हैं जिनको समझना छोटी बहूरानी की सामर्थ्य से बाहर की बात है। छोटी बहूरानी को क्या पता कि कॉमरेड विमला क्या है? हम व्यक्ति को उसकी शक्ल सूरत और ज़बान की लपालप बातों से नहीं परखते। उसके गुण देखते हैं और उन्हें पहिचानते हैं। हो सकता है कि उस कवि-सम्मेलन वाले दिन यह हमारी छोटी बहूरानी कॉमरेड विमला के चक्कर में फँस गई हों; बस उसी दिन से यह उस पर लट्टू हैं। न जाने उसे क्या समझने लगी हैं। उसकी बातों की लपालप का इन पर भी प्रभाव पड़ गया है।

कॉल साहेब छोटी बहूरानी के मुख पर इस समय एक गूढ़ दृष्टि से देख रहे थे और देखते देखते एक दम ही मुस्कुरा उठे। उनके मन में विचार आया कि देखो नारी का यह भी एक विचित्र रूप है। कॉमरेड विमला के साथ भी सहानुभूति है और पैर के तलुवों पर बादाम रोग़न लगाने के लिए दो दो नौक-रानियाँ भी चाहिएँ! भला कहीं मेल सम्भव है इन दो बातों का? और अन्त में कॉल साहेब ने छोटी बहूरानी के पास पहुँच कर उनका हाथ अपने हाथ में लेते हुए धीरे से कहा, "तुम बहुत भोली हो छोटी बहू रानी! मिल को चलना होगा तो चल जाएगी; बन्द रहना होगा तो बन्द रहेगी परन्तु तुम्हारे ठाट बाट में कोई कमी नहीं आ सकती" और इतना कहते हुए वह छोटी बहूरानी से सट कर बैठ गए। इस प्रकार प्रेमपूर्वक में बैठना भी कॉल साहेब को आज कई सप्ताह बाद प्राप्त हुआ था। वह भावुकता में आकर एक क्षण मौन होकर चुपचाप बैठ गए और चाहते थे कि कुछ देर इसी प्रकार छोटी बहूरानी से सटे हुए बैठे रहें।

छोटी बहूरानी ने कॉल साहेब के इन शब्दों को सुनकर हृदय में क्या अनुभव किया यह उनके मुख के हाव भावों से प्रदर्शित न हो सका परन्तु एक तीखे कठोर सत्य का व्यंग्य-बाण जो कॉल साहेब ने छोड़ दिया था उससे छोटी बहूरानी अभी तक तिलमिला रही थीं और वह कॉल साहेब से तनिक एक ओर को खिसक कर कह उठीं, "देखिए! आप मेरे लिए चाहे जो भी कहें, परन्तु

कॉम्युनिज़्म आ रहा है और आकर रहेगा भारत में. उस कॉम्यूनिज्म का क्या रूप होगा यह कहा नहीं जा सकता।" इस समय छोटी बहूरानी के कोमल मुख पर हल्के से क्रोध की रेखाएँ यकायक विचित्र सौंदर्य के साथ खिल उठीं।

"कहा क्यों नहीं जा सकता ?" कड़क कर कॉल साहेब बोले, "भारत में कॉम्यूनिज्म नहीं फैल सकता। यहाँ के कॉम्यूनिज्म को हमारे डिक्टेशन (कहने) पर चलना होगा, हमारे संकेतों पर चलना होगा।" और वह कभी अकड़ कर छोटी बहूरानी से तनिक हट कर बैठ गए।

"यह आपका भ्रम है और मैं आपको यह भी बतला दूँ कि मैंने परसों से अपने तलुओं की मालिश बन्द करा दी है।" छोटी बहूरानी ने उसी प्रकार गम्भीर स्वर में स्वाभिमान को बल देते हुए कहा।

"तब फिर यह अभी नौकरानी क्या कर रही थीं ?" मुस्कुराते हुए कॉल साहेब ने छोटी बहूरानी के कंधे पर हलका सा हाथ रखते हुए पूछा।

"फिर वही बात। इतने दिन की बान आप चाहते हैं कि एक क्षण में छूट जाए। यह आपका भ्रम है। हर चीज़ में समय लगता है। कल मालिश न कराने से आज तलुवे मसमसाने लगे थे। कल फिर नहीं मसमसायेंगे और बस इस प्रकार एक दिन वह आएगा जब यह बान पूरी तरह छूट जाएगी।" उसी गम्भीरता के साथ कॉल साहेब का हाथ अपने कंधे से उतारते हुए छोटी बहूरानी ने त्यौरी चढ़ाकर कहा।

"तब तो तुम्हारा जीवन भी कॉम्यूनिज़्म की तरफ़ ही चल रहा है ?" कॉल साहेब ने व्यंग्य बाण छोड़ते हुए पूछा।

"आप ऐसा ही समझ लीजिए।" गम्भीरता पूर्वक छोटी बहूरानी ने उत्तर दिया। कॉल साहेब कुछ बोले नहीं केवल अपनी गंजी खोपड़ी पर हाथ फेर लिया और बाल उड़े हुए स्थान पर उँगलियों से बाल किरोल कर जमाते हुए बोले "छोटी बहूरानी ! तुम बड़ी भोली हो।" और इतना कहते हुए कॉल साहेब ने भावुकता में उनकी ठोड़ी को एक उँगली से ऊपर करते हुए नयनों से नयन मिला कर कहा, "तुम्हारे इसी भोलेपन ने तो मेरे हृदय का सौदा कर लिया था एक दिन।" और नयनों की मादक मदिरा उड़ेल कर छोटी बहूरानी भी मौन हो गईं।

आज कई सप्ताह पश्चात यह वातावरण अपने चारों ओर कॉल साहेब उपस्थित कर पाए थे। छोटी बहूरानी इस समय यह समझने में असमर्थ हो उठी

कि वास्तव में उन्होंने अपने तलुवों की मालिश बन्द कराकर दो नौकरानियों को काम से हटा दिया, यह अच्छा किया या बुरा। उनकी यह काम्यूनिज़्म की ओर प्रगति मानव समाज के हित में हुई अथवा अहित में।

छोटी बहूरानी कुछ देर तो मौन रहीं परन्तु उन्हें तुरन्त ही कल कान्ता की कोठी पर विमला द्वारा भारत और भारत की समस्याओं के भविष्य पर प्रकट किए हुए विचारों का स्मरण हो आया और वह कॉल साहेब के पास से उठकर सामने वाली कुर्सी पर बैठती हुई बोली, "देखिए! भारत अब उन्नति कर रहा है और संसार के अन्य देशों में इसको समानता का अधिकार प्राप्त हो चुका है, यह आप मानते हैं?"

"अवश्य मानता हूँ और यह भी मानता हूँ कि यदि कहीं पर नहीं मिला है तो वह बहुत शीघ्र मिल जाएगा। इतना तो अब सम्भव हो ही नहीं सकता कि भारत का कोई व्यक्ति संसार के किसी कोने में जाकर दास कहला सके और उसे समानता का अधिकार प्राप्त न हो।" कॉल साहेब छोटी रानी की बात में बात मिलाकर मुस्कुराते हुए बोले।

"अब यदि आप यहाँ तक मानते हैं तो इसे नियम मानकर सिद्धान्त रूप में ग्रहण कर लीजिए। जब सब देशों को समानता का अधिकार मिल जाना सम्भव है तो सब व्यक्तियों को भी समान अधिकार अवश्य मिलेंगे और अधिकारों का कम अथवा आधिक्य साधनों के आधार पर न होकर योग्यता के आधार पर होगा।" छोटी रानी ने कहा।

"आज तो तुम कॉमरेड विमला का व्याख्यान रट लाई हो रानी!" मुस्कुराते हुए कॉल साहेब बोले। कॉल साहेब ऊपर ही ऊपर मुस्कुरा अवश्य रहे थे परन्तु उन्हें इस समय विमला पर न जाने कितना क्रोध आ रहा था। वह कॉमरेड विमला को उस नागिन के समान समझ रहे थे कि जिसके विष का प्रभाव काटने से नहीं केवल छूने और देखने से ही हो जाता है। विमला ने अपने विचारों का प्रभाव कॉल साहेब की छोटी बहूरानी तक पर डालकर तो मानो उनका जीना ही दूभर कर दिया। आज कॉल साहेब की वही बहूरानी जो एक दिन उनके गुणों पर मुग्ध होकर उनसे विवाह करने को उद्यत हुई थीं वही उनसे यह कह रही थीं कि आगामी भारत में साधनों का महत्व न होकर गुणों का महत्व रहेगा। इसका अर्थ यह हुआ कि कॉल साहेब का जो कुछ भी आज महत्व है वह सब उनके

साधनों के कारण है योग्यता या गुणों के कारण नहीं। यह बात कॉल साहेब मानने के लिए कदापि तय्यार नहीं थे।

कॉल साहेब की ही धर्मपत्नी से कॉल साहेब को ही मूर्ख कहलवाकर इस तरह कॉमरेड विमला ने कॉल साहेब पर वह आघात किया कि जिसके घाव की कसक को वह एक क्षण के लिए भी भुला नहीं सकते थे। इसी समय छोटी बहूरानी ने कॉल साहेब को मौन देखकर मुस्कुराते हुए कहा, "अब चुप क्यों हो गए आप ? जब मेरे प्रश्न का कोई उत्तर आपको न सूझा तो मेरे शब्द कॉमरेड विमला का व्याख्यान बन गए। मैं पूछती हूँ कि क्या आप मेरे इस विचार से सहमत नहीं ? और यदि सहमत हैं तो क्यों नहीं आप कॉमरेड विमला से मिलकर इस चलने वाली हड़ताल को समाप्त कर डालते हैं ? मज़दूर तो बेचारे आपके दफ्तर पर अधिकार करना नहीं चाहते। मिल के अनेकों ख़र्चों में कमी करके उनके वेतनों में कुछ वृद्धि की जा सकती है।"

"तुमने तो व्यर्थ की बातें करनी प्रारम्भ कर दीं रानी ! इन बातों का मैं नहीं समझता कि तुमसे किसी भी प्रकार का कोई सम्बन्ध है। तुम्हें अपने मस्तिष्क को इन बातों से मुक्त रखना चाहिए और अनावश्यक सोच विचार में पड़कर अपना स्वास्थ्य ख़राब नहीं करना चाहिए।" कुछ झुँझलाकर कॉल साहेब बोले।

छोटी रानी कॉल साहेब की यह बात सुनकर बहुत बिगड़ीं और कड़क कर बोलीं, "मैं व्यर्थ की बातें कर रही हूँ और इन बातों से मेरा स्वास्थ्य ख़राब होता है परन्तु आप जो सुबह से शाम तक बैठक की छत पर आंखें फैलाए हाथों और हाथों की उँगलियों को लचकाते हुए चक्कर लगाते हैं उससे सम्भवतः आपका स्वास्थ्य सुधरता है। मैं भी देखती हूँ कि किस तरह आप अब आकाश से बातें करते हुए बैठक में घूमते हैं ? आपकी जीवन के प्रति इस उदासीनता ने हमारा जीवन ही निरर्थक कर दिया है। यदि विवाह से पूर्व मुझे आपके इस पागलपन का पता होता तो कभी आपसे विवाह न करती।"

"मेरा पागलपन ! तुम क्या कह रही हो छोटी बहूरानी ?" परेशान होकर कॉल साहेब ने छोटी रानी के क्रोध भरे मुख पर करुण नेत्रों से देखकर कहा।

"हाँ आपका पागल पन। जिस प्रकार का जीवन आप आजकल व्यतीत कर रहे हैं वह या तो किसी पागल का हो सकता है या किसी फ़िलासफ़र का। फ़िलासफ़र आप हैं नहीं; तब फिर मैं आपको क्या कहूँ ?"

"ठीक है, तुम्हारी जो इच्छा हो तुम वही कहो रानी ! मैं आज समझ गया कि मेरा संसार में अब कोई नहीं है। परन्तु मैं जो निश्चय कर चुका हूँ उससे पीछे हटने वाला नहीं।" और इतना कहकर कॉल साहिब बहुत गम्भीर हो उठे।

इसी समय बड़ी बहूरानी वहाँ पर आ गईं और वह छोटी बहूरानी को अपने साथ ले गईं। कॉल साहिब अकेले अपने विचारों से झगड़ने और मस्तिष्क का व्यायाम करने के लिए बैठक में घूमते हुए रह गए। दोनों बहूरानियों ने अब और अधिक अपने आराम के समय को यहाँ नष्ट करना उचित नहीं समझा।

: १९ :

कॉमरेड विमला ने इस बार दृढ़ निश्चय कर लिया था कि सेठ भानामल जी और कॉल साहेब चाहे कितनी भी चिकनी चुपड़ी बातें क्यों न बनाएँ और ज़बानी आश्वासन क्यों न दें, वह अपने संकल्प से फिसलने वाली नहीं। कॉल साहेब ने कितनी ही बार कॉमरेड विमला पर बातों बातों में छा जाना चाहा और देश तथा राष्ट्र-हित के गूढ़ प्रश्नों को सम्मुख रखकर कर्तव्य की कसौटी पर उसे पटख़ दिया परन्तु सब व्यर्थ; कॉमरेड विमला टस से मस न हो सकी। वह स्वयँ अपने ही विचारों में बहुत दृढ़ थी और उसके पीछे खड़ी थी एक स्पात की विशाल दीवार, कॉमरेड अशफ़ाक के रूप में, जिसने जीवन में मिट जाना सीखा था, हट जाना नहीं। कॉल साहेब का मज़दूर बनने वाला ढकोसला फूट चुका था और आज विमला के सम्मुख स्वयँ सेठ जी के मुख से यह शब्द निकल गए "कॉल साहेब झुकना नहीं जानते। वह अपने संकल्प पर अडिग रहेंगे।"

"तो झुकना कौन जानता है?" कड़क कर कॉमरेड विमला ने कहा। "अपने संकल्प पर अडिग रहना कॉल साहेब से अधिक हमें आता है। जब वह स्वार्थ के बल पर अपने संकल्प को अडिग रख सकते हैं तो क्या हम निस्वार्थ भाव से कार्य करते हुए भी अपने कर्तव्य में स्थिरता नहीं ला सकते?" और

इतना कहकर कॉमरेड विमला का मुख तमतमा उठा। उसके छरहरे बदन में विद्युत की कम्पना खेल उठी।

"तुम्हें झुकना होगा।" सेठ जी गम्भीरतापूर्वक स्थिरता के साथ बोले और उनके कथन में इस समय इतना गहरापन था कि कॉमरेड विमला के अतिरिक्त कोई भी अन्य व्यक्ति होता तो दब जाता। "मैं कर्त्तव्य की सचाई पर विश्वास रखने वाली एक वह मज़दूरिन हूँ सेठ जी! कि जिसके जीवन की महत्वाकाँक्षाएँ ही कर्त्तव्य की सफलता हैं। मुझे झुकाने में आपके स्वार्थी मदारी मैनेजर साहेब सफल नहीं हो सकेंगे।" बहुत गम्भीरतापूर्वक कॉमरेड विमला ने उत्तर दिया और कॉमरेड विमला के इस कथन में सेठ भानामल जी के कथन से कहीं अधिक गाम्भीर्य था, कर्त्तव्य की दृढ़ता थी।

"कॉमरेड विमला! मैं देश भक्ति के नाम को धब्बा नहीं लगाना चाहता। मैं नहीं चाहता कि उस अँगरेज़ को बुलाकर तुम्हारा कार्य उसे सौंप दूँ जिसे बुलाने के लिए मुझ पर कॉल साहेब एक लम्बे काल से जोर दे रहे हैं। परन्तु विवशता की ओर अब तुम मुझे ले जाना चाहती हो। यदि यही तुम्हारे उद्देश्य की सफलता होगी तो मैं लाचार हूँगा।" पेट पर हाथ फेरते हुए मलमल के कुर्ते में भी गर्मी अनुभव करके सेठ जी ने स्थिर भाव से कहा और फिर गाऊ तकिए का आश्रय लेकर पीछे को ढुलक गए।

"यदि यही आपकी देश भक्ति का मापदण्ड है तो आप उस अँगरेज़ को ही नहीं जिसे चाहें उसे बुला सकते हैं। विमला आपके सम्मुख इस नौकरी के लिए गिड़गिड़ाने वाली नहीं। विमला ने जो कुछ भी इस मिल के लिए किया है वह आपके लिए या मैनेजर साहेब के लिए नहीं किया। वह राष्ट्र के लिए किया है। यह मिल राष्ट्र का है और राष्ट्र हमारा है। आप लोग इस मिल के चौकीदार हैं। यह याद रहे कि जिस दिन भी आप अपने कर्तव्य से हटकर स्वार्थ की ओर पग बढ़ाने का प्रयत्न करेंगे उसी दिन राष्ट आपके हाथों से मिल के द्वार की कुंजियाँ छीन लेगा।" मुस्कुराते हुए कॉमरेड विमला बोली और उसने यह बात इतनी सरलता पूर्वक तथा निश्चित धारणा के साथ कही कि सेठ भानामल जी का भारी बदन एक दम सिहर उठा।

"कुंजियाँ छीन लेगा!" और सेठ जी खिलखिला कर ज़ोर से हँस पड़े। "तुम बच्ची हो अभी विमला! हम राष्ट्र के निर्माता हैं। हम राष्ट्र को खरीद

सकते हैं, बेच सकते हैं, गिरवीं रख सकते हैं।" और गर्व के साथ इतना कहकर विमला के मुख से निकलने वाले शब्दों को सुनने के लिए सेठ जी ने कान उसकी ओर लगा दिए।

"यह आपकी मूर्खता है।" बहुत गम्भीरता पूर्वक विमला ने कहा और सेठ भानामल जी के पैरों के नीचे से एक दम पृथ्वी खिसक गई। सेठ भानामल जी अधर के अधर में खड़े खड़े काँपने लगे। उनके मस्तिष्क में नहीं आ रहा था कि भगवान! यह सब वह क्या सुन रहे हैं? क्या उनका कोई कर्मचारी कभी इस प्रकार भी उनके साथ व्यवहार कर सकता है? उन्हें मूर्ख कह कर इस प्रकार उनके सामने खड़ा रह सकता है? क्या कलयुग के इस अन्तिम चरण में मज़दूर का साहस इस दशा पहुँच जाएगा?

इतना कहकर कॉमरेड विमला बिना नमस्कार किए ही अपने मकान पर चली गई। विमला को आज क्रोध आ रहा था सेठ भानामल जी के उन शब्दों पर कि 'वह राष्ट्र को ख़रीद और बेच सकते हैं, गिरवीं रख सकते हैं।' इसका अर्थ यह हुआ कि राष्ट्र सेठ भानामल जी के लिए भेड़ और बकरियों के समुदाय से अधिक और कुछ नहीं है। परन्तु यह सब उनके मस्तिष्क का भ्रम मात्र है, और कुछ नहीं। भारत राष्ट्र अब अपने अन्दर वह शक्ति पैदा करता जा रहा है कि उसका मूल्य चुकाना एक सेठ भानामल जी तो क्या भारत के सब सेठ लोग मिलकर भी न चुका पायेंगे। राष्ट्र को अपना दास बनाने वाली इनकी पूंजीवादी मनोवृत्ति को राष्ट्र की प्रगति के सम्मुख घुटने टेक कर झुक जाना होगा।

कॉमरेड विमला अपने मज़दूर भाइयों के मकानों पर चक्कर लगाती हुई आ रही थी। उसका तमाम बदन चूर चूर हो रहा था। दिन प्रति दिन पैसे का प्रश्न अपना प्रखर रूप धारण करता जा रहा था। मज़दूरों की दशा बिगड़ने लगी थी और उनमें कमज़ोरी के चिह्न दिखलाई देने लगे थे। मिल मालिकों की ओर से मज़दूरों को प्रलोभन दिखला दिखला कर हड़ताल तोड़ने के लिए जाल रचा जा रहा था। इसी समय दूसरी ओर से कॉमरेड अशफ़ाक साइकिल पर लपका हुआ आता दिखलाई दिया। विमला का मकान बिल्कुल सामने ही था। अशफ़ाक ने साइकिल से उतर कर भर्राई सी आवाज़ में कहा "विमला!" इतना कहकर वह शान्त हो गया। अशफाक का सिर चकरा रहा था और पैरों में लड़खड़ाहट थी।

"अशफ़ाक ! परन्तु तुम इतने परेशान से क्यों दीख रहे हो ? अम्मा तो अच्छी हैं न ? मैं अभी उधर ही आने को थी। कालू की लड़की बीमार थी, झुम्मन की बहन को बुखार था, रमनी की स्त्री के बच्चा होने वाला था और बिलारी की माँ तो मर ही गई बेचारी······"

"माँ मर गई विमला !" और इतना कहकर कॉमरेड अशफ़ाक माथे पर हाथ रखता हुआ साइकिल छोड़कर पृथ्वी पर बैठ गया। कॉमरेड विमला ने अनुभव किया कि हिमालय की चोटी टूटकर पृथ्वी पर गिर पड़ी।

"माँ मर गई।" बहुत धीरे से कॉमरेड विमला ने कहा। कॉमरेड विमला के नेत्र भर आए परन्तु शीघ्र ही वह जेब से रूमाल निकाल कर आँखें पोंछते हुए तनिक गम्भीर स्वर में बोली, "खड़े हो जाओ अशफ़ाक ! आज यह रोने का समय नहीं है। हमारा इस समय का रोना हमारे शत्रुओं के हृदयों में साहस का संचार करेगा, उन्हें बल देगा।" और इतना कह कर धीरे से अशफ़ाक का हाथ पकड़ते हुए कॉमरेड विमला ने उसे खड़ा कर लिया। फिर विमला ने तुरन्त मकान के अन्दर जाकर अपना ट्रंक खोला और उसमे से एक रेशमी साड़ी तथा एक चादर बाहर निकाल ली और दोनों को एक थैले में रख कर अशफ़ाक से साइ-किल चलाने के लिए कहा।

अशफ़ाक किसी प्रकार विमला को साइकिल के डंडे पर बिठला कर स्वयँ सवार हो गया। अभी साइकिल के दो ही पैडिल मारे थे कि सामने कॉल साहेब की कार आ गई। कॉल साहेब ने उन्हें रोक कर संवेदना प्रकट करते हुए कहा "आओ मैं आप लोगों को कार में बिठला कर ले चलूँ।" साथ ही कुछ रुपया भी देना चाहा परन्तु कॉमरेड अशफ़ाक ने आँखें लाल करते हुए कड़क कर कहा, "नीच ! आँखों के सामने से दूर हट जा ! तू ही वह काला नाग है जो मेरी माँ को डस गया।" और इतना कह कर क्रोध से अशफ़ाक का मुख तमतमा उठा।

"मैं डस गया !" धीमे स्वर में कॉल साहेब बोले। "यह तुम्हारा भ्रम है अशफ़ाक ! हड़ताल को······"

"आज हमारे पास समय नहीं है, आप फिर किसी समय पधारिए हड़ताल के विषय में बातें करने के लिए।" और इतना सरलता पूर्वक कह कर विमला ने अशफ़ाक को साइकिल चलाने के लिए कहा।

कॉमरेड अशफ़ाक साइकिल पर ज़ोर से पैडिल मार कर आगे बढ़ गया और कॉल साहेब उसी प्रकार अपनी कार के पास खड़े खड़े न जाने क्या क्या सोचते रहे ? फिर अचानक उन्हें चौहान साहेब का ध्यान हो आया और वह कार पर बैठ कर उनकी कोठी पहुँच गए । चौहान साहेब ठाट के साथ सोफ़े पर बैठे ताश खेल रहे थे। उनके सामने एक शीशे की सुन्दर गोल मेज़ पड़ी थी और उसके सामने सोफ़े पर बैठी थी कान्ता। मेज़ के एक ओर थीं छोटी बहूरानी और दूसरी ओर थीं बड़ी बहूरानी। छोटी बड़ी बहूरानियों को हार पर हार हो रही थीं या यों कहो कि कॉल साहेब का परिवार बराबर पिट रहा था और चोट पर चोट खा रहा था।

यह नक्शा देख कर कॉल साहेब के तन बदन में आग लग गई। क्या उनकी दोनों बहूरानियाँ इस प्रकार चौहान साहेब के मनोविनोद की साधन मात्र हैं ? नहीं, यह कदापि नहीं होगा। वह इसे कभी सहन नहीं कर सकते, एक से लाख तक सहन नहीं कर सकते।

"आइए कॉल साहेब !" बैठे बैठे ही चौहान साहेब ने सरल मुस्कान के साथ मूँछों पर हाथ फेरते हुए कहा और फिर हारती हुई उनकी दोनों बहूरानियों की ओर संकेत करके बोले, "तनिक सँभालिए अपनी बहूरानियों को। देखिये कैसी बेचारी मात पर मात खाती जा रही हैं।" और यह व्यंग्य बाण छोड़ कर चौहान साहेब मस्ती में मुस्कुरा दिए।

मात की बात कॉल साहेब को और भी असहनीय हो उठी और वह कड़क कर बोले, "चौहान साहेब ! ताश खेलना बेकार आदमियों को ही शोभा देता है। हम जैसे चौबीस घंटे अनेकों कार्यों में व्यस्त रहने वाले कर्मचारियों के पास ताश खेलने के लिए अवकाश कहाँ ?"

कॉल साहेब की यह बात सुनकर तालियाँ पीट सबने ज़ोर से ठहाका मारा और खिलखिला कर हँस पड़े।

"आप कर्मचारी ! खूब कहा जीजा जी आपने।" मुस्कुराते हुए कान्ता इठला कर बोली। "यदि भारत का कर्मचारी आप जैसा हो जाए तो अमरीका को हमारे तलुवे चाटने पड़ें।" और इतना कहकर कान्ता ने ताश मेज़ पर पटक कर सोफ़े की पीठ से कमर लगा ली। आज कान्ता के माथे की बिंदिया वास्तव में ग़ज़ब ढहा रही थी।

"कान्ता ! प्रत्येक काम करने वाला व्यक्ति मज़दूर है।........." कॉल साहेब कह ही रहे थे कि छोटी बहूरानी बीच ही में रोक कर बोलीं, "बस रहने दीजिए इन झमेलेबाज़ी की बातों को। मज़दूर और पूँजी की ही यदि बातें आपको करनी हैं तो कॉमरेड विमला का द्वार चौबीस घंटे खुला रहता है। यहाँ आकर व्यर्थ आपने हमारा समय नष्ट करने की क्यों ठानी है ?"

"कॉमरेड विमला ! किसका नाम ले दिया तुमने भी जीजी !" मुस्कुरा-कर आँखों की पुतलियों को विद्युत गति से घुमाते हुए कान्ता ने इठला कर अपने दोनों हाथ कुर्सी के दोनों डंडों पर रखकर कमर पीछे तकिए से तनिक ऊपर करते हुए कहा, "कॉमरेड विमला के सामने तो जीजा जी की दशा चूहे और बिल्ली जैसी हो जाती है। और यदि इसी बीच में कहीं से कॉमरेड अशफ़ाक आ टपकें तब तो इन्हे सामने बुलडॉग खड़ा दिखाई देने लगता है।" और इतना कहकर वह ज़ोर से खिल खिलाकर हँस पड़ी। छोटी और बड़ी बहूरानियों ने भी कान्ता का साथ दिया परन्तु चौहान साहेब ने मुस्कुराते हुए भी गम्भीर मुद्रा बना ली।

कॉल साहेब की मुख-मुद्रा भी गम्भीर हो उठी परन्तु उसपर तनिक भी ध्यान न देते हुए उपस्थित सब सदस्य हथेलियाँ चटखा कर फिर इतने ज़ोर से हँस पड़े कि बाहर के नौकरों को भी हँसी का कारण जानने के लिए एक आँख से पर्दों के अन्दर झाँकना पड़ा। कमरे का वातावरण ही बदल गया। जहाँ अभी ताश के पत्तों की चटाचट दिखलाई दे रही थी वहाँ कामनियों का हास्य बन्धन तोड़ कर वह निकला और चौहान साहेब का गम्भीर तथा मोटा स्वर भी कभी-कभी उनका साथ देने लग जाता था।

"बैठिए न कॉल साहेब ! आप खड़े कैसे रह गए ? कान्ता के कहने पर आप क्रोध नहीं कर सकते यह मैं जानता हूँ; क्योंकि जो कुछ भी यह कहेंगी वह सब आप से ही प्राप्त की हुई शिक्षा है।" चौहान साहेब ने कटुव्यंग्य के साथ मुस्कुराते हुए कहा।

जब इस पर भी कॉल साहेब कुछ न बोले और न बैठे ही तो वातावरण में कुछ गम्भीरता आ गई। फिर धीरे से कॉल साहेब चौहान साहेब से बोले, "एक मिनट आपको कष्ट देने के लिए आया हूँ, तनिक बाहर आकर मेरी बात सुन लीजिए।" यह बात भी कॉल साहेब ने गम्भीरतापूर्वक ही कही और उनकी गम्भीरता उनके मुख पर प्रतिबिम्बित हो उठी।

चौहान साहेब खड़े होकर बाहर चले गए और वहाँ वरांडे में दोनों ने पाँच मिनट खड़े खड़े ही कुछ बातें कीं। बातें करके चौहान साहेब अन्दर चले आए परन्तु मुख-मुद्रा उनकी भी कुछ गम्भीर बनी हुई थी। कुछ कहा उन्होंने नहीं पर ताश का खेल बन्द हो गया। कान्ता अपनी दोनों जीजियों को लेकर दूसरे कमरे में चली गई और चौहान साहेब कॉल साहेब की संकुचित मनोवृत्ति पर बैठकर विचार करने लगे। वह समझ नहीं सके कि अब आखिर होने क्या वाला है?

इसी समय उनके एक नौकर ने कमरे के अन्दर आकर कॉमरेड अशफ़ाक की माँ के मर जाने की सूचना दी और चौहान साहेब तुरन्त कार पर बैठकर उस ओर प्रस्थान कर गए। कॉल साहेब तो बाहर वरांडे से पहिले ही विदा हो चुके थे परन्तु कॉल साहेब ने चौहान साहेब को कॉमरेड अशफ़ाक की माँ के मर जाने के विषय में कोई सूचना नहीं दी।

कान्ता इठलाती हुई कमरे में घूमने लगी और दोनों बहिनें सोफ़े पर बैठी थीं। कान्ता का जीवन अब राजनीति के क्षेत्र में अवतीर्ण हो चुका था। चौहान साहेब के सहयोग से उनकी प्रखर बुद्धि को प्रोत्साहन मिला और कभी-कभी वह चौहान साहेब को भी ऐसे गम्भीर विषयों में परामर्श दे डालती थी कि चौहान साहेब उसे सुनकर दंग रह जाते थे। कान्ता के जीवन में सुख, वैभव, बड़प्पन और ख्याति के लिए जहाँ एक ओर आकर्षण था वहाँ किसी के दुख दर्द पर द्रवित होने वाला हृदय भी उसने पाया था। अपनी दोनों बड़ी बहिनों की भांति किसी दुखी पर केवल दो सहानुभूति के शब्दों की वर्षा करके ही उसकी सहानुभूति की इति श्री नहीं हो जाती थी वरन् वह इससे आगे बढ़ने का भी प्रयत्न करती थी और उसकी इसी प्रगति को कभी-कभी चौहान साहेब उसकी 'काम्यूनिस्ट मनोवृत्ति' कहकर पुकारने लगते थे।

'काम्यूनिस्ट मनोवृत्ति' मेरी है—यही तो कहते हैं न आप—कमरे की छत पर देखते हुए कान्ता ने स्वयँ से कहा—'परन्तु क्या मैं पूछ सकती हूँ कि आपका इस प्रकार कॉमरेड अशफ़ाक की माता की मृत्यु का समाचार पाकर छटपटाना और उड़ जाना कौनसी मनोवृत्ति है? शायद इसे आप मित्रता कहेंगे,' मानवता कहेंगे...तो मेरा द्रवित होना मानवता क्यों नहीं? क्यों नहीं हम संसार के प्रत्येक मानव को दूसरे का मित्र कह सकते? और फिर एकदम कान्ता को आप

ही आप हँसी आ गई। वह विचार न सकी कि कॉल साहेब + चौहान साहेब, कॉल साहेब — चौहान साहेब, कॉल साहेब × चौहान साहेब तथा कॉल साहेब ÷ चौहान साहेब यह सब क्या बना ? संसार के विभिन्न चरित्रों की मीमाँसा के लिए इसी प्रकार कसौटियाँ तय्यार की जा सकती हैं और उसे सन्ध्या को चौहान साहेब के लौटने पर उनसे बातें करने का विषय मिल गया।

"क्या हवा ही हवा में बातें कर रही हो कान्ता !" छोटी रानी ने मुस्कुराते हुए कहा "क्या चौहान साहेब के चले जाने से मन छटपटा रहा है ?"

"मन छटपटाने की बात नहीं है जीजी ! परन्तु वातावरण कुछ ऐसा बनता जा रहा है कि जीवन कभी कभी व्यर्थ की परेशानियों द्वारा अपनी ओर घसीट लिया जाता है।" गम्भीरता पूर्वक कान्ता ने उत्तर दिया।

छोटी बहूरानी को कॉल साहेब के कल के शब्द स्मरण हो आए और वह तुरन्त उभर कर बोलीं, "ठीक यही बात कल तुम्हारे जीजा जी कह रहे थे कान्ता ! उस समय उनके कहने का मैं बुरा मान गई थी परन्तु मैंने जब बाद में विचार किया तो वास्तव में इन व्यर्थ की परेशानियों में अपने मस्तिष्क को फँसाना मैंने व्यर्थ समझा।" और इतना कह कर वह बहुत गम्भीर हो उठीं मानो उन्होंने कान्ता पर किसी विशेष महत्वपूर्ण रहस्य का उद्घाटन कर दिया।

"परन्तु क्या परेशानियों में फँसना या उनसे निकल भागना भी आप अपने हाथ की बात समझती हैं जीजी ! यदि ऐसा ही हो तो संसार में कोई भी व्यक्ति परेशान होना पसंद न करे।" कान्ता बोली।

"यह तुम्हारा मत ग़लत है कान्ता ! तुम नहीं जानतीं कि कुछ लोगों को नित्य नई परेशानियाँ मोल लेने में ही आनन्द आता है, यह उनके जीवन का कार्यक्रम है। जिस प्रकार लकड़हारा लकड़ी काटता है, कुम्हार बर्त्तन बनाता है, किसान खेती करता है, सेठ भानामल जी तीतर लड़ाते हैं, उसी प्रकार तुम्हारे जीजा जी को परेशानियों में सिर फँसाने में आनन्द आता है।" और यह कह वह बड़ी बहूरानी की ओर देख कर "क्यों जीजी ! मैं सत्य कह रही हूं न !" कहती हुई खिलखिला कर हँस पड़ीं।

इतनी ज़ोर से छोटी रानी को हँसते कान्ता ने कभी नहीं देखा था इसी लिए आज यह नई हँसी सुन कर कान्ता सहम गई और छोटी रानी की हँसी का वेग कुछ कम होने पर पूछा, "सेठ जी तीतर लड़ाते हैं, यह आपने क्या कहा जीजी ?

तीतर तो सुना है लखनऊ के नवाब लोग लड़ाया करते थे। बड़े दिलदार लोग होते थे वह भी। राजपाट छोड़ कर और कुछ नहीं सूझा तो तीतर और बटेरे ही लड़ाने लगे। परन्तु सेठ भानामल जी को यह शौक़ कब से लगा? उन लोगों ने तीतर और बटेर लड़ाकर राजपाट खो दिए और इन्हें बेचारों को अपनी 'सेठ क्लाथ मिल्ज़' से हाथ धोने पड़ेंगे।" बहुत ही गम्भीरता पूर्वक कान्ता ने कहा।

"बड़ी भोली हो कान्ता तुम भी?" प्यार से कान्ता का हाथ पकड़ कर बड़ी बहूरानी ने अपने पास बिठलाते हुए गले में हाथ डाल कर कहा, "लखनऊ में रही हो न! तुम्हें तो प्रत्येक बात में लखनऊ के ही ठाट बाट दिखलाई देते हैं। तीतरों की बात आई तो लखनऊ के नवाबों को ले दौड़ीं।"

"फिर नहीं तो क्या कह रही थीं जीजी?" गुँडलाते हुए कान्ता ने सब कुछ समझ कर पूछा।

"तुम हमें ही बनाने चली हो कान्ता!" मुस्कुराकर छोटी रानी कान्ता की मुख-मुद्रा को भाँपते हुए बोली। "देखा जीजी तुमने! कितनी मक्कार हो चली है कान्ता? चौहान साहेब से सीखे हुए यह दाव पेंच अपने जीजाजी पर ही चलाया करो। इनकी लक्ष्य बनने के लिए भी क्या हम ही रह गई हैं?"

और कान्ता वास्तव में कुछ लजा सी गई। फिर कुछ ठहर कर तनिक गम्भीर मुख-मुद्रा बनाते हुए बोली, "तुमने सच कहा जीजी! सेठ भानामल जी तीतरों को लड़ा कर दूर खड़े खड़े तमाशा देखना चाहते हैं परन्तु तीतरों में भी बुद्धि हो तब तो। वह क्यों व्यर्थ के लिए अपना ख़ून ख़राबा करने पर तुले हैं? आप उन्हें लाख समझाइए परन्तु उनकी बुद्धि तो ऐसी ठोस पत्थर की बन चुकी है कि उसपर कोई प्रभाव ही नहीं होता।"

"यहाँ मैं तुमसे सहमत हूँ। कल कॉमरेड विमला भी यही कह रही थीं। उनकी बातों का मुझपर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा कान्ता! और मैंने रात तुम्हारे जीजा जी को समझाने का भी प्रयत्न किया परन्तु सब व्यर्थ। उन्होंने मेरे प्रस्ताव को तनिक भी तो कान में रखने का प्रयत्न नहीं किया, शायद सुना ही नहीं और तुरंत भाँप गए कि जो कुछ मैं कह रही हूँ उन शब्दों में कॉमरेड विमला की बू आती है।" छोटी बहूरानी ने कहा।

"जीजा जी की नाक बहुत तेज़ है जीजी! उनकी विचार-शक्ति बड़ी प्रखर है, परन्तु जब कोई व्यक्ति रक्त पर उतर आता है तो उसकी बुद्धि उसके

नीचे दब जाती है और एक बार जो दृढ़ विचार उसका बन जाता है वह पत्थर की शिला के समान प्रत्येक विपक्षी भाव और कार्य से अपने अनुरूप बल पाकर दृढ़तर होता जाता है। यह प्रकृति का नियम है इसे अनियमित नहीं किया जा सकता। विचारों का यह वेग बंधनों की अवहेलना करके भी आगे बढ़ेगा और हम इसे प्रयत्न करने पर भी नहीं रोक सकेंगे परन्तु इसका अर्थ यह नहीं हुआ कि हमें प्रयत्न ही नहीं करना चाहिए।" कान्ता ने यह बात इतनी गम्भीरतापूर्वक कही कि उसकी दोनों बड़ी बहिन उससे प्रभावित हो उठीं।

"हमारे प्रयत्न तो विफल हो चुके कान्ता!" बड़ी बहूरानी ने कहा।

"और मेरे भी।" तुरन्त कान्ता बोली। "नहीं तो क्या पहिले कभी आपने मुझे जीजाजी से कोई कटु बात करते सुना था? मेरे हृदय में उनके लिए कोमल स्थान था और वह आज भी ज्यों का त्यों रिक्त पड़ा है परन्तु जो मार्ग वह अपनाते जा रहे हैं उस पर चलने वाले के लिए तो मानव-मात्र को उनके लिए अपने हृदयों पर ताला लगा देना होगा।" और इतना कहकर कान्ता का हाथ अनायास ही ऊपर को उठकर हथेली माथे पर टिक गई। कुछ देर पश्चात उसकी दोनों बड़ी बहिनों ने देखा कि वह साड़ी के पल्ले से अपने भीगे नेत्रों को धीरे-धीरे पोंछ रही थी।

कान्ता का मन अचानक भारी हो आया और उसकी दृष्टि कॉल साहेब के भविष्य पर जा पड़ी। कॉल साहेब को एक दिन कान्ता ने प्रेम किया था। फिर जीवन में धनवान बनने की लालसा जाग्रत हो जाने से उसका विचार सेठ भानामल जी की ओर आकर्षित हुआ परन्तु सफलता उन दोनों को न मिल सकी। बाजी चौहान साहेब के हाथ लगी जिन्होंने अपने एक ही झटके द्वारा कान्ता के मस्तिष्क का यह भ्रम साफ़ कर दिया कि धन धनवालों के पास ही रहेगा। उन्होंने सप्रमाण यह स्पष्ट कर दिया कि धन को अन्त में बुद्धिमान और कर्मठ व्यक्तियों के पास आना पड़ेगा और चौहान साहेब को इन दोनों गुणों की खान न केवल वह स्वयँ मानते हैं बल्कि उनके इष्ट मित्रों के अतिरिक्त भी जनता मान चुकी है, बड़े बड़े सरकारी पदाधिकारी मानते हैं, मन्त्री मंडल के सदस्य मानते हैं और संसद के सदस्यों की तो प्रशंसा करते करते जिह्वा दुख जाती है। इसके अतिरिक्त कान्ता एक ओर अपनी दोनों जीजियों से तथा दूसरी ओर सेठ भानामल जी की पाँच बीवियों से टक्कर नहीं लेना चाहती थी।

"अरे ! रो रही हो पगली कहीं की। तुम्हारे हमारे करते भला क्या बनता है कान्ता ! सब भगवान की लीला है।

'हुई है वही जो राम रच राखा।'

उसके अतिरिक्त और कुछ होने वाला नहीं। जब कोई वस्तु करानी होती है तो भगवान उसी के अनुरूप कुबुद्धि या सद्बुद्धि भी व्यक्ति को प्रदान कर देता है।" बड़ी बहूरानी ने अपनी भगवान-भक्ति की प्रेरणा का स्पष्टीकरण करते हुए कान्ता को समझाया।

"ठीक ही है जीजी ! जो जैसा करेगा वह वैसा भरेगा। इसमें हम लोग क्या कर सकते हैं ?" कान्ता बोली।

"सहानुभूति, केवल सहानुभूति कान्ता।" गम्भीरता पूर्वक छोटी रानी कह उठी। इसके पश्चात् कान्ता की दोनों जीजियाँ एक घंटे में लौटने का आश्वासन देकर वहाँ से चली गईं और कान्ता अपना मन बहलाने के लिए कोठी के बाहर वाले लॉन में जाकर घूमने लगी।

: २० :

कॉमरेड अशफ़ाक की माता का शव क़ब्रिस्तान ले जाया जा रहा था और कॉल साहेब ने दूर से अपनी कार सड़क के एक किनारे खड़ी करके लाइटर से सिगार को जलाते हुए एक लम्बा कश खींचकर यह दृश्य देखा।

चौहान साहेब शव के साथ थे और उन्होंने शव को कंधा भी दिया था। चौहान साहेब को कंधा देते हुए देखकर कॉल साहेब के मुख पर स्वाभाविक मुस्कान नाच उठी और वह सिगार का गहरा कश खींचते हुए अपने मन ही मन बोले—'कैसा पाजी है यह चौहान का बच्चा भी। हर बात में मुझे ज़लील करके स्वयँ वाहवाही प्राप्त करना चाहता है परन्तु इसे पता नहीं कि इसके जीवन का निर्माण ही वाहवाही पर हुआ है और मैं वाहवाही को तुच्छ वस्तु समझता हूँ। मेरी वाहवाही कोई करता हो करे और न करता हो न करे। मेरा इससे कुछ बनने बिगड़ने वाला नहीं। मैं निर्माता हूँ और यह दर्शक है। दर्शक निर्माता का स्थान प्राप्त नहीं कर सकता'—और इस भावना के साथ कॉल साहेब का हृदय गर्व से फूल गया। कार में बैठकर उन्होंने गाड़ी को स्टार्ट किया और मन ने कह दिया—क्या हुआ? मरने वाला मर कर ही रहता है। हमने किसी को जिलाने या गाड़ने का ठेका नहीं लिया—और सीधे चौहान साहेब की कोठी पर जा पहुँचे।

कान्ता अकेली कोठी के सामने वाले लॉन में घूम रही थी। कॉल साहेब भी कार से उतर कर उधर ही चले गए और सब कुछ जान पूछकर भी कान्ता से पूछा, "अकेली ही घूम रही हो कान्ता! चौहान साहेब कहाँ चले गए?" यह कहते हुए एक व्यंग्य पूर्ण मुस्कान छा गई कॉल साहेब के चेहरे पर।

कान्ता से भला कॉल साहेब का क्या छुपा हुआ था। वह वाक्य की गम्भीर ध्वनि को भाँपते हुए उसी प्रकार गम्भीर मुख-मुद्रा बना कर बोली, "कुछ विशेष कार्य से चले गए हैं परन्तु वह चलते समय यह कह गए थे कि मेरे बाद यदि तुम्हारे जीजा जी आयें तो उनसे कह देना कि मैं अभी अभी लौटकर आता हूँ। वह चले न जायें क्योंकि मुझे उनसे कुछ आवश्यक बातें करनी हैं।" और इतना कहकर कान्ता पास में पड़ी हुई कुर्सियों की ओर संकेत करते हुए बोली, "आइए न! बैठकर कुछ देर गप्प शप्प ही लगाएँ।"

"परन्तु मेरे यहाँ आने की उन्हें सूचना कैसे मिली? मैंने तो उन्हें कोई समय नहीं दिया था यहाँ आने के लिए।" गम्भीरतापूर्वक कॉल साहेब बोले, "शायद तुम्हें भ्रम हुआ होगा कान्ता! वह किसी अन्य व्यक्ति के लिए आने को कह गए होंगे।"

"जी हाँ! तो आप मुझे यानी बिलकुल नादान बच्ची समझते हैं।" मुस्कुरा कर कान्ता ने इठलाते हुए कहा।

"मैं तो तुम्हें बच्ची ही समझता रहूँगा कान्ता!" कान्ता की मुस्कान में मुस्कान मिला कर कॉल साहेब ने अपनी गंजी खोपड़ी पर हाथ फेरते हुए कहा। "जब तुम बच्ची थीं उस समय की तुम्हारी बातें मैं विस्मरण नहीं कर सकता कान्ता! क्या तुम वास्तव में भूल गईं उन सब स्मृतियों को?" मुख पर तनिक गम्भीरता लाते हुए कॉल साहेब ने पूछा।

"ऐसा ही समझ लीजिए आप। जीवन में हवा के झोंके आते हैं और वह पुराने मिट्टी के टीलों को उड़ा कर नए टीले बना देते हैं। कुछ दिन पश्चात उन पुराने टीलों का अस्तित्व भी नष्ट हो जाता है और लोग भूल जाते हैं उन पुराने टीलों को। क्या आपके जीवन में ऐसी हवाएँ नहीं बहतीं जीजा जी?" कान्ता ने गम्भीर बनकर पूछा।

"बहती हैं कान्ता! परन्तु उनमें अब ताज़गी नहीं रही। मेरे जीवन का चमन अब नए सिरे से तो खिलने वाला है नहीं, यह तुम भली प्रकार जानती हो

परन्तु जो कुछ है उसकी भी रक्षा आजकल कर नहीं पा रहा हूं।" एक गम्भीर श्वाँस खींच कर कॉल साहेब ने कहा।

इस समय दोनों लॉन में पड़ी हुई कुर्सियों पर जाकर बैठ गए थे। कॉल साहेब अभिनय-कला में बहुत दक्ष थे और कभी-कभी तो वास्तव में उनका अभिनय पराकाष्ठा को पहुँच जाता था परन्तु कान्ता यह अभिनय एक लम्बे काल से देखती चली आ रही थी और सच बात यह भी थी कि वह कभी इस अभिनय से प्रभावित नहीं हो पाई थी। कॉल साहेब ने कान्ता पर डोरे डालने का प्रयत्न न किया हो ऐसी बात नहीं और कान्ता उससे बिलकुल द्रवित न हुई हो यह भी सच नहीं था परन्तु सत्य यह था कि कॉल साहेब को इसमें सफलता नहीं मिल सकी। इधर कान्ता से विवाह करने के पश्चात चौहान साहेब ने कॉल साहेब की दोनों बहूरानियों पर भी कुछ ऐसा जादू कर दिया था कि वह उनपर न जाने क्यों रीझती चली जा रही थीं और उनके इस आकर्षण ने कॉल साहेब का जीवन एक दम ही रूखा, फीका तथा नीरस बना दिया था। परिस्थिति यहाँ तक गम्भीर हो चुकी थी कि प्रातःकाल की चाय पीने के लिए भी दोनों बहूरानियाँ चौहान साहेब की ही कोठी पर जाती थीं और कॉल साहेब को पहाड़ी नौकर का ही मुँह देख कर चाय पीनी पड़ती थी।

बहूरानियों के स्वतन्त्र विचरण-मार्ग में कॉल साहेब ने कभी कोई बाधा उपस्थित नहीं की थी और यहाँ तक कि सेठ भानामल जी की कोठी पर दिन में कई-कई बार उनका जाना भी कॉल साहेब को कभी नहीं खला था परन्तु चौहान साहेब की कोठी पर इस प्रकार जाने से न मालूम क्यों उनके मन में एक हल्की-हल्की पीड़ा सी होने लगती थी। कभी-कभी तो वह सहन करने का प्रयत्न करते हुए भी उसमें असफल हो उठते थे और उनका प्रयास फीका पड़ जाता था। हृदय की पीड़ा मुँह पर मुखरित होकर बोल उठती थी और उनके प्रत्येक हाव भाव से दीनता और पराजय टपकने लगती थी।

कॉल साहेब एक बार कान्ता के सम्मुख चौहान साहेब की योग्यता और सज्जनता के पुल बाँध चुके थे इसलिए उनकी बुराई में अब कुछ कहना वह अपना हल्कापन समझते थे परन्तु चौहान साहेब ने कॉल साहेब को जो चोट दी थी वह उनसे भुलाई नहीं जा सकती थी। चौहान साहेब यदि सेठ भानामल से पृथक होकर अपना मिल लगाने और सरकारी काम का आश्वासन देने के भ्रम में

बेचारे कॉल साहेब को न फँसाते तो कोई कारण नहीं था कि कॉल साहेब चौहान साहेब के पतङ्ग की डोर को पतङ्ग उड़ाने से पूर्व ही काट डालते। कान्ता के मन में चौहान साहेब के प्रति वह ऐसा विष घोलते कि कान्ता का मन उन पर स्थिर होना असम्भव हो जाता परन्तु अब तो चौहान साहेब माँझा सूंत चुके थे और इस सूंते हुए माँझे को काटने का प्रयत्न करने में कॉल साहेब को अपना हाथ कटने का भय लगता था।

"कान्ता! तुम्हें वर बहुत योग्य मिला है।" यकायक कॉल साहेब कह उठे और इतना कहकर उन्होंने तरसते हुए नयनों से कान्ता के खिले हुए मुख मंडल पर देखा।

"सब आपकी ही कृपा का फल है जीजा जी!" मुस्कुरा कर निसंकोच भाव से कान्ता ने उत्तर दिया और उसके उत्तर में इतनी दृढ़ता थी कि कॉल साहेब कितनी ही देर तक सोचते रहे कि इसके पश्चात् अब कुछ कहें या मौन हो जायें परन्तु मौन वह नहीं हो सके। अन्तरात्मा से उठने वाले गुबार को मन ही मन मसोसकर पचा जाना उनके लिए असम्भव हो उठा।

आज न जाने क्या क्या तूफ़ान मन में भरकर लाए थे परन्तु उनके बाहर निकालने का मार्ग उन्हें नहीं मिल रहा था। कुछ कहना चाहते थे लेकिन शब्द मुख में आ आकर रुक जाते थे। कान्ता कॉल साहेब की परिस्थिति को भाँपते हुए मुस्कुरा कर बोली, "जीजा जी! आज आप मुझे कुछ परेशान से दिखलाई दे रहे हैं। यदि मैं आपकी मुखाकृति को ग़लत नहीं पढ़ रही हूँ तो सच यह है कि आप कुछ कहना चाहते हैं और कह नहीं पा रहे हैं।"

"तुम्हारा अनुभव ठीक है कान्ता! परन्तु आज मैं तुमसे कुछ कह सकने की परिस्थिति में ही नहीं रहा।" तनिक और गम्भीर मुख बनाकर कॉल साहेब बोले।

"मैं तो ऐसा नहीं समझती। यदि आप ऐसा अनुभव करते हैं तो कीजिए परन्तु इसे मैं अपना अपमान अवश्य समझूँगी।" कॉल साहेब को बनाती हुई कान्ता गम्भीरता पूर्वक बोली और फिर धीरे धीरे मुख पर मुस्कान की पतली रेखा ले आई।

कान्ता पर कॉल साहेब की स्कीम और उस दिन वाले ऐग्रीमेन्ट का सब रहस्य चौहान साहेब ने उद्घाटित कर दिया था और दोनों ने एक मत होकर यह

निर्णय कर लिया था कि जब सेठ भानामल जैसी दुधाल भैंस भगवान की दया से उनके हाथ लग ही रही है तो उसका गला कॉल साहेब द्वारा कटवाकर कॉल साहेब को भैंस ख़रीदवाना और फिर उसका दूध पीने का स्वप्न देखना कोरी मूर्खता है। इस मत का समर्थन बहुत सोच समझ कर युगल जोड़ी ने किया था।

कॉल साहेब के बार-बार आगे बढ़ने वाले पैंतरे देखकर कान्ता मन मन मुग्ध होती हुई और भी गम्भीर होती जा रही थी और आज उसका अभिनय कॉल साहेब के अभिनय पर विजय प्राप्त कर रहा था। दोनों ही अपने अपने पैंतरे पर सही दाव फेंकने का प्रयत्न कर रहे थे और दोनों की ही कला अपने अभिनय में एक दूसरे से आगे बढ़ जाना चाहती थी।

कॉल साहेब को बैठे-बैठे बहुत देर हो गई परन्तु चौहान साहेब नहीं लौटे। वह उन्हें अपनी आँखों से कॉमरेड अशफ़ाक की माता जी की अर्थी को कंधा देकर ले जाते हुए देखकर आए थे इस लिए जानते थे कि वह इतने शीघ्र आने वाले नहीं परन्तु कान्ता ने भी यह बात कॉल साहेब को एक अनिश्चित काल तक यहाँ घेरे रखने के लिए ही करी थी। बातें हड़ताल के विषय में भी न जाने कितनी देर तक होती रहीं परन्तु उनका कोई विशेष महत्व नहीं था; क्योंकि जो बातें हो रही थीं वह केवल व्यर्थ की दिमागपच्ची थी, तत्व विहीन, अर्थ विहीन और अभिप्राय विहीन। कान्ता हड़ताल के विषय में उसी प्रकार उदासीन थी जिस प्रकार चौहान साहेब, क्योंकि दोनों के केबिनेट में इस विषय पर उदासीन रहने का ही निर्णय हो चुका था।

"आपने व्यर्थ ही यह हड़ताल वाली समस्या इतनी जटिल बना डाली जीजा जी।" मुस्कुराते हुए कान्ता कह उठी। "यदि आप चाहते तो इसका सुझाव आज से पूर्व सम्मुख आ सकता था।"

"तुम भी मुझी को दोष दोगी कान्ता! उस मोटे पेटल को नहीं कहोगी सेठ के बच्चे को कि जो एक-एक पैसे को दाँत से भींच कर रखता है।" दाँत भींच कर किट किटाते हुए कॉल साहेब तनिक खीज कर बोले।

"खीजिए नहीं जीजा जी! इसमें खीजने की भला क्या बात है? यदि आप उन्हें समझाते और उल्टी पट्टी न पढ़ाते तो कोई कारण नहीं था कि चौहान साहेब की बात को इस प्रकार ठुकरा दिया जाता।" गम्भीरता पूर्वक कान्ता ने कॉल साहेब की बिल्ली जैसी आंखों में आँखें डाल कर कहा। "और यदि उनकी

बात को न ठुकराया जाता तो यह हड़ताल की समस्या ही सामने न आती।" और इतना कहकर कान्ता सरलता पूर्वक मुस्करा दी।

"अच्छा! तो यों कहिए कि आपको चौहान साहेब के शब्दों के ठुकराए जाने पर यह उचित और अनुचित का ज्ञान हो रहा है। परन्तु क्या मैं पूछ सकता हूँ कि उस दिन जब तुम्हारे शब्दों को चौहान साहेब ने ठुकरा कर ऐग्रीमेंट पर हस्ताक्षर करने से कोरा जवाब दे दिया था तब क्या तुम्हारे शब्दों का अपमान नहीं हुआ था कान्ता देवी?" तुनक कर नाँक भौं चढ़ाते हुए कॉल साहेब बोले, "शब्दों का मूल्य व्यापारी ही आँक सकता है। तुम क्या जानो कान्ता! तुम तो अभी कल की बच्ची हो। यह इतना बड़ा मिल ख़ाली मज़दूरों की डंड, बैठक, कसरत करने और चौहान साहेब के चार कौड़ी के सरकारी आर्डर प्राप्त करने पर आज तक नहीं चलता रहा है! इसके लिए तपस्या करनी पड़ी है। दिन को रात और रात को दिन करना पड़ा है। इसके संचालित करने में मस्तिष्क का प्रयोग किया गया है। लाखों के वारे न्यारे केवल ज़बान पर होते हैं। जिसे आज चोर बाज़ारी का नाम दिया जाता है मैं समझता हूँ वही सब से बड़ी साद बाज़ारी है। न लिखत है न पढ़त है और करोड़ों का व्यापार चल रहा है। ज़बान पर ही देश और विदेशों को माल जाता है।" और कहते कहते गर्व के साथ कॉल साहेब का मस्तक ऊपर उठकर नेत्रों की ज्योति आकाश से जा मिली। "यह एम० बी० बी० एस० की परीक्षा नहीं है कान्ता! यह है 'सेठ क्लाथ मिल्ज़' का संचालन। मिलों का संचालन बचपने से नहीं होता। कॉमरेड विमला के प्रेमालापों में फँसकर चौहान साहेब यदि 'सेठ क्लाथ मिल्ज़' को कर्मचारियों के नाम कर आयें या उस अशफ़ाक के बच्चे की घुड़कियों में आकर चौहान साहेब उसे मिल-मैनेजर नियुक्त कर डालें तो इसे मैं और सेठ भानामल जी मानने वाले नहीं। मिल का संचालन मुझे करना है और मिल सेठ भानामल जी को चलानी है इसलिए प्रत्येक बात का अन्तिम निर्णय केवल हम ही दो व्यक्ति कर सकते हैं। चौहान साहेब के आश्वासनों को पूरा करने के लिए ही दो महीने तक व्यर्थ में कर्मचारियों को अधिक रुपया बाँटा गया। चौहान साहेब के आश्वासनों पर मिल को नहीं लुटाया जा सकता।"

"आप तो व्यर्थ के लिए गर्म हो रहे हैं जीजा जी! और मेरे विचार से इसमें गर्म होने की कोई बात ही नहीं। उस दिन चौहान साहेब ने मेरे कहने पर

हस्ताक्षर नहीं किए वह हमारी घरेलू बात थी और उसके ऊपर आप प्रश्न करें इसका मैं कोई अधिकार आपको नहीं देती। अब रही बात चोर बाज़ारी में साद बाज़ारी की सो चोर चोर तो यार हो ही जाते हैं।" और इतना कहकर कान्ता गम्भीरतापूर्वक मुस्कुरा दी जिसका अर्थ कॉल साहेब ने कटु व्यंग्य समझा और वह उनके लिए इतना असहनीय हो उठा कि यदि यहाँ पर उनके सम्मुख कान्ता न होकर चौहान साहेब या कोई और होता तो सम्भवतः आज गाली गलौच तक पर नौबत आ जाती।

कॉल साहेब को खड़े होने का प्रयत्न करते हुए देखकर कान्ता मुस्कुराकर बोली, "क्यों क्या चलने का विचार कर रहे हैं आप? परन्तु वह मुझ से आकर झगड़ा करेंगे तो मैं उनको क्या उत्तर दूँगी? यही कहूंगी न कि जीजा जी ने मेरी प्रार्थना स्वीकार नहीं की और वह न जाने क्यों नाराज़ होकर चले गए।"

"बनाने के लिए हम ही रह गए हैं क्या कान्ता!" गम्भीर दृष्टि से कान्ता के मुख पर दृष्टि डालकर कॉल साहेब बोले और वह कुछ और कहने जा रहे थे कि सामने से उनकी दोनों बहूरानियाँ आ गईं। उन्हें इधर आते देखकर कॉल साहेब एक दम चुप हो गए।

कॉल साहेब को चुप होते देखकर कान्ता मुस्कुरा उठी और नेत्रों में वही कटीला व्यंग्य भरकर धीरे से बोली, "क्यों जीजा जी! अब मझली दीदी को देखकर तो आपकी बोलती बन्द हो गई न! वह हम ही हैं जो आपकी हर प्रकार की झाड़ सहन कर लेते हैं। तनिक मंझली दीदी को कुछ कहकर देखिए तो पता चल जाए। उन्हें देखकर तो भीजी बिल्ली की तरह कान दबोच लेते हैं आप।"

कॉल साहेब ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया परन्तु कान्ता के इन सुमधुर व्यंग्य पूर्ण शब्दों का रस भी वह न ले सके और इतने में दोनों बहूरानियाँ बिल्कुल ही निकट आ गईं। छोटी बहूरानी कॉल साहेब को यहाँ बैठा देखकर बोली, "तो यों कहिए कि आप यहाँ कान्ता से बैठे गप्पें लगा रहे हैं। सेठ जी ने टैलीफ़ोन पर टैलीफ़ोन खड़काते खड़काते हमारे कान खा लिए और आपका कहीं पता ही नहीं चला। बेचारे अन्त में स्वयँ कोठी पर आए परन्तु आप वहाँ थे हीं नहीं।" और इतना कहकर वह सामने सोफे पर बैठ गईं।

"सेठ जी स्वयँ आए थे?" आश्चर्य प्रकट करते हुए कॉल साहेब ने पूछा और उनके तन बदन में तलाबेली लग गई।

कॉल साहेब ज्यों ही चलने को उद्यत हुए तो छोटी बहूरानी ने अधिकार पूर्ण स्वर में कहा, "कार न ले जाइएगा आप। हमें अभी अभी इन्डिया गेट जाना है घूमने के लिए।"

"फिर मैं क्या ले जाऊँ?" सिर खुजलाते हुए कॉल साहेब बोले।

"सेठ जी की कोठी पर फ़ोन कर दीजिए। उनकी कार आ जाएगी आपके लिए।" और ऐसा ही हुआ।

कॉल साहेब के चले जाने पर तीनों बहिनें इंडिया गेट पर घूमने के लिए चली गईं। इन तीनों के लिए दिन सुहाना था।

जब चौहान साहेब कोठी पर लौटे तो यहाँ पर कोई नहीं था परन्तु अभी उन्होंने पूरी तरह कपड़े उतारे भी नहीं थे कि तीनों बहिनें घूमकर लौट आईं। चौहान साहेब स्नानादि से निवृत्त होकर जबतक निबटे उस समय तक दोनों बहूरानियाँ भी विदा हो चुकी थीं।

भोजन पर कान्ता और चौहान साहेब जब साथ-साथ बैठे तो कान्ता ने कॉल साहेब की सन्ध्या वाली सब बातें कह सुनाईं। बातें सुनकर चौहान साहेब ज़ोर से खिलखिला कर हँस पड़े और फिर तनिक गम्भीर-सी मुख मुद्रा बनाकर बोले, "कान्ता! तुम्हारे जीजा जी को मैं पूरा काठ का उल्लू समझता हूँ। क्या तुम सहमत हो मेरे मत से?"

"बिल्कुल नहीं।" मुस्कुराते हुए कान्ता बोली।

"क्यों?" चौहान साहेब ने खाना बन्द करके कान्ता के मुख पर प्रेम पूर्वक देखते हुए पूछा।

"यह इसलिए कि वह उल्लू नहीं दुनियाँ को उल्लू बनाने वाले मदारी हैं। आप उनसे उल्लू नहीं बन सके और आपने उल्टा उन्हें उल्लू बना दिया इसका अर्थ यह नहीं कि आप उन्हें काठ के उल्लू की उपाधि दे डालें।" और इतना कहकर कान्ता दाँतों से होंठ दबाकर अपनी स्वाभाविक मुस्कान को रोकने का प्रयत्न करती रही परन्तु स्वाभाविक छटा रुक न सकी और मुस्कान बिखर कर ही रही। कान्ता की मुस्कान मे मुस्कान मिलाकर चौहान साहेब ने भी अपने नेत्रों की मादक मदिरा कान्ता के कटीले मतवाले नेत्रों मे उड़ेल दी। आज के भोजन में मिठास आ गया परन्तु साथ ही चौहान साहेब को कॉमरेड अशफ़ाक की माँ की मृत्यु का ध्यान आने से उनका मन कुछ विचलित-सा हो उठा और उनके मुख में

जाता-जाता कौर रुक गया और उन्होंने थाली एक ओर सरका दी। गले का टुकड़ा पानी का घूंट भर कर किसी प्रकार सटका।

"क्यों क्या खाने की रुचि नहीं हो रही? परन्तु आपके मुख पर एकदम ऐसी उदासीनता कैसे छा गई?" सरलता पूर्वक कान्ता ने पूछा।

"यही बात है कान्ता! तुमने आते ही कॉल साहेब की बात सुनाकर मन कुछ प्रसन्न अवश्य कर दिया परन्तु.........आज इस संसार से एक देवि उठ गई कान्ता! और मेरा मन उस देवि की स्मृति में आज रह-रह कर रो उठता है।" चौहान साहेब के नेत्र डबडबा रहे थे।

"आपका अभिप्राय कॉमरेड अशफ़ाक की माता जी से है?"

"हाँ कान्ता! उस देवि का इतिहास स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है। सन् बयालीस के भारतीय-स्वतन्त्रता-संग्राम में अशफ़ाक की माँ ने वह कार्य किया था कि जिसके स्मरण हो आने से आज भी मेरा मस्तक उसके चरणों में श्रद्धा से झुक जाता है। रात्रि के बारह बारह और एक एक बजे इस वृद्धावस्था में पाँच पाँच मील पैदल जाकर शीतकाल की भयानक रात्रि में छुपे हुए हमारे गुप्त कार्य-कर्त्ताओं को भोजन पहुँचाना उसी देवि का काम था। अपने बुर्के के नीचे छुपा कर वह किस प्रकार इतना भारी बोझा बाँध कर हमारे लिए लाती थीं और हम सब का पेट भरती थीं वह घटना हमारे जीवन के प्रत्येक पन्ने पर खुद कर अमर हो चुकी है कान्ता!"

चौहान साहेब के मुख से अशफ़ाक की माता जी की कथा सुनकर कान्ता भी उनकी ओर आकर्षित हो उठी और कान्ता ने करुण स्वर में कहा, "धन्य थी तू देवि! जो तूने भारत को स्वतन्त्र कराने में सहयोग दिया।" और इतना कह कर वह भी श्रद्धा के साथ उसकी अनदेखी स्मृति के सम्मुख नत मस्तक हो गई।

"वह मुझे अशफ़ाक से अधिक प्यार करती थीं कान्ता! परन्तु आज अशफ़ाक ने मुझे उसकी दवाई भी नहीं करने दी। उस दिन जब मैं डाक्टर को लेकर उसके मकान पर गया तो अशफ़ाक ने यह कहते हुए मुझे मना कर दिया कि चौहान तेरा पैसा मज़दूरी का पैसा नहीं है। इस लिए इस पैसे से मैं अपनी माँ का इलाज नहीं कराऊँगा। वह चौहान जिसे माँ मुझसे भी अधिक अज़ीज समझती थी आज मर चुका। जिस व्यक्ति की आत्मा मर चुकी वह व्यक्ति जीवित नहीं है। आज उसने मेरा ले जाया हुआ शाल अपनी माँ की अर्थी पर नहीं

डालने दिया। कॉमरेड विमला की एक धुली हुई पुरानी धोती में ही लपेट कर उसने अपनी माँ को ले जाना उचित समझा। परन्तु उसने मेरी एक इच्छा के मार्ग में कोई बाधा उपस्थित नहीं की और वह यह कि जब मैं अर्थी को कंधा देने के लिए आगे बढ़ा तो वह पाया मेरे कंधे पर टिका कर स्वयं एक ओर हो गया।" और कहते कहते चौहान साहेब के नेत्रों से अश्रु धारा बह निकली।

कान्ता भी भावावेग में बहकर सकरुण हो उठी। नेत्र उसके भी इस समय गीले थे। भारी हृदय से गम्भीरता पूर्वक बोली, "कॉमरेड अशफ़ाक एक आदर्श व्यक्ति है जिसने अपने जीवन में आदर्श और कर्त्तव्य को ही महत्त्व दिया है। दिखावा उसे छू नहीं गया। जैसा वह बाहर से दीखता है वैसा ही वह अंदर से भी है। भय वह भगवान से भी नहीं मानता और सचाई के लिए मृत्यु से भी दो हाथ कर सकने की अपने में क्षमता रखता है।" और इतना कहकर कान्ता ने अपनी कमर पीछे कुर्सी से लगा ली।

"तुमने अशफ़ाक के जीवन का ठीक विश्लेषण किया है कान्ता! वह नीचे से ऊपर तक ठोस स्पात का बना हुआ व्यक्ति उस देवि की एक स्मृति स्वरूप आज रह गया है। कितना साहस है अशफ़ाक में कान्ता यह तुम इस प्रकार यहाँ बैठ कर अनुभव नहीं कर सकतीं। मुझे जमना की बाढ़ का वह दृश्य विस्मरण नहीं हो सकता जब इसने दोनों हाथों में बेड़ियाँ रहने पर भी अपनी बेड़ियों की रस्सी थामने वाले सिपाही को उठाकर जमना में फेंक कर स्वयँ छलाङ्ग लगाई थी। मैं दूर से जमना किनारे की झाड़ियों में खड़ा हुआ वह दृश्य देख रहा था। मेरा हृदय उत्साह से चार इंच ऊपर को हो गया था और मेरे टूटे हुए हाथ मुझे वापस मिल गए थे।

बस उसी समय हमको देहली छोड़कर यहाँ से कलकत्ता की ओर चला जाना पड़ा था।"

बातें गत जीवन की ओर बदल गईं और कान्ता शाँत बैठी न जाने कितनी देर तक सुनती रही परन्तु आज चौहान साहेब ने खाना नहीं खाया। चौहान साहेब ने कान्ता के कहने पर दुबारा भी खाना खाने का प्रयास किया परन्तु टुकड़ा गले से नीचे न उतर सका। अशफ़ाक की माँ के धुँधले चित्र बार बार उनके मानस-पटल को आकर घेर लेते थे। उनकी विचारधारा पर आज एक बोझ सा पड़ रहा था और वह यह अनुभव करते जा रहे थे कि चौहान अब उस बोझे

को उठाने में असमर्थ हो चुका है। उसके जीवन में आज वह दम नहीं रह गया कि जिसके आधार पर उन्होंने कभी अपने चरित्र का निर्माण किया था। उन्होंने अपने अन्दर दृष्टि डालकर देखा उन्हें उन सभी तत्वों का अभाव मिला जिन पर एक दिन उन्होंने इस विशाल भवन की आधारशिला को स्थापित किया था। उन्हें एक दिन विमला के कहे गए शब्दों का स्मरण हो आया—"इस इमारत की बुनियादें हिल चुकी हैं चौहान साहेब! चूना मिट्टी हो चुका है, दीवारों में दरारें खुल गई हैं, कड़ियों को घुन लग गया है······"

: २१ :

कॉल साहेब के सम्मुख इस समय मिल की हड़ताल के अतिरिक्त और कोई समस्या नहीं थी। दिल्ली के चीफ़ कमिश्नर से मिलकर आपने हड़ताल को क़ानून विरुद्ध घोषित कराने का प्रयत्न किया परन्तु इसमें उन्हें सफलता नहीं मिली। चीफ़ कमिश्नर साहेब से भी कॉल साहेब को जो आशा थी वह फलीभूत न होने पर कॉल साहेब के दिल को काफ़ी ठेस लगी और उन्होंने अनुभव किया कि आज के अधिकारी वर्ग का चरित्र भी काफ़ी नीचे गिर गया है। अँग्रेज़ी शासन-काल में कोई अधिकारी जो वचन दे देता था वह पत्थर की लकीर बन जाता था परन्तु आज तो किसी के भी कहने पर कोई विश्वास नहीं किया जा सकता। किसी के साथ कोई भलमनसाहत करना व्यर्थ है। आज की दुनियाँ में तो प्रत्येक व्यक्ति को केवल अपना ही ध्यान रहना चाहिए। कॉल साहेब की आँखों की पुतलियों में उन सभी दावतों के चित्र उतर आए जिनमें विशेष चापलूसी के साथ कॉल साहेब ने चीफ़ कमिश्नर साहेब को निमंत्रित किया था और जिनके मूल्य में वह समझ बैठे थे कि उन्होंने चाहे दैहिक रूप से न सही वरन् आत्मिक रूप से चीफ़ कमिश्नर साहेब को ख़रीद लिया है; परन्तु उनकी इस सुदृढ़ धारणा को इस समय के चीफ़ कमिश्नर साहेब के व्यवहार से ठेस लगी। यों तो केवल यह जानकर ही कि हड़ताल से कॉल साहेब का सम्बन्ध है, चीफ़

कमिश्नर साहेब को चाहिए था कि हड़ताल को कानून-विरुद्ध घोषित कर देते परन्तु उन्होंने कॉल साहेब के कहने पर भी कोई ध्यान नहीं दिया और उन सब दावतों के साथ-साथ किए गए अहसानों को ऐसे उड़ा दिया कि मानो कभी जीवन में उनका अवसर ही नहीं आया था।

कॉल साहेब ने माथे पर सिलवटें डालकर हवा से बातें करते हुए कह दिया—'नहीं···नहीं···नहीं कर्मचारियों की माँगों के सामने नहीं झुका जाएगा। मिल रहे या न रहे परन्तु कॉल के अभिमान को ठेस नहीं लग सकती। मैं मिल को समाप्त कर दूँगा परन्तु अपनी आन में बल नहीं आने दूँगा।··· ··चौहान साहेब स्वप्न की दुनियाँ के साथी हैं, उन्हें क्या पता कि कौन फल किस वृक्ष की जड़ में लगता है या फोलंगों पर।···सेठ भानामल · वह मेरे हाथ का खिलौना है। उसे मैंने ही सेठ भानामल बनाया है···और यह मिल; इसे किसने बनाया? मैंने बनाया है। ऐसे सैकड़ों मिल बनाने और मिटाने की शक्ति आज भी मेरे अन्दर वर्त्तमान है। चाहे मिल रहे या जाए परन्तु कॉल की बात को आँच नहीं आने पाएगी।' और इस विचार को निश्चित करके कॉल साहेब ने गर्व के साथ सीना तान दिया।

इन्हीं विचारों में निमग्न कॉल साहेब अपनी बैठक में घूम रहे थे कि सामने से उन्हें कॉमरेड बैनर्जी आता हुआ दिखलाई दिया।

"सब प्रबन्ध ठीक कर दिया मैनेजर साहेब!" हाथ बाँधकर सामने खड़े होते हुए कॉमरेड बैनर्जी ने कहा।

"शाबाश!" बैनर्जी की पीठ ठोंक कर कॉल साहेब बोले और फिर उन्होंने अपनी जेब से सिगार निकाल कर लाइटर से उसे जला लिया। सिगार का धुआँ कमरे के वातावरण में उड़ाते हुए कॉल साहेब इधर उधर घूमने लगे और कॉमरेड बैनर्जी उसी प्रकार हाथ बांधे खड़ा रहा। कुछ देर इसी प्रकार विचारों में निमग्न घूमने के पश्चात् कॉल साहेब रुके और एक छोटी-सी अटैची से दो हज़ार रुपया निकालकर बैनर्जी को देते हुए बोले, "लो यह तुम्हारा इनाम है, परन्तु काम इस प्रकार हो कि किसी को कानों कान पता न चले।"

"ऐसा ही होगा सरकार!" कहकर कॉमरेड बैनर्जी ने विदा ली।

बैनर्जी के चले जाने पर कॉल साहेब कमरे में घूमना बन्द करके सोफ़े पर बैठ गए। अभी बैठे ही थे कि अन्दर से छोटी बहूरानी आ धमकीं और

अपनी मादक मुस्कान बिखेरती हुई बोलीं, "क्या कोई फिर नई समस्या खड़ी कर ली है आज आपने ? मैं कहती हूं कि आखिर थोड़ा बहुत बोनस इत्यादि देकर आप हड़ताल को क्यों नहीं समाप्त कर डालते हैं ? हड़ताल मिल में हो रही है और घुन लग गया है आपके मस्तिष्क को।" इतना कहते हुए मस्ती में झूम कर कॉल साहिब के गले में हाथ डालती हुई बहूरानी पास ही सोफे पर विराजमान हो गईं। कॉल साहेब बराबर पत्थर की शिला की भांति स्थापित थे, निर्लेप, निर्लिप्त; मानो उन्होंने कुछ सुना ही नहीं कि छोटी बहूरानी इस समय क्या कह गईं ?

"लो कान्ता भी आ गई और उनके साथ चौहान साहेब भी आ रहे हैं।" सामने संकेत करते हुए छोटी बहूरानी ने कहा।

"परन्तु क्यों ? यह सब यहाँ आ किस लिए रहे हैं ?" आश्चर्य-चकित कॉल साहेब बोले, "इन्हें किस लिए निमन्त्रित किया है तुमने ? मुझे तो अभी-अभी एक बहुत ही आवश्यक कार्य से बाहर जाना है।" गम्भीरतापूर्वक कॉल साहेब ने तनिक भयभीत से होकर कहा।

"जी हाँ ! आपके आवश्यक कार्य तो शायद उस समय भी निकल आयेंगे जब हमारी अर्थी उठ रही होगी।" मुँह बनाकर छोटी बहूरानी ने कहा और एक ओर को खिसक गईं।

"बस रूठ गईं और ऐसे अपशब्द भी कह डाले। यह तुम्हें शोभा नहीं देता छोटी बहूरानी ! क्या तुम नहीं जानतीं कि आजकल मेरा मस्तिष्क कितनी चिंताओं से घिरा हुआ है ?" कॉल साहेब ने छोटी बहूरानी की ठोड़ी को दो उँगलियों से ऊपर उठाते हुए नयनों से नयन मिलाकर कहा। छोटी बहूरानी का इस प्रकार नाराज़ हो जाना कॉल साहेब सहन नहीं कर सकते थे।

छोटी बहूरानी तनिक पीछे हटकर खड़ी हो गईं और नेत्र घुमाते हुए बोलीं, "मैं चिन्ता विन्ता की बातों को कुछ नहीं जानती। चिन्ता केवल मस्तिष्क के अनुभव करने की एक स्थिति का नाम है। मनुष्य यदि चाहे तो अपने को उससे बिल्कुल मुक्त भी रख सकता है और न चाहे तो दिन रात उन्हीं में घिरा रहे।" इतना कहकर छोटी बहूरानी बहुत गम्भीर हो गईं।

"मानव चिंताओं से अपने को मुक्त कर सके यह बात नितांत असम्भव है रानी !" कॉल साहेब ने आश्चर्य के साथ भावुकता में भरकर कहा।

चौहान साहेब ने यह वाक्य सुन लिया और वह भी तनिक और आगे बढ़कर बोले, "यह आप किस प्रकार कह सकते हैं भला कॉल साहेब ? देखिए न तीन व्यक्ति चिन्ता-मुक्त इस समय आपके सम्मुख खड़े हैं और मैं समझता हूँ कि बड़ी बहूरानी को भी जीवन में कभी चिन्ता करने का कोई कारण प्रतीत नहीं होता होगा।" यह कहते हुए चौहान साहेब के मुख-मंडल पर व्यंग्य पूर्ण मुस्कान नाच उठी और वह कॉल साहेब के बिलकुल सामने आगए।

"भाई मैं तुम लोगों से बहस में नहीं जीत सकता।" हाथ जोड़कर कॉल साहेब बोले परन्तु मेरा मस्तिष्क आज बहुत चिन्ता-ग्रस्त है। इसलिए मैं सब लोगों से क्षमा चाहता हूँ।

इस पर अन्य तीनों व्यक्ति खिलखिला कर हँस पड़े और कॉल साहेब को उसी प्रकार वहाँ घूमते छोड़ कर अन्दर कोठी में चले गए। बड़ी बहूरानी ने अभी अभी पूजा समाप्त की थी। आज उनकी सालगिरह थी और उसी के उप-लक्ष में छोटी बहूरानी ने एक छोटी सी दावत का आयोजन किया था। निमंत्रण सेठ भानामल जी के पास भी पहुँचाया था परन्तु उन्होंने तबियत ख़राब का बहाना करके आने में कठिनाई प्रकट कर दी थी।

कॉल साहेब को बाहर अकेला इस प्रकार छोड़ दिया गया था कि मानो उनका इन सब बातों से कोई सम्बन्ध ही नहीं था। कॉल साहेब अन्दर ही अन्दर बड़बड़ा रहे थे और उन्हें कान्ता पर रह-रह कर क्रोध आ रहा था। वह सोचते थे कि क्या वास्तव में यह वही कान्ता है जो लखनऊ मेडिकल कॉलेज की दो दिन की छुट्टी में भी कॉल साहेब से मिलने आती थी और छोटी बड़ो दोनों बहूरानियों के सो जाने पर भी उनके सिरहाने से लगी रात के बारह बजा देती थी ? कितना परिवर्तन हो गया है इसमें कि आज ज़बान से 'नमस्कार जीजा जी' कहना भी अपना अपमान समझती है। क्या आज यह उनका ही कर्तव्य हो गया है कि वह उसकी भी चापलूसी करके उसकी तबियत का हाल पूछें ? नहीं, कदापि नहीं। कॉल साहेब अपने चरित्र को इतना नीचे नहीं गिरा सकते। ऐसी तुच्छ स्त्री के सम्मुख झुकने की उन्हें कोई आवश्यकता नहीं। जो व्यक्ति कान्ता की दो बड़ी बहिनों को अपनी बुद्धि और अपने धन के बल पर ख़रीद सकता है वह कान्ता और कान्ता के पति चौहान साहेब का भी मूल्य आँक कर एक दिन सौदा कर लेगा। जब व्यक्ति सौदा ही करने निकल पड़ा तो वह क्या कुछ नहीं ख़रीद

सकता·········परन्तु वह कॉमरेड विमला को नहीं ख़रीद सकता, कॉमरेड अशफ़ाक को नहीं ख़रीद सकता और यह विचारकर कॉल साहेब के हृदय पर एक गहरी ठेस लगी। काश वह उन दोनों को ख़रीद पाते परन्तु कॉल जिन्हें ख़रीद नहीं सकता उन्हें मिटा सकता है'···और फिर गर्व के साथ उन्होंने अपनी गंजी चाँद पर हाथ फेरकर नेत्र आकाश पर बिछा दिए।

इसी समय चौहान साहेब कान्ता को अन्दर छोड़कर कॉल साहेब के पास आ गए और उन्हें हवा से बातें करते देखकर मुस्कुराते हुए बोले, "मैंने कहा कॉल साहेब! एक नादान की छोकरी से मात खा गए।"

"जी हाँ!" गम्भीरता पूर्वक कॉल साहेब चौहान साहेब के मुख पर दृष्टि डाल कर बोले और चौहान साहेब के कटु व्यंग्य को इस प्रकार शर्बत के घूँट की भाँति पी गए कि जिस प्रकार शिव ने विषपान कर लिया था।

"जी हाँ क्या? इस प्रकार सादगी से 'जी हां' कहकर आप मुझसे अपनी कमज़ोरी नहीं छुपा सकते।" तनिक और निखर कर चौहान साहेब उभरते हुए बोले और इतने प्रखर व्यंग्य के साथ मुस्कुराए कि कॉल साहेब तिलमिला उठे।

"अब बुढ़ापा जो आता जा रहा है चौहान साहेब! कमज़ोरी नहीं आएगी तो क्या अब जवानी आने को है? आप जैसे बाल ब्रह्मचारी तो दुनियाँ मे बिरले ही निकलते हैं जिनमें ज्यों-ज्यों आयु बढ़ती है त्यों-त्यों जवानी का विकास होता जाता है।" तीखे कटुतर व्यंग्य के साथ कॉल साहेब ने उत्तर दिया।

इसे सुनकर एक बार तो चौहान साहेब भी हिल उठे परन्तु तुरन्त ही सँभल कर मुस्कुराते हुए बोले, "बिल्ली को ख्वाब में भी छेछड़े ही दिखाई देते हैं कॉल साहेब! परन्तु मैं वास्तव में उपहास नहीं कर रहा था आपसे। एक तो आप वैसे ही व्यवहार के आचार्य हैं और इतने बड़े आचार्य हैं कि उसकी दीवारों पर सेठ भानामल जी की मिलें खड़ी हैं और फिर आप मुझसे नाते में भी बड़े हैं··········।"

"बस रहने भी दीजिए इन बातों को चौहान साहेब!" बीच ही में रोक कर कॉल साहेब बोले, "बड़प्पन तो आपने हमारा ख़ूब निभाया।"

"अच्छा जाने दीजिए अब इन बातों को परन्तु इस बार आपकी ज़िद ने हमारा तो मुँह काला करा ही दिया।" यह कहते हुए भी चौहान साहेब के मुख पर वही स्वाभाविक मुस्कान खेल रही थी जिसे कॉल साहेब ने सर्वदा ही वहाँ

व्यंग्य के रूप में देखी थी। इनकी बातें सुनकर कॉल साहेब का हृदय जल भुनकर ढेरी हुआ जा रहा था।

"काले मुँह को और काला कोई क्या करेगा चौहान साहेब!" गम्भीरता पूर्वक कॉल साहेब ने कहा, "हम लोग चोर बाज़ारी करते हैं, काले काम करते हैं और डंके की चोट कहते हैं कि हम करते हैं। जिस से रोके जा सकें वह रोक ले। परन्तु आप उनमें से हैं जो चोर से कहते हैं चोरी कर और साध से कहते हैं कि जागते रहना रात में तुम्हारे घर पर चोर आने वाले हैं।" इतना कहते हुए कॉल साहेब का मुख क्रोध से तमतमा उठा। उनके हृदय की व्यापक जलन मुख पर निखर आई।

"तो यों कहो कि आप आज अपनी कूटनीति की असफलता की पूरी जलन का गुबार मेरे ऊपर उतारने के लिए तुले बैठे हैं। यदि इस प्रकार की बातें करने से आपका भारी मन कुछ हल्का हो सके तो आप कर लीजिए मेरी इसमें कोई हानि नहीं।" इतना कहकर चौहान साहेब व्यंग्यपूर्वक मुस्कुराकर इठलाते हुए कमरे में घूमने लगे। वह इस समय कमरे की छत पर इस प्रकार देख रहे थे मानो वहाँ भी कोई रहस्य बिछा पड़ा था।

कॉल साहेब के तन बदन में आग लग गई। उनका रक्त उबाल खा गया और वह कुछ न कुछ उल्टी सीधी चौहान साहेब को कहने ही वाले थे कि सामने से बड़ी बहूरानी आ गईं और सरल मुस्कान के साथ बोलीं, "आप लोग यहाँ क्या कर रहे हैं? चौहान साहेब भी खूब रहे। आए थे यहाँ अपने साढू साहेब को बुलाने के लिए और लग गए स्वयँ भी गप्प शप्प में। आप लोगों को तो यदि गप्प लगाने के लिए स्वतन्त्र छोड़ दिया जाए तो मैं समझती हूँ कि शायद हफ्तों भोजन की सुधि भी आप बिसरा सकते हैं।" बड़ी बहूरानी के मुख पर आज पूजा के पश्चात् प्राप्त होने वाली व्यापक शाँति-चित्तता के स्पष्ट भाव दृष्टिगोचर हो रहे थे।

कॉल साहेब ने मुँह से कुछ नहीं कहा और चौहान साहेब भी मुस्कुराते हुए साथ हो लिए। तीनों अन्दर जाकर डाइनिंग टेबिल पर बैठ गए। छोटी बहूरानी और कान्ता पहिले ही वहाँ बैठी थीं।

"चाय, पकौड़े, समोसे सभी आप लोगों ने ठंडे कर दिए।" मुस्कुराकर इठलाती हुई कान्ता बोली।

चाय कान्ता ने बनाई और सबने पीनी प्रारम्भ कर दी परन्तु कॉल साहेब के हाथ से प्याली न उठ सकी। उनका मन न जाने कहाँ था और वह एक दम खड़े होते हुए बोले, "अच्छा! चौहान साहेब मुझे क्षमा कीजिए। मुझे एक बहुत आवश्यक कार्य से जाना है।" और बिना कुछ उत्तर की प्रतीक्षा किए ही वह कमरे से निकलकर बाहर चले गए। कोठी के बाहर पोर्टिगो में उनकी कार खड़ी थी। आज उन्होंने अपने ड्राइवर को भी नहीं बुलाया और वह कार को स्वयं ही ड्राइव करते हुए कोठी से बाहर निकल गए।

बात कुछ किसी की समझ में न आई। छोटी, बड़ी बहूरानियों ने बात को समझने का प्रयत्न ही नहीं किया और कान्ता को भी उधर विचार करने की आवश्यकता नहीं थी परन्तु चौहान साहेब ऊपर से अनजान बने भी इसे अनजान पहेली कहकर अपने मन को सन्तोष न दे सके। राजनीति के मंजे हुए खिलाड़ी थे। देश भक्ति और राष्ट्र-हित की भावनाएँ उनके अन्दर वर्त्तमान थीं। स्वार्थ की कसौटी पर आकर कभी-कभी वह फिसल अवश्य जाते थे परन्तु कर्तव्य की पुकार के सम्मुख कानों में उँगली देकर अपनी आत्मा का गला घोंटना उनके लिए कठिन समस्या थी।

चौहान साहेब भी चाय न पी सके। तनिक इधर-उधर देखकर अपनी कलाई से बँधी घड़ी पर दृष्टि डालते हुए बोले, "ओह! सात बज गए कान्ता! मैंने कहा था न कि वहाँ देर हो जाएगी।" और फिर छोटी बड़ी बहूरानियों की ओर देखते हुए बोले, "क्षमा कीजिएगा आज। कान्ता को छोड़े जा रहा हूँ। मुझे सेठ जी ने बुलवाया है सात बजे।" और चौहान साहेब एकदम उठकर चल दिए। कान्ता भी खड़ी होकर बाहर तक आई परन्तु उसने कुछ प्रश्न नहीं किया और चौहान साहेब चले गए।

चौहान साहेब सीधे सेठ भानामल जी की कोठी पर पहुँचे तो उन्हें पता चला कि कॉल साहेब अभी-अभी यहाँ होकर गए हैं। कहाँ गए हैं इसका कुछ पता नहीं। चौहान साहेब ने सेठ भानामल जी से स्पष्ट कह दिया कि उन्हें परिस्थिति बहुत गम्भीर दिखलाई दे रही है। यदि सेठ भानामल जी ने तुरन्त कोई सुझाव इस गम्भीर परिस्थिति को सुलझाने का नहीं खोज निकाला तो परिणाम बहुत गम्भीर होने की सम्भावना है। साथ ही उन्होंने यह भी कह दिया कि कॉल साहिब का दिमाग ठीक नहीं है। जो स्थिति इस समय उनके मस्तिष्क

की है उसमें वह कुछ अनर्थ भी कर डालें तो कोई बड़ी बात नहीं। इसलिए आपको असावधान नहीं रहना चाहिए।

"परन्तु यह आपने कैसे कहा चौहान साहेब ? वह तो अभी-अभी मुझसे कर्मचारियों के साथ समझौते की बातचीत करने के लिए कहकर गए हैं।" आश्चर्य प्रकट करते हुए पेट पर हाथ फेरकर सेठ भानामल जी बोले।

चौहान साहेब ने व्यंग्य के साथ गर्दन हिला दी और फिर खड़े होते हुए बोले, "अच्छा अब मुझे आज्ञा दीजिए। मैं चलकर देखता हूँ कि कहीं कुछ अनर्थ न हो जाए।" और वह उठकर खड़े हो गए।

"परन्तु आपने मुझे तो बीच ही में लटका दिया।" सेठ भानामल जी ने विचलित होकर कहा।

"मैंने लटका दिया ?" मुस्कुराकर चौहान साहेब बोले, "लटकाया उसी ने है जिसने आपको अधर में उठाया था। आपकी अपनी आधार-शिला नहीं है और जिन कंधों पर हाथ रखकर आप ऊपर उठे हैं वह कटपुतली के कंधे हैं सेठ जी ! जिनमें चमत्कार भले ही हो, बल नहीं है। चमत्कार को मैं बल नहीं मानता, धोखा कहता हूँ।" चलते-चलते गम्भीरता पूर्वक चौहान साहेब ने कहा और वह चलने को तय्यार हो गए।

सेठ जी कुछ भी न समझ सके। "आप अपनी इस अलंकारिक भाषा को छोड़कर स्पष्ट कहिए कि यह सब क्या गोलमाल है ?" सेठ भानामल जी ने छटपटा कर पूछा।

"समय नहीं है इसकी व्याख्या करने का। केवल इतना इस समय जान लीजिए कि कभी-कभी मित्र अमित्र और अमित्र मित्र के रूप में देखे गए हैं—यह अनुभव बतलाता है।" और इतना कहकर चौहान साहेब तीव्र गति के साथ वहाँ से चले गए। सेठ जी अवाक् प्रस्तर-शिला की भांति अपने गाऊ तकिए का सहारा लिए सुफ़ैद चाँदनी बिछे गद्दे पर दो मने बोरे की भांति ढुलके पड़े-पड़े न जाने क्या सोचते रह गए।

सेठ भानामल जी का मस्तिष्क अस्थिर हो उठा और उसमें एक प्रकार की उद्विग्नता पैदा हो गई। वह बैठे रहने का प्रयत्न करने पर भी बैठे न रह सके और उनके नेत्रों के सम्मुख विचित्र प्रकार की शंकायें साकार रूप में आकर उपस्थित हो गईं।

सेट जी का भारी स्थूल शरीर पीपल के पत्ते की तरह काँपने लगा और उनका हृदय भयभीत हो उठा। मस्तिष्क अवचेतन अवस्था को प्राप्त होकर विस्मृति के करों में खेलने लगा और सेठ जी भूत भविष्यत, वर्त्तमान का ज्ञान भुलाकर डाँवाडोल से हो उठे। उनके विचारों की परिधि में बारी-बारी से विमला, अशफ़ाक, कॉल साहेब और चौहान साहेब आते तथा चाले जाते थे परन्तु कोई भी स्थिरता के साथ जम कर खड़ा नहीं हो पाता था। इन सब के पश्चात् कॉमरेड बैनर्जी आया। वह सेठ जी की दशा पर ज़ोर से खिलखिला कर हँस पड़ा‥‥‥ और सेठ जी अचेत से एक तरफ़ को भयभीत होकर गिर गए।

: २२ :

कॉमरेड अशफ़ाक से सूचना पाते ही विमला एक क्षण के लिए भी वहाँ न रुक सकी और तुरन्त प्राणों को हथेली पर ले कॉमरेड अशफ़ाक के साथ मिल की ओर चल पड़ी।

"मेरे विचार से आप इस समय ग़लती कर रही हैं कॉमरेड विमला!" अशफ़ाक ने साइकिल का पैडिल साध कर दबाते हुए गम्भीरता पूर्वक कहा। साइ-किल पर सवार होकर दोनों सड़क पर तीव्र गति के साथ उड़े चले जा रहे थे। साइकिल इस समय हवा से बातें कर रही थी। कॉमरेड विमला की साड़ी बारबार हवा से उड़कर उसके सिर को नंगा करती हुई कॉमरेड अशफ़ाक की छाती से जाकर चिपक जाती थी।

"यह मैं जानती हूँ अशफ़ाक! परन्तु कभी-कभी जान-बूझकर भी ग़लती की जाती है, कभी-कभी आँखों से देखकर भी ज्वाला में कूदना होता है।" मुस्कुराकर सरलता पूर्वक विमला ने उत्तर दिया।

"परन्तु यह ग़लती करने का समय नहीं। हम लोगों का वहाँ जाना ही अपने को मुसीबत में फँसा लेना होगा विमला!" विमला के मुख पर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखते हुए कॉमरेड अशफ़ाक ने कहा।

"यह भी सच है कॉमरेड अशफ़ाक ! परन्तु क्या राष्ट्र की सम्पत्ति को इस प्रकार एक क्षण में भस्मीभूत होते तुम देख सकोगे ? जवाब दो ? मौन क्यों रह गए अब ?" और वास्तव में कॉमरेड अशफ़ाक की ज़बान बन्द थी, उसपर ताला लग गया था। वह एक शब्द भी मुख से उच्चारण न कर सका। वह बराबर तीव्र गति के साथ साइकिल के पैडिल पर पैडिल चलाता जा रहा था और साइकिल हवा से भी तीव्र गति के साथ जा रही थी।

"यह मिल सेठ भानामल के बाप की बपौती नहीं है कॉमरेड अशफ़ाक!" विमला ने फिर कहना प्रारम्भ किया। "कॉल साहेब का भी इस मिल में कुछ नहीं लगा हुआ है। इस मिल की नींव में कर्मचारियों का खून पसीना लगा हुआ है। यह हज़ारों कर्मचारियों के जीवन-निर्वाह का साधन है। इसकी बर्बादी राष्ट्र की बर्बादी है, कर्मचारियों की बरबादी है। कॉल साहेब स्वार्थ के वशीभूत होकर अन्धे हो गए हैं। उनका दृष्टिकोण बहुत संकुचित है और भावनायें कलुषित हो चुकी हैं। वह इसे समाप्त कर देने पर तुले हैं अपने झूठे अभिमान की रक्षा के लिए। सेठ भानामल जी इस रहस्य को जानकर यदि इसे बचाने का भी प्रयत्न करेंगे तो अपने स्वार्थ के लिए परन्तु हमारा कर्तव्य हमें पुकार रहा है। हमारे प्राण रहते कॉल साहेब राष्ट्र की इस सम्पत्ति को आँच नहीं पहुँचा सकेंगे। जब तक तन में प्राण हैं मैं मिल को कोई हानि नहीं पहुँचने दूँगी, यह मेरा दृढ़ संकल्प है। मिल की रक्षा के लिए मैं अपने को मिटा दूँगी।" आत्म विश्वास के साथ विमला ने गम्भीरता पूर्वक कहा। विमला इस समय किसी प्रकार उड़कर मिल-द्वार पर पहुँच जाना चाहती थी और उसके वहाँ पहुँचने में जो एक-एक क्षण व्यतीत हो रहा था वह विमला को एक-एक दिन के बराबर लग रहा था।

"आपका संकल्प अमिट होगा कॉमरेड विमला ! आपके संकल्प की राह में मैं भी अपने तुच्छ प्राणों को न्यौछावर कर दूँगा।" गम्भीर शब्दों में अशफ़ाक ने दृढ़ता पूर्वक कहा और साइकिल को तीव्र गति के साथ चलाने में अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा दी।

"साइकिल की गति तनिक और तीव्र करो कॉमरेड अशफ़ाक !" विमला फिर बोली और अशफ़ाक ने पैडिल और भी तेज़ी के साथ लगाने प्रारम्भ कर दिए।

साइकिल पूर्ण-वेग से मिल की ओर बढ़ी जा रही थी।

चौहान साहेब बड़ी बहूरानी की दावत से चल कर सीधे सेठ भानामल जी के पास गए थे परन्तु वहाँ से उन्हें पता चला था कि कॉल साहेब अभी-अभी प्रस्थान कर गए। वह कॉल साहेब की खोज में कार पर सवार हो तुरन्त कॉमरेड विमला के मकान पर पहुँचे परन्तु वहाँ पर भी ताला लगा हुआ था। मकान के बाहर जो एक तख्त पर पान सिग्रेट वाला रिफ्यूजी बूढ़ा बैठता था उससे सूचना मिली कि विमला देवी अभी अभी बीस मिनट पूर्व ही कॉमरेड अशफ़ाक के साथ साइकिल पर कहीं गई हैं। कहाँ गई हैं इसके विषय में वह कोई भी संकेत न दे सका; केवल उस सड़क की ओर उसने उँगली उठा दी। जिस पर कि वह दोनों गए थे।

चौहान साहेब का मन किसी गम्भीर आशंका से उद्विग्न हो रहा था और वह समझ नहीं पा रहे थे कि क्या होने वाला है। कान्ता से चौहान साहेब ने विवाह अवश्य कर लिया था परन्तु उनके हृदय में कॉमरेड विमला के लिए भी एक कोमल स्थान था जो किसी भी आशंका से कभी-कभी विचलित हो उठता था। आज न जाने क्यों उन्हें कॉल साहेब पर विविध प्रकार के संदेह हो रहे थे। कॉल साहेब ने इस हड़ताल के बीच में कॉमरेड अशफ़ाक और कॉमरेड विमला के विपक्ष में जो जो कुछ किया था उस सब की सूचना उनके पास पहुँच चुकी थी। किस प्रकार शहर के गुण्डों तक को इन दोनों व्यक्तियों के विरुद्ध उकसाने और उन्हें रुपए के लालच में फँसा कर कोई अनर्थ करा डालने में वह असमर्थ रहे थे इसकी सूचना उन्हें मिल चुकी थी। कॉल साहेब के जीवन को चौहान साहेब ने इन दिनों भली प्रकार परख लिया था और इसीलिए कभी-कभी वह एकाँत में बैठकर कहा करते थे—'मैं सोचता हूँ कॉल साहेब! तुम क्या नहीं कर सकते? तुम यदि चाहो तो अपनी दोनों बहूरानियों को भी विष दे सकते हो।'

कॉल साहेब की नीच मनोवृत्तियाँ उनसे छुपी हुई नहीं थीं और वह यह जानते थे कि वह अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए कोई भी नीच से नीच मार्ग अपना सकते हैं। इसीलिए उन्हें आजकल हर समय कॉमरेड विमला की चिंता रहती थी। कॉमरेड विमला की योग्यता की उनके हृदय पर एक ऐसी गहरी छाप लग चुकी थी कि जिसका महत्व प्रेम कहलाने वाले तत्व से किसी भी प्रकार कम नहीं आँका जा सकता था। चौहान साहेब का हृदय कॉमरेड विमला को यदि

प्रेम नहीं तो वह उनका मान अवश्य करने लगा था और द्रवित होने लगा था उसके सामने। यह रहस्य विमला पर भी पूर्ण रूप से विदित था।

कॉमरेड विमला को इस समय यहाँ न पाकर चौहान साहिब यकायक विचलित से हो उठे। उनकी आँखों के सामने से कॉल साहिब की एक काली छाया सी दौड़ती हुई निकल गई और उसने चौहान साहेब के उद्विग्न मुख पर वह व्यंग्य पूर्ण भयानक मुस्कान फेंकी कि उनका तमाम बदन सिहर कर पसीना पसीना हो उठा। एक क्षण के लिए वह स्तम्भित से रह गए परन्तु उन्होंने तुरन्त अपने को सँभालते हुए उस पान सिग्रेट वाले से एक सिग्रेट लेकर जलाया और कश खींचते हुए तनिक टोपी उतार कर सर पर हाथ फेरा। सर्दी का मौसम, दिसम्बर का महीना, संध्या के आठ बजे और उन्हें पसीना आ रहा था। सिग्रेट पीते हुए आप जाकर कार में बैठ गए।

मस्तिष्क काम नहीं दे रहा था कि अब किस ओर जायें। चौहान साहेब ने अनायास ही कार का रुख़ मिल की तरफ़ कर दिया। कोठी पर वह अभी जाना नहीं चाहते थे और कुछ उनकी समझ में नहीं आ रहा था। मिल की ओर जाने का उनका विचार क्यों हुआ यह कुछ वह स्वयँ नहीं जान पाए परन्तु उनके हाथ स्टेयरिंग को बराबर उधर ही मोड़ते चले जा रहे थे।

चौहान साहेब के चले जाने पर सेठ भानामल जी का मन भी विचलित हो उठा था और वह भी अपने को परिस्थितियों की इस उथल-पुथल से पृथक न रख सके। उन्होंने तुरन्त ड्राइवर को कार पोर्टिगो में लाने के लिए आज्ञा दी और स्वयँ जाकर कार में बैठ गए। ड्राइवर को आज्ञा हुई कि वह चौहान साहेब की कोठी पर कार को ले चले परन्तु चौहान साहेब वहाँ पर नहीं थे। इसके पश्चात् सेठ जी कॉल साहेब की कोठी पर पहुँचे। वहाँ तीनों बहिनें बैठी ग्रामोफ़ोन रिकार्ड सुन रही थीं। सूचना मिली कि कॉल साहेब को वहाँ से गए पर्याप्त समय हो चुका है।

कॉल साहेब और चौहान साहेब को कोठी पर न पाकर सेठ जी का दिल धड़कने लगा। सेठ जी ने आशंका ग्रस्त होकर तुरन्त ड्राइवर से कार मिल पर ले चलने के लिए कहा और ड्राइवर ने कार मिल की तरफ़ मोड़ दी।

मिल का तो इस समय रंग ही बदला हुआ था। मिल के द्वार से लपटें निकल रही थीं। दरवाज़ा जलकर एक ओर गिर चुका था। अन्धकार में कई आदमी इधर उधर मिल के चौक में दौड़ रहे थे। मिल का गुरखा चौकीदार रस्सियों से बँधा

एक ओर पड़ा था। कुछ लोग मिल में आग लगाने पर जुटे हुए थे। मिल के द्वार से दाईं ओर रुई का गोदाम था जिसकी ओर आग लगाने वाले बड़ी तेज़ी से लपक रहे थे परन्तु उसके द्वार पर एक व्यक्ति सीना ताने खड़ा था और उसके सम्मुख बढ़ने का साहस किसी भी आग लगाने वाले में नहीं हो रहा था।

चारों ओर अँधकार ही अँधकार था। कभी कभी तीव्र अग्नि की लपटों में कुछ दिखलाई दे जाता था। इसी समय चौहान साहेब की कार भी वहाँ पर पहुँच गई और वह परिस्थिति की गम्भीरता को पहिचान कर वहाँ न रुकते हुए तनिक और आगे बढ़ गए। उन्होंने फायर ब्रिगेड को तथा पुलिस स्टेशन को फोन किया और तुरन्त मिल में आग लग जाने की सूचना देकर स्वयं मिल के द्वार पर आगए। कॉल साहेब की कार मिल के बाहर द्वार पर खड़ी हुई थी परन्तु कॉल साहेब उसके अन्दर नहीं थे। मिल के एक भाग से शोले निकल रहे थे और चिंगारियाँ उड़-उड़ कर आकाश चुम्बित लपटों में विलीन हो रही थीं। चौहान साहेब धीरे से चारों ओर फैले हुए इस चीत्कार और हाहाकार में मिल के अन्दर घुस गए। मिल-द्वार के पास ही गुरखा चौकीदार रस्सियों से बँधा हुआ पड़ा था। चौहान साहेब ने उसी की खुकरी उसकी कमर से निकाल उसके बन्धन काट डाले और उससे सब वृत्तान्त संक्षेप में पूछा। गुर्खा ने बतला दिया कि उसकी यह दशा कॉमरेड बैनर्जी के आदमियों ने बनाई थी। चौहान साहेब पूछताछ ही कर रहे थे कि सेठ भानामल जी भी चौहान साहेब पर दृष्टि पड़ने पर साहस करके वहाँ पहुँच गए।

मिल में आदमियों की घुड़-दौड़ हो रही थी। कॉमरेड बैनर्जी का साहस नहीं पड़ रहा था कि वह अपने इतने आदमियों को साथ लेकर भी कॉमरेड अशफ़ाक पर आक्रमण कर सके और उसे एक ओर घसीट कर रुई के गोदाम को भस्मीभूत कर डाले। वह बार-बार आगे बढ़ने का प्रयास करता था परन्तु अशफ़ाक की ललकार के सामने उसके छक्के छूट जाते थे और दिल दहल उठता था। उसके पहलवान जो खम ठोक कर मिल को जलाकर राख कर देने का प्रण करके आए थे पीठ दिखाने लगे और बैनर्जी अकेला अशफ़ाक के सामने खड़ा रह गया।

कॉल साहेब एक कोने में खड़े यह दृश्य देख रहे थे। कार्य सम्पूर्ण होने में देर हो रही थी और इस अशफ़ाक के बच्चे ने बीच में पड़कर तो उनका खेल ही ख़राब कर दिया था। कॉल साहेब के साहस का बाँध छूटता जा रहा था और

वह बार-बार दाँत किट किटाकर बैनर्जी को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे परन्तु बैनर्जी अशफ़ाक की डाटी खा-खाकर घिघिया घिघिया कर पीछे ही हट जाता था। अधिक देर अब सहन नहीं की जा सकती थी।

इसी समय कॉमरेड विमला की दृष्टि कॉल साहेब पर जा पड़ी। उसने देखा कि कॉल साहेब के हाथ में एक रिवाल्वर था और वह अब अपने कार्य में असफल होकर कुछ न कुछ अनर्थ करने पर उतारू हो चुके थे। विमला का हृदय काँप उठा परन्तु उसने साहस को हाथ से नहीं जाने दिया। उसने कॉल साहेब के मुख पर उतरते चढ़ते भावों को परखा और वह अब अपने स्थान पर खड़ी न रह सकी। यह भी अंधकार में एक कोने के अन्दर खड़ी हुई इस गम्भीर परिस्थिति की गम्भीरतम परिस्थिति को देख रही थी। वह अंधेरे में धीरे-धीरे कॉल साहेब की दृष्टि से अपने को बचाती हुई उनकी ओर बढ़ चली और किसी प्रकार उनके बिलकुल निकट पहुँच गई।

कॉल साहेब इतनी देर सहन नहीं कर सकते थे और इस बात का अब उन्हें निश्चय हो गया था कि कॉमरेड बैनर्जी इस लहुलुहान खड़े हुए अशक्त अशफ़ाक पर भी उस समय तक प्रहार नहीं कर सकता जब तक कि यह शरीर से अधिक रक्त बह जाने पर गिर न पड़े। कॉमरेड अशफ़ाक का सिर फट चुका था और उसके सिर से रक्त बराबर बह रहा था परन्तु उसका तेज और साहस उसके अन्दर वर्त्तमान थे।

कॉल साहेब शीघ्रातिशीघ्र कार्य लीला समाप्त करके पुलिस को फोन करना चाहते थे और चाहते थे कॉमरेड अशफ़ाक तथा विमला को इसमें फँसवाना परन्तु कॉमरेड अशफ़ाक के वहाँ इस प्रकार आजाने ने सब गुड़ गोबर कर दिया। कॉमरेड बैनर्जी अशफ़ाक की सिंह गर्जना के सम्मुख थर-थर काँप रहा था और उसके साथी तो वास्तव में सब भाग ही खड़े हुए थे। यह देख कर कॉल साहेब क्रोध में पागल हो उठे और उन्होंने अपना रिवालवर अशफ़ाक की ओर को तान दिया।

कॉमरेड विमला इस समय कॉल साहेब के बिलकुल निकट पहुँच चुकी थी और उसने अशफ़ाक के प्राणों की रक्षा के लिए अपने प्राणों पर खेलने का निश्चय कर लिया था। विमला के कोमल करों में कर्त्तव्य ने बल प्रदान किया और उसने साहस करके मिल-द्वार के जल कर गिर जाने पर उसकी खिड़की के सींखचों

की एक छड़ कस कर ऊपर उठाली। कॉल साहेब ने ज्यों ही रिवालवर की नाल अशफ़ाक की ओर करके गोली चलाने का प्रयत्न किया त्यों ही कॉमरेड विमला ने अपने पूरे बल का प्रयोग करके वह लोहे की छड़ कॉल साहेब के हाथ पर दे मारी। लोहे की छड़ मारनी थी कि कॉल साहेब का हाथ टूट गया और रिवालवर हाथ से छूट कर पृथ्वी पर गिर पड़ा। कॉमरेड विमला ने कूद कर रिवालवर उठा लेना चाहा परन्तु कॉल साहेब ने कूद कर कॉमरेड विमला का पृथ्वी पर पड़ा हुआ हाथ अपने कीलों वाले मोटे तले के जूते से कुचल दिया और क्रोध में भर कर दूसरी लात लगाने को ही था कि कॉमरेड अशफ़ाक लड़खड़ाता हुआ यह दृश्य देखकर इधर को दौड़ लिया। अशफ़ाक को अपनी ओर आते देख कॉल साहेब के होश उड़ गए। उनका आगे बढ़ने का स्वप्न भङ्ग हो गया और भाग कर प्राण बचाने की पड़ी।

इसी समय मिल के द्वार पर फायरब्रिगेड के मोटरों की घंटी बजती चली आई। कॉल साहेब ने अब बचकर भाग निकलने का विचार किया और रिवालवर का ध्यान भूलकर दरवाज़े की ओर तीव्र गति के साथ लपके। वह आँख मींच कर बेतहाशा उस तरफ़ को दौड़े परन्तु ज्यों ही वह मिल-द्वार के मध्य में पहुँचे तो उनकी मुठभेड़ उधर से अन्दर आते हुए चौहान साहेब से हो गई और चौहान साहेब ने उन्हें कसकर अपने दोनों हाथों में भर लिया। चौहान साहेब के लम्बे भुजदण्डों में कॉल साहेब इस प्रकार समा गए जिस प्रकार दुम दबाकर भागते हुए चूहे को बिल्ली अपने पंजों में दबोच लेती है।

चौहान साहेब के हाथों में फँसकर कॉल साहेब एक दम इस प्रकार साहस विहीन हो गए जिस प्रकार पानी की बूँदे पड़ जाने से उबलता हुआ दूध पतीली में ही समा जाता है और फिर बाहर निकलने का प्रयत्न नहीं करता। कॉल साहेब की गर्दन झुक गई और वह अपने मन से अपने को बन्दी मानकर पौरुष विहीन असफल प्रयत्नों के मूर्तिमान स्वरूप बनकर प्रस्तर-मूर्ति के समान जड़ हो गए।

इसी समय एक लारी भरकर पुलिस भी वहाँ पर आधमकी और उसने कॉमरेड बैनर्जी के सब आदमियों को एक एक करके बन्दी बना लिया। दो चार ने भाग निकलने का प्रयत्न किया परन्तु उनका प्रयत्न सफल न हो सका और किसी प्रकार भागकर निकल जाने वाले एक व्यक्ति को भी द्वार पर गुरखा ने कस कर जकड़ लिया।

कॉमरेड अशफ़ाक के सिर से गर्म-गर्म रक्त बह रहा था और उसके सर से लगाकर नीचे तक के वस्त्र उसमें सराबोर हो चुके थे। जिस समय अशफ़ाक ने मिल-द्वार की सींखचों वाली खिड़की से अन्दर घुसने का प्रयत्न किया था तो उसी समय यह चोट कॉमरेड बैनर्जी के हाथ से उसे आई थी। चोट बहुत घातक थी और अब उसमें से रक्त भी बहुत निकल चुका था। सिर की दो फाँक हो गई थीं। अधिक मात्रा में रक्त निकल जाने से कॉमरेड अशफ़ाक अपने को सँभालने में असमर्थ हो गया। वह अचेत होकर गिरने ही वाला था कि कॉमरेड विमला ने उसे अपने दोनों हाथों में सँभाल लिया।

एक महीने से सुनसान पड़ी मिल के मीटर पर जाकर सेठ भानामल जी ने स्विच ऑन कर दिया और विद्युत के प्रकाश में उन्होंने रक्त में लथ-पथ अचेत अशफाक को कॉमरेड विमला की अंक में पड़े देखा।

"यही है रक्षक इन रुई के गोदामों का, इस मिल की मशीनों का और इस 'सेठ क्लाथ मिल्ज़' के मान का।" गर्व के साथ कॉमरेड विमला ने अपनी गोद में पड़े अचेत अशफ़ाक की ओर संकेत करते हुए कहा।

और सेठ भानामल जी की गर्दन लाज से नीचे को झुक गई।

: २३ :

दूसरे दिन कॉमरेड अशफ़ाक ने जब नेत्र खोले तो उसका सिर कॉमरेड विमला की अंक में रखा हुआ था और चौहान साहेब तथा कान्ता पास में पड़ी हुई दो कुर्सियों पर बैठे थे।

"कॉमरेड अशफ़ाक! तुम्हारे रक्त ने राष्ट्र की भस्म होती हुई थाती की रक्षा की। मैं राष्ट्र-रक्षक के रूप में तुम्हारे सम्मुख सिर झुकाता हूँ।" श्रद्धापूर्वक राष्ट्रीय-सैनिक के कर्त्तव्य-पथ पर सिर झुकाते हुए चौहान साहेब ने कहा।

कान्ता के मौन नेत्रों ने चौहान साहेब के शब्दों का समर्थन किया और उत्साह के साथ कॉमरेड अशफ़ाक के तेजस्वी मुख पर दृष्टि डालते हुए धीरे से बोली, "भारत को आज आप जैसे ही कर्मचारियों की आवश्यकता है जो अपने स्वत्वों की रक्षा करते हुए राष्ट्र-हित के लिए अपने प्राणों का मोह त्याग कर कर्त्तव्य पथ पर जूझ पड़ें।"

कॉमरेड विमला मौन थी और मौन ही बनी रही। कुछ न कहते हुए भी उसके नेत्रों की मौन भाषा ने क्या कह दिया इससे केवल अशफ़ाक ही समझ सकता था। विमला के मूक नेत्रों से कर्त्तव्य और कर्त्तव्य की विजय झाँक रही थी।

अशफ़ाक के नेत्रों में एक ज्योति चमक उठी और फिर प्रसन्नता के दो मोटे मोटे आँसू उसके नेत्रों के दो कोनों में झलक आए।

कॉमरेड विमला ने जेब से अपनी फटी हुई धोती का एक टुकड़ा, जिसे रूमाल बनाकर उसने अपनी जेब में ठोंसा हुआ था, निकाला और धीरे से अशफ़ाक के नेत्रों के दो आँसुओं को कुशलता पूर्वक उसमें सँभाल लिया। विमला का हृदय अन्दर अन्दर ही कह उठा, "अशफ़ाक तू है भारत-राष्ट्र का सच्चा राष्ट्र-पति। राष्ट्र की सम्पत्ति का संरक्षक ही वास्तव में राष्ट्रपति कहलाने का अधिकारी है। तूने राष्ट्र की सम्पत्ति अपने प्राणों को हथेली पर रखकर बचायी है। जब-जब जिस जिस रूप में राष्ट्र ने तुझे पुकारा है तूने उसकी आवाज़ को सुना है; स्वार्थ ने कभी तेरी आत्मा का गला नहीं दबोचा, परिस्थितियों का लाभ उठाने का तूने कभी प्रयत्न नहीं किया, धन कभी तेरा सौदा करने में सफल नहीं हो सका, कायरता और निर्बलता कभी तेरे पास तक नहीं फटकीं, बड़े बड़े गुण्डा कहलाने वाले और धनपतियों के संकेत पर सब कुछ कर डालने वालों के दिल तेरे नाम से थर्राते हैं; तू कर्मचारियों की निर्बल और थकी हुई आत्माओं का साहस बन गया, बल बन गया; मैं तेरे आदर्श और कर्त्तव्य की दृढ़ता के पथ पर मस्तक झुकाती हूँ।'

मज़दूरों की माँगें पूरी हुईं और कर्मचारियों ने चार चार शिफ्ट काम करके सरकारी आर्डर का माल समय से पूर्व तय्यार कर दिया। संध्या को चौहान साहेब से रेस्टारेन्ट में चाय पीते हुए कॉमरेड विमला ने मुस्कुरा कर कहा, "देखा आपने हमारा निर्माण-पथ। यह विध्वंसात्मक नहीं है चौहान साहेब! समझने वाले ग़लत समझते हैं और कहने वाले अर्थ का अनर्थ कर डालते हैं। अशफ़ाक हमारे निर्माण-पथ का प्रथम राही है। इस पथ पर चलना इतना सुगम नहीं कि कोई भी ऊँट की तरह मुँह उठाकर इस पर चलता चला आए। यह त्याग और तपस्या का पथ है, बलिदान और कर्त्तव्य का पथ है, धोखे और छल का नहीं। यहाँ पत्तेबाज़ी की दाल नहीं गल सकती यहाँ तो महनत और मज़दूरी करनी ही होगी।" और इतना कहते-कहते विमला तनिक गम्भीर हो उठी।

"परन्तु तुमने तो एक दिन कहा था कि मैं नव-निर्माण चाहती हूँ, पुरानी व्यवस्थाओं को छिन्न भिन्न कर देना चाहती हूं, यह गली सड़ी व्यवस्थाएँ अब नहीं चलेंगी, इन्हें मिट जाना होगा और इनके स्थान पर नव-निर्माण की नीव

डाली जाएगी ! वह सब तो मुझे कुछ नहीं दिखलाई दे रहा ।" चौहान साहेब ने सरलता पूर्वक पूछा ।

"मैंने जो कुछ कहा था वह सच कहा था चौहान साहेब ! परन्तु आपने जो समझा वह ग़लत समझा । बस भेद इतना ही है । मैंने कहा था कि जो भाग सड़ चुका है उसे काट दिया जाएगा सो 'सेठ क्लाथ मिल्ज़' का गला सड़ा भाग कॉल साहेब थे और वह स्वयँ ही कट छँट कर प्रथक हो गए ।" और इस पर दोनों खिलखिलाकर हँस पड़े ।

"विमला ! तुमने कॉल साहेब का पत्ता खूब काटा, यहाँ हम तुम्हें मानते हैं ।" मूछों पर ताव देकर चौहान साहेब यह कहकर मुस्कुराए ।

"मैं किसी का पत्ता नहीं काटती चौहान साहेब ! और न मैंने किसी का पत्ता काटा ही है । यहाँ आप फिर दूसरी भूल कर रहे हैं, परन्तु भार बनकर अब कोई भी व्यक्ति कर्मचारियों की छाती पर मूँग नहीं दल सकता । मज़दूरों का रक्त बहुत दिन मीठा रह चुका है चौहान साहेब ! अब उसमें कड़वापन आ चुका है । बिना मेहनत किए कोरी बातों के फल स्वरूप कोई व्यक्ति भविष्य में अपना जीवन निर्वाह नहीं कर सकेगा । मैं पूछती हूं कि क्या अधिकार है एक व्यक्ति को जीवन भर निठल्ले बैठे बैठे गिलौरियाँ चबाने, ताश या शतरंज खेलने, नाच रङ्ग देखने, अच्छा खाने और अच्छा पहिनने का जब कि वह जीवन में कोई काम नहीं करता और दूसरी ओर एक कर्मचारी को दिन भर कोल्हू के बैल की तरह जुटे रहने पर भी पेट भर भोजन नहीं मिलता । आप कहेंगे यह उन दोनों का भाग्य है परन्तु मैं इस भाग्य की प्रणाली को नहीं मानती । सरकार यदि चाहे तो ऐसे भाग्यों को बदल सकती है । बैल की तरह जीवन में पिसने वाले कर्मचारी को इन्सान बनकर रहने का सुअवसर प्रदान कर सकती है और उस निठल्ले व्यक्ति को कर्मण्य बना सकती है, कर्तव्य-पथ दिखला सकती है । राष्ट्र के जीवन में यह समानता सरकार को लानी होगी ।"

"तब क्या इस बार नम्बर हमारा ही आने वाला है ?" चौहान साहेब मुस्कुराते हुए आँखें तरेर कर तनिक हलके से व्यंग्य भाव से बोले ।

"आ सकता है । यह कोई कठिन बात नहीं । आपके हाथों में जब जनता अपना विश्वास धरोहर के रूप में सौंप देती है तो मैं नहीं समझती कि उस विश्वास में कमी करने का क्या कारण है ? मैं और स्पष्ट रूप में आपसे पूछती

हूँ कि जब आपके दिए गए आश्वासनों को ठुकरा दिया गया और तब भी आपने कर्मचारियों का साथ नहीं दिया और उन्हीं सेठ भानामल जी की कृपा-कोर पर आप पलते रहे, इसे मैं क्या समझूँ, जीवन की महानता या गिरावट ? जिसे आप मित्रता का रूप देना चाहते हैं वह आपके जीवन की कमज़ोरी और गिरावट है।" और इतना कहकर गम्भीर दृष्टि से विमला ने चौहान साहेब के मुख पर देखा। आज कॉमरेड विमला ने यह अनुभव किया कि वह चौहान साहेब को आदेश करने की परिस्थिति में थी और इसीलिए उसने आदेश किया भी। वह चाहती थी कि यह भटका हुआ राही एक बार फिर कर्त्तव्य-पथ पर आरूढ़ होकर निर्माण-पथ पर चल पड़े।

"गिरावट कॉमरेड !" विमला की आँखों से आँखें न मिलाकर गर्दन नीची करते हुए चौहान साहेब ने धीमे स्वर में कहा और उनके बदन का साहस मानो एक दम विलुप्त सा हो गया।

"जब आप साधन विहीन थे तब आपने जन-सेवा के मार्ग में पग बढ़ाया और आज जब आप साधन सम्पन्न हुए तो आपने अपनी आत्मा सेठ भानामल जी के हाथों में बेच डाली। आपका यह भ्रम है कि सेठ भानामल जी आपको कुछ दे सकते हैं। सेठ जी आपको कुछ नहीं दे सकते। जब तक आपको दुधाल गाय समझते हैं तभी तक लातें भी खाते हैं परन्तु जब आपका बल नष्ट हो जाएगा तो आपको यह दाना और खल नहीं डाली जाएगी। उस समय तो आपके लिए सूखे-भूसे की भी कमी दिखलाई देगी और आपका खोर पर बँधा रहना भी इन्हें भार स्वरूप हो जाएगा। यह कोठी, यह ठाट-बाट, यह रुपया तभी तक है जब तक आप इनकी आय के साधन हैं। मित्रता के लिए यह कुछ नहीं हो रहा है। यह आप पूरी तरह जान लीजिए।

आपको यह बल जनता ने प्रदान किया है, सेठों ने नहीं। यदि मेरे कहने पर विश्वास न हो तो वर्त्तमान चुनाव की ही परिस्थिति पर एक दृष्टि डाल लीजिए। बड़े-बड़े बैंकों के मैनेजिंग डाइरेक्टर हार गए, बड़े-बड़े कांग्रेसी तथा अन्य दलों के नेता हार गए और मैं कहे देती हूँ कि आगामी कुछ वर्षों में यह सेठ लोग तो स्वयँ ही राष्ट्र की सम्पत्ति राष्ट्र के हाथों में सौंप कर कहीं हरिद्वार या द्वारिका पुरी में हरि भजन करेंगे। इन मिलों को हम चलायेंगे और राष्ट्र के रिक्त भंडारों को रात दिन मेहनत करके भर देंगे। हम वही चीज़ बनायेंगे जिसकी

राष्ट्र को आवश्यकता होगी। इन पूँजीपतियों की जनता को धोखे में डालने वाली नीति का हम अनुसरण नहीं होने देंगे। आवश्यकता की चीज़ों का उत्पादन रोककर व्यर्थ की चीज़ों में जुट जाना और चोर बाजारी का आश्रय लेकर व्यर्थ में बाज़ारों के अन्दर झूठी कमी का पैदा कर देना बन्द हो जाएगा। हम इतना उत्पादन करेंगे कि राष्ट्र को चिन्ता-विमुक्त कर देंगे। अपनी आवश्यकताओं के लिए तरस तरस कर इन मोटे पेट वालों के सामने गिड़गिड़ाना अब हमारा काम नहीं। सरकार को स्वयँ चाहिए कि वह हमारे रहन सहन की व्यवस्थाओं पर ध्यान दे और हड़तालों की परिस्थितियों को ही न आने दे। यदि आप उस समय निर्बल न बनकर सेठ जी के भावुक-मित्र न बन गए होते तो राष्ट्र का इतना बड़ा अहित न होता और मिल इतने दिन बन्द न रहता। आपने स्वार्थी विचार धारा से काम लिया।

पुराना युग समाप्त हो चुका चौहान साहेब! अब नया युग स्वयँ बनता जा रहा है जिसमें असमानताएँ स्वयँ समानताओं में परिणित हो जायेंगी।"

इसी समय कान्ता चौहान साहेब को खोजती हुई आकर बोली, "मैंने आपको 'एल्पस' में मिलने के लिए कहा था और आप विराज रहे हैं अन्नपूर्णा में। कॉमरेड विमला आपको यहीं घसीटकर ले आई होंगी मैंने यही विचार किया।" मुस्कुराती हुई कान्ता पास वाली कुर्सी पर बैठ गई।

"चाय पीने के लिए यह भी बहुत सुन्दर स्थान है। 'एल्पस' में ही क्या रखा है। व्यर्थ की लुटाई होती है कान्ता बहिन!" विमला बोली।

परन्तु इधर ध्यान न देकर कान्ता ने सूचना दी, "आपने कुछ और भी सुना है कॉमरेड विमला!"

"क्या? मैंने तो कुछ नहीं सुना।" तनिक चकित सी होकर विमला ने कान्ता के मुख पर देखा।

"जीजा जी नया मिल लगाने जा रहे हैं कपड़े का।" और इतना कहकर कान्ता जोर से खिल खिलाकर हँस पड़ी।

"सच!" प्रसन्न मुख होकर विमला बोली। "चलो अच्छा ही हो रहा है यह भी।"

"उन्होंने प्लाट ले लिया है और उनका अनुमान है कि वह छै महीने के अन्दर मिल चालू कर देंगे।" कान्ता तनिक कुछ गम्भीर मुख-मुद्रा बना कर बोली।

"बहुत खूब !" और फिर प्रसन्नता पूर्वक चौहान साहेब की ओर देखते हुए विमला ने कहा, "देखा चौहान साहेब ! आपने निर्माण-पथ । यही हैं हमारी निर्माण की योजनायें । चोर बाज़ारी करके भी कोई रुपया कहाँ ले जाएगा ? राष्ट्र का रुपया उसे राष्ट्र को एक दिन अवश्य सौंपना होगा । अब आप देखेंगे कॉल साहेब को राष्ट्र का धन राष्ट्र को मय सूद के चुकता करते हुए ।" और इतना कहकर कॉमरेड विमला जोर से खिल खिलाकर हँस पड़ी । चौहान साहेब लज्जित से चुपचाप बैठे रह गए और कान्ता बेचारी तो कुछ भी समझ सकने में असमर्थ थी ।